पुराने छापे का असली बड़ा

इन्द्रजाल

देहाती पुस्तक भंडार

चावड़ी बाजार दिल्ली-६

विषय अनूक्रम

प्रकाशकीय

● उस परमपिता परमेश्वर का लाख-लाख धन्यवाद है कि हम यह सली, प्राचीन, इन्द्रजाल प्रकाशित करने में सफल हो गये हैं। यह इन्द्रजाल पों से मिल नहीं रहा था, हमने कई वर्ष खोज करके और हजारों रुपये व्यय रके इसे ढूंढ निकाला है और आपकी सेवा में समर्पित है।

● यह असली पुराना इन्द्रजाल जिसके पास होगा, उसे संसार में भला किस बात की कमी रहेगी ? धन, मान, यश, संतान, शत्रु पर विजय जो भी इच्छा हो; इससे पूरी हो जाती है।

● असली पुराना इन्द्रजाल आपके हाथों में है। यह शिवजी महाराज का रचा हुआ पुराना इन्द्रजाल ग्रन्थ है। अतः इसे पवित्र स्थान पर रखना और शरीर व मन पवित्र रखकर इसे हाथ में लेना अथवा पाठ करना चाहिए और श्रद्धालु सज्जन गल्ले, तिजोरी, ट्रंक, अलमारी में रखें। फिर देखें इसका चमत्कार।

● यह सभी जानते हैं कि संसार में एक पत्ता भी भगवान की इच्छा के बिना नहीं हिलता परन्तु मनुष्य को चेष्टा करनी चाहिए। कर्म मनुष्य का धर्म है और फल देने वाला ईश्वर है। अतः ईश्वर को सर्वव्यापी जानकर इसकी क्रियाएं करें। कोई कार्य ऐसा न करें, जिससे दूसरों का अनिष्ट हो। पहले दूसरों का भला करें, फिर अपना भला करे और तभी ईश्वर आपका भला करेगा।

Gian Offset Pri

असली प्राचीन-हस्त लिखित
पुराना
इन्द्रजाल

जहां देखिये, विद्या का जग में बोल बाला है।
जो सच पूछो, तो विद्या के बिना संसार में मुंह काला है॥

आज के नवीन युग में हमारी यह पुस्तक लोग को अनोखी मालूम होती है कारण है आज का मनुष्य हर एक कठिन काम से डरता है वह चाहता है कि सब काम बगैर कुछ हाथ पैर हिलाए बन जावें। एक समय था जब लोग आधी-आधी रात जाकर श्मशान भूमि पर प्रेत की तपस्या करते थे जब कहीं जाकर "मृतक आत्माओं" को वश

में करके बड़े-बड़े काम निकालते थे।

सकल पदारथ हैं जग माहीं।
भाग्यहीन नर पावत नाहीं॥

हैं सब चीजें दुनियां में और वह मिलती भी हैं संसार वासियों को। मगर-यथा कर्मम् तथा फलम् के अनुसार जो वस्तु जिसके भाग में होती है, उसे वो ही मिल जाती है। जो पदार्थ दुर्लभ है—अप्राप्य हैं उनके लिए भी कुछ साहसी मनुष्य ऐसे-ऐसे उपाय और साधन करते हैं कि अन्त में वह अप्राप्य वस्तु भी उन्हें प्राप्त हो जाती हैं; परन्तु आवश्यकता है परिश्रम करने की। शुद्ध मन से दृढ़ इच्छा शक्ति को लेकर के जिस काम को करेगा कोई वजह नहीं कि फिर वह उसमें सफलता प्राप्त न करे। ईश्वर की दया से जो पुस्तक आज हम आपकी भेंट कर रहे हैं हमें पूर्ण आशा है यह आपकी अनेक इच्छाओं को पूर्ण करने में पूरी-पूरी सहायता देगी। पढ़कर अवश्य लाभ उठावें।

श्री गणेशायनमः

श्री गुरु गणपति सरस्वती शिवगिरिजा गुण गाज।
जिनके सुमिरण कियेते सिद्धि होत सब काज ॥

धन्यवाद प्रभु और प्रभु की प्रभुताई को जिनने इस संसार में ऐसे-ऐसे पदार्थ उत्पन्न किये हैं जो किसी के ध्यान और गुमान में न आ सकें उनमें से अत्यन्त न्यून वस्तु जो तृणपात हैं तिनके समान किसी की सामर्थ्य नहीं जो बना सके उसकी माया का भेद किसी ने नहीं पाया जिसने गाया उसने अपनी मति के अनुसार गाया वह परमेश्वर पूर्ण ब्रह्म अनादि और अनन्त है ज्योति स्वरूप सर्व व्यापक सबसे न्यारा है उस निर्गुण ब्रह्म के सगुण स्वरूप श्री कृष्णचन्द्रमा जी के चरणविन्द में बारम्बार सिर नवाय कर अपने चित्त के मनोर्थ को प्रकट करता हूं कि इस संसार में जितने देह-धारी गृहस्थी बनवासी बुद्धिमान मतिहीन हैं उनमें कोई ऐसा नहीं है जिसको अपने सुख-दुःख हानि
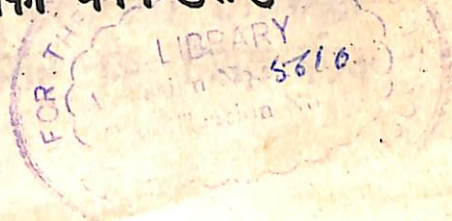
लाभ का ज्ञान न हो और अपने मनोर्थ सिद्धि करने की अनेक प्रकार का यत्न और उपाय न करता हो जो कि बहुधा मनुष्य अपने अधिकार के बढ़ाने को मंत्रादिक के द्वारा उपाय कर मनवांछित फल पाते हैं इसलिये उनका चित्त इस प्रकार के यत्न और उपाय में लगता है जो कि यह विद्या सदा से लोगों को हितकारी अत्यन्त है हरिजन दासांदास रामधन दूसर प्रसिद्ध खुश नवीस ने जो इस विद्या के संग्रह करने में चालीस वर्ष बराबर बड़ा परिश्रम करके अनेक मंत्रदिक श्री गुरुदयाल श्री रामदयाल जी व श्री मिश्ररजानन्द जी महाराज और चन्द्रलाल से बड़े की कृपा से सिद्धि करके सदा राज दरबार में उच्चस्थान पाकर बैरियों पर गालिब रहकर मनवांछित फल पाता रहा अब चिरंजीव रामनरायण सम्पादक मथुरा प्रेस ने सब पत्रों को जहां तहां से इकट्टा करके छापने की प्रार्थना की इसलिये ये चार

मांसलों बराबर श्रम करके सबको विधि युक्ति लिखके ग्रंथ पूरा किया जो कि विद्यारूपी काम· धेनु से यह अमृतरूपी दुग्ध प्राप्त हुआ इसलिये इस ग्रंथ के चार पाद किये पहले में वह सब बातें लिखी गयां हैं जिनका जानना आवश्यक है यंत्र लिखते और मंत्र जपने वालों को दूसरे पाद में तंत्र विद्या इन्द्रजाल का तीसरे पाद में सावरी और अनेक प्रकार के मंत्र चौथे पाद में यंत्र क्रिया और नाम ग्रन्थ का कौतुक रत्न मंजूष रक्खा प्रगट हो कि यंत्र यद्यपि सिद्ध हैं तद्यपि जिसकी क्रिया कठिन है उसको और यंत्र·मंत्र की क्रिया गुरु से पाकर करना उचित है गुरु का धर्म है कि अपने किये को बतावे इसलिये इस पुस्तक में अपने किये हुए पर ऐसा चिन्ह कर दिया है परन्तु इस बात पर भी ध्यान रखना चाहिये कि जिस यंत्र मंत्र का स्वामी अपने से ऋणी होगा वह शीघ्र सिद्धि होगा अब उत्तम जनों से प्रार्थना

है कि जहां कहीं भूल चूक देखें कृपा दृष्टि से शुद्ध करलें और इतना समझलें कि ईश्वर के सिवाय कोई निर्दोष नहीं है।

अथ प्रथम पाद

प्रगट हो कि यंत्र मंत्र के पढ़ने में और लिखने जैसा मनोर्थ होता है वैसा ही यत्न विधि युक्ति करने से सिद्धी प्राप्ति होती है विपरीत करने से श्रम निष्फल जाता है। बहुधा मनुष्य विधि जाने बिना जो कुछ करते हैं और उसका फल नहीं पाते तो विद्या पर दोष लाते हैं जिन पर अमल करने से श्रम निष्फल न होवे जो मनुष्य यंत्रादिक द्वारा किसी मनोर्थ के सिद्ध करने का उपाय किया चाहें वो पहले इतनी बातोंको जानलेवें तब आरम्भ करने को स्थिर होवें।

प्रथम ऋणी धनी का विचार ऋणी लेने वाला और धनी देने वाला होता है जो करने वाला धनी हो तो कार्य निस्सन्देह सिद्ध को प्राप्त होवे।

दूसरे

वर्ग और राशि को मिलावे अपना वर्ग और राशि प्रबल हो तो श्रेष्ठ है।

तीसरे

मासवार तिथि नक्षत्र चन्द्रमा योगिनी दिशा-शूल और दिशा इन सबको जानकर मनोर्थ की जैसी संज्ञाचर स्थिर शुभ अशुभ हो उसके अनुसार सबका निश्चय करके आरम्भ करें।

चौथे

जिस स्थान में बैठे कूर्म चक्र से स्थान को शोधकर कूर्म्म के सिर पर आसन बिछा कर बैठे।

पांचवें

जिस दिन कार्य का आरम्भ करें उस दिन को पूर्व में दूसरे को अग्निकोण में इसी प्रकार सातवें को उत्तर में रखकर ईशान कोण को खाली रखे फिर शुभ कार्य को जिस दिशा में मुख रखने

से चन्द्रमा और शुभवार सन्मुख और दायें रहे जोगिनी अशुभवार पीठ पीछे या बायें रहें उसी दिशा में मुख कर बैठे।

ऋणीधनी का विचार

प्रथम वर्गों के नाम और वर्गों के अक्षर और अक्षरों के अंक नीचे लिखे यंत्र से जानना।

वर्गांक	वर्गनाम	वर्गों के अक्षर						व्यवस्था
१	गरुड़	अ	इ	उ	ए	०	८	जिसके नाम में इन
२	विलाव	क	ख	ग	घ	०	५	४ अक्षरों में से कोई
३	सिंह	च	छ	ज	झ	०	६	एक अक्षर होवे वह अक्षर
४	स्वान	ट	ठ	ड	ढ़	ण	७	इ वर्ग है और इन चारों
५	सर्प	त	थ	द	ध	न	७	अक्षरो के गुणन अंक
६	मूसा	प	फ	ब	भ	म	१	८ ही हैं इसी प्रकार
७	मृग	य	र	ल	व	०	३	सब अक्षर और वर्गों
८	मेंढा	श	ष	स	ह	०	०	को जानना चाहिए

फिर धनी ऋणी को दूसरी रीति से जान लेवें।

उदाहरण

रामलाल सेठ धनवान से नौकरी मिलने के लिये विधीचन्द नामी मनुष्य मंत्रादि के द्वारा उपाय किया चाहता है तो दोनों के वर्गांक निकाल कर उनको दो गुणा करके न्यारा २ धरे और प्रत्येक में दूसरे का वर्गांक जोड़ के उनमें ८ का भाग दे शेष बचें उनको काकिणी जाने जिसकी काकिणी अधिक हो वह ऋणी है और थोड़ी वाला धनी जैसे रामलाल का वर्गांक विधीचन्द का वर्गांक।

७ × २ = १४
६ दूसरे वर्गांक
८) २० (२
शेष काकिणी १६/४ रामलाल

६ × २ = १२
७ दूसरे वर्गांक
८) १९ (२
शेष काकिणी १६/३ विधीचन्द

इस रीति से रामलाल सेठ ऋणी है और विधीचन्द धनी तो विधीचन्द की आशा राम लाल पूर्ण कर देगा।

वर्ग मिलाना

वर्ग के ३६ मिलान हैं इनमें देखना चाहिये ऋणी धनी दोनों के एक ही वर्ग हों तो श्रेष्ठ है और धनी का वर्ग प्रबल हो तो अति श्रेष्ठ है ऋणी का वर्ग प्रबल हो तो कार्य सिद्ध होने में विलम्ब होगा और अपने वर्ग से जो वर्ग पांचवां है सो वैरी तथा चौथा मित्र तीसरा सम है।

वर्ग		प्रबल	निर्बल	वर्ग		प्रबल	निर्बल
१ का	२ का			२ का	२ का		
गरुड़	गरुड़	सम	सम	गरुड़	सिंह	गरुड़	सिंह
गरुड	विलाव	गरुड़	विलाव	गरुड़	स्वान	गरुड़	स्वान
गरुड	सर्प	गरुड़	सर्प	सिंह	सिंह	सम	सम
गरुड़	मूंसा	गरुड़	मूंसा	स्वान	स्वान	सम	सम
गरुड़	मृग	गरुड़	मृग	स्वान	सर्प	स्वान	मूंसा
गरुड़	मेंढ़ा	गरुड़	मेंढा	स्वान	मूंसा	स्वान	मूंसा
विलाव	सिंह	सिंह	विलाव	स्वान	मृग	स्वान	मृग
विलाव	स्वान	स्वान	विलाव	स्वान	मेंढा	स्वान	मेंढा
विलाव	सर्प	विलाव	सर्प	सर्प	मृग	सर्प	मृग
विलाव	मूंसा	विलाव	मूंसा	सर्प	मेंढा	सर्प	मेंढ़ा
विलाव	मृग	विलाव	मृग	सर्प	मूंसा	सर्प	मूंसा
विलाव	मेंढा	विलाव	मेंढ़ा	सर्प	सर्प	सम	सम
विलाव	विलाव	सम	सम	मूंसा	मूंसा	सम	सम
सिंह	विलाव	सिंह	स्वान	मूंसा	मृग	सम	सम
सिंह	स्वान	सिंह	सर्प	मूंसा	मेंढा	सम	सम
सिंह	मूंसा	सिंह	मूंसा	मृग	मृग	सम	सम
सिंह	मृग	सिंह	मृग	मृग	मेंढा	मेंढ़ा	मृग
सिंह	मेंढ़ा	सिंह	मेंढा	मेंढ़ा	मेंढा	सम	सम

राशि का मिलाना

धनी ऋणी दोनों की राशि एक ही हो तो समान और धनी की राशि प्रवल हो तो अति श्रेष्ठ है ऋणी की राशि प्रवल हो तो कार्य बिलंब से होवे।

राशिफल हिलेकी	राशिदू सरेकी	परस्पर हिताहि	बलाबल		बराबर	व्यवस्था
			प्रबल	निबल		
आवी	खाकी	प्रीति	सम	सम	चर	हित बढ़ावे
आवी	आवी	प्रीति	आवी	खाकी	०	मिलाप करावे
आवी	आत्शी	बैर	आवी	खाकी	०	सुलह करावे
आवी	वादी	वैर	वादी	आवी	०	भय उपजावे
खाकी	खाकी	प्रीति	सम	सम	स्थिर	हित करावे
खाकी	वादी	वैर	वादी	खाकी	०	क्रोध बढ़ावे
खाकी	आत्शी	वैर	आत्शी	खाकी	०	तथा
वादी	वादी	प्रीति	सम	सम	चर	हित बढ़ावे
वादी	आत्शी	प्रीति	वादी	आत्शी		क्रोध मिटे
आत्शी	आत्शी	प्रीति	सम	सम	स्थिर	हित बढ़ावे

राशि जानने की रीति

हर एक राशि पर चन्द्रमा दो नक्षत्र तक रहता है और हर एक नक्षत्र के चार चरण होते हैं जो अक्षर चरणों में लिखे हैं उनसे राशि जानी जाती है जैसे रामलाल के सिरे का अक्षर है वह तुला राशि के सामने चित्रा नक्षत्र के तीसरे चरण में है तो मालूम हुआ कि रामलाल की तुला राशि है और जन्म उसका चित्रा के तीसरे चरण में हुआ है इस प्रकार जिस नाम की राशि देखना चाहो देखो।

राशिचक्र

नामराशि	नक्षत्रों के नाम और चरण के चरण सवा दो नक्षत्र के		प्रत्येक राशि
मेष	आश्वनी के ४ चू चे चो ला	भरणी के चार ली लू ले लो	कृतिका के ४ अ ० ० ०
वृष	कृतिका ० इ उ ए	रोहिणी ओ वा वी वू	मृगशिर वे वो ० ०
मिथुन	मृगशिर ० ० का की	आर्द्रा कू घ ङ छ	पुनर्वसु के को हा ०
कर्क	पुर्वसु ० ० ० ही	पुष्प हु हे हो डा	अश्लेषा डी डू डे डो
सिंह	मघा मा मी मू मे	पूर्वी फाल्गुणी मो टा टी टू	उत्तरा फाल्गुणी टे ० ० ०
कन्या	उत्तराफाल्गुनी ० टो पा पी	हस्त पू ष ण ठ	चित्रा पे पो ० ०
तुला	चित्रा ० ० रा री	स्वाँति रू रे रो ता	विशाखा ती तू तें
वृश्चिक	विशाखा ० ० ० तो	अनुराधा ना नी नू ने	ज्येष्ठा नो या यी यू
धन	मूल ये यो भा भी	पूर्वाषाढ़ भू धा फा ढा	उत्तराषाढ़ भे ० ० ०
मकर	उत्तराषाढ़ ० भो जा जी	अभिजित जू जे जो खा | श्रवण खी खू खे खो	धनिष्ठा गा गी ० ०
कुम्भ	धनिष्ठा ० ० गू गे	शतभीषा गो सा सी सू	पूर्वाभाद्रपद से सो दा
मीन	पूर्वाभाद्रपद ० ० ० दी	उत्तराभाद्रपद दू थ झ ञ	रेवती दे दो चा ची

राशि वृत्तान्त

गगन मंडल में १२ स्थान हैं उनको राशि और लग्न कहते हैं उनके नाम स्थान लग्न कुंडली में मालूम होंगे।

वृष २
मीन १२
मिथुन ३
घरमेष १
कुंभ ११
कर्क ४
मकर १०
सिंह ५
तुला ७
धन ९
६ कन्या
वृश्चिक ८

१२ राशों के स्वामी

अर्थात् मालिक ७ देवता हैं उन्हीं को ग्रह कहते हैं ५ देवता दो २ घर के और दो देवता एक २ घर के मालिक हैं नीचे लिखे चक्र में उनके रूप गुणादि दें।

राशि भेदचक्र

राशि-नाम	जातिरा	स्थान	चराचर	स्वामी	राशी के स्वामी का अम्ल
१ मेष	आतशी	पूर्व	चर	मंगल	पहले गृह में जो ग्रह हो वह अपनी देह को शुभ अशुभ बतावे
२ वृष	खाकी	दक्षिण	स्थिर	शुक्र	२ घर का धन
३ मिथुन	वादी	पश्चिम	दुःस्वभाव	बुध	३ भ्राता का
४ कर्क	आबी	उत्तर	चर	चंद्रमा	४ माता पिता वा आरोग्यता
५ सिंह	आतशी	पूर्व	स्थिर	सूर्य	५ संतान वा बुद्धि का
६ कन्या	खाकी	दक्षिण	चर	बुद्धि	६ वैरी और रोग का
७ तुला	वादी	पश्चिम	स्थिर	शुक्र	७ स्त्री और सफर का
८ वृश्चिक	आबी	उत्तर	दुःस्वभा	मंगल	८ मृत्यु और रोग का
९ धन	आतशी	पूर्व	दुःस्वभा	गुरु	९ धर्म और भजन का
१० मकर	खाकी	दक्षिण	चर	शनि	१० राज्य स्थान का
११ कुंभ	वादी	पश्चिम	स्थिर	शनि	११ द्रव्योपार्जन
१२ मीन	आबी	उत्तर	दुःस्वभा	गुरु	१२ खर्च का

ग्रह भेद चक्र

ग्रह	एक राशि प्रमाण	१२ राशि भ्रमण	शुभाशुभ	वर्ण
मंगल	४५ दिन	१॥ वर्ष	न्यून अशुभ	रक्त
शुक	२३ नटघट	१ वर्ष	शुभ	श्वेतहरित
बुध	१८॥ वदघू	१ वर्ष	शुभ	नीला
चन्द्र	२। वर्ष	१ मास	अति शुभ	श्वेत
सूर्य	२०$\frac{1}{3}$ वर्ष	१ वर्ष	महाशुभ	पीत
गुरु	१३ मासचघ	१२ वर्ष	अति शुभ	संदली
शनि	२॥ वर्ष	३० वर्ष	अति अशुभ	काला

चन्द्रमा वृत्तान्त । चन्द्रमा जिस राशि में जाता है उसके गुण और प्रकृति से रोग प्रसिद्धि होता है ।

पूर्व दिशा में मेष सिंह धनु आत्मीचर	दक्षिण में वृष मकर कंया स्वाकी स्थिर	पश्चिम में मिथुन कुंभ तुला वादी दुःस्वभाव	उत्तर में कर्क वृश्चिक मीन आवीचर

चन्द्रमा एक ही राशि में आठों दिशा की सैर करता है आवश्यकता के समय इस रीति से सन्मुख करें ।

पहले	फिर	३	४	५	६	७	८	जोड़
पूर्व में	अग्निये	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०	०
[illegible]घड़ी	१५ घ०	२१ घ०	२६ घ०	[illegible]	१४ घ०	२० घ०	१५ घ०	१३५ घ०

चन्द्रमा के फल

पहला जन्म का शुक्र	२ मनोर्थ पूरा करे	३ धन का लाभ करे
४ [illegible] करावे	५ बुद्धि सुधारे	६ लाभ करावे
[illegible] मिलावे	८ दुख मृत्यु दिखावे	९ धर्म करावे
[illegible] जावे	११ लाभ करावे	१२ हानि करावे
[illegible]	पांव पर ४ ८ १२	पीठ पर ६ ९
[illegible]र २ फिरावे	हानि करावे	दिल पर ७ १० ११ सुख दे

संक्रां
लग्न
के १
अर्थात्
होगा ।
फिर ५

मास और बार वृतान्त

चन्द्रमा शुक्ल पक्ष की पड़वा से कृष्णा प
की ३० तक होता है आदि के १० दिन उ
मध्य के १० दिन मध्यअंत के १० दिन नि
और शुक्ल पक्ष की आदि की पहली व
रविवार और चन्द्रवार बड़े उत्तम कहाते
तीन दिन में जिस शुभ कार्य का आरम्भ करें वह
शीघ्र सिद्ध हो ।

यन्त्र

उत्तम मासवार वृतान्त	माघ-चैत्र आषाढ़-क्वार	माघ वैसाख श्रावण कृ[illegible]
मार्गशिर फाल्गुन ज्येष्ठ भाद्रपद	मध्यम	निकृष्ट
रवि॰ चन्द्र॰ गुरु॰	शुक्र- बुद्ध	शनि - भौ
[illegible]वशीकरन-धनलाभ गर्भ स्थिति- खेती -आकर्ष ण-देहबल - आरोग्यता	दो मित्रों में जुदाई कराना वस्तु बेचना- गर्भ स्तम्भ न भूतादिक [illegible] निवारण	धन हानि-ग[illegible] मारण उच्चा[illegible] [illegible]-भयवं

रात्री की और दिन की ६० घड़ियों में १२ लग्न बीतते हैं उनका प्रमाण इस चक्र से जानों।

मेष	वृष	मिथु-	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुंभ	मीन
३ ३८	४ ११	५ ३	५ ४३	५ ४७	५ ३८	५ ३८	५ ४७	५ ४३	५ ३	४ ११.	३ ३८

लग्न जानने की रीति

जिस मास में लग्न की सक्रांत होती है प्रातः काल वही लग्न होती है और ज्यों-ज्यों सक्रांत के अंश जाते हैं लग्न के प्रमाण में उतने ही अंश गये पर सूर्योदय होता है।

उदाहरण—पौषवदी १३ को वृश्चिक की संक्रांत के १३ अंश गये ३० में से तो वृश्चिक लग्न का प्रमाण ५। घड़ी ४५ पल है तो एक अंश के ११॥ पल हुए १३ अंश की १४९॥ पल अर्थात् २ घड़ी २९॥ पलके उपरान्त सूर्योदय होगा फिर घड़ी ३॥ पल १५॥ अमल वृश्चिक फिर ५ घड़ी १ पल मकर इसी प्रकार ६० घड़ी में

सब बीत जावेंगी १२ दिन के १२ दुघड़िये
जानने की रीति एक वार के पीछे दूसरा

मुहूर्त

दिन	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	
रवि	र-	भु	बु-	च-	श-	बृ-	म-	र-	भु-	बु	चं	
चन्द्र	चं-	श-	बृ-	मं-	र-	भु	बु	चं-	श-	बृ-	मं-	
भौम	मं-	र-	भु-	बु	चं-	श-	बृ	मं-	र-	भु-	बु-	
बुध	बु-	चं-	श-	बृ-	मं-	र-	भु	बु-	चं-	श-	बृ-	
बृहस्पति	बृ-	मं-	र-	भु	बु-	चं-	श-	बृ-	मं-	र-	भु-	बु
शुक्र	भु-	बु-	चं-	श-	बृ-	मं-	र-	भु-	बु-	चं-	श-	बृ
शनि	श	बृ	मं-	र	भु-	बु-	च-	श-	बृ-	मं-	र-	भु

आता है जैसे रविवार से छठा शुक्र इसी प्रक
रात्रि के १२ दुघड़िये जानो।

रात्रि के १२ दुघड़िये

जानने की रीति रात्रि में पाचवीं गणित पर अगले

दिन होगा जैसे रवि से पांचवें गुरु और भी इसी प्रकार जानो।

रात्रि के १२ दुघड़िये

रात्रि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
रवि	र-	बृ-	चं-	शु-	मं-	श-	बु-	र-	बृ-	चं-	शु-	म
चन्द्र	चं-	शु-	मं-	श-	बु-	र-	बृ-	चं-	शु-	मं-	श	बु-
भौम	मं-	श-	बु-	र-	बृ-	चं-	शु-	मं-	श-	बु-	र-	बृ
बुध	बु-	र-	बृ-	चं-	भ-	मं-	श-	बु-	र-	बृ-	चं-	शु
गुरु	बृ-	चं-	भ-	मं-	श	बु-	र-	बृ	चं-	शु-	मं-	श
शुक्र	शु	मं	श-	बु-	र-	बृ-	चं-	शु-	मं-	श	बु-	र-
शनि	श	बु-	र-	बृ-	चं-	शु-	मं-	श-	बु-	र	बृ-	मं-

एक दिन रात्रि में ढाई २॥ घड़ी ७ दिन तक रहता है।

उस का शुभा शुभ फल

रवि	चन्द्र	गुरु	शुक्र	बुध	शनि	भौम
उद्वेग [illegible]	अमृत	शुभ	चर	लाभ	काल	रोग

तिथि वृत्तान्त

कृष्ण पक्ष की १ तिथि में सूर्य का अमल रहता है ६ तिथि में चन्द्रमा का इसी प्रकार शुक्ल पक्ष की १ तिथि में चन्द्रमा का अमल और ६ में सूर्य का अमल रहता है इसलिये सूर्य के अमल में चरकार्य और चन्द्र के अमल के स्थिर कार्य

शुक्ल पक्ष में		कृष्ण पक्ष में	
चन्द्र तिथि	सूर्य तिथि	सूर्य तिथि	चन्द्र तिथि
[illegible] २ ३	४ ५ ६	१ २ ३	४ ५ ६
[illegible] ८ ९	१० ११ १२	७ ८ ९	१० ११ १२
[illegible]२ १४ १५	~~~~~~	१३ १४ १५	~~~~~~

करने चाहिये चरकार्य वह कहाता है जो थोड़ी

देर रहे जैसे नाव पर घोड़ा चढ़ाना जो शीघ्र उत्तर आवे रोगों का इलाज जो जल्द आराम पावे रसोई जेमला जो शीघ्र पच जावे आकर्षण मारण उच्चाटन व्यापार विद्या सीखना स्थिर कार्य वह हैं जो बहुत मुद्दत तक रहें मकान बनाना बाग लगाना गद्दी पर बैठना जलपीना बसी गांव बसाना इत्यादि जानो।

अति उत्तम शुभ तिथि किसी संक्रान्ति में रविवार सप्तमी तिथि हो तो जो कार्य उसमें किया जाय तो निस्संदेह सिद्धि हो।

नक्षत्र वार संज्ञा युक्त

नक्षत्र	संज्ञा	दिन	कार्य
पूर्वाषा उतराषा उत्तर	ध्रुव संज्ञा		बीजबोना - मकान बनाना - बाग
भा - पूणर्वाषा - उत्तरा	अर्थात्	रवि	लगाना स्थिर कार्य करना - गद्दी
भाद्र पर रोहिणी	स्थिरकार्य		पर बैठना - ग्राम बसाना
विशाखा - कृत्तिका	मिश्र	बुध	अग्नि काज हो मादि - यंत्र जलाकर
			विजार दागना
स्वांतिपुनर्वसु - श्रव	चरजल	चन्द्र	गज तुरंग नाव पर सवार कराना
ण धनिष्ठा - शतभिषा	संज्ञिक		सैर करना - यात्रा
मृगशिर - रेवती	मृदु	शुक्र	गाना सीखना वस्त्र, गहना पहनाना
चित्रा - अनुराधा	मित्र		मित्री संक्रीडा करना - मित्र से मिलना वसीकरण करना
पूर्वाफा - पूर्वाषा -	अक्रूर	मंगल	धातु अग्निमें जलाना - विष देना
पूर्वाभा - भरणी - मघ	०	०	शस्त्र मारना
हस्त अश्विनी - पुष्य	लघुसी	०	स्थिर कार्य करना, दुकान - व्यापार
अभिजित	पल्लव	गुरू	रति करना - गहना गढ़ाना - शिल्प -
	संज्ञा	०	विद्या सीखना - पटेबाजी तिरंदा
			जी. कुश्ती करना
मूल - ज्येष्ठा	तीक्ष्ण	०	डाकिनी स्यारी का मंत्र सीखना
आर्द्रा - श्लेषा	दारूण	शनि	मूठ चलाना - जादू करना -
योग २८	०	०	बैल नाथना मारण उच्चाटन घोड़ा फेरना

भद्रा वृत्तान्त

स्थान	चन्द्रमा में भद्रा				शुभा शुभ
मृत्यु लोक में	कुम्भ	मीन	वृश्चिक	सिंह	बहुत बुरे सब काम बिगड़े
स्वर्ग में	मेष	वृष	कर्क	मकर	संपूर्ण कामना सिद्धि करे
पाताल में	कन्या	मिथुन	तुला	धन	धन का लाभ करावें

भद्रा की तिथि

शुक्ल पक्ष में				कृष्ण पक्ष में			
आदि की तिथि में		अंत की अर्द्ध तिथि में		आदि की अर्द्ध तिथि में		अंत की अर्द्ध तिथि में	
८	१५	४	११	७	१४	३	१०

५ नक्षत्र तिथि संबंध से निकृष्ट है

१ में मूल	५ में भरणी	८ में कृतिका	९ में रोहिणी	१० में श्लेषा

इनमें कोई शुभ कार्य करना चाहिये।

५ नक्षत्र अर्थात् पंचक में शुभ कार्य करना उचित नहीं

धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती

दिशाशूल

सोम शनिश्चर पूरबवासा ।
रवि शुक्कर पश्चिम के पासा ॥
बुध मंगल उत्तर की याहीं ।
रहे वृहस्पति दक्षिण माहीं ॥
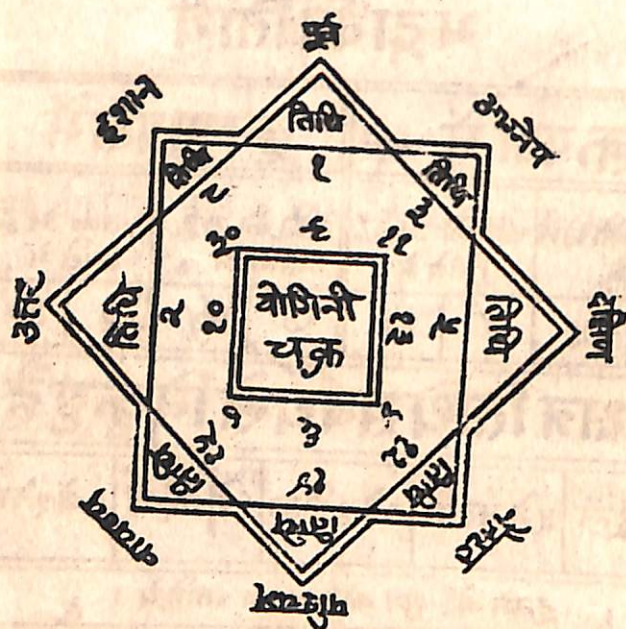
आसण पर बैठिवा की विधि

कर्म चक्र को देख कूर्म के सिर पर आसण बिछाय बैठे तो मंत्र शीघ्र सिद्ध हो ।
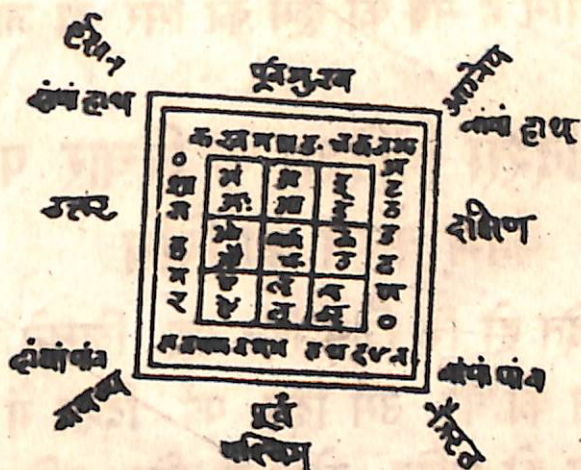
जिस स्थान में पूजन को बैठे उसके नौ भाग करे फिर स्थान के नाम से सिर के अक्षर को जिस भाग में देखे उसके मीनों भाग करे फिर पूर्व अक्षर में जो मास होवे उसी मात्रा के स्थान में आसण बिछावे जैसे का कोठा पहला अक्षर का कूर्म के सिर में है सिर के नौ भाग में ओ की मात्रा उत्तर दिशा के वीचल स्थान में है वही स्थान जिसमें स्थाही लगी है आसण विछोणे का है और इसी स्थान में कूर्म का सिर जानिये कूर्म चक्र में

जितने स्थान है सब को कूर्म का सिर ही जानना चाहिये ।

दिन दिशा विदिशा के विचार पर काम करने की विधि

विदित हो कि जिस दिन यंत्र लिखने और मंत्र जपने को बैठे उस दिन पूर्व दिशा में रखे दूसरे दिन को अग्नि कोण में फिर दक्षिण में इसी प्रकार सातवें दिन उत्तर में रखे ईशान कोण खाली रहे फिर शुभ कार्य हो तो चन्द्रमा और शुभवार शुभ दिशा को सामने और दायें रखे जोगिनी दिशाशूल निकृष्टवार को पीछे और बायें रखे और निकृष्ट कार्य को जोगिनी निकृष्ट दिन दिशाशूल सामने दायें चन्द्रमा मध्यम-बार सन्मुख दायें जोगिनी पीछे शुभवार को कोण में हो तो सामने के कोण में निकृष्टवार हो तो सामने की दिशा में निकृष्टवार को देखे जो

चाहें कि वहुत शीघ्र मनोर्थ सामान्य सिद्धि हो तो शनिवार को आरंभ करे पश्चिम मुख बैठने से चन्द्रमा और सामान्य दिशा और बार सामने शुक्र सामान्य वार दायें जोगिनी ईशान में पीट पीछे के दिन सामान्य खोटा दिन शनिवार पीठ पीछे और उत्तम बार चन्द्र जो वायां है शुक्र को
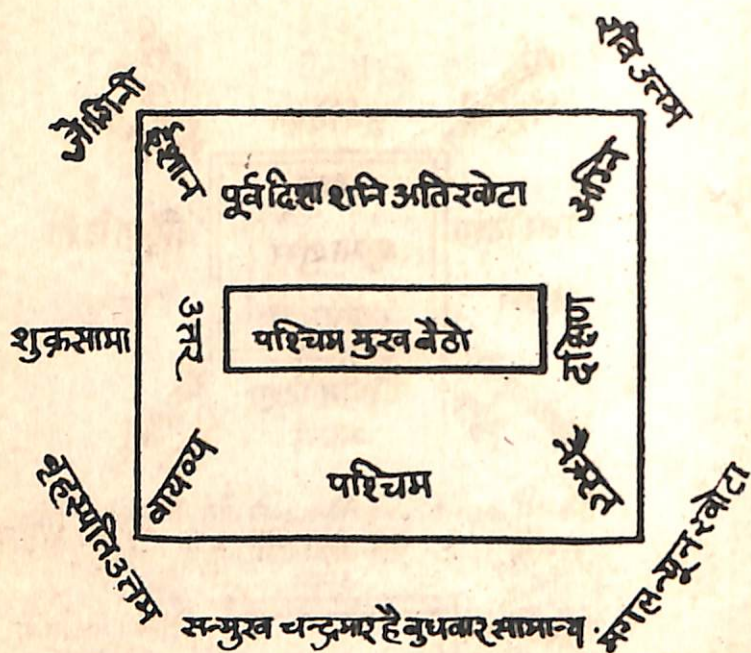
देखता है जोगिनी की दृष्टि मंगल पर जो बांये है बृहस्पति रविवार को देख रहा है किसी अधिकार के बढ़ाने को बैठे तो बुधवार को और ऐसी सूरतहाय उत्तर आवे तो बहुत शीघ्र कार्य सिद्धि हो।

पूर्व मुख बैठने से चन्द्रमा और बुध सामने रविवार पीछे बुध को देख रहा है शुक्र गुरु दायें बायें मंगल जोगिनी शनि दोनों पीठ पीछे
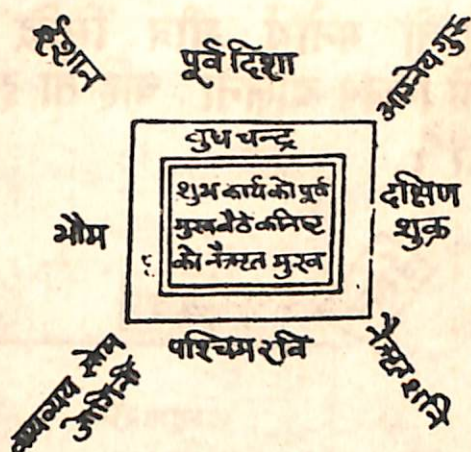
ईशान मुख बैठे चन्द्रमा बुधवार गुरु दायें जोगिनी बायें शनि पीछे हो मंगल भी बायें तुल्य हो और इसी युक्ति से मारन उच्चाटन का आरंभ करे तो नैऋत मुख बैठ शनिवार अति खोटा चिन सन्मुख जोगिनी दायें बृहस्पति शुभवार बांये और चन्द्रमा भी बांया ही जाये अधिकार की प्राप्ती को कहीं जाने के लिये उपाय करे तो रविवार को बैठे पूर्व मुख चन्द्रमा और शुभवार रवि सन्मुख हो बृहस्पति जोगिनि दिशा शूल सहित पीठ पीछे शनिवार अति निकृष्ट बायें

दोनों हो तो मनोर्थ शीघ्र सिद्धि हो किसी के काम में बिलंब डालना चाहे तो इस सूरत पर आरंभ करें।
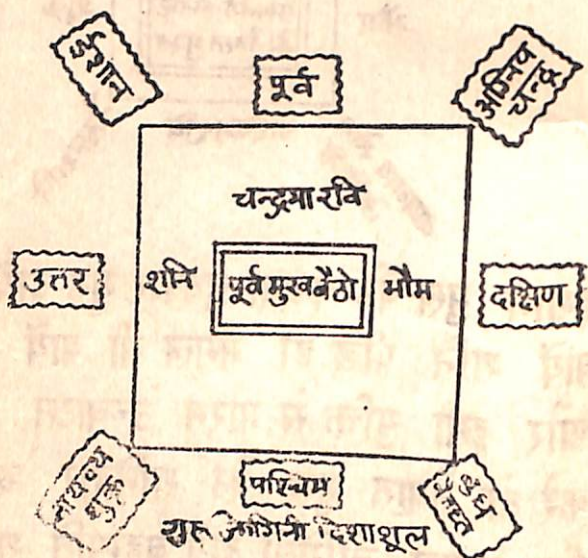
पूर्व यंत्र में सन्मुख जोगिनी दायें शनि दिशाशूल बायें बुद्ध शुक्र पीछे रवि चन्द्र उत्तम और शुक्र पर मंगल की द्दष्टि।

किसी मनोर्थ वैर और क्रोध के लिए शुक्ल पक्ष की पहली बृहस्पति को बायें सुर में बैठे पूर्व

मुख और जोगिनी शुभ कोण शुभ दिशा में हो बहुत शीघ्र सिद्धि की प्राप्ति हो।
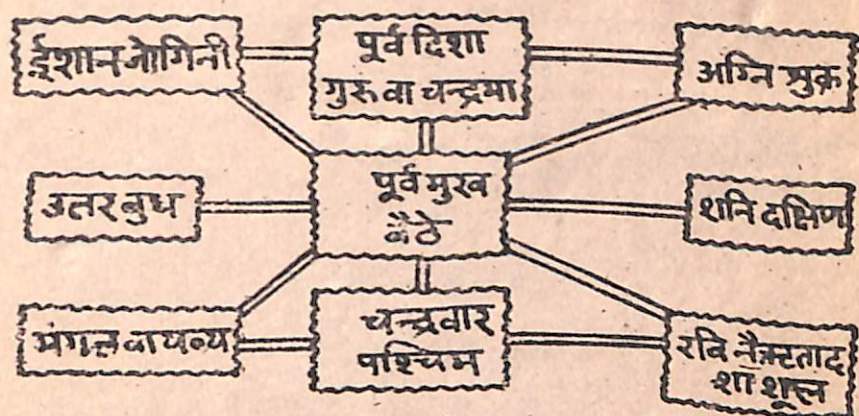
चंद्रमा बृहस्पति सामने चंद्रवार पीछे जोगिनी ईशान में बायें शनिश्चर दिशाशूल दायें शुक्र मंगल सामने कोण में रविवार जोगिनी ईशान आमने सामने कोणों में बुद्ध शनि आमने सामने दिशाओं में किसी को बिगाड़ने का उपाय देखकर बैठे।

ईशान मुख बैठने से शनिश्चर दायें जोगिनी बायें पीछे चन्द्रवार सामने सुन्न है तो इस रीति से निश्चय मनोर्थ सिद्धि हो।
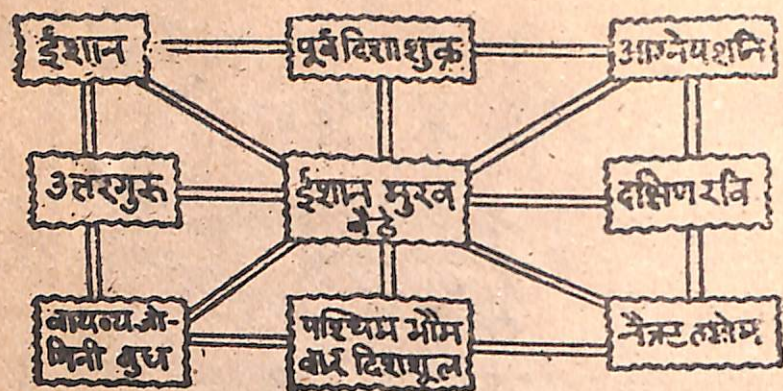
इतिवार विचार ।

मंत्र प्रकृति

मंत्र की चार प्रकृति है और उनके न्यारे २ फल हैं ।

सिद्धि	साध्य	सुसिद्धि	अरि
सिद्धि हो तो समय पाकर काम को बनावे	साध्य हो तो कार्य को नहीं बनावे	सुसिद्धि हो तो कार्य बहुत शीघ्र बनावे	अरि हो तो कार्य को बिगाड़े.
	यंत्र १२ कोठे का		

अठःभज
१२

१
अकडुम

आरनटय
२

अठवत्र
११

खटमल
३

१०
औजफक्ष

४
टघतल

९
ओभपह

७
गछधव

५
उङ.घब

राजनस

६
ठचदश

मंत्र की प्रकृति जानने की रीति।

अपने नाम और मंत्र के सिरे के अक्षरों का १२ कोठे के यंत्र में देखे अपने कोठे से मंत्र का कोठा पहला पांचवां या नवां हो तो मंत्र सिद्धि जानना और

दूसरा छटा दसवां हो तो साध्य है और तीसरा सातवां ग्यारहवां हों तो सुसिद्धि है और चौथा आठवां बारहवां हो तो अरि जानिये। मंत्र सुसिद्धि हो तो उनके जाप से सुख प्राप्ति हो कदाचित मंत्र में तीन या चार बीज हों तो लोभ प्रति लोभ की राह से जो बीज हो तो लोभ प्रति लोभ की राह से जो बीज सुसिद्धि हो उसे मंत्र के आदि में लगावे उदाहरण बैनीराम इस मंत्र सरकशह को जपा चाहता है तो लोम प्रति लोम करने से छः सूरत होती हैं। वह यह है।

१	२	३	४
कशह	कहश	शहक	शकह
	५	६	
	हकश	हशक	

इन छः सूर्तों में तीनों अक्षर क शह १२ कोठे के यंत्र में बैनीराम के सिरे काव ११ वें

कोठे में हैं और मंत्र का पहला अक्षर क उक्त यंत्र के पहले कोठे में है तो ११ वें से तीसरा सुसिद्धि है अति दूसरा अक्षर श यंत्र छटे कोठे में है ११ वें से ६ वां अरि अति निकृष्ट है तीसरा अक्षर ह यंत्र के ६ वें कठे में है ११ वें से ६ वां सुसिद्धि अति उत्तम है जो कि इस मंत्र में आदि अंत के दो अक्षर उत्तम और मध्यम का निकृष्ट है इस लिए ऊपर लिखी ६ सूरतों में २ वां ५ वा ६ वा ६ में से जिस का जाप किया मनोर्थ को को सिद्धि करे और सूरत ३ व ४ निकृष्ट है उनके जपने से बिगाड़ होगा।

इति कौतुक रत्न मंजूष प्रथम पाद

समाप्तम्।

॥ श्री गणेशायनमः ॥

इन्द्र जाल द्वितीय पाद लि०

दोहा

इन्द्र जाल अद्भुत कला सुनो चित दे ख्याल ।
प्रथम एक वर्णन करूं पढ़ौ तरुण वृद्ध बाल ॥
जंत्र मंत्र नहीं तंत्र है करो जुगतियों कोई ।
सो देखे अचरज करै सिद्धि नाम तें होइ ॥
कौतुक यह संसार के बरने जायं अनेक ।
जतन सुने देखे कहूं औरें बुधन अनेक ॥
जैसें जैसें सुमन को तिल की संगत मेल ।
तैसी तैसी वासना कहिये नाम फुलेल ॥

चौपाई

कोऊ ब्रह्म आश्चर्य दिखावै ।
कोऊ नाटक चेटक भावै ॥
कोई इन्द्रजाल ले आया ।
काहू काया कल्प बताया ॥

कोऊ मोहनि लुकांजन करै ।
कोऊ चित्रक मूरति हरै ॥
कौऊ रूप पलटिकें रहै ।
देखै और कछु कहै ॥
कोऊ उड़ान गगन में चलै ।
कोऊ फल फूल विरुति में चलै ॥
जी चाहै तब कौतुक करनों ।
धीरज धरै न मन में डरनों ॥
सो जोगी जो जुगतहिं जानें ।
पंडित वही जी वेद बखानें ॥
जुगतिन भूलै तौ सिद्धि पावै ।
नातर जोग अकारथ जावै ॥
चूकै यत्न सिद्धि ना होई ।
मोकों दोष न दीजै कोई ॥

अग्नि शीतल करन विधि

छन्द

मूल बैंत की खोदि मंगावे । घोड़ा कौखुर

लावै ॥ अग्नि मांझ उनको जो ना वैसो पर चौ यह पावै–अग्नि जरैना करौ भुतेरौ धुंआ बाहर आवै–कपड़ा रुई न लागै ज्यों २ त्यों २ वायु लगावै ।

लागी अग्नि के बुझावे की विधि

ग्राम माहिं घर जरैं किसी के तब यह जतन करीजै।
लोटा जल मंगवाई कूप तें अग्नि ओर मुख कीजैं॥
ठाड़ौ होइ हाथ लै लौटा जल कों इह विधि पीजै।
अग्नि देव को सिर नवाय के बहुविधि विनती कीजै॥
बहुरो सांस जाय जब भीतर तुरत वही जल पीजै।
शीतल होइ अग्नि।जल पीयें सब हन को सुख दीजै॥

जलथंभन विधि

अरलू रुष काढ़िये जादिन कटि माहीं कर लीजै।
कारीगर घर जाइ खराऊं जुगकराइ केली जै॥
पहरें पांय खराऊं दोनों जल ऊपर ज्यों धावै।
नीर बाट में रहै सुतेरो तखा नाहिं चिमावै॥

बाल दूर करण विधि

सात भार चूना के लेवै–इक हरता लमिं लावै।
उभय पीस दोऊ जलसेती बालों पर जो लगावै॥
रहेन रोम जतन यह कीजै–मन में अति सुख पावै।
बार २ मुंडनते छूइन्द्र ज्ञालयों गावै॥

युद्ध में घाव न आइवे की विधि

जहां सफेद होय सरपों का तहां यह जतन करीजै।
पुराय नक्षत्र जान उत्तर दिशिमूल का दिकर लीजै॥
होय युद्ध जब पड़ै लड़ाई जब यह सिर घर लीजै।
लगे घाव लड़ै बहुतेरो लोहू लोह न भीजै॥
जब लग मुख से बोल न बोले तब लग धाव न आवै।
कोई मार सकै ना युद्ध में कायरता सब भागे॥

युद्ध में कुशल सों आइवे की विधि

सूरज ग्रहण कृष्ण चौदस को आदितिवार जो पावै पाटल की जड़ खोद मंगावै। जो इसकी सुधि आवै। सबै लराई मुख में राखै ये मुख सी नहीं

बोले। क्षेम कुशल जो जानें जी की आनन्द करि रन डोलैं ॥

चलने की विधि

सात काक जंघा की मिलि जड़ और मैनफल आनें।
दोनों वस्तु एक एकसी करके भोज पत्र मिल सानें ॥
तीनों वस्तुन पीस दूध सों पगतर लावै।
दूध होय इक रंग गाय का पशु पंछी नहीं पावै ॥

तथा

परले अग्नि वंसलोचन को श्वेत भांगरा लीजै।
माखन दूध आनि छेरी को पुष्य नक्षत्र में कीजै ॥
मिहीं पीसि तरवा में लेपै दोय घड़ी सुख रावै।
मारग चलै कोई ना पूछे उड़ौ पवन जो जावै ॥

ढोल बजे मदला नहीं दीखै

गूगल लेय वंसलोचन को अरु पीपल का पानी ॥ करे लेप मिल ढोलक सेती तीन वस्तु मिल सानी ॥ दोनों पुरी सुकाय लेप करि कोऊ

ताहि बजावै ॥ शब्द सनैंम दला नहिं दीखै क्योंहूं नजर न आवै ॥

सभा काणी दीखै

वृत्त आमेर के ऊपर जो नीम लगौ कहूं पावै ले आवै फल फूल मूलसों ताकों छांह सुखावै ॥ पीसकूट कर चूरन कीजै बाती एक बनावै ॥ सो लैधरै के माहीं तेल नीमको पावै ॥ जिस २ ऊपर लड़ै उजेला कानी सभादि खावै ॥ जब ही बंद करें दीया कों ज्यों के त्यों दरसावै ॥

पाणी का मठ दृष्टि आवै

कोरा घड़ा मुंगाइ मृत्तिका आक दूध पुट-दीजे। पानी भरे मठा दिखरावै तब यह कौतुक कीजै ॥

चौकी सों न उठिबे की विधि

शनिशरी कोई बन में जावै। अंडी रूख जहां वह पावै डोरा रक्त बांधि शाखा पर न्योता दे निज घर को आवै प्रातसमयरविवार जायके शाखा वही

तोड़कर लावै । गूगरखे वे रवि दिन माहीं ॥ जबकूकर रतिकर तो पावै । शाखा वही लिंगपर मारै भिन्नभाग दोई हो जावै। एक भाग पृथ्वीपर गिरे दूजा भाग हाथ रहयौ आवै। दोनों को लागूगर खेवै सिद्धि होय जब जतन उपावै। चौकी पर जो बैठा पावै ॥ करका भाग लायकर छावै। चौकी सो उठि सकन न पावे ॥ कोटि उपाय कीये भिर्मावै ॥ गिरा भाग पृथ्वी जब छावै। चौकी से वह उठने पावै ॥

तथा

नदी मिले जो जिहि के ताईं दोऊ करार जाने।
आपा जाया करा भरे भीतर दह की मांटी आने॥
आदिति वार करे रति कू कर पूछ वारता आनें।
मांटी वार दुहुन की गोली तेल अंकोल में वानें॥
चौकी में गोली चिपकावै उठिभ सके भिर्मावैं।
गोली काढ़त ही उठि सकै मन की चिन्ता जावै॥

दिन में तारे दीखिवे की विधि

चौपाई

सुर्मा सेतु मुगावै कोई। ताकों पीसि धरे वह लोई॥
फूल अगस्त को रस जो लेई तामें राखे सुर्मा भेई॥
तीन दिवस लों रस में धरै। चौथे पीस जो मैदा करै॥

दोहा

सो सुर्मा अंजन करै दृष्टि गगन में राखि।
दिन में तारा दीखि हैं जगत भरे सब साखि॥

निसाना पर तीर लगै

पांख उखारि मुगावै कोई।
सो वह पर कर गस का होई॥
तीन पांख का राखे तीर।
खेल करे राखे मन धीर॥
आगे होइ निसाना धरे।
मछली का कांटा उस भरै॥
तीर चलावै सन्मुख वाई।
चूकै नहीं मार ले जाई॥

कपड़े की ओट में निशाना मारिवे की विधि

तुपक मांझ पारा भरे गोली डारे नाहिं।
फैर करे पंछी मरे कपड़ा दाग नरवाहि॥

मच्छी पैदा होने की विधि

वेरी की लाख मंगाइ के अराडा मछली लाय।
तोला २ तोल में दुहुन पीस धरवाय॥
एक उंगली पर ले उसे चूल्हा माटी लाय।
थाली में जल नांखिकर तामें दोऊ मिलाय॥
थाली पर थाली ढके घड़ी जब एक होइ।
मछली देखे जल विषै कितनी पैदा होइ॥

मरी मछली जल में पैरे

मछली मरी मुंगाइ के कीजै वही उपाय।
तेल भिलावा चुपड़ कर जल में तिन्हें गिराय॥
पैरन लागें मछलियां देखि अचम्भा आय।
इन्द्रजाल विद्या सही कर देखो चितलाय॥

बुझा दीपक बिना अग्नि जरै

दीपक बुझा रहै गुल जरता तो यह जतन बनावै ।
गंधक और हरताल कपूरे सब महीन पिसवावै ॥
चुटकी भरकर नाखे गुलपर तुरत दिया बर जावै ।
जबलों गुल की अग्नि न जावे तब लों खेल करावै ॥

अनोखा तमाशा

जुगनूं का सिर काटि हिरन की चरबी मांझ लपेटे ।
तिहि की बाती बान जरावै खेल अनोखा भेटे ॥

दीपक बिन उज्यारा होय

तब कीले हरिताल और मुकत्तर सिरका ।
सीसा में भरि धरै होय उजियारा तिही का ॥

पानी में दीपक जरै

चौबोला

चीनियां कपूर लाय बाती कीजे ।
पानी में नाखि दीयारो शन कीजे ॥

चांदना उसी का सब घर में होवै।
इस करतब को देख लोग हैरां होवै॥

तथा

बकरी दूध समान माजुफल लीजिये।
दुहन पीस रुई मांझ सात फुट दीजिये॥
ताकी बाती बनाय नीर में नाखिये।
जल में बाती वरै सु अचरज माखिये॥

तथा

देखिरनी के दूध में रुई लाय फुट सात।
बाती वार दिया धरैं ताहि बरावै तात॥

तथा

राल कपूर एक टांक।
पीस मिलावे जल में लांक॥
दाय जले अचम्भा आवे।
बाजीगर यों खेल दिखावें॥

दीपक का उजाग न हो

भाग समन्दर का मले किसी वस्तु पर लाय।

दीप के सन्मुख धरे उजियारा घट जाय ॥

दो दीपक लड़ैं

एक दीपक में भरि धरे चर्बी लियाँ लाय ।
दूजे में चर्बी भरे व करा की मंगवाइ ॥
बाती दुहुन जराय के सन्मुख दुहुन धराय ।
जवै बुझाके एक कों दूजे आय बुझाय ॥
तबलों व हहू बर उठे बुझबे ताहि फिर आय ।
ऐसे ही जब एक कों आके आप बुझाय ॥
दूजा दीपक बर उठे बुझन न एकहु पाय ।

दांत मुखसों निकसे

सिरस बीज की मालकरि बालक के गरबांध ।
उपसे मुखसों दांत सब कटें कष्ट के फांध ॥

चांदनी नजरे

चीनियां कपूर और हरदी रसपान ।
सबको एकत्र करि गोलियां जो बान ॥
चांदनी पै गोली धरे आग मांझ पजरे ।

निश्चैं तू जानले चांदनी भीन जरे ॥

धुंध जाती रहे

सेती चिरमिठी पानरस आंजे आंखिन माहिं।
धुंध मिटे दृष्टि बढ़े देख लेहु कर ताहि ॥

सर्प विष हरन विधि

नये कमल गट्टे की मिंगी न हनी पीस मंगाय।
सुर्मा जो नैनन में आंजे तुरत रोग मिटि जाय ॥

तथा

नीला थोथा पीस के नहना तुरत मंगाय।
नासा माहि फूंक दे तुरन्त रोग मिटि जाय ॥

सर्प खाये की औषधि

सर्प खाये को कहत हूं तोसों सहज उपाय ॥
गूदा काचे आंब को पीस छान पिलवाय ॥

धतूरा विष हरन विधि

गूदा पेड़ पंवार का मांसे चार मंगाय।

पानी में तिहि पीस के बेगी छान पिलाय ॥

बावरे कूकरा को विष जाय

जाकों काटे बावरो कूकर सो वेगी मंगवाय ।
विष्टा मूंसा पीस के सूखी ही बंधवाय ॥
विष उतरे पीड़ा टरे काटे बहुर न आय ।
नीको होके रेवड़ी चूहन को खिलवाय ॥

बीछू पकड़न विधि

रसमूली के पातक मले जो करसों लाय ।
बीछू को पकड़ें सही डंक मारे न ताय ॥

बीछू विष हरन विधि

कीड़ा एक आक का लावे बीठ छपकली लीजे ।
बड़ी हड़ और मैनसिल दोनों आन इकट्ठी कीजे ॥
गोली करके चिरमिठी जैसी नहनी पीस बनावे ।
जहां डंक बीछू का लागे जलसों पीस लगावे ॥
पीड़ा जाय और निर्विष हो दुख भागे सुख आवे ।
ऐसा जतन करे जो कोई बहु असीस वो पावे ॥

तथा

इक रस बेर पलास पापड़ा आक दूध में मेवे।
नहना करे दूध में पीसे गोली कर रख लेवे॥
लाचा होय डंक बीछू का घिसके तुरत लगावे।
उतरत बार न लागे बीछू दुख खोवे सुख पावे॥

तथा

फल अंकोल का तेल कढ़ाके ले बासन में धरिये।
जामन और अनार फूल को तेल बराबर करिये॥
निर्विष होय डंक तब त्यागे बीछू लागे जाके।
जो निर्विष के अंग लगावे विष चढ़ावे ताके॥

कलाबतू बनाने की तरकीब

खालिस चांदी की लगड़ी बनाकर सोहन या और किसी चीज से ठोक कर रबड़ बड़ी करदे फिर उस पर पारा लचाकर मोटावर्क या सोने का पतला पत्रा लपेट कर तावदे इससे पारा उड़ जावेगा और सुनहरी वर्क चांदी की लकड़ी की

बारीक सलाइयां बनाकर जंत्री में तार खींचकर जितनी चाहिये उतनी लम्बी बारीक करले और हतौड़े से चपटी करे पीछे उसके लेप और जोश देकर जिला देवे फिर बढ़े हुए रेशम पर इस पत्तरे को चढ़ा देवे इस तौर से बनाने में चांदी जियादा कम खर्च होती है और दूसरी सहज की तरकीब नीचे लिखी है।

दूसरी तरकीब

खालिस चांदी का जितना चाहे उतना बारीक या मोटा तार जंत्र में खींचकर चप और अलक-ट्रिक ब्याटरी (अर्थात् वर्की यंत्र) के जरिये से मोटा या पतला जितना मुलम्मा मंजूर हो उस चपटे तार पर चढ़ाकर उसको जिलादे और बटे हुए पीले रेशम पर चढ़ावे।

सोने की चीज को जिला देने की तरकीब

गेरू दो हिस्से. नौसादर दो हिस्से इन दोनों

को पानी में पीसकर साफ पत्थर पर पीसे। फिर उस बनाई चीज पर लगाकर आग पर सुखलावे। धुआं मौकूफ होने पर निकाल कर ठंडे पानी में बुझावे और साफ पानी से धोकर फिर गेरू पानी में पीसकर उस चीज से लगावे और आग पर सुखावे और बुर्श या साफ कपड़े से पोंछकर जिला देने की सलाई से मुहरा करे।

मुरदासंग बनाने की क्रिया

जितना चाहे उतना सीसा लेकर एक रंजन में रखे और उस रंजन को चूल्हे पर टेढ़ा रखकर चूल्हे को चारों तरफ से बन्द करदे और नीचे आग जलाकर लोहे के गज से चलाया करे और सोहन मक्खी और ईंट का चूरन थोड़ा २ उसमें डालता जाय इससे सीसा जलकर खाक हो जायगा सो निकाल लिया करे इसी तरह सीसे की खाक हो जाय तब उसको निकाल कर मिट्टी के मोटे कूंडे में डाले और उस कूंडे के मुंह पर

एक बड़ा रोजन काठी करा रखकर भट्टी पर रखदे और बारह पहर खूब तेज आग को जलावे इससे उहकी सब खाक नीचे जम जायगी उसको निकाल कर रख छोड़े यह दवा व मरहम में काम आती है इसका नाम मुरदासंग है।

तलवार को जौहरदार करना

तेजाब फारूक ८ तोला और गरम पानी ४ तोला दोनों को मिलाकर तलवार को ताव देकर उसमें बुझावे तो जौहरदार हो जावे।

तरकीब रस कपूर की

जर्द मुल्तानी मिट्टी, फिटकिरी, नमक, दर्या की सफेद रेती और पारा समभाग और फटकिया संबुल आधा भाग सबको जुदा २ बारीक कूटकर चलनी में छाने। और पारे" में मिलाकर डमरू यंत्र में रखकर चार पहर तक धीमी आगदे फिर एकसौ बीस पहर तक खैर बेरी या बबूल की

लकड़ी की तेज आग देवे। इसके ऊपर के बर्तन में रसकपूर जम जावेगा। सो जंत्र ठंडा होने पर निकाल लेवें और उसको बनाते वक्त धुंआ को मुंह या आंखों में न जाने देवें क्योंकि धुंआ बड़ा नुकसान देने वाला होता है।

तरकीब रसिया सिंदूर (अर्थात् रूमी) शिंगरफ

गंधक दस तोले, नौसादर पांच तोले, मिला-कर खरल करे जब काजल सा हो जाय तब आतिशी शीशी में भरकर गरम रेत की हांड़ी में जौहर उठावे और शीशी को तोड़कर सिंदूर को निकाल लेवे यह सिंदूर दवा के काम में आता है।

पारे का कटोरा बनाने की विधि

लोहे का तवा चूल्हे पर रखकर उस पर नीला थोथा बारीक पीसकर फैलावै। उस पर पारा डालकर नमक बिछावे फिर उस पर प्याला

औंधा रखकर उसके चारों तरफ गेहूं का आटा पानी में उसन कर लगावे और किनारे बन्द करें और उस पर ठंडा पानी डालकर नीचे आग जलावे और खूब पकावे। जब पारे का गोला बंध जाय तब जो चीज मंजूर हो बनाकर सुखलावे और डोल यंत्र में बकरे के पेशाब से भीगा रख कर गरम करे। इससे वह चीज साफ चांदी की सी रंगत सरल हो जायगी। फिर उस चीज को चाहे जिस काम में लाओ।

इसी प्रकार

पारा और कलई दोनों को देव चंपा के दूध में खरल करने से एक दूसरे से कभी जुदा नहीं होता है फिर इनकी जो चीज चाहो सो बनालो और सुखाकर काम में लाओ।

तथा

इसी प्रकार लोहे की कड़ाही में अलसी के

तेल से पारे को पकावे इससे भी पारा जम जाता है फिर उसकी जो चीज चाहो मूर्तियां कटोरा बनालो ।

तथा

इन दोनों तर्कीबों से जो चीज बनाई जावे उनको बहुत सख्त करना चाहो तो उनको नीबू के रस में चन्द रोज रक्खो तो वह सख्त हो जायगी ।

सोने के मुलम्मे पर उजला देना

साफ नमक और गंधक को एक जानकर पानी में मिलावे और मुर्गी के अंडे के छिलके में रखकर इतनी आंच दे कि जिसमें छिलका न जलने पावे फिर उस पानी को मुलम्मे की चीज पर लगावे तो मुलम्मे की सूरत बहुत खूबसूरत और साफ दिखाई देगी ।

सोने के मुलम्मे का दाग दूर करना

फिटकरी को गरम पानी में जोश देकर दाग

खाई हुई मुलम्मे की चीज को उसमें गोता देकर साफ करें दाग छूट जायेगा।

सोने का मुलम्मा छुटाने की क्रिया

नौसादर एक भाग, शोरा आधा भाग दोनों का बारीक चूर्ण करे और तिली के तेल में मिलाकर मुलम्मे पर लेप करे और उस पर थोड़ा नौसादर और शोरे का खुश्क चूर्ण बुरके और आग पर ताव दे और गरम २ एक रकाबी में ठोक कर सफूफ को झाडले उसी में निकल आवेगा।

हर एक धातु पर सुनहरी रंग चढ़ाने का पानी बनाने की तरकीब

उम्दा धुली गंधक का सफूफ दो औंस या बरसात का पानी जोश दिया हुआ आधी बोतल उड़ेल कर हिलाना और आग पर रखकर बीरा दखन ढाई तोले शामिल करके खूब जोश दे और

नीचे उतार कर कपड़ छन कर शीशे में भर रखे जब किसी चीज पर रंग चढ़ाना हो तो उसको चूल्हे पर रखकर उस चीज को उसमें डालकर जोश देना उस पर सोने का रंग होगा।

तरकीब दूसरी

पीला एलिया शोरा तूतिया सब्ज हर एक चीज तोल में बराबर लेकर कूटकर पानी में डाल अम्बीक यंत्र अर्क खींचे पहले तो अर्क निकलेगा उसको फेंकदे और पीछे जो पीला अर्क निकले उसको जिस धात पर लगावे उस पर उम्दा सुनहरी रंग चढ़ता है।

तरकीब फुलभड़ी की

शोरा और कोयला ढाई २ तोले गंधक सवा दो तोले बीड ८ तोले।

तरकीब फुलझड़ी दूसरी

शोरा २८ तोले, उम्दा बंदूक की बारूद ४८

तोले दोनों को खूब बारीक पीसकर उसमें उम्दा बीड ८ तोले मिलावे तो फुलझड़ी भरना बहुत उम्दा और लासानी परन्तु शोरा बंगाली और बारूद विलायती उम्दा होवे।

गुलरेज फुलझड़ी

शोरा १२ तोले गंधक और कोयला एक २ तोले लोहे का बुरादा ३ तोले ले।

वजन महताब का

शोरा १० तोले, गंधक ४ तोले, हरताल १ तोला, नील ३ माशे लेकर बनावे।

मुर्गी का अण्डा कूदे फांदे

चौपाई

मुर्गी का अण्डा मंगवावे
सिर पर उसके छेद करावे।
एक टांक पारा जो लावे
सो अण्डे के मांझ भरावे॥

दोहा

रूमी मस्तंगी लायके करो छिद्र को बन्द ।
धरे धूप में दोघड़ी करे कूद और फान्द ॥

नीबू उछले कूदे

नीबू में पारा भरे और नौसादर लाय ।
उछल कूद तड़फन लगे विधि कर गहो न जाय ॥

कबूतर के अंडे पर जैसा चिन्ह बनावे वैसा ही बच्चा होवे

जहां कबूतर श्वेत हों नरमादी तहां जाय ।
उनके अराडे पर लिखे जा विधि कहूं बनाय ॥
नौसादर काजल लहे और भिलावा लाय ।
तीजा सिर का मेल कर लिखिये जो मनभाय ॥
फिर अराडे को लायकर मादी तर रख वाय ।
बच्चा वैसा होयगा अद्भुत रूप दिखाय ॥

घाणी का तेल ऊंचा होय

बिष्टा स्यार माफ जो होई ।

झड़बेरी की गुठली सोई ॥

नांगो होय रविवार जो आनें।

धोके ताकी माला बानें ॥

रवि दिन खररति करता पावे।

उसके गले में माला नावे ॥

फिर उतारकें वाकों लावे।

धाणीं साम्हीं ऊंची उठावे ॥

धाणी तेल तुरत हो ऊंचा।

भूले तेली सुधि-बुधि कूंचा ॥

अन्य प्रकार

दांतों तर दावे जो माला।

फूटे बाजा पर मरसाला ॥

जो दांतों तर लावे माला।

टूट जाय लकड़ी तिहि काला ॥

मंत्र

ओं नमो इसेश्वरं कुरु २ स्वाहा ३१ बार जपे।

पनिहारी का घड़ा टूटे

दीत वार उत्तम दिवस यह जतन उपावे ।
वागर लिपटी रुख जिहिं तिहिं शाखा लावे ॥
प्रथम शनिचर जाय के तिहि तिन्योता करिये ।
तहां सवेरे जायके शाखा लेटरिये ॥
घर आ गूगर खेइके तिहिं सिद्धि जो कीजै ।
घाट वाट पनिहारी के लाङ्गादि जो दीजै ॥
लाघि चले पनिहारी गिरे घट सिर का फूटे ।
देख लोग सब हसें लाज की डोरी टूटे ॥

तिलक राज सभा जीतने का

पक्का फल अंकोल मंगावे और मैनफल लावे ।
गौ दूध में पीस दुहून को गोली बड़ी बनावे ॥
जामन सम जो गोली करके छाया मांझ सुखावे ।
पोला सींग गौ मंगवा के गाया दूध पकावे ॥
सींग मांझ गोली को राखे दिवस सात जब बीतें ।
ऐसा जतन करे जो कोई राज सभा में जीते ॥

बहती नाव थमे

बहती नाव जहां कोई दीखे तहा विलंब न करिये।
जहां छिद्र नवका में होवे तामें गोली धरिये ॥

कोल्हू चलता रुके

साबुन पर स्याही लगाय के कोल्हू में जो नाखे।
चलता कोल्हू रुक ही जावे तेली पद मुख राखे ॥

मुर्गा बांग न दे सके

रांग एक दिरम ले बांधे मुर्गा के जो गर में।
बांग देने से मुर्गा छूटे जतन करे जो घर में ॥

नींद आवे

हरियल चिड़िया की लै छैरी।
दूजी मिर्च मंगावे फेरी ॥
तिन्हें तुरंग छाग में साने।
अंजनत कर नींद जो आवे ॥

नींद न आवे

नौंन मिरच और सोंठ मंगावे।

तीनों इकतर पीस धरावे ॥
सात दिना लों जो नर खावे ।
ताकू नींद कबहूं न आवे ॥

तथा

एक दो तोला बुन मंगाय के आध सेर जल नावे।
चूल्हे धरे अग्नि को बारे आधा जल जरि जावे ॥
तब उतारकें मिश्री नाखे सीर गरम पी जावे ।
सगरी रैनि नींद नहीं आवे करै जो कुछ मन भावै ॥

तथा

मांखी सिर की सुई छोड़ि के सिर को काटि जुलावे।
ताहि जराय नैन जो आंजे ताकों नींद न आवे ॥

कोड़ी का नाम रूप गुण

प्रथम हंसनी

श्वेत रंग की हंसनी छोटी हलकी होय ।
अति कोमल उज्जवल सरस जल में पैरे सोय ॥
हंस पदी में पीसिये पाप ताम्र मिलाय ।

ताहि हंसनी में भर दीजे मुख बंधवाय ॥
अपने मुख में जो धरे इस कौड़ी कों लाय ।
सर्व सिद्धि आवे तहां रोग न उपजे ताहि ॥
जो काटे ता पुरुष कों सर्प कदाचित कोय ।
विष तन पर नाहीं चढ़े हानि कछु ना होय ॥

द्वितीय मृगी

मिरगी को सिर पेट मुख पीठ जु पीली होय ।
मृग मूत्र के ठौर की माठी लावे कोय ॥
तामें पारा सानि के मृग नक्षत्र जब होय ।
ताकों कौड़ी में भरे धरे जो मुख में लोय ॥
जहां जाय दरबार में राजादिक बश होय ।
कामिनि संग जो रति करे कभू थकित ना होय ॥

तीसरी व्याघ्री

धुआं के रंग होत है तासु व्याघ्री नाम ।
जड़ी व्याघ्री रस विषें पाए सोंले काम ॥
पारा रस में सानिके कौड़ी में भरवाय ।

फिर वाको मुख बन्द करि गूगर धूप दिवाय ॥
जोले राखे मुख विषेंदू इस कौड़ी को लोय।
सिंह होत दृष्टी पड़े देखें अचरज होय॥

चौथो सिंहनी

रंग सुनहरी सिंहनी कौड़ी कों जो लाय।
पारा और कढ़ाइ रस दो उनको मिलवाय ॥
भरि कौड़ी में मोमसों करे बंद मुखतारा।
मुख धरि जावे रण विषें हार न आवे पारा ॥
सिंह रूप जिहि को भलो देख डरें नर नारि।
कर बांधे जे पाय है जुवा राज दरबार॥

भूख प्यास बंद हो

लट जीरा का चावल लावे।
गाया दूध मंगावे रवि दिन खीर पकावे ॥
ताकी ऊंगा आन मिलावे ।
पारा सोंठ से बंद करे मुख पवन बडन ना पावे॥
जल में गादि करे संकल्प भूख प्यास ना लागे।

दिन बीत तब काढ़ि खाइये, भूख प्यास तब लागे ॥

घर में साप न रहे

चरबीसिंह जहां धरे और धरे जहां प्याज ।
निकसि जायं तिहि ठौर ते सर्प सर्पिनी भाज ।

माखी निकसे

नर्गिस मूल अकरकरा अरु गंधक को लाय ।
छिड़के जल में बांटि के तहा न माखी आय ॥

तथा

दांत गाय को छाछ में पीस धरे जो कोय ।
जिहि जामें गाढ़े उसे माखी रहे न कोय ॥

मूंसा निकसें

दायें हाथ ऊंट का नखले जिहि घर में जर बावे ।
मूंसा भाग जायं तिहि घर सों एक रहन न पावे ॥

तथा

खार समंदर लायके आटे माहिं मिलाय ।

चूहों को डारे कोई तुरत निकसि सब जायं ॥

तथा

एक मूंसा को पकड़ के नील माहिं छुड़वाय ।
देखत ही वारू पके तुरत निकस सब जायं ॥

पतंग दोया पास न आवें

टूक प्याज का इक मंगवावे ।
दीया मारू उसे धर बावे ॥
एक पतंग पास न आवे ।
इस करतब से मन सुख पावे ॥

खटमल निकसे

जहां होंय खटमल तहां धूनी गंधक देय ।
रहें नहीं खटमल तहां मर २ छोड़ देह ॥

तथा

रवि शनि धूनी दीजिये बीज लोखिया लाय ।
खटिया सों बाधे उन्हें खटमल निश्चें जाय॥

धुंआ निकसे

धुंआ घर में ना रहे तिहि का यही उपाय।
घड़े चार औंधे धरे धुंआ उन्हीं में जाय ॥

पत्ती पकड़न विधि

हींग मिलायके जल के मांही।
गेहूं भेवे तिहि के मांहो ॥
एक रात्रि दिन जल में राखे।
बहुरि सुखाय पच्छिन कों नांखे ॥
पकड़ लाय जिहि के मन राखे ॥

तथा

गेहूं लाय शहद में नांखे।
उक्त युक्ति पत्ती गहिराखे ॥

तथा

थूहर दूध मंगाय के तिहि में चामर पीस।
जिहि की गोली कर गहे काग चिरैया बीस ॥

शराब का नशा मिटे

मूली और फिटकरी लावे ।
जल में घिस मांते को प्यावे ॥
उतरे दवा पेट में ज्योंही ।
हटे नशा मांते का त्योंही ॥

सीमा में अग्नि दीखे

सीमा उज्जवल लाय सुरा आछी ले भरिय ।
थोड़ी गंधक नांखि अंधेरे में लै धरिये ॥
देखे जो नर ताहि आग सों भरो जुदीखे ।
बुद्धि करे सब काम सिद्धि विद्या जो सीखे ॥

सीसा चबाने की विधि

नाई जब मसाल को बारे ।
सीसा लाकर उसमें नाखें ॥
अग्नि रूप जब वह हो जावे
अदरक रस में राखे जो कोई लेके ताहि चबावे ।
घाव नहीं मुख आवे ।

इन्द्रजाल का खेल तमाशा सबही के मन भावे ॥

अंडा को सीसा में उतारना

अंगूरी सिरका मंगवाके तिहि में अंडा डारे ।
तीन दिवस में नर्म पिलपिला होवे ताहि निकारे ॥
फिर मंगाय के सीसा सकड़े मुख का तामें नावे ।
जल डाले तो दृढ़ हो जावे अथवा पवन सुखावे ॥
जब काढ़े तब इसी युक्ति से सबको काटि दिखावे ।
तिल ओटें यह खेल तमाशा पर्वत सा दर्सावे ॥

रुख पर फल फूल आवें

गधी गर्भ ते गिरे जो बच्चा ।
काढ़ कलेजा लावे बच्चा ॥
मरे कलेजा लावे । ताहि सुखाय धरावे ॥
कारी मिर्च सोंठि अरु पीपर सब एकत्र करावे ।
चारों को पिसवा के जल में गोली बांधि धरावे ।
जब चाहे तब खेल दिखावे भरी सभा में जावे ।
गोली विस रुखन पर मारे दो घड़ी में फल आवे ॥

सीसा में फूल पत्ती काट के बनाना

काचा सूत मंगाय के करे पलीता एक ।
जैसा तोड़ा तुपक का तैसा होवे मेक ॥
बहुरू सीसा लायके पैनी छुरी मंगाय ।
तिहिसों सीसा पर करे चिन्ह जो चित्त में भाय ॥
फिर तोड़ा कों बारि के चिन्ह छुरी मन लाय ।
फूंक मारता हीं चले तो सीसा कट जाय ॥

सीसा का रस उड़ि जाय

नीबू का रस काढ़ि के जो सीसा भरवाय ।
पीरी कोड़ी राख करि रस माहीं नख वाय ॥
अंगूठा से बन्द करे सीसा को मुख कोय ।
उड़ि जावे रस पल विषें सीसा खाली होय ॥

धन बढ़े

सेत चिरमिठी मूल कों राति दिवारी लाय ।
तांबे के ताईत में हांडी मांम बंधाय ॥

कागज की कढ़ाही आग पर चढ़े

फिटकरी कपूर पीस कागज पर पारे।
कागज की कढ़ाई कर गुलगुले उतारे॥

कूप जल दूध सम निकले

कोरा घट ले एक मृत्ति का अंड़ी बीज मंगाय।
ताकी मिगी काढ़ि पीस के घट भीतर लिपवाय॥
नांखि कूप में जल भरि काढ़े दूध दृष्टि में आय।
इन्द्रजाल के खेल तमाशे करि देखे जिहि चाय॥

पानी दूध हो जाय

गिहों वस्त्र में दूध के जो पुट दीजे सात।
पानी छाको ताहिसों दूधिहि सो हो जाय॥

बिच्छू उपजे

गधा मूत्र मंगाय के भैसा गोबर लाय।
दोनों को एक तर करे कुलहड़ा मांझ धराय॥
तांऊ पर लत्ता ढ़ेकै वड़ी दोऊ सस्ताय।
फिर उघारि कर देखिये बीछू उपजे पाय॥

पत्थर पानी में तैरे

ससास्यार की बिष्टा आनें ।
झड़बेरी की गुठली लानें ॥
तिन्हें पीस पत्थर को लेपे ।
जल में तैरे दिवारी दीपे ॥

चलनी से पानी न छने

घीग्वार का रस छन बावे ।
चलनी में पुट तीन दिवावे ॥
तिहिनें पानी भरि २ डारे ।
छने नहीं एक बूंद निहारे ॥

घड़ा फूटे पानी न टूटे

पिलबन की जड़ जो कोई लावे ।
जल का घड़ा भराय मंगावे ॥
जड़ को पीस घड़े में नावे ।
फोड़े घड़ा बंधा जल पावे ॥

ज्वार भुने

थूहर माहिं भिगोय ज्वार को छाया मांझ सुखावे ।
धरे धूप में फूल फुला के भार भुनी दृष्टि आवे ।।

मुट्ठी में ज्वार भुने

प्रथम जोंडरी लाय तीन दिन जल में राखे ।
फिर मंगाय के दूध आक और थूहर नांखे ।।
एक २ दिन दोऊ दूध माभ्क भेराखे ।
उसको छाया में सुखाय धूप दे धरिये ताखे ।।
मुट्ठी के भरि ज्वार घड़ी भर बन्द जुराखे ।
खिल जावे तो तुरत छोड़ि के मुही नाखे ।।

सरसों जमे

प्रथम जो सरसों लायके सफा करे निज हाथ ।
बहुरि कूकरी दूध में तिहि दवे पुट सात ।।
छाया में सुखराय के खेवे गूगर धूप ।
फिरि इक ऊपर मृत्तिका लावे कोरो रूप ।।
भरि माटी तामें बवे सरसों दे ढकवाय

घार घड़ी में देखिये तो सरसों जम जाय ॥

हथेली पर सरसों जमे

पाव सेर सरसों मंगवावे ।
दुद्धी रस में ताहि डुबावे ॥
रस में लाग चुकें पुटसात ।
तब छाया में ताहि सुखात ॥
रेती भरे हथेली माहीं ।
तामें सरसों नाखे जाहीं ॥
जलसीं चेट किराखे आगे ।
हरी होय कुछ बार न लागे ॥

आम का पेड़ उपजे

थूहर दूध आंम की गुटली ।
पुट इक्कीस दिये हो सुथरी ॥
माटी में धरि पानी नाखे ।
वस्त्र एक तिहि ऊपर राखे ॥
दोय घड़ी में वस्त्र उठावे ।

उपजे पेड़ पात फल आवे ॥

चार मूंसर लड़ैं

काग सिनी की मूल लाय जों रवि दिन कोई ।
धरे बीच में चार मूंसर के वह लोई ॥
चारों मूंसर लड़ें भिड़ें आपस में सोई ।
है अचरज की बात देखि मानेंगे जोई ॥

भट्टी फूटे

तीन टांक गूगल ले कूटे ।
भट्टी में डारत ही फूटे ॥

नगारा फूटे

लियाँ की जो खाल लाय यह जतन करावे ।
जहां नगारा होय धरा तहां लाय जरावे ॥
फूटै नगारा तुरत देखके अचरज आवे ।
विद्या इन्दर जाल अनोखे खेल दिखावे ।

चाशनी विगड़ै

हलवाई गुड़ लाय चाशनी ज़बै बनावे ।

बांदर विष्ठवा नांख बिगड़ वह सब ही जावे ॥

हाथ अग्नि सों न जरे

मुरहटी अरु भांगरा दो उनको रस लाय ।
हाथन ऊपर चुपर के लीजे आग उठाय ॥

तथा

पारा रस घी ग्वार से हाथ जो चुपड़े कोय ।
अग्नि लेय भुरसे नहीं बार ना बांका होय ॥

तथा

अकरकरा हिरबीज और ले बीज धतूरा ।
चौथा अंडी पात रस कढ़वाय पसूरा ॥
करि हाथ न सों लेप अग्नि को तुरत उठावे ।
भुरसे नाहिं हाथ गुरू यह बचन सुनावे ॥

तथा

मेंढक की चरबी मले हाथन सों जो कोय ।
तुरत उठावे अग्नि को ताप कछू ना होय ॥

तथा

लोही नारि रजस्वाला अरु मेंढक की पीह।
करसों मलि अग्नी उठा क्यों कंपा वे जीह ॥

तथा

नौसादर के जल विषेघिसि काफूर हिंलेइ।
हाथन ऊपर चुपड़के आग उठा कर लेइ ॥

तथा

मेढक चरबी केंचुआ मले हाथ सों पीस।
अग्नि दहे वाकों नहीं मानों विस्वा बीस ॥

तथा

खारी नोंन क्वाय के रस हाथन पर मेल।
बहुरि उठा के अग्नि कों कर देखे यह खेल ॥

तथा

सेल समुद्र फल पीस के करि हाथन पर लेप।
अग्नि दहे नाहीं उसे लूटे मुख की खेप ॥

ताते गोला को सूंते

रस भांगरा के पात कों हाथन पर मलवाय ।
छाया में सुख वाय के गोला लाल सुताय ॥

आग सों वस्त्र न जरे

ऊंट कटेरी मूल के रस सों कपरा भेय ।
छाया में सुखवाय के अग्नि दाह नहिं देय ॥

तथा

फूल शराब मंगाय के तामें कपरा भोय ।
अग्नि लगावे जर उठे तार जरे ना कोय ॥

तथा

वस्त्र मांझ रस ग्वार के जो दीजे पुटसात ।
छाया में सुखराय के दहें न अग्नि तात ॥

मुख न मुसें

पीपल लांबी पीपल गोल ।
सोठ लाय पीसे सम तोल ॥

मुख धारे चाबी अग्नि मुख भल ।
मुख झुरसे ना करे जो खेल ॥

जल बंधे और खुले

रुखल्हि सोड़े का फल लावे ।
ताको चूख पीस बनावे ॥
जल पर बुर्के जल जम जावे ।
सेंधालो न पड़े खुल जावे ॥

काचे घड़े में जल भरे

घीग्वार रस कादि के करे जतन या भांति ।
काचा घड़ा मंगाय के भीतर दे पुट सात ॥
तामें जल भरके घरे गरे न फूटे आहिं ।
देखी ताहि अचरज करें लोग तमाशे माहिं ॥

जल को धुआं खैंचे

इक कोरा कूंडा मंगवावे ।
छोटी सी दीवट गढ़ वावे ॥
ताकू कूंडा मांझ घरावे ।

तापर दीपक लायजरावे ॥
तापर घट ओंधा धरवावे ।
बहुरु जल कुंडा में नावे ॥
धुआं खैंचे जलके ताईं ।
घट के भीतर जल भर जाई ॥
दीपक लौतक जल जै है ।
दीपक बुझै निकस सब ऐहै ॥

कड़ाही में आग न लगे ।

मूत्र बैल काटंक भर लावे ।
तेल कड़ाही मांझ न खा वे ॥
चूल्हे को वारे दिन राती ।
कबूल होय कड़ाही ताती ॥

तथा

लकड़ी साल मंगाइये अरु तुलसी की साख ।
दो उनके करि कोयला गधा मूत्र में नाख ॥
तरे कढ़ाही नाखिये एक कोयला लाय ।

अग्नि लगे वामें नहीं कोटिक करे उपाय ॥

चूल्हे चढ़े धान पकें नहीं

दूध आक मंगवावें कोई ।
अथवा दूध थूहर का होई ॥
धान दूध सों चुपर चढ़ावे ।
चूल्हे लकड़ी आग जलावे ॥
एक धान पकने नहीं पावे ।
चाहे जितनी आग जलावे ॥

माली की डालिया से फूल फल बाहर निकल पड़ें

रविदिन मुआ मेड़का लावे ।
गूगर खेकर ताहि जगावे ॥
बहरूं मूंग लायके धरिये ।
तिहि की विधिसों पूजा करिये ॥
फिर माटी चिकनी मंगवाय ।
मेंड़क के मस्तक धर वाय ॥

तामें मूंग नरवाइये बीजें ।
ऐसी ठौर गढ़ाय धरीजे ॥
जहां पड़ेना पांव नर नारी ।
जल सींचत रहिये हर बारी ॥
फूले पेड़ फली जब लागे ।
काटि लाइये जिहि सौं पागे ॥
जिहि जिहि तोड़े विधिसों लावे ।
पहला फल न्यारा करिलावे ॥
जोलावे वनसों धर ताईं ।
पीछे फिर कर देखे नाहीं ॥
सब को गूगर धूनी खेवे ।
काहू कों यह भेद न देवे ॥
जिहि डलिया में माली भारि के
लावे फूल साग को नांखे ।
बाहर निकस पड़ें सब सारवें ॥
माली की सब सुधि जावे ॥
जब ऐसा करि खेल दिखावे ।

दोहा

जहां जहां विधि लिखि है नर सर्प बिल्ली होय ।
तहां तहां योंही करे चूक कछू नहिं होय ॥

घोड़ा होय

घोड़े के सिर में सना का बीज मंगाय ।
तिहि गाढ़े ऐसी जगह छाया पड़ नहिं जाय ॥
उपजे पर छिलका लहे ताको डोरा बांधि ।
जाके घर में डारिये घोड़ा दीखे आनि ॥

बिल्ली होय

कारी बिल्ली मुख धरे अंड बीज दो चार ।
भूमें गाढ़े जब फले पहले फल को लाय ॥
जो नर अपने मुख धरे बीज बिलाई होय ।
सास भरे सब देखके मिथ्या वाक न होय ॥

स्यार होय

गीदड़ के मुख में धरे बीज भांग का लाय ।
उपजे पर मुख में धरे बीज स्यार दृष्टि आय ॥

सर्प होय

बवै बिनौला सर्प मुख जब उपजे तिहि लाय।
रूई बिनौला काढ़ि के अलग अलग धरवाय॥
बाती रूई बनाय कें दीपक बारे लाय।
उजियारा में जायतो सप दृष्टि में आयाल लाय॥
बिनौला को कोई जो मुख में ले भाई।
सोहू सब की दृष्टि में सर्प रूप हो जाय॥

सिंह होय

बाघ खोपड़ी शनि दिन लावे।
रूई बीज तिहि मांझ धरावे॥
जहां गाढ़िये उसके ताहि।
नरका पाय पडन नहि पाई॥
जब कपास उपजे तब जावे।
रवि दिन काढ़ि रूई ले आवे॥
जो नर बीज गरे में नावे।
सिंह रूप सबको दरसावे॥
जो बाती कर दीवा-बारे।

पारी में ले काजर पारे ॥
जाके नैनन काजर लावे ।
सिंह रूप वह सबको आवे ॥
जो दीपक उजियारे आवे ।
वह सब सिंह सूरत दरसावै ॥

भैंस होय

मरी भैंस के मुख बवे भांग बीज दो लाय ।
उपजे पर फल मुख धरे भैंस रूप दृष्टि आय ॥

बंदर होय

बंदर के मुख में धरे कारी माटी लाय ।
धुंधचिता में नाखिके गाढ़ि धरे कहीं जाय ॥
उपजे तब माला करे डारि गरे में जाय ।
बंदर आवे दृष्टि में सबहिन के मन भाय ॥

सर्प होय

अहि कारे के मुख धरे उपजि पकें तब लाय ।
जो नर निज मुख में धरे सर्प दृष्टि में आय ॥

कूकर होय

कार कूकर मुख धरे मनका बीज जो लाय।
उगे बीज जब बांधि के कूकर रूप दिखाय॥

घर में सर्प दिखाई दें

कोचरि सर्प मंगाय के बाती करिये चार।
अरु दीपक मंगवाय के ताम्र पात्र के चार॥
चारों में दीपक धरे पूर्वादिक दिश चार।
उनमें बाती नाखिये सब न एक संगजार॥
उजियारा में जाय नर जिहि को सर्प दिखाय।
दिया बढ़ाये ना रहे सर्प न फेरि लखाय॥

अन्य प्रकार

दीपक एक मंगाय के धरिये बाती चार।
दिया वार के यों धरे बाती मुख दिश चार॥

घर पानी से भरा दीखे

जो मछली भिडियाब की मांटी धरे मंगाय।
दिया माहीं पूरके देवे ताहि जराय॥

घर दीखे पाणी भरा डर २ बाहर जाय।
जब दीवे को गुल करे पाणी नाहिं दिखाय॥

आरसी में अपनो रूप कुतिया को दीखे

चूची कुतिया काटि मंगावे।
दर्पन के पीछे लगवावैं॥
जो देखे मुखड़ा दर्पन में।
कुतिया रूप आय नैनन में॥

मनुष्य को निज रूप कुरूप दीखे

सूअर छेरी ऊंट तुरंगा।
इन चारों के खुरले संगा॥
पांचम पांव बंदरा लावे।
सबकों लेये जतन करावे॥
हांडी बीज मोचरस में ले।
तिहि पर सब वस्तु को ठेले॥
पाली सोदकि चून लगावे।
अग्नि मांझ धरि तिन्हें जलावे॥
जब भस्मी हो जाय सबन की।

पीस घोले चरीबो मेंढक की ॥
दर्पन में जहां लेप करीजे ।
रूप कुरूप दिखाई दीजे ॥

दर्पण में और प्रकार की सूरत

अमल बेद को आनि धरावे ।
पुष्प रक्त कर बीर मंगावे ॥
दो उनको मिलवाय रखावे ।
तासु आरसी लाय मंजावे ॥
जो दर्पण में मुखड़ा देखे ।
आन भांति की सूरत बेखे ॥

पानी पर मृगछाला बिछावे

लायहि सोड़ा गूदा गाढ़े ।
मृगछाला पर लावे ॥
पुट दे आठ नदी पर जावे ।
जल पर ताहि बिछावे ॥
आसन पद्म लगाकर बैठे हरि सुमरन चितलावे ।
पूढ़े नहीं करो बहुतेरा गुरु यह वचन सुनावे ॥

बिना जोती की खड़ाऊं पर चलना

घुंघची आनि पिसाय नीर में मले खड़ाऊं ऊपर।
पग जमाय के दोनों तिहि पर कोस दोय चले मगपर॥

पानी में नहीं डूबे

होय सर्प जो दो मुहां ताको लोही।
तामें वस्त्र भिजोय के धरिये धूप सुखाय॥
फिर ताको गोला करे मुख में राखे मेल।
दरया में धसके करे जल भीतर की सैल॥
विद्या इन्द्र जाल की सत्य कहें सब देव।
गुरु बिना नहिं पाइये गुप्त बात को भेव॥

अंधेरी रात्रि में दीखे

रवि दिन मेंडक मेंडकी रति करते जो पाइ।
अथवा मेंडक पीरिया मेंडक ही पर पाइ।
लावे मार सुखाय कर जारे अग्नि माहिं।
सुरमें का सा पीसके आंजे नैनन माहिं॥
रैनि अंधेरी होय जब करिये जो मन भाय।

दीखें सगरी वस्तों जो दिन में दृष्टि आय ॥

कुंजी बिना ताला खुले

रवि दिन दोपहरी समय नंगा होकर लाय।
चील काग का घोंसला लाय धूप देताय ॥
बहुरि जरावै अग्नि में लावे राख उठाय।
मुंदे कुफल पर मारिये कुंजी बिन खुल जाय ॥

चलती गाड़ी रुके

विष्टा गोली बांधि गोबरा चले सों यन्त्र करावे।
रवि दिन गोली उठा होट सों गूगर खेय धरावे ॥
गाड़ी के मार्ग में डारे जब गाड़ी तहां आवे।
हारें बैल जोर कर २ के आगे बढ़न न पावे ॥
गाड़ी वारे खेत खोद के काढ़ें रेत और मांटी।
तब गोली जो कढ़कर जावे हांक जायं जो नाटी ॥

सभा के लोग रात में दरिया की सैर करते दीखें

चरबी कछुआ मांझ अरमनी बूर मिलावे।

बाती बस्त्र महीन ताहि में लाय भिजावे ॥
नये दीवले माहिं बहुरि बाती धरि लीजे ।
लारोगन सीमा वदीवला मे भरि दीजे ॥
दीपक के उजियार सभा जो बैठी दीखै ।
नवका माहीं करत सैर दरया की दीखे ॥

जलसों आग प्रगट होय

नोनिया गंधक और नौसादर बांधि पोटरी लावे ।
जल की बूंद डारि कर मसले आग बरे दृष्ठि आवे ॥

अग्नि पवनसों प्रगट होय

मँगाने ऊंट जराय सहत में नाखिये ।
होय अग्नि की चाह तोड़ि धरि दीजिये ॥
बरे पवन के लगात काम निज कीजिये ।
फिर गठरी में बांधि ताहि धरि लीजिये ॥

जैंमता हंसे

रवि दिन काला खर जहां पावे ।
लोटन धूरि ताहि की लावे ॥

थारी तरि धरि जैमें कोई ।
हंसे बहुत जैंमे नर सोई ॥

जैमें पेट न भरे

रुख बहेड़ा सांझ शनि न्योत आवे ।
जो कोई प्रात जाय रविपात तोड़ि लावे ॥
वह लोय पगतर पत्ताधर कर जैंवे ।
भरे न पेट खाय सो होये ॥

जैंवत बमन करै

बगुला की विष्टा का जो नर मस्तक तिलक करे।
जैंवत नेर जो वाकों देखे देखत बमन करे ॥

अदृष्टि होय

दांत दाहिनी ओर चर्व ले बाजू बांधे ।
काहू दीखे नाहि फिरे धरि गठरी कांधे ॥

हाथ की वस्तु काहू कों न दीखे

मेनसिल अरहरि ताल घिरत गाया में नाखे ।

ताकी गोली बांधि मोर को नित्य चुगावे ॥
बीते जब दिन सात मोर की बीट उठावे ।
कर में करिके लेप खेल यह सबन दिखावे ॥
चांदी सुवरन आदि वस्तु जो कर में लावे ।
दृष्टि न आवे काहु सभा को अचरज आवे ॥

खेत सूखे

ऊंट कटेरा गंधक लावे दोउन को मिलवाय पिसावे।
खेत मांझ कई ठौर न खाये सूखा खेत खड़ा दरसावे ॥

रक्त पुष्पश्वेत हों

रक्त पुष्प करबीर जो लावे । अरु नोंनी गंधक मंगवावे ॥ गंधक की धुआं लगावे ॥ रक्त पुष्प-श्वेत हो जावे ॥

होंठ सफेद हों

गंधक को धरिपान में जाहि चबाके कोई ।
वाके होंठ सफेद हों मानिलेहु सब कोई ॥
फिर जो चाहे चित्त सों वह नर नीको होय ।

कांजी के कुल्ला करे तो वह आछो होय ॥

टूटी चीनी को जोड़ना

लाय कली का चूना कोई अरु अंडा की धौल ।
सान दुहुन कोंइकसां करले जोड़े चीनी खोल ॥

सुवरण की जिला करण विधि

चौपाई

शोरा कलमी लाइ जरावे । और कली का चूना लावे ॥ दोनों को पानी में घिसिये । सुवरण घट पर लेप जुकरिये ॥

दोहा

धर धूप में सुखि वे जिलावे गिकरि लेय ।
भूल चूक विधि में करे गुरु को दोष न देय ॥

हथियार की जिला करन विधि

प्रथम खटाई काले गूदा और पुराना सिरका ।
हथियारन की जिला करन को और लेय जल हड़का॥

बिगड़ा घृत सुधारन विधि

मन दो मन घृत मुद्दती धरा भयाक ढ़वाय।
अथवा दुर्गन्ध उपजा धरा धरा सड़ जाय॥
चूल्हे पर धरवाय के प्याज गांठि नखवाय।
सुधर जाय घृत पलबिषे डारे गांठि कढ़ाय॥

सिंघाड़े और मूंग को कीड़ा न लगे

हींग मिला जल के विषें उन मटकों को धोय।
जिनमें मूंगादिक भरे कीड़ा लगे न कोय॥

दुशाला और कपड़ा की चिकनाई जाय

सेलखरी को पीस के चिकनाई पर फेर।
अग्नि कटोरा मांझ धरि तिहि के ऊपर फेर॥

बालक की नाभि के गुण

गुण बालक की नाभि के कहे सुने सुख होय।
रोगी राखे पास तो रोग कभू ना होय॥

बोतल की चिकनाई जाय

काली सज्जी लायके चिकनाई पर छाय।
तातें तेलसों धोइये चिक्नाई उड़ि जाय ॥

बच्चे के पहले दांत का गुण

टूटे दांत जो बालक का गिरे न पृथ्वी माहिं।
किसी यन्त्र सों लीजिये भूल चूकिये नाहिं ॥

बैरी मुख बंधन

जो बड़ भागी राज में करे राज के काज।
बालक दांत जो पास हो तो सुधरे सब काज ॥
बैरिन के मुख बंद हों कहें न ऊनी बात।
राज सभा के बीच में धरवि दिन रात ॥

बालक नाल के गुण

सोरठा

जो नारी हो बांझ गर्भ रहा उसके नहीं।
सो खाव ला नाल पुत्र होय उसके सही ॥

स्यार की नाभि विधि

हलकी गोल सुहावनी वन में उपजे घास ।
कहीं करील के पेड़ में कहीं कांटेन के पास ॥
स्यार नाभि कोक कहे कोऊ कऊआ को कांच ।
ताकी विधि सगरी कहूं सुनो कान धरि सांच ॥
नाभि एक घृत आधपा चढ़ा कड़ाही मांहिं ।
नीचे अग्नि बराय के देखत रहिये ताहि ॥
नाभि जाय जरि धृत विपें लोहा सों रगड़ाय ।
दोनों मिलकर एक जात हों तबै उतार धराय ॥

दांत के कीड़ा मरें

दांतन में कीड़ा रहे जिहि ओरी तिहि पाय ।
उसी तरफ के कान में बूंद घृत टपकाय ॥
बीतें दोय घड़ी जबै कान दूसरे मांहि ।
थोड़ा घृत नखवाईये सब कीड़े मर जाहिं ॥

पेट पीड़ा शूलादिक मिटे

घिसे न नाभिक तरनी कतरे, गुड़ में नाखि

मिलावे पतरे। बांधे चार गोलियां ताकी, पीड़ा तुरत टरे रोगी की। जो रोगी पीड़ा ले आवे, ताकों गोली एक खवावे। तातै जल संग पान करावे, जो पीड़ा में घटी न आवे। दो घड़ी बाद दूसरी खावे, ऐसी ही गोली चार खिलावे। शूलादिक पीड़ा मिट जावे॥

मोहिनी तंत्र

शनि सोहरनी होय किसी की तब यह जतन आवे, खिचड़ी जो बनाय ले जावे तिसके पीछे जावे। मुर्दा जहां जराया जावे उस खिचड़ी को नाखे, वे सब लोग फिरे जब देखें कागन आगे चाखे। कुल्हड़ा में कुछ बचे सो खिचड़ी तिहि को ले उठ चाले, नीव सामने आवे तासों मारे कुल्हड़ा डाले। चावल लगें नीव और भूपर न्यारे २ लावे, गूगर खै चौराहा गाड़े प्रति शनि भोग दिलावे। धरे भोग में एक बतासा गूगर मन की धारा, बीत जायं जब सात शनिश्चर लाय धरे निज

द्वारा। चले चित जब किसी नारि पर चावर नींव चलावे, तन मन धन नौछावर करके बिना बुलाई आवे। जब चाहे संग उसका छोड़े भूवर चावरे खावे, तोता की सी आंख फेर कर तुरन्त निकसि चलि जावे।

पान मोहिनी

दीत वार इक बीड़ा लावे रजकसिला पर जावे,
नंगा होकर बीड़ा खोले बहुरि मूंदि तिहि लावे।
बसन पहरि के घर को आवे पीछे फिर ना देखे,
जिहि को बीड़ा लाय खवावे सो नारी बस पेखे।

मोहिनी

बरध मरे रविवार को ताका सींग मंगाय,
बायें पगतर नारि की तामें धूर भराय।
गूगर धूनी खेय के जां गाड़े घर मांहि,
सो नारी बस होय है यामें संशय नांहि।

तथा

संखा हूली जहां कोई पावे, शनि को ताहि

न्यौत कर आवे। रवि दिन जाय उखाड़ि ले आवे, गूगर खेकर दूध मंगावे। दूध गाय में पीसे सांधे ,चणा बराबर गोली बांधे। मेल मिठाई जिसे चखावे, सो नारी बस अपने आवे।

बसीकरन

कारे काग की जीभ जरावे, अरु मसाण की राख मंगावे। बीसों नख शनि को कटवावे, उनको अग्नि मांझ जरावे। फिर निज वीर्य लोहु चटलीका जीभ का मैल उसांधे, छहों वस्तु को इकठी करके चना बराबर गोली बांधे। एक गोली रविवार खिलावे, जिहि नारी को जोमन भावे। सो तन मन धन तो पर वारे, बस होकर बांदी बन जावे।

तथा

मंगल अथवा इतवार को इक साखा अंजीर मंगावे, सो साखा कुतिया पर मारे रति करती पर ताहि जरावे। तिहि की राख मूत्र में अपने सान

गोलियां बाध बनावे, उक्त बार नारी के मारे एक गोली तो बस हो जावे ।

तथा

नेत्र चील रविवार मंगावे मिहीं बांटि धरवावे, कस्तूरी केसर मंगाय के चाहे जाहि खवावे ।

तथा

बगुला मंगलवार मारके अग्नि मांझ जरवावे, जो जो नारी खाय राख को वशीभूत हो जावे ।

राजा बश होय

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र उपवन में जावे,
लावे तोड़ अनार ताहि को धूप लगावे ।
दायें करसों बांधि सभा के मांझ जो जावे,
राजा इन्द्र जो होय तोवह भी वश हो जावे ।

स्त्री बसीकरन

माघ मास बुद्धाष्टमी स्वांति नक्षत्र जुहोय,

पान माहिं धरि उसे चबावे जो नारी मन भावे,
सो तेरे बश होके प्यारे निशदिन सुख उपजावे ।

सभा मोहिनी तिलक

गोरोचन पतरज और केशर और मैनसिल लीजे,
जल में पीसे तिलक लगावे जिहि सनमुख मुख
कीजे । सो बश होय प्यार सों बोले मन की घुंडी
खोले, राज सभा में यही मोहनी मुख २ नीके
बोले ।

मोहनी

श्वेत आक की जड़ और कुटकी मोथा आनि
मंगावे । चौथा जीरा पीसि रुधिर में माथे तिलक
लगावे । जो नारी देखे वह टीका देखत ही बश
होवे, कर्त्ता जो चूके ना विधि में तो पूरन पद
पावे ।

बसीकरन अंजन

गोरोचन गजकेशर मैनसिल सबै बराबर लीजे ।

घिसि आंजे आंखिन में अपने जिहि देखे बश कीजे ॥

बसी करन बुर्की

आक धतूरा की जड़ें बीट कबूतर लाय ।
चौराया की खरि अरु गऊ बार मंगवाय ॥
अरु मसान की धूरि ले सबको करले चूर ।
जाके मस्तक नाखिये सो वश होय जरूर ॥

बसीकरन

सोला मन फिशयो और किसी किस्म की मछली लेकर एक चीनी के बर्तन में डाले और उसको मीठे साल्ट आयल से भरदे और मुंह खूब बन्द करके रख छोड़े कि अन्दर हवा न जाने पावे ।

दूध का बदल बनाना

तीन अंडे लेकर एक बर्तन में तोड़े और खूब मथे और थोड़ा २ गरम पानी उसमें आधे पाइन्ट तक डाले और खूब हिलावे यहां तक की

बिलकुल साफ दूध की तरह हो जावे फिर उसको चाय और किसी चीज में डाल कर खावे पीवे।

दूध को सुखा कर रखने की तर्कीब

चौड़े बर्तन में दूध डालकर धीमी आंच से सुख लावे और सुफूफ बनाकर बोतल में भर कर रख छोड़े मगर बोतल का मुंह बंद कर देवे काम पड़े तब गर्म पानी में भिगो कर काम में लावे।

बुर्की

सवा हाथ धोई गजी नाखि भभूरे माहिं, उड़ि ले आवे ताहिं कों जबैं गगन के माहिं। चला जाय पीछे लगा चिन्ता चित न लाय, जब धरती कपड़ा गिरे मांटी सहित उठाय। पीछे फिर देखे नहीं रजक सिला पर जाय। मांटी न्यारी करि धरे कपड़ा वहीं जराय॥ धोबी की सिल पर जला राख धूर दोउ लाय, दोनों को धर लाय के मूगर खेवे ताय॥ राख लगाव आय है धूरि लगाये जाय, इस तंतर के सम नहीं दूजा कोई उपाय।

मोहिनी

कारी कुतिया व्याय जब बच्चा चूंखत होय, दूध काढ़ि ताका धरे लोंग तीन दिन जोय। बहुरि सुखाकर नाखिये निज बी रजके माहीं पुरुष होय या स्त्री लोंग खवावे ताहि। देख तमाशा तंत्र का वह वश कैसे होय, तनदे मनदे चित्त दे जो कर देखे कोय।

जुआ जीते

हस्त नक्षत्र जब होय पंवार का मूल मंगावे, शनि न्यौंते रवि लाय अग्नि पर गूगर नावे। रवि को हस्त न होय तो पूर्व दिन जावे न्यौत आवे, विधि उक्त हस्त में [illegible] घर आवे। जाय दाहिने हाथ बांध कर जुवा खेले, लावे धन बहु जीति पुराय चौथाई मेले।

विद्या पढ़े

माघ कृष्णाष्टमी पूर्वा षाढ़ जो आवे, अर्द्ध रात्रि जिह्वापर ओं ह्रीं लिखवावे। खुले हृदय की

गांठि बुद्धि प्रकाशे ज्यों हीं, विद्या नित प्रति बढ़े गुरु को सेवे त्योंही !

जंगार बनाने की विधि

जो चाहे जंगार बनाना करे नहीं कुछ देर, ताम्र चूर इक सेर मंगावे नौसादर दो सेर। चीनी के बासन में भरि के रस नीबू का नाखे, एक पोर ऊंचा चढ़ि आवे अलमारी में राखे। वस्त्र एक ऊपर से ढ़कि चिल्ला जब एक बीते, बासन खोल जो वाकों देखे सिद्ध काम कर जीते। पक्की चीनी कोई बासन मिलें कहीं तौ लावे, बासन तांबे का मंगवा के उसमें वस्त भरावे। बासन गाढ़ जमी में देवे कोई जहां न पावे, के चिल्ला बीते वाहि उघारे सिद्धि मनोरथ पावे।

सिंदूर विधि

जो चाहे सिंदूर बनावे जो जो वस्तु कहूं सो लावे, सीसा एक सेर मंगवावे साभर आध सेर ले आवे। दो छटांक मंगवाय सुहागा शोरा तिगुना

लावे, प्रथम सुहागा डारि कड़ाही चूल्हे पर चढ़वावे।
सीमा मरे भरै जब चुटकी शोरा को बुर्कावे, फिर
चुटकी भरी नांखि सुहागा फिर शोरा फिर सांभर
चमचा फेर रफार के बहुरूं सांभर ले बुर्कावे, इसी
प्रकार तिंहू वस्तुन कों बुकें चुटकी भर भर जब
जरि जाय राख हो तब सिल पर पिह वेवे। अरू
ग्यारह बार कड़ाही। में धरि दो दो घड़ी तपावे,
होय सिंदूर चित होय राजी गुरु प्रताप निहारे,
विधि में बुद्धि करे सब सुद्धी चित के मांहि विचारे।

धरन ठिकाने आवे

वन में अंधाहूली जाय शनि को न्यौता देवे
डोरा बांधे रक्त धरे गुड़ गूगरू खेवे। रवि दिन लावे
मूल जाय छाया ना पाड़े, घरमें लाय अटेक धूप
दे मंत्र उचारे। जब लावे कोई जड़ी तवै ऐसा ही
कीजे, चूके विधि में नाहिं सिद्धि का प्याला पी
जे। जिहि काहू कीधरनि जाय तिहिं कों ले दीजे,
कटिपै दीजे बांध मूल कों सब दुख छीजे। धरनि

ठिकावे आय चित की चिन्ता जावे, मंत्र जपिये मूल लाय तब सिद्धि पावे। और नमो रूद्राय सवा दृष्ट विनाय स्वाहा बीसे को वार जपेत सिद्धि।

सिर की पीड़ा जाय

लाय अनार ताहि जरावे, दूध आक में ताहि भिजावे। छाया में सुखवाय पिसावे, नास नासिका मांझ दिवावे। सिर पीड़ा जिहि के हो भारी, रात्री दिवस वह होय दुखारी। नास लेय को कई इक बेरी, छींक आवे बाको बहुतेरी। निकसे बल गम पीड़ा जावे, सुखी होय अरु तन सुख पावे।

मस्तक पीड़ा जाय

सोरठा

ले घोड़ा की लीद ताती कर रस काढ़िये।
टपकावे कर्ण मांझ मस्तक की पीड़ा टरे॥

मस्तक के कीड़े जायं

मूत्र ऊंट का जो कोई पावे, तामें रुई भिजोकर

लाव । जहां होंय कीड़ा तहां धरे, बास पाय के कीड़ा मरे ।

सोता बालक मूते नहीं

जो बालक मूंते सपना में और डरे सूता सें ।
ताजसेत मुर्गा का खावे डरे न मूंते तासे ॥

नेत्र जल स्तंभन विधि

जाके नेत्र बहे जल निस दिन नख बालक का लावे, ताकों ले अंखियन में फेरे रोग दोष भग जावे ।

नेत्र पीड़ा जाय

जाके नयन रोग कछु होंवे सो यह जतन उपावे, बंदर विष्टा लाय लगावे नेत्र रोग मिट जावे ।

नासूर खोने की विधि

जाके हो नासूर नाक में ताकों दिन में खावे, तब भुजंग की कांचरि विस के जल में तहां

लगावे । सूखे जबलों उठे न तबलों सूखे तवै जगावे, पांच सात वर योंही करिये मल रोग कटि जावे ।

कर्ण पीड़ा, राध बहना, बहरापन, बात पित्त, कफादिक के मस्तक रोग मिटै

अरलू की जड़ लायके ताको रस कढ़वाय, तिहि में तेल चढ़ाय के नर्म अग्नि पकवाय । रस-जर जावे तेल कों सीसा में भरवाय, सम्पूर्ण कर्ण रोग को यही तेल मिट वाय ।

नासिका का रुधिर रुके

सूखा गोबर गाय का आनि पीस सुंघवाय ।
नासा लोही बंद हो चैन चित में आय ॥

दंतादिक पीड़ा मिटै

सूखा गोबर गाय का दांतों पर मलवाय ।
पोतो में जो दर्द हो तो उनहूं पर मलवाय ॥

अग्नि जरे का इलाज

जो कोई अग्नि से जरे ताका यही उपाय।
आक पात धरि अग्नि पर ताका रस टपकाय॥
जरे आंच पर और कछु जो न लगाया होय।
तो या रसको चुपड़िये ज्वाला सीतल होय॥

छाजन का इलाज

रुख खासन बीज जो लावे, पीस पास गोमूत्र में नावे। तीन दिवस लों सरे, बहुरि पीस मल्हम सी करे। छाजन ऊपर ताहि लगावे, बीस बरस तक मिटि जावे।

दम का रोग मिटे

जरा तम्बाकू का गुललावे, ढाई सेर जलमाहीं न खावे। सारी रात रहे जल माहीं, भोर छान राखे निज पाहीं। डार कढ़ाई मांझ चढ़ावे, मासे तीन नमक डरवावे। जरके नीर राख रह जावे, तब उठाय घर में धरवावे। रोग दमा जिहि को दुख देवे, तिहि को नित्त त्रिमासा देवे।

ताप उतारन विधि

कूकर मूत्र मृत्तिका लावे, गोली करके धूप सुखावे। जिहि को तनके ताप सतावे, ताके गर में गोली बांधे। बांधे गोली ताप मिट जावे, चंगो होय चित्त सुखपावे।

कर्ण पीड़ा मिटे

पात आक का लायके घी सो चुपरे ताय, अग्नि पर तपवाय के रस लेवे कढ़वाय। जो रस डारे कान में पीड़ा सब मिट जाय, पुन्य अर्थ जो दीजिये सोहू अति सुख पाय।

कारे बाल श्वेत हों

दूध काढ़ि थूहर का लेवे तिल भेवे तिहि माहीं, बार २ फिर फेर सुखावे करे काहिली नाहीं। तिसे पिराय के तेल कढ़ावे स्याह केश पर लावे, सेत रंग ही जाय पलक में स्याही फेर न आवे।

बाल उगैं

जाके बार उपजते नाहीं सो यह जतन करावे।
जो कलाय पकवाय जलाकर ताकी राख बनावे॥
कड़वा तेल मंगाय धरावे तामें राख न खावे।
दोऊ वस्तु मिलाय लगावे वहां बाल उग आवे॥

बाल बढ़ैं

घोड़ा की मंगवाय लीद को अग्नि मांझ जरावे,
तिल का तेल अग्नि के तामें जरी लीद पिसवावे।
बारों का बढ़ना चांहे ताकू लाय लगावे,
बढ़ै बाल थोड़े ही दिन में देखि २ सुख पावे।

तथा

हाथीं दांत मंगाय बन्द करि कुल्हड़ा में जरवावे, बाहर धुआं कढ़न न पावे गिलहि कमत करवावे। जरे दांत को नांखि आवला के जल में घिसवावे, बारन पर करि लेप रात्री को खटिया पर सो जावे। भोर ही उठिके बार धोयके बढ़ि लावे

हो जावे, ऐसा जतन करे जो कोई बार बढ़े सुख पावे ।

उड़े बाल उगें

जाके बाल बादर खौरा से उड़ि-उड़ि गिरि-गिर जावें । हाथी का दांत जराके भेड़ दूध मंगवावे ।। दूध माहिं दांत को पीसे रसोत चने भरनावे । तिसको गये बाल पर लेपे बाल बहुरि-जम जावे ।।

तथा

माखी की विष्टा ले आवे कारी मिर्च मिलावे ।
दोनों को एकत्र पीसि के उड़े बाल पर लावे ।।
कई बार दिन भर में औषधि गये बार पर मलदे ।
गये बार फिर कर जम जावें जराख्ख खजों फलदे ।।

बाल मुंडन विधि

गऊ दंत हरताल पांच मासा ले कोई । अरु इतना ही जवार वार लावे वह लोई ।। दस मासे ले

राख पोस्त तिहि पीस जु धरिये। केला के रस मांझ सान कर लेप जुकरिये॥ सूखा जाय जब बार हाथ सों नोचि उड़ावे। फिर जब वे बढ़ि जायं इसी प्रकार उड़ावे॥

बाल उगे न हों

मरी जोक कई एक सुखाके ऐसा जतन करीजे। घोड़ा लीद मांहि चिल्ला भर गाड़ जमी में दीजे॥ बहुंरु काढ़ि जहां मलवावे तहां बार नहीं आवे। बार २ मंडन तें छूटे गुरु यों शब्द सुनावे॥

शुभाशुभ रजस्वला भेद

प्रथम रजस्वला होय महरिया ताका भेद बताऊं। चित्त लगाय सुनो सब कोई शुभ अरु अशुभ सुनाऊं॥ रवि दिन जो रजस्वला होवे यह विधवा निश्चय कर होवे। चन्द्रवार जिहि के लहू टपके भगवान ताके सुत होये॥ मंगल को दिसधिर दिखाई। अपने जी सो आप वह जाई॥ बुद्ध जो हो कपड़न से नारी। निश्चै हो पुत्री बहुतेरी॥

गुरु देवें सुत बली सपूता । शनि चरदे औलाद कपूता ॥ शुभाशुभ जो रजस्वला सोवे दिन में । पुत्र जणे सुस्ती हो तिसमें ॥ नैनमोफ का जर जो डारे । अन्धा होय पुत्र सिर मारे ॥ चंदन तेल जो आग लगावे । होय पुत्र जो भीख मंगावे ॥ हार जो पहरि दिखावे । सुत मूरख होके दुख पावे ॥ नख कटवावे हंसे हंसावे । कारे होंट पुत्र के पावे ॥ बेहूदी बन बात बनावे । ताको पुत्र निलज्ज कहावे ॥ कंघी करके बारजो पेखै । बार घने सुत के सिर देखे ॥ बहुत नीर पीवे जो नारी । गर्भ रोग सुत के तन भारी ॥ रोवे तो जब सुत कों जीवे । दुर्वल और दरिद्री होवे ॥ पवन खाय तो सुत जो होवे । सिर्री और बावरा होवे ॥

दोहा

नारि रजस्वला होय जब अलग बैठि घर माहिं ।
हरि चरणन में चित्त धरि अति प्रसन्न मनमाहिं ॥

चौपाई

जब स्नान चौथे दिन करे। जिहि पर दृष्टी जाकर परे ॥ जोहरि कृपा गर्भ रहि जावे। तो वैसी सूरत सुत पावे ॥

दोहा

चौथे दिन जो न्हाय धोय कर सूरत पति उरलाय।
मन में अति प्रसन्न होय के सूरज दरसन पाय ॥

अफीम का नशा उतर जाय

जिस किसी ने अफीम जियादा खाली हो और बेहोश हो तो शरीफा अर्थात् सीताफल के पत्तों को पीसकर उनका अर्क उस मनुष्य को पिलावे भगवान चाहे तो उसी वक्त नशा उतर जायेगा।

दीमक का इलाज

एक तोला क्लौड आफ मरक्यरी पारा हल-किया हुआ जिसको (कारोसिव सिविल मेट) भी

कहते हैं। १४४ तोले पानी में मिलाकर उस पानी को किताबों और कागजों पर छिड़कें तो दीमक और दूसरे कीड़े कभी न लगें।

तदबीर दीमक दफा की

चित्तौर के पत्ते जलाने से दीमक दफा हो जाय।

मसानादिक रोगों का इलाज

जो पीपर के पेड़ पर जमे नीम का रुख। अथवा एकहि मूल सों उपजें दोऊ रुख॥ ढाई पाती नींव की ढाई मिर्च मंगाय। तिहि की गोली बांधिके रोगी कों जो खिलाय॥ मिटि जावें दुख देह के पल्ला भारी मसान, खांसी पसरी डबकि या बहुरि न पावे आन॥

पसली खांसी का इलाज

एक बाल सुवरन की लीजे। अग्नि माहि ताती करि दीजे॥ खांसी जिहि बालक के होवे। टीर उठे खांसी तिहि जोवे॥ तहां दाग बाली सों दीजे चंगा होय रोग सब छीजे॥

डबके का इलाज

शनि रवि वारे शशा मंगावे। ताका रुधिर कढ़ाय धरावे॥ जो बालक रोगी कोई आवे। जिहि को डबका बहुत सतावे॥ ताको मूली रुधिर खवावे खाते ही चंगा हो जावे, मिटे रोग सब उसके तनका चले न पसली उठे न डबका॥

पल्ले का इलाज

जिहि बालक पर पड़े जो पल्ला दुख पावे अति भारी। सूखे मांस हाड़ रह जावें कृष देही हो सारी॥ जो कोई मंगल को जावे रजक सिला न्यौता कर आवे। दूजे मंगल ले बालक को उसी सिला पर जावे॥ जो कपड़े बालक तनमें ते उतार डरपावे। दाल चने की जोले जावे सिला तरे दरकावे॥ बालक को सिल पर बैठा के जलसों वहां नहवावे। बहुंरू कपड़े नये पिन्हा कर बालक को घर लावे॥ ज्यों २ फेरे दाल चना की त्यों बालक

फूले। देह रोग कढ़ि जावैं सिगरे बहुरि आय नहीं भूले ॥

स्त्री का मसान रोग जाय

जिस नारी के होय मसान का खटका। तिसके नहिं जीवे पूत कीजिये लटका ॥ जब होवे नारी गर्भवती तब लावे। कहीं ला बादर की बीट ताहि सुखरावे ॥ एक पके पान में धरिके नारी जो खावे। जो बीतें दिन इक्कीस तहां लों खावे ॥ जब बालक पैदा होय चांवर भरि लावे। तिहि घुट्टी मोम मिलाय कंठ में नावे ॥ वह बालक अच्छा रहे और महं-तारी। रख ध्यान हरी का करे पुराय जो भारी ॥

बालक के मसान का इलाज

शनि को जंगल जावे कोई गिरगट मारके लावे सोई, रवि को राख जराय करावे। गूगर धूनी अग्नि धरावे ॥ जा रोगी मसान का आवे। ताको राख रती भर खावे ॥ तनसों रोग तुरत कटि जावे। चंगा होय बहु सुख पावे ॥ बहुरि रोग तिहि

पास न आवे। पूरा गुरु यह भेद बतावे ॥

परी की छाया का इलाज

छाया परियों की परे जिहि बालक पर आय। वाका तन निर्जीव हो प्रतिदिन घटता जाय ॥ कान पकड़ कर चूंटिये पीड़ा तनक न होय। मांखी जो खिलवाइये उलटी करने सोय ॥ जो चाहे इहि बात कों रोगी अच्छा होय। कहूं जतन सो कीजिये निश्चे चंगा होय ॥ बनवाके लावे प्रथम एक खटोला काट। हो सेमर की लाकड़ी या पीपर का काठ॥ ताहि बुणावे सूत सों काचा होय जा सूत। पांचो रंग मंगाय के बहुरि करे करतूत ॥ उड़द चून का पूतला एक बनाकर लाय। तिस पर रोगी अंग का मैल उतारी चढ़ाय॥ लावण लहंगे माहिं का टूक तनकसा लाय। पुतला के सिर पर धरे मनु उड़ाय दाय फिर पुतला को सात बर रोगी ऊपर वार। उसी खटोला पर धरे अरु पांचों रंग धार ॥ लेह हाथन पर जा चढ़े पीपर ऊपर ताहि भिन्न

भिन्न सब खोल के रंग को देय उड़ाय, जो हां पर होवे नदी ताहि उतर कर जाय। रामसत्त है बोलके पुतला देय बहाय, जो नाहीं होवे नदी तो उसही पीपर धार। मुख कर धो बैठे कहीं फिर आवे निज द्वार, ऐसा जतन जो कीजिये रोगी अच्छा होय। फिर पास आवे रोग नहीं प्रतिदिन अच्छा होय॥

पानी की बदबू दूर करना

कुए या बावड़ी के पानी में बदबू अर्थात् दुर्गंधि आती हो तो पक्की शोरवा सवा सेर कसीस उसमें डाल दें, थोड़ी देर बाद पानी की बास जाती रहेगी कसीस के पानी में मिलने से किसी तरह का नुकसान नहीं होता बल्कि मादे को तक वियल होती है इसी तरह जिस जमीन या जगह में पेशाब की बदबू हो थोड़ा कसीस पानी में घोलकर डालने से दुर्गंधि जाती रहेगी इसका अक्सर तजुर्बा किया गया है और कम खर्च में बहुत फायदा होता है॥

सुनहरी लाख बनाने की तर्कीब

बेनिसटर पन्टाइन ४ औंस उमदा शललैक ८ औंस सोने के वर्क १४ बिरोजा पाउडर आधा औन्स मैगनेशिया रोगन टारपीन के साथ मिला या हुआ डेढ़ ड्राम ॥

अव्वल दर्जे की सुर्ख लाख

बेनस टरपन्टाइन ४ औन्स शललैक ६ ॥ औन्स काली फूनी आधा औन्स सीना वरटाई आधा औन्स मैगनेशिया टारपीन के तेल के साथ गीला किया हुआ डेढ़ ड्राम मिलावे ॥

सुनहरी लाख मुहर के वास्ते

५ हिस्से शललैक और एक हिस्सा टरपन टाइन को गलाकर मिलावे जब ठंडी होने लगे उस वक्त उसमें अवरका जर्द चमकदार मफ़्फ या डच लैफ या डच गोल्ड मिलावे ॥

लाख स्याह वास्ते मुहरा के

बलू रेजन (राल जर्द) १५ रत्ती चर्बी १ रत्ती मोम

खालिस २ रत्ती काजल ३ रत्ती इन सबका आग पर मिलावे।

नीले रंग की लाख मुहर के वास्ते

चपड़ा लाख दो जुज स्माल्ट १ जुज ऐलोरेजन दो जुज इन सबको कूट पीस कर कपर छनकर धीमी आंच पर मिलावे।

रंग बरंगी उम्मदा लाख

जुदे २ रंग की लाख लेकर अलग २ बर्तन में पिघलावे जब थोड़ी ठंडी हो जाय तब सबको एक जगह मिलाकर सांचे में डाले चाहे जैसी कलमें बनावे॥

दो मित्रों में लड़ाई हो

सिर बिल्ली के बार लाय के चूहा बार मिलावे नीब पेड़ पर कांग घोसला तिहि की लकड़ी लावे शनि को न्योते रवि को लावे तीनों वस्तु मिलावे फिर जराय के तीनों वस्तुन गूगर धूप दिवावे। जिन दो मित्रन बीच नाखिये थोड़ी राख उठाके वैर होय और होय लड़ाई निश्चय कर मन साके॥

दो मित्रों में वैर हो ॥

करकेंटा अरु मोर के सिरलाय सुखावे तिन्हें पीस चूरन करे यह जतन उपावे दो मित्रों में वैर होय चित माझ विचारे धूनी उनकी दीजिये हित तुर्त सिधारे।

तथा

घुग्घू अरु कौआ के पर लेकर एकत्र जरावे शनि दिन अर्द्ध रात्रि पर जारे गूगर धूनी लावे जिन दोऊन में वैर करावे उनके सिर पर नाखे होय परस्पर वैर दुहुन में कपट चित्त में आवे ॥

तथा

वस्त्र पुरुष सिरबाल महरियां मंगल के दिन जारे तिहि की राख खवावे उनको वैर चंदैया मारे।

तथा

करि नाग की कांचरी अरु न्याराके बाल।
दो मित्रन धूनी लगे उच्चाटन होय हाल ॥

तथा

गधा मूत्र लेवे शनि रवि दिन धरती परन न

पावे तामें राई रखे तीन दिन फिरले ताहि सुखावे रवि दिन धूनी देले जावे जहां मित्र दो पावें उनके बीच डारकर थावे वैर भाव हो जावे ॥

वैरी के घर कलह हो

दीत वार पंचमी दिन को धूरि मसाया जो लावे गूगर धूनी देके वाको बैरी के घर नावे, कलह होइ वाघर में निरा दिन बैरी अति दुख पावे, बैर करे का वह फल पावे घर सों निकरि जो जावे ॥

तथा

जो मलाया में जाय सोलोई हाइ गोड़ देखे तस होई वाये पग की नली जो नाये छील छालकर कील बनावे शत्रु के घर में जा गाढ़े रार सदा वा घर में बाढ़े ॥

तथा

चूहा और विलाव के टंक २ भर वार लेके उर से छान में दुर्जन के रविवार वाघर में विग्रह मचे

कलह रहे दिन रात जब काढे तब ही मिटे सगरो वह उत्पात ।

तथा

कूकर सूकर और विलाव इन तीनों के दांत मंगाय, फिर मंगाय मरघट की राख तिहि में धूरि चौराहा नाख, पांचों वस्तु इकट्ठी कीजो बैरी के घर लाय गढ़ीज कलह होय रात्रि दिन भारी रिपु को चित्त हो बड़ो को दुखारी ।

तथा

लोटे गधा दुपहरी रवि दिन अथवा भैंसा होय ताकी धूरि अटोक लाय के गूगर खेवे कोय ॥ उक्त धूरि जिहि रिपुके मांथे नांखे निश्चय होय कलह राति दिन व्याकुल होवे करे परीक्षा कोय ॥

वैरी का मूत्र बंद होय ॥

वैरी मूंते जिहि जगे छांकी मांटी लाय खाल छछूंदर में भरे जो रवि दिन मारी जाय ऊंचे पर

पर टांकिये मूत्र बंद हो जाय कै गूगां कै बावरा वैरी हो दुख पाय, जब आज्ञा करना चहे माटी खाल कढ़ाय जब लो मांदी खाल में तब ही लों दुखपाय।

वैरी मांदा होय

औंधी जूती पांव की रवि शनि लावे कोय।
गरम करे पानी विषे वैरी मांदा होय॥

वैरी दुःख पावे

चन्द्रवार और मंगल को धूरि मसाण मंगाय उसमें राई आनि मिलावे लकड़ी आक जराय तिहि अग्नी में दोऊ वस्तु को बीसबार करहो में आहुती के साथ नाम वैरी काले ले होमें।

नाम लेने की विधि

अमुकस्य हन हन स्वाहा।

वैरी बावला होवे॥

पांख दाहिनी भुजा काग की और स्यार की पूंछ जो कोई रवि दिन लाय धूंपदे गूगर करे जतन ना

चूके सोई, दोऊ वस्तु खटिया तर उरसे भेद न जानना पावे कोई जो नर वाखटिया पर सोवे सो दीवाना निचय होई ।

वैरी कष्ट पावे

मूंते हगे जहां पर बैरी तहां डंक बीछू कालाई ।
रवि दिन गूगर खेकर गाढ़े कष्ट प्राप्त होवे ताई ॥

भूत जाय

रवि दिन भूल धतूर का जो बांधे करलाय ।
भूत जाय बाका सही बुहरि न कबहू आय ॥

भूतादिक उतर जाय

लहसुन का अर्क काढ़िके तामें हींग मिलाय तिहि को आंजे नैन में भूत तुरत भग जाय अथवा या की नासदे देवे ही भूतादि जो दुख देवे देह क उतर जाय बिन बाद ॥

तथा

तुलसी पर पत्र अरु गोल मिरच ये आठ २

मंगवाय सहदेई की मूल को रवि दिन विधिसों। लाय, तीनों को एकत्र कर बांधि गरे में देय भूता दिक सब दूर हों रोगी अति सुख लेय ॥

धूनी डाकिनी भूतादिक सब दोष जायं

नीब पात बच हींग मंगावे। सर्प कांचुरी सरसूं लावे ॥ इन्हें मिलाय धूप जो देवें। भूत डाकिनी के दुख खोवे ॥

ब्रह्म राक्षसादिक जायं

शेरख मुंड़ी गोखरू और बिनौला लाय। गऊ मूत्र में बांटिके तिनकी नास दिलाय ॥ भूतादिक जावें सबै ब्रह्म राक्षस कढ़ि लाय, यह अति सुन्दर धूप है सगरे दोष मिटाय ॥

तथा

संखा हूली मूल मंगावे। रविदिन विधि पूरी करि लावे ॥ चांवर अथवा घृत विषें पीस नास जो देय। भूतादिक के दोष सब दूर होंय सुख लेय ॥

धूनी भूतादिक सब प्रकार के दोष जायं

मोरचंद्रिका और कटेरी यानि के मरुआ शिव निर्माल्य तिनौला लानिये। चिल्ली विष्टा तज कड़ तीनों पाइये॥ तुस वचके से इन्हें मंगवाइये। सींग गाय का लाय सांप की कांचरी॥ हींग अरु काली मिर्च सर्प दंतावली॥ बड़ दांत से सबको सम तुलवाइये। सबको ले पिसवाय कहीं सुखराइके॥ सब प्रकार के दोष इसी से जायेंगे। माहेश्वर यह धूप अधिक अधिकांयगे॥

भूतादिक रहन न पावें

सेत मुर्ग जिहिं घर में रहवे भूतादिक नहिं आवें।
भीर पड़े जो सुमरन कीजे ताको बोल जगावें॥

भूत दीखे

गंधक मीठे तेल को ले पारी बार।
भूत भयंकर दृष्टि में आवें बारम्बार॥

तथा

चिनौटी रस आंखिन में आंजे।

दीखे भूत भयंकर साजे ॥

तथा

सुर्मा राखे योनि में एक दिवस रज माहिं।
वाकों होमे अग्नि में भूत दृष्टि में आहिं॥

पूर्व जन्म दीखे

अंकोल बीज का तेल कढ़ावे। तामें घृत मिलावे॥
दिया बार के काजर पारे। पुखनक्षत्र जब आवे॥
अंजन करे नैन भर दोऊ हीये ध्यान लगावे। जो
यह जतन न चूके काई पूरब जब दिखावे॥

देवी देवता दीखें

फल अंकोल का तेल कढ़ावे। फिर यह जतन
करावे॥ चूरन करे तगर एक फल का दुह मिलि
अंजन लावे। जहां दृष्टि तहां लखे देवी देवता
देव दिखावे॥ तेल तगर का अंजन दीजे दृष्टि
मान सी पावे।

पितृ दीखें

मूत्र गधे का रवि दिन लावे। जमी पड़न ना पावे॥

गूगर खेय कहीं धरि देवे नैंनन मांझ लगावे। पितृ देव सब देंहि दिखाई रात्रि समें जो कीजे। जतन करे सो चूके नाहीं तौर न देखि पसीजे।

चरित्र देखे

मूल चिर्मिटी रूई में बाती घरे बनाय। कारी गैया घिरत ले दीपक मांझ भराय॥ चौका दे दीपक धरे गूगर खेवे ताय। ले सिन्दूर पूजा करे कछु चरित्र दरसाय॥

चित्र रोवे

जबै गर्भिणी जणे जो बालक तब इतना छल कीजे। झिल्ली जो बालक के ऊपर सो मंगाय के लीजे॥ धरे सुखाय कोई नहीं जाने जहां जतन यह कीजे। मूरत जहां चित्रसाला में तिनको धूनी दीजे॥ झिल्ली जरे धुआं जब लागे दृष्टि सबन की आवें। रोवे चित्र जहां लग जेते आंसू नैन बहावें॥

चित्र लोप हों

बालक जणे गर्भिणी नारी सिल्ली तुरत मंगावे।

अरु दूजा बिलई का आंवल दोऊ दूध पकावे ॥
धूनी दतो चित्र लोप हों भैंसा गूगर लावे ।
ताकी धूनी देत तुरत ही चित्र सबै दरसावै ॥

चित्र दीया तपाये दीखें

आंक दूध सों सूरत लीखे ।
दीया तपाये सूरत दीखे ॥

चित्र हंसें

बीर बहुटी गंधक साने धरे अग्नि पर खेल दिखावे।
अथवा बाती बानि जरावे हंसे पुत्री जियू भिमावे॥

पनिहारी का घड़ा खाली हो फिर भरे

चोंच हंस की लाय के जब दिन मंगल आय।
पनघट के मारग विषें एक लकीर कढ़ाय ॥ जो जावे तिहि लांघ के पनघट की पनिहार। जल बिन खाली जानिके मटका फेर निहार ॥ जब हां से उलटी फिरे भरा घड़ा दृष्टि आय। मूरख तानिज जानिके फिर लंघन कार जाय॥ जब आवे वह

वार को मटका खाली आय। फिर जावे जब पार को भरा हुआ दृष्टि आय॥

पनिहारी का घडा फूटे

अंत मांस का मंगल आवे। जब यह जतन करावे॥
जो कुम्हार का डोरा लावे। गूगर अग्नि धरावे॥
रात्रि में जलपग धरि बैठ दक्षिण मुख हो जावे।
मन मांझ दृष्टी को राखे, अंतभाव ना लावे॥
उस डोरा में सात गांठि दे जब २ तारा टूटे।
गूगर धूनी देकर उसको मन इच्छा फल लूटे॥
बहुरूं डोरा लाय के नाखे मारग में पन घट के।
लांवत ही घट पनिहारी का फूट जाय वे खटक॥

लोहा की पाटी पर लिखवाने की विधि

नौसादर अरु नीलाथोथा जो कोई मंगवावे। दोनों वस्तु को नीबू के रस मांझ मेल पिसवावे॥ लोहा की पाटी पर लिखके जाय कहीं धरवावे। अक्षर पाटी में धसि जावे॥ ले स्याही भरवावे। चाकू ऊपर नाम लिखावे॥ ताकों चोर न लेवे। विद्या

जाने बहुफल पावे जो मांगे तिहि देवे ॥

पत्थर पर लिखे

औटा लेवे तिल का तेल, लानि मोम तिहि भी तरमेल। पत्थर ऊपर लिखे जो कोय, सिर का मेले धोवे सोय। चार दिवस पीछें ले धोवे अक्षर मिटे न जो जुग होवे।

वस्त्र पर लिख जल से धोवे तो अक्षर दीखें

फूल सिरस कालावे तोड़, कूट छान रस लेय निचोड़ा। रस सों कपड़ा ऊपर लेखे, सूखे अंग प्रगट नहिं देखे। सो कपड़ा जल भेवे कोई, अक्षर प्रगट तबै सब होई। चिट्ठी पकड़न भय जब होई, ऐसा यन्त्र करे तब सोई।

हथेरी पर राख मलने से अक्षर दीखैं

दूध मदार लाय कर रखे, नजर बचाय हाथ पर लिखे। जब सूखें अक्षर तब धावे, भरी सभा में

खेल दिखावे। राख मले अक्षर पर ठेल, प्रगट दिखावे साचार खेल। दंभी निजमाया दिखरावे, तब वह ऐसा खेल दिखावे।

कागज को धूनी दे तो अक्षर दीखें

लिखे आंक के दूध सों जिहि कागज के माहिं।
गंधक धूनी जब लगे तब अक्षर खुल जाहि॥

कागज जल में डालने से अक्षर दीखे

नीबू के रस मांझ फिटकरी अग्नि मिलावे, कागज पर कुछ लिख लिखायके तुरत सुखावे। दृष्टि न आवे कहा लिखे अक्षर हैं यामें, जल में नाखे जबै तबै अक्षर दृष्टि आवें।

तथा

चूना लाय कली का चोखा अक्षर जासु लिखावे।
जब कागज को जल में डारे तब अक्षर दृष्टि आवे॥

अग्नि पर सेकने से अक्षर दीखें

रस निकाश कर प्याज का लिखे जो अक्षर कोय।

कायज सेके अग्नि पर तब वह घट होय ॥

अक्षर पीले हों

नौसादर अरु दूध मिलाकर जो अक्षर लिखवावे ।
अग्नि दिखाये पीरे दीखें चाहे जाहि दिखावे ॥

तथा

रस प्याज में घिसे छुहारा कागज मांहि लिखावे ।
लिख के धूप दिखावे लाल अक्षर हो जावे ॥

तथा

राई और छुहारा लेके पानी मांझ पिसावे ।
तासों लिखके धूप दिवावे लाल अक्षर हो जावे ॥

सुनहरी अक्षर हों

पत्ती कौंच मंगाय के ताका रस कढ़िवाय, तिहि में चूना पीसि के कागज पर लिखवाय । अक्षर सुब-रन के दिखें चित देखि हरसाय, ऐसी ही विधि सौं लिखै जिहि के मन में भाय ।

अक्षर उड़न विधि

नौसादर अरु संखिया और सुहागा लाय, तीनों सम एकत्र करि अंकन पर लेपाय। बहुरि धूप में ला धरै तनक लगावे वार, अर्क धूप पाये उड़ै गुरु चरण वलीहार।

तथा

अक्षर ऊपर सहत लिपोवे।
किल्क बार से जल भर धोवे॥

लाखी स्याही बनाने की विधि

कत्था सेत पैसा भर लेवे आधी कारी साजी, विजैसार की लकड़ी लीजै पैसा भर मन राजी। सबको नांखि पावभर जल में सारी रैनि जुराखे, भोर चढ़ा चूल्ह औटावै पक जावे मन साखे। ताहि उतारि धरे सीसा में कारापन जो चाहे, हड़बहेड़े आंवल का जल इहि में लाय नखावे।

काली स्याही साफ बनावे

केला का रस आठ पहर कड़ाई में नखवावे, माजू-

फल का रस हूलेके ताहि में नखवावे। माजूफल को पीसि भिगोवे जल में निशिभर राखे, भोर औट के उसको किसी वस्तु में नखे।

नीली स्याही

कालर लाय एक पैसा भर तिगुना गोंद मगावे, पैसा २ भर फिटकरी त्रिजै सारहू लावे। पीस फिटकरी जल में नांखे मले हाथ में लेकर, उनका जल काजल में नांखे घोटे गोंद मिलाकर। त्रिजै-सार का करके चूरन जल में डारि धरावे, ताका जल स्याही में देकर आठ पहर घुटवावे। तवि का बर्तन हो जिसमें स्याही को घुटवावे, बन जावे तब सीसा भर कर चाहे जहां धरावे।

पक्की स्याही लाखी

पीपरी लाख पाव भर लाके ताकों धोय धरावे, फिर कोरे खपरे में जल भरि चूल्हे पर चढ़ावे। पानी लगे बोलने जब ही लाख पीस कर डारे, जब पक जावे लोध पठानी धेला भर ले डारे। फिर

इतनी ही सज्जी डारे इतना लाय सुहागा पकजावे
तब ले उतार कर ताम्र पात्र में नांखे, काजर बांधि
पोटरी फेरे मिल जावे तब राखे। दिना तीन लौं
ताहि घुटावे बहुरि जो लिखकर देखे, ऐसी स्याही
सों लिखाय कोई पुस्तक जब मनमाहीं हरखे।

काली स्याही कच्ची

दो तोला भर काजर आवे, और फिटकरी इतनी
दोनों सम माजू ले आवे। गोंद लाय इस वजनी,
तिहूं वस्तु को जल में नाखे पीस कूट कर नारी।
काजर को जरवाय अग्नि में पगे कचाई सारी, प्रथम
गोंद भलमाहीं पोटरी काजर बांधि पिसावे। बहुरू
जल दोउ वस्तु भिन्न कर न्यारी २ नावे, घड़ी तीन
लौं घुटै घुटावे उतना ही गुण लावे।

शिंगरफ बनाना

तोला भर शिंगरफ मंगवावे जल में ताहि पिसावे,
फिर चौथाई गोंद मिलाके दो रत्ती पारा नावे।
मासा एक नीम दो मासा मिसरी तिहि में छोड़े,

जितना घोटे हो गुण तितना घुटवाके रख छोड़े।

सुवरण हल करन विधि

सरेस मछलियां ले दो तोला ताकों अग्नि चढ़ावे,
छै मांसे सुवरन का मात्रा हल करने को लावे।
लाय रकावी काची चीनी बहुरि जतन यह कीजे,
प्रथम नाखिये लौन तन कसा सरेस चौथाई धरिये।
तामें सुवरन पत्र डारि के पहर एक घुटवावे, चार
अंगुरी से घुटवा के पानी डारि मिलावे। प्याला भरिके
अलग धरावे बैठि जाय तब सोना, फिर काढ़े और
सरेस मंगावे फिर घुटवावे उतना। फिर जमाइये
बैठि जाय तब फिर काढ़े घुटवावे, तीन चार बारी
ऐसे ही घुट कर साफ हो जावे। रख छोड़े चीनी
प्याली में किल्क बार सों लिखिये। स्याही लावे
तो धरि आमी पर ताको जोश दिलैये।

रांग हल करन विधि

दो तोला ले रांग सरेस तोला भर लेवे, दोनों को
मिलाय सिला ऊपर धरि देवे। पकड़ हथोड़ा हाथ

में कूटे चोट लगाय, और रुखानो हाथ ले तासु लगाता जाय। जड़ कुटकर इक जात हो तब उठाय, धर लेय जल मिलाय जो कुछ लिये गोहरु फिर बादे।

सुवर्ण हल करन विधि

सुवरण केले पत्र को मिमरी से घुटवाय, चार बार बैठाय कर फिर उसको घुटवाय। जब लिखि को चाहे कोई तनक गोंद मिलवाय, लिख अत्तर सुख-राय के मुहरा तुरत फिराय।

घोड़े के लाल, काले बाल श्वेत करन विधि

संखिया और गुड़ को मंगवावे, पेठे के रस मांझ रलावे। खरल कराय मिट्टी पिसवावे, घोड़े पर कहीं ताहि लगावें। जिन वारन पर लेप करावें, श्वेत बार सिगरे हो जावें।

ऊंगा बन की रुखड़ी का गुण और सिद्ध करन विधि

शनि संध्या को बन में जावे, जहां पेड़ ऊंगा का पावे। तार कलाए लात सब और ऊंगा को लेय, ठौर तरे की गाढ़ की उब पड़ै चित देय। तार कंथि कें पेड़ सौंजन को तरै धराय, गूगर धूनी खेयकें न्यौता दे सिर नाय। कहै जो न्यौंता मनिये सिद्ध कीजिये काज, तुम्हरी महिमा को कहै हे सिर के सिर ताज। इतना कह निज घर को आवे, पाछैं फिर कर दृष्टि न लावे। रवि दिन प्रात काल हूं जावे, नयन होय कर ताकें लावें। दांए कर सौं बांहि उठावे, तार कलाया जब हूं लावे। जो पेड़ हो जड़ सेती ऊंचा, सो लावे जड़ सहित समूचा। सूरज उदय होन नहीं पावे, छाया तिहि पर पड़ नहीं जावे। चलि जावे मुख फेर न जावे, घर ला धूप अग्निा पर धरवावे। छाया किहि की पड़न न पावे, स्वच्छ ठौर में ताहि धरावे।

धरन ठिकाने आवे

पुष्य नक्षत्र शुभ जब ही आवे, सुवरन के ताईं तब नावे। सिद्ध किये ऊंगा को लीजे, धरताईत बंद मुख कीजे। जाकी नाभि कहीं टर जावे, ताकी नाभी पर बंधवावे। धरन जाय धरन पर बांधे, कौड़ी हटै कौड़ी पर साधै।

हाजरात

सूखी साख ऊंगा की लीजे, बाती रुई लपेट करीजे। दीये नये में घिरत पुरावे, तामें बाती नाखि जरावे। उच्चवरण का बालका स्वच्छ पहराय, दीपक सन्मुख दृष्टि कारे पूछे ताहि बताय।

भूख नहीं लगे

सुन्दर खीर पकाय के ऊंगाले नखवाय, गूगर धूनी खेय के सत्त करे चितलाय। फिर हांड़ी मुख बंद कर चूना पीसि लगाय, अथवा गुड़ चूना मथे हांड़ी मुख पर लाय। भीतर जल जावे नहीं ऐसा

मुख मुंदवाय, बहते जल में गाढ़िये पाताल स्वर खुदवाय। जितने दिन की शर्त हो भूख लगे ना ताय, बीतत ही मियाद के खीर काढ़ि के खाय। फिर लागेगी भूख बहुमन चाहे सो खाय, विधि में चूक न कीजिये गुरु को दोष न लाय।

बिच्छू का विष उतरे

बिच्छू का डंक जहां कहीं लावे, पाती ऊंगा पीस खवावे। धरे डंक पै विष जर जावे, पीड़ा टरे देह सुख पावे। इति ऊंगा विधि॥

मस्सा कटै

शोरा कल्मी कोई मंगावे, मूली के रस में डल-वावै। मस्सा को कटवाय लगावे, तो मस्सा उपजन ना पावे।

भैरव पकड़न विधि

जबै अमावस्या की रात्रि को निज वीर्य निकासै, ताहि सुखाय पिसाय क धरे निज पासै। दूजी

अमावस आए जब आंखिन में लावे, जहां आवें भेड़ी बकरियां संध्या समये जावे। भेड़ व बकरे पर सवार जब दृष्टी आवे, ताकी कुलह उतारि के निज कर में लावे।

दोहा

भैख तेरे पास आयके मांगे टोपी, धरि ले कहीं छिपायन देवे उसको टोपी। जब लौं टोपी रखै पास वह बसि है तेरे, कहे उसे जो काम तुरत करि लाय घनेरे। तीन वचन जो देय याद करते ही आऊं, तब टोपी को देय यही विधि और बताऊं।

अन्य प्रकार

शनि रविवार जो रात्रि को यह जतन उपावे, एक मैर कहीं बैठि गगन में दृष्टि जो लावे। तारा टूटें तुरत गांठि पगड़ी में देवे, जब हो जावें गांठ सात तब गूगर खेवे। फिर पनघट पर जाय बैठिये कहीं इक ठौरी, पनिहारी भरि चले सीस धीर मटकी जोरी। खोले एक जो गांठि गिरे मटका जब फूटे

ऐसे ही खेलत जाय गांठि और कटकी टूटे। जब कोई साबित रहै घिरगना ताको लावे, जहां भेड़ बकरियां जायं तहां संध्या को जावे। घिरगंना में सौं करै दृष्टि पास भैख दिखरावे, तब घिरगना में हाथ डारि वाकी टोपी लावे। फेर घिरगना के जाय सिला पर टुकड़े कीजे, मांगे टोपी आय सो टोपी कबहूं ना दीजे। तबलौं टोपी रहै पास बस भैख रहवें, तीन वचन ले देय तो टोपी नित संग रहवे।

अटूट भंडार

जहां पुरानी होय जगह होरी जरिवे की, तहां करे वह विधि गुप्त जो है करिवे की। गाय घिरत अस तेल तिली गेहूं मंगवावे, चौथी ज्वार मंगाय और इक पैसा लावे। डांड़ो गाढ़ै तहां सबन को माढ़ि धरावे, जा निशि होरी जारिये यह जतन करावे। प्रातःकाल लावे उखारि नहीं जाने कोई, ले वस्तुन को धरे बांधि वस्तुन में जोई। खर्च करे बहुभांति

घटेगी कोई नाहीं, विधि में चूकें नांहि सतय माने मन मांहीं। तेल तर्जनी सिर लगाय सूरज विख-रावे, बैरी के घर निकरे तो अग्नि जरावे।

तथा

मरी चिड़िया धरै अन्द जी घुसल माहीं, धरि आवे सतनजा तूहीं को आने नहीं। जब बच्चे उड़ि जायं सतनजा चुनि के लावे, धरवे कोठी मांझ अन्न में घटी न आवे।

तथा

जहां घोंसला उक्त धरै धरती सुखवावे, धरे अठन्नी एक ईंट भरवाय गढ़वावे। निश्चैं करि यह जानि चिरैया ताहि निकासै, मन इच्छा फल देय राखिये अपने पासै। जो मिलि जाय तो लाय अठन्नी गूगर खेवे, धरै रुपैयन मांझ खर्चिये टूट न आवे।

खर्च हुआ धन फिर आ जाय

रवि दिन यत्न करे जो कोई, जाय जहां मेंढक तहां होई। मैथुन करता मेंढक पावे, नरमासी दोउ

न को लावे। प्रथम गूगर की धूनी देवे, बहुरि यन्त्र ऐसा करि लेवे। नरमुख मांझ रुपैया मेले, मादा के मुख थैली पेले। फिर दो उनको टीका कीजे, हाथ जोड़ी दोउ न्यौता दीजे। बहुरु ताल होय जहां जावे, दोउन को वहां हीं ले जावे। नर को पूरब ताल गाढ़िये, मादा पश्चिम ताल गाढ़िये।

दोहा

नगन होय तहां गाढ़िये दोउन को ले जाय, पग छाया नर नारी की तहां न पड़ने पाय। विधि में चूक पड़न नहिं पावे, आठ दिवस बीतें तब जावे। खोद ठौर इक २ को देखे, चिन्ह दोऊ ठौरन के पेखे। जो उड़ि जाय दूसरे के कन, खर्च कीजिये उसका ले धन, अपनी ठौर तजी जिन नाहीं। तिसका धन रहै थैली माहीं खरचा धन थैली में आवे, थैली का धन कहीं ना जावे।

दोहा

जब लौं धन थैली धरा रखैं चौकसी संग।

तब लौं धन खर्चा करे कभी न होवे तंग ॥

तथा

दोय पूंछ की छपकली ताकों पकड़ि तो लाय।
उसकी भी दो पूंछ में ऐसा ही गुण पाय ॥

गुटका मारग चलै हार न माने

कारी तीतर पकड़ कर ऐसा जतन करावे, तीन दिवस लों भूखा राखे चौथा दिन जब आवे। मासा चार मंगाय के पारा चोंच खोल मुख मेले, चावल गऊ दूध में भेवे सो आमी धरि ठेले। खाकर बीट करे जो तीतर ताकों गुटका जाने, मारग चलै हार नहिं माने रति में वीर्य न हाने।

वस्तु बिक शत्रु दबे

बागल जिन रूखन पर पावे, रवि दिन प्रात काल हो जावे। शनि दिन जाय न्यौत कर आवे, हारी एक तोड़ कर लावे। पीछे फिर कर कभी न देखे, घर पर जाकर आनन्द पेखे। मंत्र जपे सिद्ध कर लेवे बैठे पग तर डार दबावे, वस्तु बिके अति

आनन्द पावे। जो कोई पात धरे सिर माहीं, दबे शत्रु चिंता चित जाहीं।
मंत्र--अचिमो चंड अलसुर स्वाहा एकोशतवार जपे-सिद्धि।
पृथ्वी का गढ़ा धन दीखे-लाल पूंछ की बामनी ताको पकरि मंगाय, तिहि कालोही लीजिये और मैनसिल लाय। दोनों को मिलवाय के आंजे आंखिन माहिं, धन दीखे भूखा धरा और गढ़ा तिहि नाहिं।
तथा-काली मुर्गी ले इकरंगी जिहि का काला मांस, जिहि की चर्बी नैनन में आंजे भूधन दीखे तास।
तथा-काली गैया दूध लाय जिव्हा पर नावे, अरु वाको घृत लाय दोऊ नैनन में लावे, जहां होय धन गढ़ा दबा दृष्टी में आवे, तिथि नक्षत्र शुभ होय तबै यह जतन करावे।

पृथ्वी का गढ़ा धन जाने॥

जहां पृथ्वी को खोदिये बास कमल की आय, तहां गढ़ा धन जानिये खोदी काढ़ि ले ताय।
तथा-जहां काग मैथुन करे अरु बैठ सिंह आयु

निश्चैं ऐसी ठौर में दे धन गढ़ा बताय।
तथा-जहां ज्येष्ट आषाढ़ में रुखन पर पत्र आय, अन्य किसी ऋतु में नहीं तहां पात दृष्टी आय, तहां गढ़ा धन जानि के लावे मन विश्वास, इन्द्रजाल यो कहत है करै परीक्षा तास।
तथा-आस पास जिहि ठौर के जल का चिन्ह न होय और भान की तस में रहत आल निज होय जा अग्नी बारे वहां प्रगट कभू ना होय. तो निश्चें यह जानिये यहां गढ़ा धन होय, जहां भान तपता रहे हरी रहै नित घास. चौपाए खाते रहें घटी न देखे तास नित खावे नित ऊगजे नित नवीन तरु होय तहां पृथ्वी के पेट में धन निश्चय कर जोय।
परीक्षा-जहां गढ़ा धन जानिये मटका एक मंगाय. गेंहू भर कर माढ़िये सात दिवस हो जाय. तब उघारि देखे तिन्हें गेंहू सब मरि जायं. तो निश्चे यह जानिये गढ़ा माल तहां पाय।

गढ़ा हुआ धन देखने का सुरमा

कारा कांव मगाय के भिल अरु जीभ कराय कढ़ाय, तेल नाहिं पिसवाय के पाथर पर पिसवाय. जो नर

पायन सों भया तिहि के नैनन आंजि. ऊपर पत्ता अंड़ का बांधि करे निज काज. गढ़ा धरा धन होय जहां तहां जो देखे आय. निश्चै वाकी दृष्टि में धन संपति सब आय जब वह देखन को चले संग होयं न चार जासों वाकों भय न दें धन के चौकीदार।
रसायनविधि–तब कीजे हरि ताल हर्दिया जहर मिलावे. तीजा पारा लाय तोल प्रति पैसा लावे. चार घड़ी रस मांझ ग्वार के खरल करावे. टिकिया गोल बनाय शिकोरे दो मंगवावे. दोनों के मुख रगड़ तरे ऊपर मिल वावें टिकिया भीतर धरे सीपका चूना लावे. छे पैसा भर तोल पीस मुख बंद करावे. तिहि पर दे तहतीन मृत्ति का खूब जमावे. मंगवा ढ़ाई सेर मृतिका मांझ धरावे. जब ठंडी हो काढ़ि टिकिया को लाये फिर तांबे का पत्र लाय कर ताहि तपावे. थोड़ा लेकर चूर जरी टिकिया बुरकावे. चक्कर खाके बैठि जाय सुवरन हो जावे गुरु बताया भेद पुराय करना शुभ होये।
रसायन–जंगली सुअर कोई जावे. ताका सबा कढ़ाय धरावे. डेढ़ सेर लै मास तुलावे. जामें ले हर

ताल पुरावे. तब की आध सेर वह होइ. पीसे कपड़े सों छनवाई ढारे मांस मांझ मथवावे. चार पहर लों खुला धरावे. चिल्ली बाद ताहि खुलवावे. भरी हांड़ी में ताहि गढ़ावे. धूरे मांझ गढ़ाये धरावे. कीड़ा एक रहे तिहि लावे. जिहि को सीमा मांझ धरावे. खिचड़ी पर ताको रखावे. तप तपाय कीड़ा के धनी. धरे कहीं ढकि ताको आनी. ताम्र पत्र पर जमै लगावे. अग्नि धरे सुवरण हो जावे।
तथा–लाय बिजौरा एक और गंधक मंगवावे होय आय ला सार टंक भर ताहि तुलावे. बीस आठ ले पहर रखरख कर वावे ताही गोली कर नख वाय अति. श्री शीशी माहीं शीशी में भरवाय अग्नि पर ताहि जरावे. काढ़े रोगन तासु ताम्र पतर पर लावे. वा अग्नि धरे लापत्र होय सब कारज पूरा. सच्चा मानिपें बधन गुरु सन होवे पूरा।
तथा–कहें रुद्रवंती जिसे रूप वर्ण कहूं ताहि. सब ठौरी तो होत हैं मिले भाग्य बिन नाहिं. छता चपटा गोल हो जिमि रोटी मोटी होय. पात चपो के पात से तरे चिक नई होय चेंटी वहां लागी रहै जब

देखे कोई जाय. प्रात जीभ पर धरत ही मनो पार हो जाय. जाके हाथ लगे जही ताम्रपत्र भरवाय. एक बूंद जो नाखये तो सुवरण हो जाय. जिन छोड़े पर बारहैं भजें कृष्ण का नाम उनकी दृष्टि में रहै जहां बैठि लें नाम।

जोड़ा बनावा की विधि

खाली संखिया लाय के कड़वे तेल चढ़ाय. लाय कजही लोह की तामें दुहुन धराय. अग्नि बरावे जिहि तरे जवै जोश खा जाय. सींक डारि देखे डली पके पार हो जाय तब उतारि बाको धरे नक छिकनी को लाय. रस कढ़ाय चूल्हे धरे मृति का कुल्हड़ा माहिं. शोरा कल्मी नाखिये बहुरूं रस के माहिं. बोलन सूं चुप का रहै तवै उतारे ताहि. आठ २ आने भर लेवे चांदी ताना दोय. प्रथम मरावे ताम्र को डार सुहागा कोय. तांबा खावे चक्र जब चांदी नाखे लाय चांदी भर जावे जबै तब शोरा ले नखवाय. चांदी चक्कर खाय जब रति संखिया डार. करतब में चूके नहीं देखे नैन पसार. बैठि जाय चांदी जबै तब उतारि धरि लेय. अति चोखी चांदी

बनै चाहे जिहि को देय. जो अपनी लगत लगे दूनी चांदी होय. याही सौं जोड़ा कहैं जानि लेउ सब कोय।

जड़ी पर जो वस्तु धरे घटे नहीं

एक जड़ी वन में रहे ताकी यह पहचान. जल में नांखे वह चले छोटी सर्प समान. नीलकंठ तिही लाय के खोले सुत की आंख. तब बाके घर में मिले चतुर भरें यो सांख. चतुराई जिहि चित्त में सो पावे तिहि जाय. वापर जिहि वस्तु को खर्चे फिर भरि जाय।

हीरा मोती बनाने की एक ही विधि

एक लकड़ी सों बांधिये गजभर मल मल जाय. खेत चने काहो जहां तहां उसको ले जाये. चार घड़ी तक फेर खेत में छाया मांझ सुखाय. बीत जाय चालीस दिन तब कई टूक कराय. जब बरसे ओले बरसा में धरे तिन्हैं उठवाय. प्रति टूक एक ओला धरि ताका मुख बंधवाय. फिर अंडी का तेल मंगा के अग्नि पर चढ़वाय. ओला पकें अग्नि के ऊपर बंधि हीरा बनि जाय. जो कोई मोती करना चाहे तुरत छिद्र करवाय।

मोती करन विधि—आंख बड़ी मछली की लावे. जुदे २ लतन में नावे. भेड़ दूध को अग्नि चढ़ावे. नेत्र वस्त्र पर हीरा लावे. उनको हांड़ी में लटकावें. भिड़न दूध सोंना हीं पावे. ज्यों २ जरि के दूध निचावें. तों २ आंखिन को तरलावे. जब दोउ नेत्र नरम हो जावें. तब निकारी के छिद्र करावे. धरके छाया मांझ सुखावे. चांवल मैले साफ करावे. उज्वल मोती से हो जावें. कांसी के बर्तन में लावे. तिन्हैं जौंहरी को दिखरावे. जचि मोल तोल सब पावे।

मूंगा बनाने की विधि—शिंगरफ शंख दोऊ सम लेके भेड़ दूध में नावे. पांच पहर लों खरल कराके गोली बांधि धरावे. मूंगासी गोली बनवाकर ताम्र तार सों छेदे केले के पत्ते पर रखें कर छाया मांझ सुखेदे. महु आतेल चढ़ा हांडी में चूल्हे अग्नि जरावे. जब वह औटि जाय तब दाने ताम्र तार के लावे. हांड़ी में लटकावे माला भाप पाय पक जावे. रहै तेलसौं ऊंची माला काढ़े जब पक जावें. अथवा गेहूं की दो रोटी तिनमें धरि पकवावे, पकजावें जब जिला कराके चाहे जाहि दिखावे।

मोती बनाने की विधि—जब ओले बरसैं वर्षा में. तिन्हैं उठाय धरे कुल्हड़ा में तुर्त अलसी का तेल चढ़ावे. औटि जाय तब ओला नावैं, पकैं तेल में अरु बंधि जावैं. बिना बिलम्ब छिद्र करवावे. अति सुन्दर मोती बन जावे. परख जौ हरी मोल बतावे. कोई महुआ के तेल पकावैं. जिहि विधि जो जाणो बतलावे।

तथा—दोऊ नेत्र रोहू मछली के कढ़वाकर जो लावे. उर्द चून में गोली करके धूप मांझ सुखरावे. डेढ़ सेर फिर तेल मंगा के अलसी का औटावे. तामें नेत्र नाखि पकवावे शुद्ध मोती बनजावे।

परमाली करन विधि—शिंगरफ रूमी मस्तंगी अरु शंख मंगावे. एक २ पल तिंहू वस्तु कों ले यंत्र उपावे. दूध ऊंटनी लायकर सब वस्तु मिलावे. खरल मांझ डरवाय पहर दशलों घुटवावे. फिर माला के दाने समदाने बनवावे. बहुरि सुई सो छिद्र करि छाया सुखावे. नली बांस की लाय कर तिहि मांझ भरावे. खीर मांझ पकवाय के तिहि काढ़ि धरावे. इक २ दाना लेय कर मुहरा करवावे. फिर घृत सो

मलवाय जिला करवाय धरावे. इहि विधि पर माला बने अति सुन्दर होवे पहरि गरे के मांहि बहुरि शोभा मन मोहे।

पद्मराग करन विधि—लाख पीस लीजिये कूटि साफ करवाय, अस्सी पल जल नांखिये नर्म आंच धरवाय, प्रति ढाई पल दूध सुहागा दोऊ दे नख-वाय, पगले देवे बूंद इक कागज पै डलवाय, बूंदन फूटे कागज में तो सीसा मांझ भराय, तामें ओला डोब दिला के महुआ तेल पकाय, पद्मराग हो जावे सुन्दर जो विधि चूके नाहिं, बेच वाचके करले कौड़े जी चाहे मन माहिं।

नीलम करन विधि—देकर जोश मजीठ को सासा में भरवाय, ओले वर्षे गगन सों तबयों जतन कराय, तुरत कढ़ाही में चढ़ा महुआ तेल मंगाय, ओटि जाय तब नाखियें ओला तिहि में लाय, पग जावे नीलम बने जो देखे ले मान, बेच लाय बाजार में तिहि को सुन्दर जान।

नीलमणि करन विधि—एक पल नीलम जीठ दो जल में नाखि धराय ओला बोरि निकासि फिर

महुश्रा तेल भुनाय।
मर्कट मणि-देकर जोश मजीठ को नाल हरि ताल मिलाय, पूर्व मुक्ति करवाय कर मर्कट मणि बन जाय।
अथ घुग्घू कल्प पांजन विधि-रवि दिन जो अमावस्या होवे, अथवा पूरी चौदस होवे, घुग्घू पेट फाड़ि त्रिष लीजे, तिहि को काजर विधि सों कीजे, भूमि मसाण में काजर कीजे, एक में ले विष को भरि दीजे, दूजो मांझ काजर मांझ काजर ले कीजे, नगन होय के काजर पाड़े, गूगर खे निज गृह सिधारे, अष्टोत्तर निज मंत्र जो जापे, सिद्धि होय सब कारज आपे।
दोहा—तांबे के ताईत में काजर धरे भराय, मुख में धरि जावे कही कोई न देखे ताय, धन पाताल दृष्टि में आवे, धन पृथ्वी का धरा बतावे, जो कागर नैनन में लावे, जोगिनियों से भेटा जावे, देवा देव सबन को देखे, मंत्र जपे तब सिद्धि पेखे, जब गो मूत्र से आंखें धोवे, तब प्रकाश देही का होवे।
मंत्र—ओं कुरु स्वाहा में हसरीय नेत्र धनेय पाटेश

वरी इति मंत्रा ।

लोपाञ्जन—घुग्घू की चरबी मंगावे. ताको तेल कढ़ावे. उसी तेल का काजर पाड़े. नैनन मांझ लगावे. होय अदृष्टि कोऊ ना देखे आप सबन को देखे गऊ मूत्र सों आंखे धोवे सबकी दृष्टि पेखे ।

तथा—घुग्घू पग पिंडली जो लावे. तिहि का तेल कढ़ावे. तात्रा टंक २ ले तेल सानि पिसवावे जो नैनन में आंजे कोई होय अदृष्टि सुनो वह लोई ।

तथा—घुग्घू नेत्र और मंझारी करि एकत्र पिसावे. तेल लाय सरसों में घोटे तन पर लेप करावे. होय अदृष्टि कोई ना देखे जहां चाहें तहां जावे. बाजीगर जिहि को दबकावे महलो से बुलवावे ।

तथा—घुग्घू नेत्र तेल में पीसे मरघट में जा काजर पाड़े. काजर को नैनन में आंजे होय अदृष्ट सत्तकर ताड़े ।

वसीकरन—घुग्घू मांस कढ़ाय मंगावे रवि दिन यन्त्र उपावे लाल चन्दन और केशर दोऊ टंक २ भर लावे सबहन पीसि गोलियां बांधे गूगर धूप दिवावे. पान मांझ जो मंत्रि के धरिये जिहि खावे

बस पावे ।

मंत्र—ओंनमो महा पंखेस अमुकस्य मम वस्यं कुरु २ स्वाहा ।

तथा—घुग्घू जीभ मंगावे रवि दिन गूगर धूनी देवे, मेल मिठाई मांझ मंत्र को जिहि खावे वश होये।

तथा—घुग्घू तालू पान धरि जिहि नारी को देय, सो वश होवे चित्तदे तन मन दोऊ देय।

तथा—घुग्घू नेत्र अरु कुम कुम ले गोरोचन मंगवाय. नाग केशर लाय के चारों कर एकत्र पिसाय, अष्टाविशत बार मंत्रि के माथे तिलक लगावे, राजा देखत ही वश होकर करे जो तन मन भावे ।

तथा—घुग्घू की चोच लाय जो कोई नांग केसर मंगवावे, सोई केसर गोराचन हूं लावे शोरां ले चकत्र पिसावे, माथे तिलक करे जो कोई, देखे सो निश्चय वश होई ।

तथा—घुग्घू को मंगवाय जो कोई. काढ़ि कलेजा लावे सोई मंसिल बच दोऊ जो लावे. तीजी ले असगंध धरावे. चमगीदड़ की विष्टा लावे. अरु भैंसा का सींग मंगावे. कूट गऊ रोचन अरु केशर

शिला जीत ले करे इक तर. गऊ मूत्र में पीसि धरावे. तिलक काढ़ि राजा पै जावे. देखत ही वश होवे राजा. सुधरें सब तेरे ही काजा।
तथा—घुग्घू नेत्र मंगाय अरु केशर गोरोचन ले करे इक्त्तर इनका पीस तिलक कर जावे तोरा जा तुरत निजवश पावे।
तथा—घुग्घू की जीभ नीम के पत्ते करि एकत्र पिसावे. अंजन करे नैनन में जो नर सब ही वश हो जावे।

लाल चींटियों का इलाज

थोड़ा ग्रानशीज लेकर एक कोठरी वा अलमारी में रख दे भगवान चाहे तो सब चीटियां खो जावेंगी।
बसीकरन बुर्को-घुग्घू नेत्र गंभारी अरु पारा मंगवावे. केशर अरु बछनाग रस अरु सरसों ले आवे. ले फिर केशर नाग को सम को सम तुलवाय. कूट पीस भेली करे सो मरघट गढ़वा सात दिवस वीतें जवै फिर उखार कर लाय. जिहि के सिर हर नाखि बिना बुलाये आय।
तथा—ऊपर लिखी जो वस्तु हैं सातों न को

मंगवाय. वामें रस वछ नाग है या बछ नाग लिलाय. सबको ले एकत्र कर फिर यों करे उपाय. घृत इकरंगी गाय का मटिया टीप भराय. नेत्र बराबर लीजिये वस्तु सवै तुलवाय. बाती मांझ नखाय के काजर ले परवाय. नन्दन वन की रुई ले वाती करे विचार. मघा नछत्तर रात दिन अरु होवे रविवार. अर्द्ध रात्री मरघट विषें जाय गोहोली देय. नगन होय वस्त्र काढ़ि के मनुष्य खोपड़ी लेय. अथवा काचा ठीकराले काजर पार धराय. अष्टोत्तर शत मंत्र जप गूगर खेवे ताय. सिद्धि होय कारज कारज सही जिहि के वस्त्र लगाय. सो वश होके यो मिले ज्यों नदि सिंधु समाय।

मंत्र—ओं नमो महा पंखी अमृत कुरु २ स्वाहाः कास रात्री सुधा नारी सिंहस्त महिषा चर चीन कलपाल मल टपरिरे आगच्छ २ भगवत आस नइति मंत्र सम्पूर्ण स्वाहा।

तथा—घुग्घू का गर्का बीट मंगावे पिसवाकर धरवावे, जिहि के मस्तक पर तिहि डारे निश्चय वश हो जावे। तथा—घुग्घू का कढ़वाय करेजा गोरोचन मंगवावे,

सात बार मंत्तर जपि आंजे जिहि देखे वश पावे।
मंत्र–ओंउम् नमो महा पंखे अमुकस्य मम वस्यकुरु २ स्वाहाः २८ बार जपे ॥

मार्ग चले हारे नहीं

पग और चोंच घुग्घू की लावे. दुहुन जराके राख करावे. वेल पत्र का चूरन करिये. भस्मी मांझ मिलाकर धरिये. नीबू का रस माहि सनावे. तरवा में लेप करावे. मंत्र जपे एकोशत वारे. सौ योजन लों चले न हारे।

संग्राम में जीते–घुग्घू को जो पकरि मंगावे, बायें पंग की नली कढ़ावें। तामें भरि पारा धरवावे, फिर ले ऐसा यन्त्र करावे। गंधक लाल अरु नीला थोथा, इन दोउन में नली धरो था। मंत्र जपे राखे निज पासा जीते युद्ध पुरें सब आसा।

बैरी के कलह होय–घुग्घू की परलाय के मंत्र जपे जो कोय, बैरी के घर गाड़िये तो कलेश अति होय।

उच्चाटन होय–घुग्घू को सिर लाय के जो चूरन करवाय, बैरी मस्तक नाखिये उच्चाटन हो जाय।

तथा–घुग्घू हाड़ मंगाय के जो नीबू काष्ट मंगाय, मंझारी नख चामले रसधतूर कढ़ाय । अस्मसाण का हाड़ ले सब एकत्र कराय, बैरी क घर नाखिये तो उच्चाटन हो जाय ।

स्त्री पुरुष में विग्रह होय

घुग्घू मस्तक कांग नख दुहुन एकत्र कराय, पढ़ि २ मंत्र जो हो मिये निश्चय विरुद्ध कराय ।

मंत्र–ओ३म् नमो पंखेस अमुक । अमुकी मधे कलह कुरु कुरु स्वाहाः

दो मित्रन में वैर हो–घुग्घू नेत्र मंत्रि के लावे, दो मित्रन के बीच गिरावे । दो उनके मन मैले होवें, मिटै मित्रता वैरस जोवें ।

मंत्र–ओ३म् नमो बीर हुंहुं नमः

तथा–घुग्घू नाक मंत्रि के लावे, पूर्व विधि जो लिखी करावे ।

भूत प्रेत उतरि जायं-घुग्घू पकरि मंगावे कोई, मांस खाल जा काढ़ि है सोई । दोऊ पिसाय इक ही कीजे, भूत जहां हो धूनी दीजे । भूत प्रेत फेर नहीं आवें सुख उपजे चिंता मिट जावें ।

सोता हुआ मन की बात कहे

घुग्घू का कटवाय करेजा अग्नि धरावे, गूगर धूनी देय मंत्र को सिद्ध करावे। फिर जो सोता होय कोई तिहि के उर धारे, कहे सो मन का भेद आपने मुख सों सारे।

सर्व कामना पूर्ण विधि–कोई हाड़ पीठ घुग्घू की लावे, घसि के माथे तिलक लगावे। अष्टोत्तर शत मंत्र जो जपिये, सर्व कामना पूरण खपिये। तिलक देख राजा वश होवे, गुप्त मनोरथ पूरण होवे। मंत्र–ओ३म् नमो महा पंखे सखरी आ गच्छ २ अतुल वल पर। क्रमाय सर्व कामनी मम वंस्य कुरुः मंत्रेश्वरी औताटः फद् स्वाहाः

बैरी का बसीकरन–चोंच अरु पर घुग्घू ले राखे, चूरन कर बैरी पर नाखे अष्टोत्तर शत मंत्र जो जपिये, तो निज शत्रु को वश करिये।

रात्रि में दिन के समान उजारा हो

घुग्घू की शिख लीजिये अरु हरताल मंगाय, तीजा मंसिल लाय के गोली कर अंजवाय। मंत्र आठ अरु सौ जपे वस्तु सिद्धि हो जाय, रैनि समय दिन की

तरह उजियारा दरसाय ।

लोपांजन-कारे बिलाव को नित्य खवावे माखन गिरी जो दीजे फिर उलटा करवा के वाकी छेर करे सो लीजे वाको दीपक मांझ डारि कें बाती रुई करावे, काजर करि आंखिन में आंजे अलख होय सुख पावे ।

ऋद्धि सिद्धि-भरनी भादों मास की कृष्ण पक्ष में होय, तामें चातक कीजिये जानत है सब कोय । चार कलस जल भरि धरे एकान्त घर माहिं दूजे दिन जा देखिये रीति होंय सोलाय, भरे कलस छिड़काय दे रीते अन्न भराय । एकान्तर धरिये तिसे नित उठि पूजे ताय, अन्न पूर्णा हो खुशी जब मांगे धन दान सो सब देगी पूर्णा यह निश्चय मन आना ।

पारा का कटोरा बनाने की विधि

पाव सेर पारा मंगवा के, दूनी कलई मंगा के । मोम मिलाय अग्नि में धरि के, सांचा वेग मंगा के । पारा कलई मिला दुहुन को तामें आंच लगावे, सांचा भर के काढे उसको मन इच्छा फल पावे ।

नौन का कटोरा—सांभर नोंन मंगाय के गाजर बीज मिलाय, सांचे में थांपै उसे बने कटोरा आय। देव दर्शन—चार सेर मौंठ बिन चुगी लावे, घड़ा मांझ भरि ताहि धरावे। जो भावे सो आप ही खावे, खाते कंकर डाढ़ तर आवे। वा कोंले पनघट पर जावे, पनिहारी जो जेहर भारे। वामें वा कंकर को डारे, फूटै जेहर घिरगना लावे। बन में जाय गाय जहां आय घिरगन में से देखे जाय। सींग बैल पर भैरूं आय, दर्शन करके इतना करे। बाहन कों कछु भोजन धरे, प्रसन्न होय भैरूं बर मांगे। ले बरदान निज कारज लागे।

गांव की आपत्ति टरे

बानर का जो हाड़ मंगावे,वाको पहिले धूप दिखावे। धूप दीप दे वाकों लावे, गांव सींव पर गढ़ावे। गांव की आपत्ति सब टरिजावे, सुखी रहैं सब और सुख पावें।

भूत प्रेत दर्शन—वागल को लाय उसे पारापाणा, पारा जो छेर करे सीसा भरणा काजर करवाय उसका नैंनन आंजे, भूत और प्रेत सबै दृष्टी आंजे।

मतलब जो होय कछु मांगे भिक्षा, पूरन कर देंय सारी माने शिक्षा बात जो पूछे तो कहें साची सारी, सौ कोस की बात जाण कहदे सारी।

उतारा भूतादिक दोष मिटाने का

संध्या समय वार शनिवारी कुम्हार के घर जावे, कूड़ा ऊपर चौंसठ दीवा उलटे चाक उतरावे। दीपक दीपक बाती धरि के सब में तेल पुरावे, दूध भात का कूंडा भरि कें तामें शकर मिलावे। सांझ समय जो करे उतारा रोग दोष मिटि जावे, भूत प्रेत डाकिनी स्यारी बाय अंग मिटि जावे।

कड़ा भूत प्रेत का दोष मिटाने का

नदी किनारे नाव जो देखे तिसका कांटा लावे, घोड़ा सुमका नाल मिलाके ताका कड़ा बनावे। धूप दीप दे पहरे कर में रोग दोष मिटि जावे, भूत प्रेत डाकिनी स्यारी बाय अंग मिटि जावे।

बुद्धि और ज्ञान बढ़े—कार्तिक मास शुल्क पक्ष चौदस संखा हूली न्योते जी, हस्त नक्षत्तर आवे जा दिन बाकों डेरे लावे जी। वांटि कूटिकें रोगी बांधे सावन श्रवण जब आवे जी सो गोली ले नर को

शुभाशुभ विचार—उत्तरा में दिशा गांव बाहरी जाय, सुने शब्द विरिया मिलें वाकों सांची खाय।

माँटी खाय, गुड़ का स्वाद आवे

पात चिर्मिठी सेत मंगावे, अंधियारे में जिसे चबावे। फिर वाको जो माटी खवावे, गुड़ जाने खाता न अघावे।

शत्रु का घर उजड़े—हस्त नक्षत्र लीजिये सैंधा नमक मंगाय, ताका जतन यह कीजिये बहुत ही मन सुख पाय। मूरत करे गणेश की नाम शत्रु धर तास, ज्यों तन छीजे वाह का त्यों शत्रु का नाश।

तथा—लील बड़ी ले हिरण मूत्र में ताकों रात्रि भिजोवे जी, प्रात समय तिहि बांटि कूटि के पाछें कपरा धोवे जीले, कपरा मसान में जावे ताका मंत्र जो करिये जीले को इलाको मूरत माड़े ताकों ले घर धरिये जी, सुई सात धरवा के भीतर पुड़िया एक बनावे जी। शत्रु के घर पीछे गाढ़े निश्चय वह घर उजड़े जी।

बुर्की बसीकरन—नदी किनारे होय जो झाऊ ताका यन्त्र यह कीजे जी, मूल का दिये नीचे सेती

पुरय नक्षत्र जब होवे जी। बांट कूटि के करल चूरन और कूड़ा छाल मिलावे जी, सबको लेकर जा मसाण में चुटकी राख मिलावे जी। सिर पर डारे नर नारी के चाली साथ वह आवे जी।

तथा–होली के दिन होली न्यौते ताकी लकड़ी लावे, धूप दीप दे करे तमाशा धोबी के घर जावे। भट्टी नीचे बारे ताकूं धूरि ताहि घर लावें, बांटि कूटि चूरन करि राखे हस्त नक्षत्र जब आवे। सिर तिरिया के डारे वाकूं निश्चे यह मन मानें सो तिरीया अपुन ही आकि तेरे वश में आनें।

तथा—प्रथम रजस्वला होय जो नारी रक्त वस्त्र तिहि लावे, बाती के अराड तेल में दीपक जोरि धरावे। काजर पार डिब्बी में भर लें जिह के राख लगावे, सो नारी चित्तभ्रम होयके आपहुं आप चली आवे।

तथा–बकरा और घुग्घू दो उन काले कर मांस मिलै कै, रती प्रमाण दीजिये जल में दास होय वह रहवे।

तथा—रवि दिन मनुष्य खोपरी लावे, तामें चावल नाख पकावे। बहुरि सुखाकर उनको राखे, जिहि चाहे सेवक करि राखे। एक रत्ति भर ताहि खवावे, जीवे जब लौं दास रहावे।

पशु स्तम्भन—ऊंट हाड़ की कील बनावे, चारि दिशा में तिन्हें गढ़ावे। जो पशु वाके भीतर जावे, सो बाहर निकसन नहीं पावे।

तथा—ऊंट बार जिहि पशु पे डारे, टरे नहीं कितना ही टारे।

नवका स्तम्भन—नक्षत्र भरनी जब आधे, दूध के काष्ट की कील बनावे। पांच अंगुल की लम्बी सारे, ताको नवका भीतर डारे। चले नहीं वहां ही थम जावे, कील निकारो तो चलि पावे।

कर्गिलास पक्षी के गुण

कर्गिलास नाम है जाका, काल और सेत रंग ताका। लांबी चोंच रहे जल पासा, सुन्दर पंछी पूरे आसा।

अदृष्टि होय

दोहा—कर्गिलास की पूंछ ले रवि दिन धूप जो देय,

धरी ताईत जो मुंह में लेय दिखलाई नहीं देय।
आकर्षण विधि—करगिलास का लोही लावे, बहुरूं ऐसा यत्न करावे। जो कामिनी मन को अति भावे, जब देखे तब चित्त चुरावे। ताकी पतगर धूरि ले आवें, लोहि में सानि धरावे। तिहि मांटी का चित्र बनावे, चित्र सामने मूरत रहवे। दूर देश हो वह आवे, चित्त की चिन्ता आय मिटाय।
पानी में डूबे नहीं—करगिलास का ओष्ट तरे का और गोरोचन लावे, दोनों को एकत्र कराके आंखिन में अंजवावे। सिन्धु मांज जल में जो तैरे सबै वस्तु दृष्टि आवे, झोला भरि २ बाहर लावे। डूबन नहीं पावे। ऐसा जतन करे जो कोई दीतवार को करिये, गूगर धूनि नैवेद्य अरु दीपक आगे धारिये।
स्तुति गुरुदेव—श्री गुरुदेव दयाल के चरण कमल चित धरि, लिखूं भेद गुरु शक्ति ले निज मति के अनुसार। गुरु की शक्ति अपार है सिन्धु समान निहार, जो जाने सोई करे तन मन धन बलिहार। जिहि पर गुरु कृपा करें पल में सिद्धि कराहिं, जंत्र मंत्र तंत्र आदि सब तृण सम तिन्हैं दिखाहिं।

प्रश्न–अर्द्ध रात्रि वन बूंटी लाना नगन होय के, कारज करना। कारज कर जब घर कूं आवे, फिर कर पीछे दृष्टि न लावे। कारज को न कहो यह भेवा मुनि बोले जब ही गुर देवा।

उत्तर–अर्द्ध रात्रि को कोऊ न टोके, नांगे को कोऊ भूत ने रोके बन मरघट चौहट में ईस कारन पूरे बिस्वाबीस जब वे करता के संग आवें, पीछे देखत ही जावें। कारज होय न पूरा भाई, रखे याद जो बात बनाई।

गुरु शक्ति–जब कृपाल होवें गुरु देवा, पल में पार करावें खेवा। जहां लिखी विधि अर्द्ध रात्रि की तहां लेय दोपहरी दिन की जहां लिखा नंगा हो जाय। वहां कांछ धोती खुलवावे, जहां खोपरी मानुष में काजल पारा जाय। तहां खोपरा नारियल अर्द्ध काटि धरवाय, जहां विधि में चौराहा आवे, घर चौका चौरस लिपवावे। तिसमें दो लकीर खिचवावे, जाके मध्यम आसन बिछवावे। एक पूर्व सों पश्चिम माहीं, एक दक्षिण सो उत्तर मांहीं। जहां मरघट में बैठि के करन लिखा कछु जाय,

भरघट बिछाय के तहां जापिये जाप।

अथ शिक्षा—जहां मंत्र का जाप कहा हो, तहां बैठिये अति पवित्र हो। धूप दीप नैवेद्य करावे, पुष्प सुगंधादिक धरावे। चूके नहीं किसी विधि माहिं, चित्त को कहुं डुलावे नहीं। रखे दृष्टि दीपक लव माहिं, ध्यान रखे गुरु चरण न माहीं। गुरु के सन्मुख जो मन धारे, गुरु कृपा सब काम सुधारे। गुरु आज्ञा ले कारज करिये बार २ लिखकर समझाऊं, अपने मन की बात बताऊं। गुरु बिन श्रम करो मति कोई, गुरु प्रताप देखो सब कोई। जो गुरु वचन धरि सिर लै हैं, सोई अटल पदारथ पै हैं।

इति कौतुक रत्न मंजूष
द्वितीय पाद समाप्तम्

॥ श्री गणेशायनमः ॥

अथ कौतुक रत्न मंजूष तृतीय पाद लिख्यते

श्री गुरु गणपति को को सुमिरी धर सरस्वती ध्यान
जो शिव गिरिजा सन कह्यो लिखूं मंत्र को व्यान
(१) अक्षर हरि को रूप है हरि की शक्ति अपार
जोग जुगति सों जानिये ताको कछु विस्तार (२)
गुरु बिन ज्ञान मिलै नहीं हरि बिन मिले न ध्यान,
मुक्ति संग हरि भक्ति के हरि सेवा सुंजान (३)
यंत्र मंत्र अरु तंत्र जो विधि सों साध। मनवांछित
फल पाइ है गुरु सेवन सों बांध ॥४॥

मंत्र सर्व सुखदाता—राम मंत्र उत्तम महा जाने
सब संसार, लिख २ गोली बांध कर नदी मझारे
डार। श्री आदि जी अन्त में लिखे प्रीति उरधार,
भोग मोक्ष दोऊ मिलें उत्तम मतौ विचार। केशर
कस्तूरी विषें चन्दन रक्त मिलाय, शाखा लाय
अनार की सुन्दर कलम बनाय। लिखे दिना

चालीस में सवा लाख परमान, होमादिक हू कीजिये ब्रह्म भोज को दान।

अथ सर्वोपर मंत्र तंत्र सिद्धि करन विधि

ओं परब्रह्म परमात्मने नमः जग दुत्पात्ति स्थिति मलय कराय ब्रह्म हरि हराय त्रिगुणात्मने सर्व कौतुकानि दर्शय दत्तत्राय नमः तंत्रान सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि

दीपक घृत कार का बार के धूप खेवे, चन्दन पुष्प नैवेद्य चढ़ाके १०८ बार मंत्र को जपे, सिद्धि मुहूर्त्त से २१ दिनों में सिद्धि होवे, फिर जो तन्त्र करे, इसी मंत्र से करे।

मंत्र–ओं३म् नमो नारायणाय विश्वंभराय इन्द्रजाल कौतुक निदर्शय निदर्शय सिद्धि कुरु २ स्वाहाः।

प्रथम देह रक्षा को मंत्र

(इस मंत्र से इन्द्रजाल की विद्या को करे)

ॐ परमात्मने पर ब्रह्म मम शरीरे पाहि २ कुरु २ स्वाहाः १०८ बार जपेत सिद्धि।

रसायन मंत्र–कोई चाटक चेटक करे तो इस मंत्र का जाप २१ दिन प्रतिदिन १०८ बार करे तो मंत्र

सिद्ध हो । प्रथम अपने शरीर की रक्षा करे ।
ॐनमो हरि हराय रासायन सिद्धि कुरु २ स्वाहाः

नाज की राशि उड़ावा को मंत्र

ॐ नमो हूंकालूं ६४ जोगिनी हुंकालूं ५२ वीर कार्तिक अर्जुन वीर बुलाऊं आगें ६४ वीर जल-बन्ध बल्लबन्ध आकाशबन्ध पौन बन्ध दीन देश की दिशा बन्ध, उतरे तो अर्जुन राजा दक्षिणे तो कार्तिक वीर्य राजा असमान भो ५२ वीर गाजें नीचें तो ६४ जोगिनी बिराजें परितो पासि चल्यावें छपन्या भैरु राशि उड़ावें एक बंध आसमान में लगाया दूजा बंध राशि घर में ल्याया शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्तय नाम उप देश गुरु का ।

विधिः—दिवाली की रात्रि को बन में जाय, सुस्सा की मेंगनी लावे तिनको २१ बार मंत्र के राशि पर घर का आप घर जावे तो रास सब की सब चली आवे ।

(इतिः)

मंत्र ऋद्धि सिद्धि का—ॐ नमो आदेश गुरु की गणपति वीर वसे मसान जो जो मांगं सो २ आशा

२०६
पांच लाडू सिर सिन्दूर हाटि की माटी मसाण की खेप ऋद्धि सिद्धि मेरे पास लावे शब्द सांचा, पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो बांचा।
विधि–ब्राह्मणो को भोजन करावे तो प्रथम पांच लड्डू लेकर उन पर सिन्दूर लगावें, कूप पर जाकर छोटे कलस में एक लड्डू धरके कूप में नाखे, जब कलस भरले तब लड्डू कूप में डालकर आवे, माल के कोठा में कलस को स्थापित कर पूजन करे, चढ़ाके ब्राह्मणों को अमवा बिरादरी को भोजन करावे तो माल टूटे नहीं।

पृथ्वी का धरा धन दीखने का मंत्र

ॐश्रीं ह्रीं क्लीं सर्वौषधिप्रणते नमो बिन्चे स्वाहाः।
विधि—करे कांग की जिह्वा को कारी, गाय के दूध में ओटा कर जमावे और घृत काढ़ १०८ बार अभिमन्त्रित कर नैत्र में आंजे अथवा काजर बनाके जो मनुष्य पायन की तरफ से जन्मा होय उसके नैत्र में लगावे तो पृथ्वी का गढ़ा धरा धन दीखे, दूसरे पाद के ६५ वे सफे की १२ वीं सतर देखो।
अथ स्थान खोदने की विधि–बिनोले मूंग

२०७

तिल गऊ मूत्र में पूर्व मंत्र से लेकर पीसे, अंग में लगावे फिर जहां खोदे, चौका देकर बलिदान दे, यह मन्त्र पढ़ देय।

ॐ नमो भगवति सुमेरु रुपायौ महाक्रांतायै कंकाल रुपायै फट स्वाहाः।

विधि—इस मंत्र से गेहूं तिल का होम करे चूर करे तो सर्पादिक का भय न होवे। दिन ७–७ नक्षत्र देखकर खोदे।

मारग चलै हारे नहीं मंत्र—ॐ नमो विचंडाय हनुमंत वीराय पवच पुत्राय हुं फट।

विधि—बंशलचोन श्वेत भांगरा बकरी का दूध सबको पुराय नक्षत्र में सिद्धि करले नक्षत्र तक जाप करे जब कहीं जाय पावके तलवे में लावे जब सूख जाय तब चले तो हारे नहीं।

मंत्र देह रक्षा को—छोटी मोटी थमंत वार को बांधे पार को पार बांध मराध मसाण बांधे जादू बीर बांधे टौना टम्बर बांधे दोउ मूंठ बांधे गोरी छार बांधे भिड़िया और बाघ बांधे लखूरी स्यार बांधे, बीछू और सांप बांधे लाइलाह का कोट इल्लल्लाह

की खाई मुहम्मद रसूलिल्लाह की चौकी हजरत अली की दुहाई।
विधि—जंगल या घर में सोवे जब ३ बार पढ़के मोड़ा पर हाथ मारे, जितनी पृथ्वी का प्रबन्ध करे उतनी में घेरा खींच दे तो किसी प्रकार का भय न होवे।

मार्ग में साँप चोर नाहर का भय न हो

मंत्र—फरीद चले परदेश कों कुत्तक जी के भाव सापां चोरां नाहरां तीनों दांत बंधाव।
(जहां सोवे बैठे तीन बार मंत्र के ताल दे।)
मार्ग में बाघ का प्रबन्ध—मंत्रां बाघ बाधूं बघाई निबांधूं बाघ के सातों बच्चा बांधूं राह बाट मैदान बांधू दुहाई बासुदेव की, दुहाई लोना चमारी की।
विधि—सात मंगल इस मंत्र को ७ बार जपले मार्ग में बाघ मिले तो इस मंत्र को पढ़कर ९ बार फूंक दे।

मंत्र आपत्ति डालने का

शेख फरीद की कामरी और अंधियारी निशि तीनों चीज बराइये आग ओला पानी विष। विधि—मार्ग में पानी बरसे ओला पड़े आग लखे तो मंत्र तीन

बार पढ़के ताल दे।

मंत्र दिग बंधन को—या हिसार ३ जिन्न देव परी जवर कुफार एक साई दूसरी गिर्द पसार विर्द वागिंद मलायक असवार दाहें दस्त रखे जिब्राईल वायां दस्त रखे मीकाईल पीठ रखे, इसाफील पेट रखे इज्राईल दस्त चपहसन दस्त रास्त हुसैन पेश्वा मोहम्मदगिर्द वगिर्द अली लाइलाह का कोट इल्लिल्लाह की साई हजरत अली की चौकी बैठी मुहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।

विधि—सात बार पढ़ के चारों हाथ अपने फिराकर चुटकी बजावे अथवा अपने चारों लकीर काढ़कर बैठे सफर में जहां पढ़े मसाणादि में तो वहां भी ऐसा ही करें।

मन्त्र मेघ स्तम्भन

ॐ नमो भगवते रुद्राय जलस्तंभय २ ठः स्वाहाः

विधि—मसाण के कोयला को सुलगा के इस मंत्र के इसके ऊपर और एक तले पर मार्ग में अथवा रोटी करते में मेघ वर्षे तो बन्द हो।

अथ मुसल्मानी मंत्र

राज प्राप्त होने का मन्त्र—रात्रि में एक बार पढ़े विस्मिल्ला हिर्रह मानुर्ररहीम फिर २१ बार दरूद पड़े—दरुद अस्त्र हुम्मासल्ले अला मुहम्मदिन व अल्लाल मुहम्मदिन सरकल स्तम या मफूरो।
विधि—एक सहस्त्र कर इस मंत्र को पढ़के २१ बार दरूद पढ़े तो २१ दिन के ऊपरांत लाभ की सूरत दृष्टि आवे।

दरिद्र नाश करने के मन्त्र

या कबीयो या मनीयो या मलीयो या वकीयो।
विधि—प्रातःकाल बात करने से पहले हाथ मुंह धोके एक बार बिस्मिल्लाह पढ़ के एक हजार दो सौ बार मंत्र को पढ़े मन्त्र के आदि अंत में २१ बार दरूद को पढ़े तो थोड़े ही दिन में दरिद्र का नाश हो।

मन्त्र रोजी के लिये

या इश्राफील बहक्क या अल्ला हो।
विधि—सवा पाव उड़द के चून की खमीर करके अपने हाथ से रोटी बनाये। एक ओर दो तह करके सफेद रूमाल में रख के चौथाई रोटी की गोली

जंगल में बेर के समान बनाये १०१ गोली बनाके ११ बार मंत्र के एक गोली को इसी प्रकार सब गोलियों को शेष रोटी समेत जिस दरिया में मछली हों डाले तो ४० दिन में मनोर्थ पूरा हो।
रोजी प्राप्ति का मन्त्र—काली कंकाली महा काली मुख सुन्दर जिये ज्वाला बीर बीर भैंरू चौरासी बता तो पूजूं पान मिठाई अब लोलो काली की दुहाई।
विधि—नित्य प्रति स्नान कर इस मंत्र को ७ बार लगा तार गह पूर्व मुख बैठकर पढ़े तो रोजी मिले।
किसी ने मूठ चलाई हो तो इस मन्त्र सों मूंठ को अपने पास बुलाय के उलटी भेज दे और यही मन्त्र वसीकरन का भी है
काला कलवा चौंसठ बीर मेरा कलवा मंगा तीर जहां को भेजूं वहां को जाइ मांस मच्छी को छुवन न जाय अपना मारा आपहि खाय चलत बाण मांरू उलट मूंठ मांरू मार मार कलवा तेरी आस चार चौमुखा दीया न बाती जा मांरू वाही की लात इतना काम मेरा न करे तो तुझे अपनी मां का दूध

पीया हराम है।

सिद्धि करण विधि-सत चाल प्रति दिन २१ बार पढ़े घीका दीपक रखे अग्नि पर गूगर खेवे लोंग जोड़ा फूल मिठाई रखे सिद्ध हो फिर मूंठ आवे इस मंत्र से उलटी भेजे और आक्रमण बसी करन कू सुपारी की छाल पर २१ बार पढ़े पान में रखकर खिलावे।

रोगी की परीक्षा-काचा सूत रोगी के पांव से सिर तक पुर कर २१ मंत्र फूंकर डोरा कूं नापे घट जाय तो आसेव का खलल है पटे तो देह रोग है।

किया कराया के उतारने और देह से रोग निकालने का मन्त्र-ॐ नमो आदेश गुरु को में ऊपर केश विकट भेष खंभ प्रति प्रहलाद राखे पाताल राखे पांव देवी जंघा राखे कालिका मस्तक रखे महादेव जी कोई या पिंड प्रान को छोड़े छेड़े तो देव दाना भूत प्रेत डाकिनी शाकिनी गंड़ ताप तिजारी जूड़ी एक पहरूं दो पहरूं सांझ को संवारा को कीया को कराया को उलटा वाही के पिंड पर पड़े इस पिंड की रक्षा श्री नृसिंह जी करें शब्द

सांचा पिराड कांचा फुरो मंत्र ईश्वर वाचा ।
विधि–सात बार मंत्र के रोगी को झाड़ा दे या भंडा करदे । श्री गुरु ।
रक्षा मन्त्र–ॐ नमो आदेस गुरु को बजरी बजरी वज्र किवा बज्री पै बांधो दशों द्वार दशों द्वार को घाले यात उलट वेद वाही कों खात पहली चौकी भैंरू की चौथी चौकी रोम रोम की रक्षा करवे कों श्री नृसिंह देव आया शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम अदेस ।
गुरु की विधि–इस मंत्र को शनि से २१ दिन तक प्रति दिन २१ जाप करे घृत का दीपक आये फूल मिठाई गूगर धूनी रखे सिद्ध होवे फिर अष्टमी को भोग दे रोगी को सात बार मंत्र के पानी पिलावे तो कीया कराया का दोष जाय ।
समस्त पीड़ा हरन का मंत्र—लश्कर फर ऊन दर रोदनी लगर्क शुद ।
विधि—जहां कहीं दर्द हो पीली मांटी से मंत्र को तीन बार लिखे फिर मांटी के बराबर गुड़ तुलाके लड़कों को बांट दे ।

सिर की पीड़ा का मंत्र—दो ताबीज लिखे एक को खारीं जमीन में गाढ़े एक को रोगी के सिर में बांधे ताबीज यह है।

६७६८

दांतों की पीड़ा का मन्त्र—हे दंता तुम क्यों कुलता हमें तुमें संजाइना हमरा कसर तुम हो बत्तीस हमरी तुमरी कौनसी रीति हम कमायं तुम बैठे खाऊ मृत्यु की बिरियां संग ही जाऊं।

विधि—मुंह धोवे तब हाथ में जल लेकर ७ बार मन्त्र के कुल्ला करे पीड़ा जाती रहे हिलते दांत जमें।

डाढ़ पीड़ा का मंत्र—ॐ नमो आदेस गुरु को नौ लाख कांबरू एक बार जायं बैठें बघल बाल गंगा जमुना सरस्वती जहां बैठे गोरख मौसम सिखर परवत से आइ काम धेनु छत्तीस सेग टलें आधा दीया पृथ्वी आधा वायु भौंरा पाहीं रखाया सिसपासु बटियाम दौड़ रक्षा करें श्री रामचन्द्र हनुमंत दाल भाव रोग दोप जायं पराई सीव गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि-अक्षत पाणी २१ बार मंत्र के साथ

निवास पर बैठे डाढ़ा काढ़ता जाय पानी के छींटे देता जाय इति ।
डाढ़ के कीड़े का मंत्र–सवारी में सीसी सीसी में मीची मीची में कीड़ा कीड़ा में पीड़ा कीड़ा मरे पीड़ा टरे शब्द सांचा. पिराड कांचा कुरो मंत्र ईश्वरो बाचा ।
विधि–लोहे की दो कील सों चांकजे एक को कूवा में डाले दूसरी को नींव से गाढ़े।
तथा–कांमरू देश कमष्या देवी जहां बसे इस्माइल जोगा इस्माइल जोगो ने पाली गाय.नित उढ चरवा वन में जाय वन में चरे भूखा गंभूर जो गाय गोबर चरे जामें निपजे कीड़ा सातसूत सुतला पू पूंछ सुंता तामंड़ पिंजर सहमुला भाल में मुड़ी करे लेदुख बेशख नाथ की दुहाई फिरे शब्द सांचापिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।
विधि—इस मंत्र से लोहे की कील तीन बार सात २ मंत्र के काट में ठोके।

दस रोग का एक मंत्र

परबत ऊपर परबत पर वन ऊपर फटिक सिला पर

अंजनी जिन जाया हनुमंत ने हला टेहला कांख की कख लाई पीछी की अदीठ कान की कनफेर रान की बद कंठ की कंठ माला घुटरने का डडरू हाड़ की हड़ सूल पेट की ताप तिल्ली फीया इन को दूर करे भस्वंत नातर तुझे अंजनी माता का दूध पीया हराम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो बाचा सतनाम आदेस गुरु का।

विधि—शनिवार सौं २१ दिन हनूमान जी को पूजन विधि पूर्वक करे नित्य १०८ मंत्र जपे सिद्ध होय होनी बिजली में मंत्र जप लिया करे छहरू को आक से तापतिल्ली को छुरी से कखलाई, अदीठ कनफेर वद कंठ माला राखसे डठशूल नीम की डार से सात बार झाड़े।

मंत्र अदीठ का—ॐ नमो नस कटा बिष कटा भेद मज्जा बद फोड़ा फुनसी अदीठ दुर्बल दुख न्यौर त्यांवरीं घनवाद चौंसठ जोगिनी बावन बीर छप्पन भैरू रक्षा करें जो आई।

विधि—विभूत की चुटकी ७ दिन ७ कर मंत्र के दीजे रोग जाता रहै।

अथवाय करन पीड़ा का मंत्र

ॐ नमो आदेस गुरु को बाल में बाल कपाल में भेजी-भेजी में कीड़ा कीड़ा में करन पीड़ा सोना का सिला का रुप का हथौड़ा ईश्वर घडे मक्जा तोड़ें शब्द स्पंचा पिंड कांचा चलो मन्त्र इश्वरों बाचा।
विधि—विभूतसों ५ बार चाकले अच्छा हो।
मत्र कंठवेल का—ॐ कंठवेल लूडन दुमाजी सिर-पर जड़ी लब्र की ताली मोर खराय जागता आया बढ़ती बेल कूंतुरत घटाया. घट गयी बेल बढ़े नारोग पावै फूंटा पीड़ा करे तो गुरु गोरख नाथ की दुहाई फिरे।
विधि—विभूतसो चाकजे।
मंत्र काखलाई का—ॐ नमो काखलाई भरी तलाई जहं बैठे हनुमंता आई पचै नफूटै चलै न नाल दशा करे गुरु गोरख नाथ।
विधि—नीवकी डाली में झाड़ देवे।
आंख की फूली कटै—मंत्र। उतर कूल काछ सुन जोगी की बाछ इस्माईल जोगी की दो बेटी एक पाथे चूल्हा एक काटे फूली का काछ फुली

का काछ फुली का माछा। छुरी से २१ बार जमीन में लकीर काढे ७ दिन में फुली कटै।

आंखों की रोशनी घटै नहीं

मंत्र। अजातश्च सुकन्याश्च चत्रनम् शक्र भष्यक भोजनांते स्मरेतस्य तस्यनेत्रं न नश्यति।

भोजन के अंत में याणी की चुल्लू पर ज्बार पढ़के नेत्रों में धोये।

नेत्र दूखने का मत्र—ॐ नमो झलमल जहर भरी तलाई, जहां बैठा हनुमंता आई फूटै न पालै न करै न पीड़ा, जती हनुमंत राखे हीड़ा विभूत से-चाकले।

नेत्र रोग का मंत्र—ॐ नमो श्रीराम की धनी लछमन का बाण-आंख दर्द करे तो लछमन कुंवर की आण, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्त नाम आदेस गुरु का।

विधि—दिवाली को ५४४ बार जपै सिद्ध हो तो राख झाड़े रोग जाता रहे।

पेट की पीड़ा का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु का श्याम गुरु पर्वत श्याम

गुरु पर्वत में बड़ बड़ में कूआ कूआ में तीन सूरवा कौन २ सूवा वाय सूवा जहर सूवा पीड़ सूवा भाज भाजबे जहर आइगा जती हनुमंत मार करेगा भस्मंत फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सात बार पानी मंत्र के सात दिन पिलावे।

डाढ़ की पीड़ा का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु कों वन में ब्याई अंजनी जिन जाया हनुमंत कीड़ा मकुड़ा मा कुड़ा ये तीनों भस्मंत गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। विधि–दिवाली को अथवा ग्रहण में सिद्ध करे नीव से आके रोग जाय।

अन्य प्रकार–ॐ नमो आदेश गुरु कों वन में ब्याई अंजनी जिन जाया हनुमन्त फूनी फुंसी गूमड़ी ये तीनों भस्मंत। पूर्व युक्ति सिद्ध को गूमडे पैहाव फेला जाय, वार मंत्र पढ़ें।

जानु वा पसली डमरू वाई तीनों का एक ही मन्त्र–ॐ खखारी खखारा कहा जया सवा लाख परवतों गया सवा लाख परवतों जाय कहा

करेगा सवा भार कोइला करेगा सवा भार कोइला कर कहा करेगा हनुमंत वीर का नवचन्द्र हांस खडग धड़ेगा नव चन्द्र हास खड़ग पड़ कहा करेगा जानुदा डमरु पसली वायु कूं काढि काढ़ि खारी समुन्द्र में नाखेगा जगत गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरोमंत्र ईश्वरो वाचा ।
विधि–तिली का तेल सिंदूर मिला के तिल में मंत्र के आंके ।
ऊबा का मन्त्र–ॐ नमो खंखारी खंखारा कहां गया सवा लाख पर्वतों गया सवा लाख पर्वतों जाय कहा किया काई लाक राया कोईला कराय कहा किया छुरा घड़ाया छुरा घड़ाइ कहा किया ऊबा का हाड़ गोड़ कूटि काटि लिया कामल में लपेट समुद्र पार बगाया शब्द सांचा पिंड काग फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।
विधि–तीर का सांचा अंगुल ८ लीजे तासी मंत्र घोरुश में ।
पीलिया का मन्त्र—ॐ नमो आदेश गुरु कों रामचन्द्र सिर साधा लछमन साधा बाण काला

पीला राला लीला थोथा पीला पीला पीला चारों झड़ जो रामचन्द्र जी थाके नाम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो बांचा ।

विधि—सुई से पीतल की कठोरी में पाणी भर ७ दिन झाड़जे ।

तथा–ॐ नमो बीर बेताल असराल नारसिंह देव-पाता तुपाती तुपीलिया भेदतु नास्तु पीलिया नास्तु ।

विधि–कडुआ तेल कटोरा में लीजे रोगी के माथे धरजे दूसरे मन्त्र जे तेल पीला हो तब उतार लीजे ३ दिन मन्त्र जपे ।

सीया का मन्त्र—ॐ नमो कामरु देश कमख्या देवी जहां बसै इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी इस्मा-इल जोगी के तीन पुत्री एक तोड़े एक पिछो हे एक तोते जरी तोड़े ।

विधि—रोगी को खड़ा करे जहां ठंड लगे तहां हाथ से पकड़े २१ बार मन्त्र के फूंके से सीया जाता रहै इति ।

पसली डबिका का मन्त्र—समन्दर के किनारे सुरहमाय सुरहगाय के पेट में बच्चा के पेट में

कलेजा कलेज के पेट में डब डब कटेस खड़े दुहाई लौना चमारी की।
विधि—होली दिवाली ग्रहण में १४४ बार मंत्र लोबान खेवे सिद्धि हो फिर रामेसर की लकड़ी और सींक कोरी सात २ अंगुल की काट कर उनसे ७ बार मंत्र के झाड़ा दे दोनों वस्तुसों झाड़े तो दोनों वस्तु बढ़ती जायगा जब रोग मिट जाय तब ज्यौं की त्यौं ही जायेगी।
रींधन वाय का मन्त्र—कामरु देश का माया देवी जहां बसै इस्माइल जोगी इस्माईल जोगी के तीन पुत्री एक तोड़ एक बिछोड़े एक रेघन वाय को तोड़े शब्द सांचा पिराड कोचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।
विधि-मणिहार के मोगरा से झाड़ दीजिये।
गंडा देने का मन्त्र—बंध तो बंध मौला मुर्त्तजा अली का बंध कीड़े और मकोड़े का बंध ताप और तिजारी का बंध जूड़ी और बुखार का बंध नजर और गुजर और गुजर का बंध दीठ और मूठ का बंध कीये और कराये का बंध भेजे और भिजाये का बंध नावत पर हाथन का बन्धन बंध तो बंध मौला

मुर्त्तजा अली का बंध राह और बाटका बंध जमीन और आसमान का बंध घर और बाहर का बंध पवन और पाणी का बंधकू वांपनि हारी का बंध लौह कलम का बंध बंध तो बध मौला मुर्त्त जा अली का बंध।
विधि—रोगी की एड़ी से चोटी तक डोरा नाप कर मंत्र से ७ गांठ दे सवा पाव मिठाई मंगाकर मुर्त्तजा अली के नाम से बालकों को बांट दे और गंडा को लोवान की धूनी देकर रोगी के कंठ में बांधे।
अन्न पचने का मन्त्र—अगस्तं कुम्भकरंण चश निंच बड़वा नलः आहार पाच नार्थाय स्मरते भी मंच पंचमम्।
विधि—रसोई जैम कर इस मंत्र से पेट पर हाथ फेरे।
तथा—वज्र हाथ वज्र हाथ भस्म करे सब पेट का हाथ दुहाई हजरत शाह कुल्ल आलम पांडवा की।
विधि—बांए हाथ पर ११ बार मंत्र जप पेट पर हाथ फेरे जो अन्न खावे गिरानी मिटे।
आधा सीसी का मन्त्र—बन में जाई बांदरी जो आधा फल खाय खड़े मुहम्मद हांकदे आधा

सीसी जाय ।

विधि–शुल्क पक्ष में पहली बृहस्पति को १०८ बार मंत्र पढ़के सिद्ध करले फिर रोगी के सिर पर तीन बार मंत्र पढ़कर फूकें ।

जहर उतारने का मन्त्र–गंगा गोरी दोऊ रानी टाकन मारि काड़े विष पाणी गंगा बांटे गौरा खाय अठारा मार विष निर्विध हो जाय गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

विधि–रविवार को ७ मंत्र पढ़के तो सर्व विष जाता रहे ।

सीसा की टूक गढ़े से कीड़ा पड़ें सो कहावे कीड़ा नगराला का मत्र–जा दिन गरते चाली रानी सहस कोटि लषच्यार वोट काली कावली सवै एक उनहार मंदिर माहीं घर करे प्रजा ने बहुत सतावे दुहाई हनुमंत जती की जो हमारी गैल में आवे लंका सो कोट समुन्द्र सी खाई जे कीड़ा नगरो रहें तो जती हनुमंत बीर की दुहाई शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु का ।

विधि—काले तिल ७ बार मंत्र के कीड़ान पर नांखे दिन सात या १४ ।
बीच्छू का मन्त्र-ॐ नमो सरै गाय पर्वत जाय सरै चरै सखो बंबल सल गाय गोबर कियो जिहि सों उपजा बीछू सात कालो कंकल वालो सांप सर्पनी वालो हरो लीली केलो उतरे तो उतारूं नहीं तो मारे कंठ को धरि हंकारूं शब्द सांचा पिंड कांचा।
विधि-जूती या नींव की डार से ७ बार झाड़े विष उतरे ।
तथा-ओं नमो आदेस गुरू को क्योंकि बीछू नें तो काठा गोंद गिरी मुख चाष्यों मैं काठा ने पानी पकाके काढ्यो उतर जाय उतरै तो उतारू चढ़े तो घारूं नातर गरड़ मोर हंकारू लंका से कोट समुद्र कीर गई उतरे पीछू जती हनुमंत की दुहाई शब्द सांका पिंड कांच्न हरो मंत्र इश्वरो ।
विधि-सात बार पानी पद जमीन पर नांखे ।
बाबरे कुत्ते का मंत्र-अकट कूकरा विकट वान विष रूं कातूं वारूं वार कोरा करवा इब्रत नइया गोरो ढाले ईश्वर न्हाइ कुत्ता को विष उतर जाय

दुहाई महादेव पार्वती की फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।
विधि—कुम्हार के चाक की मांटी लावे उसकी ७ गोलियां बनाय गोलीन सौ ७ बार आंक जे ३ गोली तो रोगी को दे ४ आप राखे गोली के टूक करके वखेर दीजे और गौरा पार्वती की दुहाई पढ़ता जाय दो पैसा और कुचला उसकी पाटी से बांधे।
तथा—ॐ नमो कामरू देस कामच्या देवी जहां बसै इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी ने पाली कुत्ती दस कारी दसकदा बरी दस पीली दसलाल इसको विष हनुमान हरे रत्ता करे गुरु गोरख बाल शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।
विधि—विभूति से ३ दिन मंत्र के आंक से चंगा होवे।
गांय भैंस के कीड़ा का मंत्र—महंत पटवारी अरज-गाती वया जिनके पायों कीड़ा गया।
विधि—चौराहा की सात काकरी तीन बार मंत्र के जिस जानवर के कीड़ा हों उसका नाम ले उसके मालिक को कांकरी दे कहै कि कीड़ा गया फिर मालिक अपने जानवर के कांकरी मार के कहै कि

कीड़ा गया ये शनिवार हिंकू करे ।

सर्प खाया का मन्त्र—नृसिंह भरी के बचनः रैंजी हो निरंतर तार ।

विधि—चुल्लू पानी पढ़ पिलावे तीन टौना मांथे में देय निर्विष होवे ।

सफर में आराम पाने का मंत्र—गच्छ गौत्तम शीघ्र त्वं ग्रामेषु नगरेषुच। आसनं बसनं शैया ताम्बूलंयज कल्पयेत् ।

विधि—सफर में जब किसी ग्राम के समीप पहुंचे तब ७ बार मंत्र पढ़के दूब पर सब साथियों को देवे और कहै कि गौतम ऋषि का न्यौता है फिर उस दूब को पाम में रख के ग्राम में जाकर उतरे तो सब प्रकार का आराम मिले । इति ।

पशु का कीड़ा झाड़ने का मंत्र-ॐ नमो की डारे तू कुंड़ीला लाल पूछ तेरा मुंह काला मैं तोहे पूंछू कहां ते आया तोड़ मांस तैं सब क्यों खाया अवतू जाय भस्म हो जाय गुरु गोरख नाथ के लांगू पाय शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

विधि–नीव की डाली से ७ बार झाड़ा देवे भला होवे।
पैर थंभवा का मंत्र–टिमिटिमि अमुकी श्रोणितं राखि २ धूतंहि स्वाहा।
विधि–साल सूत के १४ तार कराय २१ गांठ मंत्र पढ़ २ देवे गूगर खेवे स्त्री की कटि पर बांधे पैर थंभै आरोग्यता होवे।
मंत्र चोरी काढ़िबा का–उद मुद जल्ल जलाल पकर चोटी धर पछाड़ भेज कुदाल्या व मुद्दा या कहार या कहार।
विधि–इस मंत्र को नदी किनारे या कूप पर रात्रि समय १२१ बार पढ़कर सो रहै दिन सात माहीं सारा भेद मालूम हो जाय जहां माल धरा हो और जो चुराले गया हो सब स्वप्न के द्वारा प्रगट हो जाय।
तथा—ॐ नारसिंह वीर हरे कपड़ें ॐ नारसिंह बीर चांवल चुपड़े सरसों के फक फक करे शाह को छोड़े चोर को पकड़े आदेश गुरु को।
विधि–चौखुंटा रुपया जिसमें सूराख न हो मंगावे दूध सौं धोइ लोवान की धूनी दे सवा पा चावल

मंगाय ३ बेर जल सों धोई गोमूत्र में भिजो कर सुखावे शनिवार प्रातः काल धरती लेपै मांटी पर सफेद कपड़ा बिछवावे चावल धरे धूप खेवे लोबान और गूगर की धूनी दे सात बार मंत्र चावलों पर पढ़ के दम करे फिर रुपये बराबर चावल तोल सब को चबवावे तो चोर के मुंह मोती बधे।

अन्य रीति—ॐ सत्रह सै पीर चौंसठ सै जोगिनी बावन सै बीर बहत्तर सै भैरू तेरा सै तंत्र चौदा सै मंत्र अठारा सै पर्वत सत्रह सै पहाड़ नौसै नदी निन्यानवे सै नाला हनुमंत जती गोरख वाला कांसी की कटोरी अंगुल चार चौड़ी गिरनारी पर्वत सौं चलाई नारी पर्वत सौ चलाई अठारा भार बनास पती चंचली लौना चमारी की वाचा फुरी कहां कहां फुरी चोर के जाय चांडाल के जाय कहा कहा लावे चोर को लावे गढ़ा धन जाय बतावे चालरे हनुमंत बीर जहां हो चले जहां हो रहै न चलै तो गंगा जमुना उलटी बहै शब्द सांचा पिंड कांचा मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश।

विधि–तीन पैसा भर कटोरी ४ अंगुल चौड़ी कांसी की दीप मालिका रात्रि को गढ़वावे इस मंत्र सौं उड़द पढ़के कटोरी की पूजा कर कटोरी को चौका में ले जहां चोरीका माल होवे तहां जाय बतावे उड़द मारता जाय।

अन्यविधि–ओं नमो नाहर सिंह बीर ज्यूं ज्यूं तू चाले पवन चाले पानी चले चोर का चित्त चालै चोर मुपन्नोही चालै। काया थमवै माया परा करे वीर यानाथ की पूजा पाय टले गोरख नाथ की आज्ञा मेटे नौ नाथ चौरासी सिद्धि की आज्ञा मेटे नौ नाथ चौरासी सिद्धि की आज्ञा मेटे।

विधि–१०८ बार चावल मंत्र के कटोरी दूध सौं धोवे चावल मंत्र के छिड़के कटोरी निराधार चले चोर के माथे जाय जमैं।

चोरी काढ़वा को मंत्र–ॐ नमो किस्किन्ध पर्वत पर कदली वन को फल दड़तल कुंज देवी नून प्रसाद अगल पावली पाध बूंटी चोर तेरे कुंजन को देवी तनी आज्ञा फुरे।

विधि–जिन पर शुवा होइ उनका नाम लिखे आटे

की गोली में बांध कर प्रति गोली २१ बार मंत्र के जल के घड़े में डाले तो चोर का नाम तिरे ।
तथा–ॐ ह्मां चक्रेश्वरी चक्रधारणी चक्र वेगि कोटि भ्रामा भ्रामी चोर सहाणि स्वाहा ।
विधि–इस मंत्र सों २१ बार चावल मंत्र के चबावे चोर के मुख से लोहो कढ़े ।
तथा–ॐ इन्द्रग्नि बन्ध २ ओं स्वाहाः
विधि–रवि शनि. को भोज पत्र पर नाम लिखे १०८ मंत्र जपै अग्नि में डाले चोर का नाम न जले और मंत्र को शनि रवि को लिखे श्वेत मुर्गे के गले में बांधे ऊपर टोकरा धरे लोगों का हाथ धरावे चोर के हाथ धरते ही मुर्गा बोले ।
दो मित्र में बैर होई–ॐनमों नारायणाय अमुक अमुकेन सह विद्धेषं कुरु २ स्वाहाः
विधि–एक हाथ में काग की पर दूसरे में घुग्घू की पर ले दोनों को मंत्र के मिलाय कारे सूत में लपेटे उसे हाथ में ले जल किनारे जाय १०८ बार जये-तर्पन करे ।
दूसरी विधि–सिंह और हाथी का बाल लेके दोनों

मित्रन के पगतर की मिट्टि लेवे तीनों की पोटरी बांध पृथ्वी में गाढ़ दे उस पर अग्नि जला के चमेली के पुष्प की १०८ आहुति दे।

तीसरी विधि–बिल्ली और कबूतर दोनों की विष्ठा मिलाय उन दोनों के पगतर की धूर में सान पुतला बनाके नील वस्त्र में लपेटे १०८ मंत्र पढ़के उस पर फूंके फिर मसाण में गाढ़दे।

चौथी विधि–नेवला का वाल सर्प का दांत चिता की भस्मी तीनों की गोली बनाय उजाड़ में गाढ़े।

दो मित्रन में बैर हो–मंत्र बारा सरसों तेरा राई पाट की मांठी मसाण की छाई पढ़कर मांरु कर दल वार अमुका कुढ़ैन देर वै अमुक का द्वार, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्त नाम आदेश गुरु का।

विधि–सरस्यौं राई मांटी मसाण की भस्मि सब को समान ले एकत्र कर आक ढ़ाक की लकड़ी जला १०८ बार मंत्र के आहुति दे मंगलवार के दिन फिर थोड़ी राख होम की लेके जहां दो मित्र स्त्री पुरुष रहते सहते हों अथवा वैठते हों उस मकान के

दरवाजे के आगे डालदे तो दोनों में जुदाई हो, साय मिति ।
अन्य विधि मन्त्र—सत्य नाम आदेस गुरु कों आक-ढ़ाक दोनों बनराई अमुका अमुकी ऐसी करें जैसी कूकर और बिलाई ।
विधि—शनिवार से ८ दिन आंक के पत्तों पै मंत्र लिख अर्द्ध रात्रि को एक २ पते पर सात २ मंत्र पढ़के ढाक की लकड़ी के अंगारों में जलावे तो निश्चय बैर हो।
मन्त्र उच्चाटन का—ॐ नमो भगवते रुद्राय दंड करालाय अमुकं सपुत्र बांधवै सह हन २ दह शीघ्र उच्चाटय २ हुं फट स्वाहाः ठः ठः
विधि १—गधा लोटन की धूरि वाया पग सौं लावै मंगल वार को दो पहरी में २०८ बार मंत्र के बैरी के घर में डाले ।
विधि २—सरसों और शिवनिर्माल्य १०८ बार मंत्र के बैरी के घर में गढ़वावे ।
विधि ३—काग की पर रविवार को १०८ बार मंत्र के बैरी के घर में गाढ़े ।
विधि ४—उल्लू की पर मंगलवार को १०८ बार

मंत्र के बैरी घर में गाड़े।
विधि ५—उल्लू की विष्टा सरसों का चून १०८ बार मंत्र के जिस पर डाले उसका उच्चाटन हो।
विधि ६—गूलर की कील अंगुल ४ मंत्र केले और १०८ बार मंत्र के जिस के घर में गाड़े उसका उच्चाटन होवे।
विधि ७—उल्लू और काग दोनों जानवरों के पर घृत में सान कर १०८ बार मंत्र पढ़ पढ़ हो मैं।
विधि ८—मनुष्य के हाड़ की कील अंगुल ४ लेके १०८ बार मंत्र के वेरी के दर्वाजे पर गाड़े। इति।
मारन का मन्त्र—ॐ ह्रीं अमुकस्य हन हन स्वाहाः
विधि—कनेर के दस हजार फूल कड़ु के तेल में भिजो के बैरी का नाम मंत्र में ले २ हो में बैरी मरे।
तथा—ॐ नमो हाथ फावड़ी कांधे कामरी भैंरू बीर मसाणो खड़ा लोह का धनी बज्र का बाण वेग ना मारे तो देवी का लंका का की आण गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेस गुरु का
विधि—दिवाली की रात्रि को चौका दे दीपक जराय

गूगर खेवे उड़द मंत्र के दीया की लौपर मार ता जाय १०८ तथा १२१ फिर काले कुत्ते का लोही उड़दी परल भाव सख मिला राखे उड़द मंत्र के बैरी के मारे
अन्य प्रकार—ॐ नमो काल रूहाय ममुकं भस्म कुरु २ स्वाहा
विधि १—मनुष्य का हाड़ ताम्बूल में रख के १०८ बार मंत्र के जिसको खवा वे वो मरे।
विधि २—मंगलवार को १५ को यंत्र विलोम करके चिता की भस्मी से १०८ बार मसान की भूभर ऊपर सौं ड़ारे तो शत्रु मृत्यु वश हो।
विधि ३—चिता का षृमंगल वार भरणी नक्षत्र में १०८ बार मन्त्र जिसके दर्वाजा पर गाढ़े सो मृत्यु वश हो।इति।
वैरी कूं कष्ट देने का मन्त्र—ओं काल भैरू भं काल का तीर मार तोड़ दुश्मन की छाती घोट हाथ काल जो काढ़ बत्तीस दांत तोड़ यह शब्द ना चलै तो खरा जोगिनी का तीर छूटै मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्त नाम आदेस गुरु का

विधि–कनेर के २१ फूल २१ गोली गूगर की लेके प्रत्येक मंत्र के एक फूल १ गोली कई के तेल में सान के अग्नि में हो में ११ तथा २१ दिन।
मन्त्र पीड़ाकरन–ॐ ह्री श्री क्ली त्रपुर भैरूं त्रपुर वीर मम शत्रु अमुकस्य पीड़ा कुरु २ स्वाहा
विधि–शत्रुके दाहिने पगतर की मांटी लावे ७ करेली में भर के ताकू में पिरो कर अग्नि में तपावे मंत्र जपै प्रत्येक करेली ७ मंत्र
मंत्र पैर चलावा को–ॐ नमो आदेस गुरु को काला कलुवा सक्या वीर तलवा सिरसों चटै शरीर लट फाड़े मुंह मटका वेरक्ता कलुवा पैर चलावे चलाय २ मसाणी कलुवा अमुकी ऊभे चाट हमारा तलवा लगा के फूल तरां की साखी अमुकी चलती को खड़ी कर राखी सत्त साहिब आदेस गुरु को
विधि–तांबा की सुई नील का तागा नीबू को हाथ में लेले दक्षिण मुख बैठे जल में राखै पांव धूप खेवे मन्त्र पढ़ै स्त्री को नाल लेले के जब तारा टूटे नीबू में ड़ोरा को पिरो करदीवला में रख कर मोरी में गाड़ै पैर चलै काढ़ै जब थमैं।

मारन—ॐ काली कंकाली महा काली के पुत्र कं-
काली भैरूं हुकम हाजिर रहै मेरा भेजा काल करे
मेरा भेजा रक्षा करे आन बांधू दसो सुर बांधू नौ
नारा बहत्तर कोठा बांधू फूल में भेजू फूल में जाय
कोठे जी पड़े थरहर कांपे हल हल हले मेरा भेजा
सवाघड़ी सवा पहर के बाद ला न करे तो माता
काली की सिज्या पर पग धरे बाचा चूके तो ऊबा
सूके बाचा छोड़ कुवाचा करे तो धोबी की नाद
चमार के कुंड़े में पड़ै मेरा भेजा बावला न करे तो
महादेव की लटा टूटि भूमि में गिरे माता पार्वती क
चीर पै चोट करे बिना हुकम नहीं मारना हो काली
के पुत्र कंकाल भैरु फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।
विधि—लौंग जोड़ा बतासे पान सुपारी कलावाली
बान धूप कपूर टीकरा में सिंदूर के सात बैंदा लगावे
त्रिशूल बनाके मंत्रित करके सब बस्तुओं को होम
देना २१ बार मंत्र पढ़ कर होम करना
अन्याई पुरुष को कष्ट देना—ॐनमो आदेस
गुरु को लाल पलंग नौरंगी छाया काढ़ि कलेजा
तूही चाख

विधि—चौका देकर दीपक बारे तीन बार कहै आवो महावीर पहलवान हनुमान जी फिर तीन बार कहै आवों कलवा बीर रणधीर फिर गूगर खेवे भोग धरे ११ दिन तक १ सहस्र इस मंत्र को पढ़ै जाप के पीछे घृत में लोंग सुपारी जाय फल गूगल मिश्री का चूरन मिलाय १२५ बार अग्नि में मंत्रि के डाले ११ दिन पीछे दो ब्राह्मणों को भोजन करावे सिद्ध हो फिर काम पड़े जब पूर्व युक्ति से भोजन करके ११ दिन ताईं नित्य १ माला जपै मनोर्थ सिद्ध हो।

जिह्वास्तंभन—मंत्र। अलफ़ ३ दुश्मन के मुंह में कुलफ मेरे हाथ कुंजी रूपा तेरे कर दुश्मन जेर कर विधि—शनिवार से ७ दिन रात्रि को घृत का दीपक रख फूल बतासा चढ़ाय १००० टूक कर पूर्वोक्त मंत्र पढ़ कर अनि में डाले तो सिद्ध हो हाकिम के सामने १०८ बार पढ़के बात करे और बैरी की ओर फूंक मारे तो बोलने न पावे अर्जी पर १०८ बार पढ़के फूंक मारे लोवान की धूनी देकर हाकिम के हाथ में दे मनोरथ सिद्ध हो

तथा—ॐ नमो यावली २ उसका चश्मा कुलफ उसका बाजू कुलफ दुश्मन को जेर कर हमको शेर
विधिः—हनुमान का पूजन विधि पूर्वक करके १००० मंत्र जपै गूगल मंत्र के साथ अग्नि पर डाले सिद्ध हो फिर ७ या २१ बार दुश्मन की तरफ दम करे बबर न करने पावे।
तथा—शाह आलम कुत्व आलम जेर करो दुश्मन दफै करोजा लिम।
विधि—उत्तम मास की शुक्ल पक्ष की पहली जुमेरात से ८ दिन नित्य प्रति ४० बार जपै रात्रि को दीपक धर फूल बतासा चढ़ाके लोबान खेवे रेवड़ी चढ़ाके सिद्ध हो आवश्यकता के समय बैरी पर दम करे।
शत्रु मुख बंधन—ॐ ह्रीं श्रीं खेतल बीर चौंसठ जोगनी प्रतिहार मम शत्रु अमुकस्य मुख बंधन कुरु२ स्वाहाः
विधि—घृत सहत की आहुती १ सहस्र दे फिर लोहा की मेख ४ अंगुल की मंत्रि के मसाण में गाढ़े उसमें भी मंत्रि के मसाण में गाढ़े उसमें भी मंत्र पढ़े।

बैरी की बुद्धि स्तंभन का मंत्र—ॐनमो भगवते शत्रुणां बुद्धिस्तं भनं कुरु २ स्वाहा

विधि—ऊंट की लीद छाया में सुखा के सीसर पान में रखके १०८ बार मंत्र के खवावे तो बावला हो जाय

आकषर्ण का मंत्र—ॐ नमो आदि रुपाय अमुक आकर्षणं कुरु२ स्वाहा।

विधि १—कारे धतूरे का पात रस और गोरे चन इनको मिलाय सफेद कनेर की कलम से भोजपत्र पर लिखे खैर के अंगारों में तपावे १०० योजन चला गया हो तो आजाय

विधि २—अनामिका के रस से भोज पत्र पर लिखे उसके नाम से १०८ बार मंत्र के ग्रहन में डाले तो गया हुआ आ जाये।

विधि ३—मनुष्य की खोपड़ी पर गोरोचन केशर से लिखे और त्रिकाल खैर के अंगारे से तावावे।

तथा—ॐ ह्रीं ठः ठः स्वाहा प्रथम मंत्र। ॐ नमो भगवते रुद्राय राहष्टि लंपि नाहरः स्वाहा दुहाई कंसासुर की जूट २ फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा

विधि—मंगलवार से छः अक्षरी मंत्र को दस हजार वार दूसरे का २१ वार दस मंगल अथवा १० दिन ग्यारवें मंगल अथवा दिन को दशांश होम तर्पण कर ब्राह्मण भोजन करावे।

परीक्षा–सरकंडा को चीर के दोनों ओर सो दो मनुष्य पकड़े चूहा की मांटी सरसों बिनोले तीनों को मन्त्र के सरकंडा पर डाले जाय तो दोनों टूक मिल जायं फिर जिसका आकर्षण चाहे वो परदेश में हो तो उसके वस्त्र पर चूर्ण को मंत्रि के मारे जितने दिन के मार्ग पर वो पुरुष हो उतने ही दिन में आजायेगा।

सर्व मोहिनी मंत्र–पद्मनी अंजन मेरा नाम इस नगरी में पैसके मोहूं सगरा गाम राज करता राजा मोहूं फर्श बैठा पंच मोंहूपन घटकी पहिनार मोंहू इस नगरी में पैस के ३६ पवना मोहूं जे कोई मार मार करता आवेताहि नारसिंह बीर बायां पग के अंगूठा तरे घेर २ लावे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्तनाम आदेस गुरु का।

विधि—शनि रविवार को रात्रि के समय पूजन

नाहर सिंह का विधि से कर धूप दीप चन्दन पुष्प रोली चामर गूगर पान सुपारी लोगों सो १०८ मंत्र जपै हर एक मंत्र के साथ पान सुपारी शक्कर घृत गूगर सान के अग्नि में होमता जाय ब्रह्मचर्य्य से रहे मंत्र सिद्ध हो फिर नन्दन वन की रुई में ऊंगा की जड़ लपेट के बाती बनाकर काजल पाड़े उसका जल को ७ बार मंत्रि के आंजे तो सम्पूर्ण स्त्री पुरुष बालतरुण बृद्ध वश्य हों जिस ग्राम में जाय सब ग्राम वासी सेवा में स्थिति हों पण्डितों के लिये श्रेष्ठ है।

सर्व ग्राम मोहिनी मंत्र—जती हनुमंत करने मेरे घटपिंड का कोन है वौरी छत्तीस पवन मोही मोहि जोहि जोहि दह दह गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो बाचा सत्तनाम आदेश गुरु का।

विधि—प्रथम ७ शनिवार वार माहनुमान का पूजन धूप दीप नैवेद्य सों करके प्रति दिन १४४ जाप करे सिद्ध होई फिर चौराहा सों ७ कंकड़ लाके पनघट कुआं में १४४ बार मन्त्र के नाखे सब ग्राम पानी पीयें वश हों।

सभा मोहिनी सुर्मा–कालूं मुख धोयें करूं सलाम मेरी आंखों में सुर्मा बसे जो देखो सो पायन पड़े दुहाई गौसुल आदम दस्त गीर की छः३ः।
विधि–सवा लाख गेहूं पर मन्त्र पढ़े आटा पिसाई कड़ा ही में घृत शकर मिलाय हलुवा करे गौसुल आजम दस्तगीर की नियाज दिला के हलुवे को आप ही भोगल लगावे और दर्बार में जाय तो सारी सभा वश्य हो।

राजा की क्रोधाग्नि शीतल होई

हथेली तो हनुमंत बसै भैंरू वसै कपाल नाहरसिंह की मोहनी मोहा सब संसार मोहनरे मोहंता बीर सब बीरन में तेरा सीर सब दृष्टि बांधि दे मोहि तेल सिंदूर चढ़ाऊं तोहि तेल सिन्दूर कहां से आया कैलाश पर्वत से आया कौन लाया अंजनी का हनुमंत गौरी का गणेश कारा गोरा तोतला तीनों बसैं कपाल बिन्दा तेल सिन्दूर का दुश्मन गया पाताल दुहाई कामियां सिंदूर की हमें देखि सीतल हो जाय मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्तनाम आदेस गुरु का।

विधि—रविवार को नृसिंह का पूजन विधि सौं करे १२१ जाप करे इसी प्रकार ७ रविवार दीपक तेल लोबान लाहू रख के १२१ मन्त्र का जाप करे सिद्धि हो राजा के सामने सिंदूर मंत्रि के माथे पर लगा जाय तो राजा का क्रोध मिटै प्रसन्नता प्राप्ति होइ।

राजा के कामदार का बसीकरन मन्त्र

बिस्मिल्लाह दाना कुल्हू अल्लाह यगाना दिलह सख तुम हो दाना हमारे बीच फलाने को करो दिवाना।

विधि—इकतालीस बिनौले लावे एक २ को इकतालीस २ बार मंत्रि के अर्द्ध रात्रि के समय अग्नि में डाले तीन दिन में मनोर्थ सिद्ध हो प्रथम २१ दिन तक २१ बिनोले पर इक्कीस २ बार पढ़के जलावे तो सिद्धि होइ।

बसीकरन राजा-मन्त्र। ॐ नमो आदेश गुरु का जल बांधूं जलहर बांधू आणि बांधूं बार बार बांधू शिव पूत प्रचंड बांधूं रुठारा जा काई करसी आसण छोड़ संभाव सण देशी आपणा टीको चंदन

ललाट टीको काढ़ि सिंह वर्ण कहाऊं और करूं सैई यालते में बंध्यान गौरी पार्वती बंध्याते में बंध्या या गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–धूप दीप नैवेद्य धर के पार्वती का ध्यान करे शनिवार से २१ दिन १२१ जाप करे सिद्धि होइ पाछे कुंकुम, चंदन गोरोचन मिलाय गौ के दूध में तिलक करके राजा के सन्मुख जाय राजा वश्य हो।

सर्व बसीकरन—मन्त्री दोन के आनस गुरु को राजा मोहूं प्रजा मोहू मोहूं ब्राह्मण वाणिया हनुमंत रूप में जगत मोहूं॥ तो रामचन्द्र पर माणियां गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–प्रथम पूर्वोक्त श्री रामचन्द्र जी का ध्यान कर २१ दिन प्रति दिन १२१ बार जाप करे फिर गांव क चौराहे पर जाय धूल की चुटकी लीजे ७ बार मंत्रि के बिन्दी लगाने से सर्वजन वश्य हो।

राज्य बसीकरन मन्त्र–ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुक मही पते में वश्यं कुरु २ स्वाहाः
विधि–ऊंगा के पुष्प रविवार को ला राजा को

खिलावे ।
पति बसीकरन मन्त्र–ॐ नमों महायक्षणी पति मेव वश्यं कुरु कुरु स्वाहाः
विधि १–योनिरक्त केला का रस, गोरोचन का तिलक करे तो पति वश्य हो ।
विधि २–मंगलवार को सुपारी निगले निकसे तब जल दूध गंगाजल में धायान रखवावे ।
विधि ३–लोंग और जीभ का मैल खवावे तो पति वश्य हो ।
तथा स्त्री मन्त्र–ॐ नमो कमष्या देवी अमुकी नमे वशे कुरु २ स्वाहा ।
विधि–शनिवार को स्त्री के बाल और बायें मगतर की धूल लेके पुतली बनावे नीले वस्त्र में लपेट उसकी योनी में अपना वीर्य धरे सिन्दूर भग में लगावे उसके दर्वाजे की लम्बाई की ओर गाढ़े जब वह नाघे वश हो ।
तथा–सोमवार मृगशिर नक्षत्र में वीर्य में सुपारी मिलाय पान में रख खिलावे ।

तथा

मन्त्र–ॐ नमो काल भैंरू काली रात काला चाला आधी रात काला रेत बेरा वीर पर नारी के राखे सीर बेगी जा छाती धरलाव सूती होय तो जगाय लाव शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि—होली दिवाली को रात्रि को लाल अरंड का पेड़ एक झटका से तोड़ लावे काजल करे मन्त्र २१ से स्त्री के लगावे वश्य हो।

अमल फूल बसीकरन–कामरू देस क मख्या देवी जहां बसै इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी ने लगाई फुलवारी फूल वीणे लौनाचमारी जो इस फूल को सूंघे बासतिस काजी वह हमारे पास घर छोड़े घर आंगन छोड़े लोक कुटुम्ब की लज्जा छोड़े दुहाई लौना चमारी की दुहाई घन्वन्तर।

विधि–शनिवार सों २१ दिन प्रतिदिन १४४ जाप करे दीपक जलाके लोवान खेवे शराब का भोग दे सिद्धि हो फिर फूल पर ७ बार मंत्र के फूंक दे जिसको सुंघावे वश्य हो।

बसीकरन अमल पान–कामरू देसकी मख्या देवी जहां बसै इस्माइल जोगी इस्माईल जोगी न दीन्हा बीड़ा पहला बीड़ा आती जाती दूजा बीड़ा दिखावे छाती तीजा बीड़ा अंग लिपटाई फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा दुहाई गुरु गोरखनाथ की।

विधि–दिवाली की रात्रि को दीपक के सामने गूगर खेके मिठाई धरे १४४ बार मंत्र पढ़े सिद्धि हो अथवा रविवार को प्रतिदिन २१ जाप २१ दिन करे सिद्धि हो फिर ३ पान बिना तराशों का बीड़ा बनावे मसालेदार ७ बार मंत्रि के जिसे खिलावे वश्य होवे।

तथा–हाथ पसारु मुख मलूं काचा मछली खाऊं आठ पहर चौंसठ घड़ी जग मोह घर आऊं।

विधि–दिवाली रात्रि को १०१ बार कागज पर लिखे और एक २ पीठ पर आशक माशूक और उनकी माता का नाम लिखे इस प्रकार अमुकी २ की बेटी अमुके अमुके के बेटे के पास आवे सिद्धि हो अथवा ७ शनीचर ऐंतवार प्रतिदिन १०१ बार पढ़े दीपक धरे गूगर खेवे मिठाई फूल आगे धरे

सिद्धि हो फिर पान के बीड़ा को ७ बार मंत्रि के खवावे सो वपूय हो अथवा हाथ की हथेली पर ७ वार मंत्र पढ़ मुख पर फेरे जाय तो सारी सभा वश्य हो।

मोहनी–ॐ नमो आदेस गुरु को मोहनी जग मोहनी मोहनी मेरो नाम ऊंचे टीबेहूं बसूं मोहूं सगरो गाम ठग मोहूं ठाकुर मोहूं बाटका बटोही मोहूं मोहूं कूवा की पनिहार मोहूं महलों बैठी राणी मोहू जोई २ बाबा पगतरे देहु गुंरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–पूर्व युक्ति सिद्ध कर फिर चौराहे में रात को ७ बार मंत्र पढ़ मस्तक पर बिन्दी लगा जाय गुड़ पर २१ बार मंत्र पढ़ के किसी के नाम सों कूप में डारे तो जल के पीते ही आकर्षण हो।

बुरकी–धूली धूलेश्वरी धूली माता परमेश्वरी धूली चंत्रती जै जै कार इनरन चोंप भरे अमुकी छाती छार छारते न हटै देता घर बार मरे तो मसान लोटे जींवे तो पाव पलोटे वाचा बांध सूती होई तो जगाय लाव माता धूलेश्वरी तेरी शक्ति मेरी भक्ति

फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ठः ठः ठः स्वाहा।
विधि–रविवार को जो कोई मरा हो उसकी ३ मुट्ठी राख लावे प्रथम ७ दिन शनिवार सों नित्य १४४ जाप करे धूप दीप नैवेद्य धरे मसाण की राख पर दीपक धरे उसी राख पर २१ बार मंत्र पढ़के जिसके ऊपर राखे वो निःसंदेह साथ चली आवे परिक्षा भैंस पर करले।
बसीकरन शैतानी अमल–इन्ना आलैना शैताना मेरी शिकल बन अमुकी के पास जाना उसे मेरे पास लाना तो तेरी बहन भानजी पर ३०३ तलाक।
विधि–खाट की पायती में नंगा होकर १२१ बार गुड़ पढ़ के गुड़ को खाट तले रख कर सोवे प्रातः काल बालकों को बांट दे ७ दिन करे जरूर हाजिर हो।
तथा–बड़ पीपल का थान जहां बैठा अबाबील शैतान मेरी शबीह मेरी सूरत बन अमुकी को जरा न राने तो अपनी बहन भौजी के सिरजान पग चलता अभी रान जो नराने तो धोबी की नाद

चमार की खाल कुलाल की माटी पड़े जो राजा चाहे राजा का मैं चाहूं अपने काज को मेरा काम न हो गाती आन सीमें तेरा दामन गीर हूंगा।

विधि—शनिवार सों २१ दिन अर्द्ध रात्रि के समय नंगा होके ११ राई ले हर एक पर ११ मंत्र पढ़के आग में डालै।

अमल शैतानी—अलफ गुरु गुफार रहमान जाग आगरे अलहा दो बशै तान सात बार अमुकी को जरान जो न राने तो तेरी माकी तलाक वहन की तीन तलाक।

विधि—बेसन का चौमुखा दीपक बनावे चारों कोणों पर चींटा का लोही और दाहिने हाथ को अन-मिका का लोही लगाके चार बाती तेल में जरावे नंगा होके दक्षिण मुख बैठे दीपक जलावे लोबान खेवे चने और जौ भुने हुए भोज में धरे १६० बार मंत्र जपे दीपक जलता रहै नंगा ही सो जाय जाके नाम पर करे बाये रात्रि भर में ७ बार करे व्याकुल हो पायन पढ़े।

तथा अलफ अलोप एक रहमान सुन शैतान मेरी

शकल बन फलानी को जरान नराने तो तेरी मा बहन को ३०३ तलाका ।
विधि-पूर्व युक्ति खावा दीपक बेसन का।
मोहनी-अल्लाह बीच हथेली के मुहम्मद बीच कपार रस का नाम मोहनी मोहे जग संसार मुझे करे मार २ उसे मेरे बायें कदम तरे डार जो न माने मुहम्मद की आण उस पर पड़े बज्र का बाण वहक लाइलाह अल्लाह है मुहम्मद मेरा रसूलिल्लाह ।
विधि-शनिवार से घृत के दीपक के आगे मिठाई धर के लोबान खेवे १०१ मंत्र जपे दूसरे शनिचर तक फिर स्त्री के पग सने की माटी ७ बार पढ़कर जिस पर डाल सो वश हो ।
फूल मोहनी-ॐ नमो आदेस गुरु को एक फूल फूल भर दौना चौंसठ जोगिनी ने मिल किया दोना फूंल २ दह फूल न जानी हनुमंत बैठि घेर २ दे आनी जो सूंघें इस फूल वास उसका जो प्रथम प्रयोग कर सके पास सूती होइ तो जगा लाइ बैठी होय तो उठा लाइ और देखे जरे बरै मोह देख मेरे पायन परे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो

वाचा वाचा से टरे कुंभी नरक में पड़े।
विधि–शनिवार सो २१ दिन विधि युक्ति दीपक का पूजन कर १४४ बार जपै सिद्धि होइ फिर सोमवार को ११ बार फूल पढ़कर सुंघावे जी प्राण से वश होवे।
फूल मोहनी—कामरू देश कमाख्या देवी जहां बसै इस्माईल जोगी इस्माइल जोगी ने बोई बाड़ी फूल उतारे लौना चमारी एक फूल हंसै दूजा विहंसे तीजे फूल में छोटा बड़ा नाहर सिंह बसै जो सूंघे इस वास वो आवे हमारे पास और के पास जाय हीयो फाटि मरि जाय मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।
विधि–रविवार को स्नान कर लौंग सुपारी पान फूल मिठाई ले दीपक जराइके सुगंधि के पुष्प को घृत में सान के १०८ मंत्र के अग्नि में होमैं तो २१ दिन में सिद्ध होवे। ब्रह्मचारी सों रहै २२ वें ब्राह्मण भोजन कराय दक्षिणा दे फिर सुगंधित पुष्प को ७ बार मंत्रि के सुंघा दे सो आवे।
कनेर का फूल–ओंगूठी माता गूठी राती गूठा ल-

गावे आग अमुका के चटक चनावे बे धड़क कलह मचावे मुखन न बोले सुख न सोवे कहत मंत्र उठाई मारियो उरभिज्यों काचा सूत की आटी उरभै अब देखूं नाहर सिंह वीर तेरे मंत्र की शक्ति शब्द सांचा पिंड़ कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि-शनिवार को लाल कनेर की डाली के लाल डोरा बांधे और न्यौता आवे रविवार को प्रातः काल वाड़ी डाली को तोड़ लावे रात्रि को विधि युक्त दीपक के आगे १२१ मंत्र जपै २१ दिन में सिद्धि हो फिर लाल कनेर का फूल २१ बार मंत्रि के जिसको दे निश्चय आवे।

मोहनी फूल चम्पा-कामरू देस कमख्या देवी जहां बसै इस्माइल जोगी इस्माइल जोगीने लगाई बारी फूल चुनै लौना चमारी फूल राता फूल माता फूल हंसा फूल विहंसा तहां बसै चंपा का पेड़ चंपा के पेड़ में रहै काला भैरूं भूतप्रेत ये मरें मसान ये आवें किस के काम पे आवें टौना गमन के काम भेजूं काला भैरूं कुं लावे मुश्कें बांधे बैठी हो तो वेगी लाव सूती हो तो उठा लाव वह सोवे राजा के

महलों प्रजा के महलों मुझ से होनी राणी फूल दूं उसी के हाथ वह उठा लागे मेरे साथ हम को छा-ड़िपर घर जाय छाती फाटि वहीं मरजाय मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा चूके उमाह सूखे लोना चमारी बहरे जोगी के कुंड में पढ़े वाचा छोड़ कुवाचा जाय तो नार खरवार में पड़े।

विधि—शनिवार को चंपा के पेड़ को तोंते और लाल कलावे के डोरा सो बांध आवे रविवार को वही डारी ७ मंत्र जप के गूगर खेवे धूप दे कर तोड़ लावे रात्रि को दीपक धर डोरी के आगे भैरूं का पूजन करे प्रतिदिन २१ बार जपै २१ दिन में सिद्धि हो भोग में शराब और उड़द के बड़े. तेल गुड़ दही धरे चंपा के फूल पर ७ बार मंत्र जप कर जिसे सुंघावे उस को भैरूं लाय हाजिर करे।

मोहनी पुतली बसीकरन मन्त्र—बांधूं इन्द्रक बाधू तारा बांधू बिंद लोही की धारा उठे इन्द्र न घाले घाव खून साख पूणी हो जाय। बण ऊपर लोकां कदी हीया ऊपर लों सूत मैं तो बंधन बांधियो रूई सुसर जाया पूत मन बांधूं मन्यंतर बांधू विद्या दे सूं साथ

चार खूंट जे फिर आवे फलानी फलाना के साथ गुरु गुरे स्वाहा।

विधि–शनिवार से २१ दिन रात्रि के समय स्वच्छ स्थान में पवित्र होके एक पुतली बना के उसका पूजन विधि पूर्वक करे दीपक धर गूगर खेवे २१ मंत्र जपै सिद्धि हो शनीचर के शनीचर के सवा पा लाप सी भोग धरे ५ पतासा भोग धरे।

बसीकरन विधि—शनीवार को एक पुतली बना उसके पेट में स्त्री का नाम लिखे १०८ बार मंत्र बनाई हुई पुतली पर दम करके जिस स्त्री की चाहना हो उसको दिखावे पुतली को छाती से लगा रखे वह स्त्री बेचैन होके हाजिर होवे।
सुपारी मोहनी—मंत्र खरी सुपारी टामन गारी राजा पर जाखरी पियारी मंत्र पढ़ लगांऊ तो रहिया कलेजा दोड़ जीवत चाटै पग तली मूवे सेव मसान या शब्द की भारी न लावे तो जती हनुमन्त की आन शब्द सांचा पिंड़ कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।
विधि—सुपारी २१ दिन में सिद्ध करके अथवा सूर्य ग्रहणमें१ १८बारमंत्र के मंत्रिके विसे खिलावेवश्यहो।
सुपारी मोहनी मन्त्र—ॐ दिव नमो हरये ठं ठं स्वाहा।
विधि—१०८ बार मंत्रि के खिलावे तो वश्य हो।
तथा—मंत्र परि में नाथ पीर तू नाथ जिस को खिलाऊं तिसको वश करना फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।
विधि—ग्रहण में नाभी समान जल में सोवा सुपारी ७ बार मंत्रि के निगल जाय जब पेट में से निकले

तब सों धोवे गोठे दूध सों धोइ ७ बार मंत्रि के गूगर धूनी दे जिसे खिलावे परल सुपारी सो वश हो नर और क्या नारी।
लोग बसीकरन मन्त्र–ॐ जल की जोगिनी पाताल का नाग जिस पै भेजूं तिसके लाग सोते सुपन बैठे सुख फिर फिर देखे मेरा मुख मेरी बांधी छूटे तो बाबा नाहर सिंह की जन टूटे।
विधि–चार लौंग पीस पत्ता में रख गूगर धूनी दे फिर ओएके तले रख पानी में गोता लगावे गोता में ७ बार मंत्र को पढ़े फ़िर पानी से निकल कर मुंह से पत्ता निकाल के लोंग थूरगूगर की धूनी दे कर जिसे खिलावे सो आवे।
लोंग मोहनी–सत्त नाम आदेस गुरु को लोंगा मेरा भाई इन्ही लौंग ने शक्ति चलाई पहली लौंग राती माती दूजी लौंग जोवन माता तीजी लौंग अंग मरोड़े चौथी लौंग दोऊ कर जोड़े चारों लौंग जो मेरी खाय फलाने के पास सो फलानी कने आजाय मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–रविवार से रात्रि दीपक का पूजन कर प्रति-
दिन २१ बार २१ दिन तक पढ़े सिद्धि हो ४ लौंग
सात बार मंत्रि के खिलावे हाजिर हो सत्य ३।
बसी करन इलायची का मंत्र–ॐ नमो काला
कलवा काली रात जिसकी पुतली मांझि रात काला
घाट वाट सूती कों जगाइ लाव बैठी को उठाइ लाय
खड़ी को चलालाव वेगी धरया लाव मोहनी जोहनी
चल राजा की ठांऊ अमुकी के तन में चटपटी लगाव
जी याले तोड़ जो कोई खाय हमारी इलायची कभी
न छोड़े हमारा साथ घर कों तजे बाहर को तजे घर
के माई कों तजे हमें तज और कनें जाइ तो छाती
फाट तुरत मर जाय सत्य गुरु आदेस गुरु गुरु की
शक्ति मेरी भक्ति फुरे मंत्र ईश्वरो वाचा ईश्वर
महादेव की वाचा वाचा से टरे तो कुंभी नर्क में पड़े
विधि–२१ दिन में सिद्ध करके इलायची पर ११
बार सत्य ३ पढ़ के मंत्रि दे तो वश्य हो।
तेल मोहनी–ॐमोहनाराणी मोहनाराणी चले सैर
को सिर पर धर तेल की दोहनी जल मोहूं थल
मोहूं सब संसार मोहनाराणी पलंग चढ़ बैठी मोहर

हादर बार मेरी भक्ति गुरु की शक्ति दुहाई लोना चमारी की दुहाई गौरा पार्वती की दुहाई बजरंग बली की।

विधि—अतर फूल मिठाई दीपक लोवान ले दिवाली की रात्रि को २२ माला जपे सिद्धि हो फिर तेल का बिंदा मस्तक पर लगाके दर्बार में जाय और तिलक को सात बार मंत्रि के स्त्री के अंगसे लगावे तो आवे।

पुतली सर्व बसीकरन मंत्र—ॐ ह्रीं क्लीं जंहिये अमुकी आकर्षय आकर्षय ममवश्यं कुरु कुरु दोहं कुरु स्वाहा।

विधि—प्रथम पुतली को जो अगले सफे में लिखी है केसर कुमकुम गोरोचन से भोजपत्र पर लिख शुभ घड़ी में पूजन करे प्रार्थना करे अपने कार्य की प्राप्ति को फिर अरंड, की नाली में रख के खैर के अंगारों से तपावे १०८ मन्त्र जप गूगर की गोली लाल कनेर का फूल घृत में सान अग्नि में डाले १०८ दिन में काम सिद्धि हो इस पुतली से नभ राजा प्रजा सब वश्यहों।

वस्तु मंगाने का मन्त्र—ॐ नमो देय लोक देव-स्या देवी जहां बसे इस्माइल जोगी छप्पन भैरूं हनु-मंत बीर भूत प्रेत दैत्य कूं सारा मगाये पराई माया लावे लड्डू पेड़ा बरफी सेब सिंघाड़ा पाक पतासा मिश्री घेवर लोंग जोड़ा इलायची दाणा तले देवी किलकिले ऊपर हनुमंत माजें इतनी वस्तु में चाही वस्तुन लावे तो तेतीस कोटी देवता लाजें मिर्च जा-

वित्री जाय फल हड़ जवाहड़ बादाम छुहारा मुकुरें राम बीर तो बतावे वस्त्रां लछमन बीर पकड़ावे हाथ भूत प्रेत को चलावे साधि हनुमंत वीर लंका को धाइ भूत प्रेत को संग चलाया चाही वस्तु चली आवे हनुमंत वीर को सब कोई गाये सौ कोसो को बस्तां लावे न लावे तो एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर लजावे।

विधि—मांस के बाहर केरा कूप हो तहां आप कूप में बैठे हनुमान की मूर्ति माड़े मूर्ति के मुख आगे के मन्त्र धरे पाप खेकर मंत्र जपे सात दिन ताई या खरोट ११ और सवाया खरोट खांड़ सहित भोग धरे पाछें वाकों आप ही खाय जब आकाश वाणी होइ तब वर मांगे सो पावे।

मोहनी मंत्र तेल—ॐ नमो मोहनी राणी पलंग चढ़ बैठी मोड रहा दरबार मेरी भक्ति गुरु की शक्ति दुहाई लोना चमारी की दुहाई गौरा पार्वती की दुहाई बजरंग बली की।

विधि—अतर मिठाई फूल दीपक लोवान दिवाली की रात्रि को २२ माला जपे तेल पर सिद्धि हो

फिर तेल का मस्तक पर बिन्दा लगाके दरबार में जाय और जिसके अंग से तेल लगावे सो वश्य हो।
मंत्र बसीकरन—धूली धूली विकट चंदनी पट मारूं धूली फिरे दिवानी घर तजे बाहर तजे ठाड़ा भरतार सजे देवी दिवाली एक सठो कलवा न तू बाहर सिंह बीर अमुकी ने उठाई ल्याय मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।
विधि—शनिवार को स्त्री मरे उसके पगतर का अंमार ले कोरी ड़ाबी में रख ७ बार मंत्र के लगा जेसो लाभ हो।
मंत्र बसीकरन—ओं ह्रीं रक्ते चामुंडे अमुकस्य-मंत्र वश्यं कुरु २ स्वाहा।
विधि—सहस्त्र जपेत कुमकुम चंदन गोरोचन गौ का दूध मिलाय तिलक करे राजा वश्य हो।
मिठाई मोहनी—जल मोंह थल मोहूं जंगल की हिरणी मोहूं बाट चलंता बटो ही मोहूं कचहरी बैठा राजा मोहूं पीढ़ा बैठी राणी मोहूं मोहनी मेरा नाम मोहू जग संसार तरा तरीला तोतला तीनों बसें कपाल मस्तक बैठी मात के दुश्मन करूं या

मोल मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।
विधि—शनिवार से २१ दिन १४४ बार पढ़े अग्नि पर गूगर मंत्र पढ़ २ होगे दीपक पर फूल पतासे चढ़ावे सिद्धि हो फिर मिठाई पर २१ बार मंत्रि के दे ।
संखाहूली सभा मोहनी—ओं संखाहूली वन में फूली ईश्वर देख मवर्जा भूली जो या कों सिर पर धरे राजा परजा वाके चरणों पड़े मेरी भक्ति गुरु की शक्ति ।
विधि—शनिवार वन में जाय चावल शक्कर संखा-हूली पर चढ़ाइ धूप दे नोंत आवे रविवार को प्रातः काल जाय जलसों स्नान कराइ रोली चंदन चढ़ाई धूप दे फूल चढ़ावे घृत का दीपक वार गुड़ भोग धरे १२१ बार मंत्र पढ़ मूल मूल समेत उखाड़ लावे गोरोचन सांप की कांचली संखा हूली तीनों को पीस २१ दिन रात्रि को १२१ प्रतिदिन जाप करे सिद्ध होइ पगड़ी में राखे राजा और सारी सभा वश्य हो ।

सर्व मोहनी मंत्र—ॐ संखाहूली वन में फूली बैठी करे सिंगार राजा मोहें परजा मोहे सबनें करे सिंगार मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो विधि पूर्व युक्ति करे।

सर्वोपरि सभा मोहनी मंत्र-ॐ नमो आदेश गुरु कों ओं संखाहूली वन में फूली ईश्वर देख गवर्जा भूली आवभाव राजा प्रजा पांव पडाय मंगल मोहन बस करन मोहन मेरो नाम वे मोहन फलाना के अंत शबसों संग महेसुर गांव चल मोहनी राऊल चल जलती आग बुझावत चलती न खेत आगें मोह तीन खेत पाछें मोह तीन खेत उत्तर मोह तीन खेत दक्षिण मोहे आवने की दृष्टि मोह पट्टा बैठा राजा मोहे शैय्या बैठी राणी मोहदर मोह दीवार मोह गांव का मुकद्दम मोह काजी मोह काजी की कुरान मोहते तू नाहरसिह वीर हमरा कारज ना करे तो आप की माता का दूध पिया हराम करे ठः ठः ठः ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि-पूर्व युक्ति शनिवार को न्यौते रविवार को पूजन करे २१ मंत्र पढ़कर लावे रात्रि को दीपक

घर नृसिंह का आवाहन करे दो पेड़ा पान का बीड़ा भोग धरे चावल घृत शकर १२२ बार मंत्र पढ़ २ अग्नि पर डाल के कपूर की आरती उतारे ७ ऐंत-वार प्रतिदिन ऐसा करे सिद्धि हो ऐतवार का वृत रखे फिर संखाहूली की पूर्व विधि गोली बांधकर पाग में रखे राजा प्रजा अति प्रसन्न रहें सारी सभा पिता के समान जाने स्त्री को मिठाई पर पढ़कर खिलावे दूसरे मनुष्य को किसी से काम होइ तो गोली को जल में घिस उसके मस्तक पर बेंदी लगावे मनोर्थ पूरा हो।

गुड़ मोहनी मंत्र—ॐ नमो आदेश गुरु को गूगल धूप की धूआं धार देखूं पलमा तेरी शक्ति तरस रात्रि को टूटा तार ऐसा टूटा भैरू बाबा काम नगारा गुड़ मंत्र पढ़ उसको दे घर में चक न बाहर चक बाहर चक बाहर चक फिर २ देखे हमारा मुक्त जीवन सेवे जीवकों मुक्त सेवे मसाण हमसे आकुल व्याकुल जती हनुमंत की आण हमें छोड़ और पास जाय पेट फाट तुरत मर जाय सत्य नाम आदेश गुरु का।

विधि—सात शनिचर प्रति दिन १२१ बार जप भोग शराब लापखी कलेजी धरे सिद्ध हो पाछे गुड़ मंत्रि के खिलावे हाजिर हों।
तथा—ॐ नमो आदेश गुरु को या गुड़ राता या गुड़ माटी या गुड़ आवे पाया पड़ती जो मांगूं प्रयोजन पाऊं सोती तिर्या जगाकर लाऊं चल २ आगिया बेताल फलानी के पेट चलावे काल रात्रि को चैतन दिन कों सुख फिर जोवे हमारा मुख जैमकड़ी मकड़ी से टले सीस फाट दोहूक हो पड़े काला कलवा काली रात कलवा चाला आधी रात चाल २ रे काला कलवा सांधन चाटे हमारा तलवा आक के पान कवारी बसे धन जोबन सों खरी पियारी रेतरगत गुड़ करे गिरास अमुकी आवे फलाना पास हनुमंत जी की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।
विधि—गुड़ दो टंक को चटली उंगली के रुधिर में २१ बार मंत्रि के स्त्री को खवावे वश्य हो नहीं तो कूप में डाले।
सुई छेदवा का मंत्र—ॐ नमो चंड पचूना लोहा

सार लोहा का पत्र गढ़ै लुहार मोड़ि माड़ि कर कीया पानी जारे लोहा भस्म हुलारी राम बीर तो लावे मांटी लछमन मूंदे घाव पाचे फूटे पीड़ा करे तो महाबीर रत्ता करे शब्द सांचा पिं.।
विधि—विभूति सों सुई को ७ बार मंत्रि के गोली में छेदे।
तथा—धार धार महाधार बांधूं सात बार आणी बांधूं तीर बार मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा दुहाई गुरु गोरखनाथ की छू।
विधि—सुई को सात बार मंत्रि के गोली में छेदे।
पूंगी बाधिवा का मंत्र—ॐ वादी आया वाद न करता बैठा बड़ पीपर की छाया रहे बादी बाद न कीजे बांधूं तेरा कंठ और काया बांधूं पूंगी अरु नाद बांधूं योगी और साध बांधूं कंठ की पूंगी बाजे और मसान की बानी अब तरोर पूंगी सी जाने तले बांधे नाहरसिंह ऊपर हनुमंत गाजे मेरी बांधी पूंगी बजे तो गुरु गोरख नाथ लावे।
विधि—कांकरी तीन बार मंत्रि के पूंगी पर मारे।
पूंगी खोलवा का मंत्र—ॐ गुरु को शब्द आनन्द

नाद खुल गई पूंगी भयो अवाज शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।
विधि—धूरि मंत्रि के मोर
ढाल रोपवा का मंत्र—ॐ चौंसठ जोगिनी बावन वीर छप्पन भैरूं सत्तर पीर आया बैठ ढ़ाल के तीर हाली हलै न चाली चलै वादी बाद शत्रु सों मेले या ढ़ाल ले चले तो जाहर पीर की दुहाई फिरे शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा
विधि—कांकरी पढ़ कर मारे।
ढ़ाल को मंत्रि के पैसा पर मेलै मंत्र पैसा का—ॐ काली देवी किल किला भैरूं चौसठ जोगिनी बावन वीर तांबे का पैसा बज्र की लाठी मेरा कीला चले न साथी ऊपर हनुमंत वीर गाजे मेरा कीला पैसा चलै तो गुरु गोरख नाथ लाजे शब्द सांचा पिण्ड कांचा।
पैसा उड़ावा का मन्त्र—ॐ हनुमंत वीर हुलासा चलरे पैसा रूखा वीर खा तेरा बासा सब की दृष्टि बांधि दे जोहि मेरा मुख जो वे सब कोई बाद करता बादी रोवे भरी सभा में मोहि विगोवे शब्द सांचा

विधि–धूर मंत्रि के पैसा पर मारे उड़ जाय ।
नाक की नकसीर थामवा को मन्त्र–ॐ नमो आदेस गुरु कों सार सार महासागर बांधूं सात वार आणी बांधूं तीन बार लोही की सार बांधूं हनुमंत वीर पाके न फूटे तुरन्त सुखे शब्द सांचा ।
विधि–विभूति सो सांज वार चांकजे ।
भान मती तमाशे नजर बंदी का मन्त्र–ॐनमो भगवते वासु की नागरा जाय गोप कुंड़ली चलना निनी स्वाहा ।
विधि–रविवार को अंकोल की लकड़ी ले गोल चौका दे के धूप धीप ने वैद्य काष्ट को दे फिर १०८ मंत्र जपै सिद्धि हो जाय तब तमाशा करे और वा लकड़ी को मंत्र पढ़ फिरावे तो जिसकी दृष्टि उस पर पड़े उसकी दृष्टि बन्द हो ।
तथा–ॐ नमो वट्ठकी चामुंड़ी ठः ठः ठः स्वाहा
विधि–पद्म नाल पर कन्या काता सूत लपेटे १०८ मंत्र पढ़े तमाशा करे तहां फिरे जिन की दृष्टि पड़े उनकी नजर बंधे ।
तमाशा अन्य प्रकार–ॐ नमो भगवते वासु की

नाम । पूर्ण

विधि—अंगूर की शाखा एक १ शशा की बीट२ थूहर के पात ३-बहेड़े की छाल ४-पटोल ५-इन पांचों को भेड़ी के दूध में बांटि गोली बांधे गूगर खेवे दीपक बारे दूध बूरा मिलाई भोग धरे पुष्प चढ़ावे १०८ बार पूरा मंत्र जपै गोली सिद्धि होई फिर गोली को छाया में सुखाय रख छोड़ खेल करे तब प्रथम इस रक्षा मंत्र से ७ बार विभूति पढ़। मस्तक पर लगावे रक्षा मन्त्र—ॐ पानी स्वाहाः

विधि १—फिर उक्त गोली को मेंहदी की तरह हाथ पर लगा के कहे फलाने आव तो उसी को देखे।

विधि २—गोली को मले में लगावे तो हंड़ दीखे।

विधि ३—गोली की काम की पर में लगावे काग दृष्टि आवे।

विधि ४—गोली को कमर में नाल में मल के ऊंचा चारे तो ऊंचा दीखे।

विधि ५—और नीचा रखे तो ऊंचा दीखे।

विधि ६—गोली को नीबू के पात में रखे तो बीछू दृष्टि पड़ें।

विधि ७–गोली और हरताल दोनों को मिलाय उंगली में लगावे तो लोबा दीखे।
विधि८–मुर्गा की परपे गोली को मल कर हाथ में ले तो मुर्गा दीखे।
विधि ९–अन्न पर मले तो रत्न दृष्टि आवें।
विधि १०–अन्न को बोवे तो तुर्त फूले फले।
विधि ११–गोली को करंज बीच पर मलके मुंह में रखै तो पेट में पानी भरे निकारें तो सुख हो।
विधि १२–गोली के हाथ पर मले तो लोप होके भीड़ में से निकल जाय।
विधि १३–गोली को सारे अंग में लगावे तो सब हाथ पांव आदि टूटे हुए दिखाई दें धोवे जब जुड़े दीखें इति १३ विधि।
अन्य खेल भानमती–गोदंतीहरताल १-आंवला २ केला की जड़ ३-मंग मींगी का अंगूर ४-सोल हपर्णा ५ थङ्क शाख ६-इनछ हों को समान लेके भेड़ी के मूत्र में गोली बांधे और ऊपर लिखे हुए मंत्र। ॐ नमो भगवते। पूरे को २१ बार पूर्व युक्ति पढ़के गोली छाया में सुखा धरे।

अथ सिद्धि करन विधि

गुण १–गोली को घिसकर कांसी के पात्र लगावे तो पाताल देवी दीखें।

गुण २–गोली और सरसों को गो मूत्र में पीस शरीर में लगावे तो बड़े से छोटा दीखे।

गुण ३–गोली जार सरसों को छेरी के मूत्र में पीस के शरीर में मलै तो बड़ा दीखे।

गुण ४–गोली धतूरा का बीज दूध में पीस कर उंगली पर मले तो जिसे दिखाये नंगा हो जावे।

पत्थर वर्षावे को मन्त्र–ॐ नमो उच्छिष्ट चंडालिनी देवी महा पिशाचिनी क्रीड़ा ठः स्वाहा।

विधि–शनिवार को जहां मुर्दा जलै उसकी चिता में ७ कांकर मंत्रि के नाख आवे ३ घड़ी पीछे काढ़ि लावे जिस के घर में कांकर गाढ़ै पत्थर वर्षे काढ़े तब बंद होवे।

शुभाशुभ कथन—ॐ हीं श्रीं वाली लंवा हुली त्तां त्तीं त्तुत्तें त्तः फट स्वाहा

विधि–पूर्व मुख बैठ १ सहस्त्र मंत्र जपै भूपर सोये ब्रह्मचर्य सों रहे १ बार भोजन करे शुभाशुभ कहै।

तथा–ॐ स्वप्नावलोकिनी सिद्धि लोचनी स्वप्नेक कथन स्वाहा।
विधि–एको विंशतिवार जपेत्।
टीढ़ी भगाने का मन्त्र–ॐ नमो पश्चिम देश में अस्तावल तल हुआ जहां अजैपाल ने खुदाया कूआ वा कूआ में निकला नीर जहां भेला हुआ बावन वीर जाने मिलकर भता उपाया हाथ पकड़ टीढ़ी की जाया सुनिरे टीढ़ी बांधूं डाढ़ जमीन आसमान बीच रहस्यों गाढ़ उतरे तो तेरी पर ले बांधूं चढ़े आसमान तो सर जे सांधू तीजे तेरा जाया पाऊं बारा कोस में काम कराऊं इहि विधि विचरे बावन बीर जा हारा समुद्र के तीर मेरी भोम पर हनुमंत गाजें किसी को चलाई नें चले मेरा डंका चारों खूंट में बजे इहि विधि चलाईन चलेगी तो एक लाख अस्सी हजार पीर पैगंबर लाजें शब्द सांचां पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।
विधि–एक ठीकराने ३ बार मंत्र पढ़के चटली उंगली का लोही दीजे फिर या प्यादा चलै या घोड़े पर चलै एक मास में दौड़े जहाँ ठीकस धरे तहा टीढी

का पड़ाव पड़े।

टीढ़ी उड़ावा का मंत्र—ॐ नमो आदेश गुरु को आकाश की जोगिनी पाताल का देव आदि शक्ति माई पश्चिम देश सों आई गोरखनाथ आकाश को चलाई पश्चिम देश मांझ में कूआ जहां भवानो जन्म तेरा हुआ टीढ़ी उपजी स्वर्ग समाई जब टीढ़ी गोरख ने बुलाई एक जाइ तांबा वैसी एक जाइ रूपा वैसी वैसी एक जाई सौना वैसी एक जाइ घोई घड़नी वकरा दन्त मैंड़क दन्त सर्पादन्त दिदन्त अब छोड़ वन को खाव धूल छोड़ आकाश लग जाव खेत कूकड़ो मध की धार टीढ़ी चली समंदर पार हुंकारे हनुमंत बुलावे भीम जा टीढ़ी पैलाका सींव नीचे भैरू किलकिले ऊपर हनुमंत गाजे मेरी सींव में अन्न-पाणी खाइ तो गुरु गोरख नाथ लाजे मानो भव भवानी का धड़ कूजे जो मेरी सींव में अन्न पाणी भखेगी तो दुहाई जैपाल चक्क वै की फिरैगी।

विधि—श्वेत मुर्गा और शराब ७ बार मंत्रि के अपनी सींवके बाहर छोड़े।

टीढ़ी की झाढ़ बाधिवा का मन्त्र—ॐ आदेश

गुरु को अंजर बांधूं बजर बांधूं बांधूं दसों द्वारा लोह का कोड़ा हनुमंत ठोक्या पड़े धरती घाले घाव तेरी टीढ़ी भस्मंत हो जाव की लूं टीढ़ी कीलू नाला ऊपर ठेकूं वज्र का ताला नीचे भैरूं किलकिले ऊपर हनुमंत गाजे हमारी सींव में अन्न पाणी भखै तो गुरु गोरख नाथ लाजे।

धरती में टीढ़ी बैठे–ॐ नमो आदेश गुरु को अजर कीलनी वजर कीलनी की लूं टीढ़ी धरूं मसान धर मार धरती सों मार सवा अंगुल पाख धरती में गाड़े ऊहर मुहम्मद बीर की चौकी चढ़े थम धरती चाट खाय, बायें हाथ मरे हाथ में उठाय मेरा गुरु उठाये तो उठजे और चक्र सों उठै तो दुहाई गोरख नाथ की फिरे आदेस गुरु को।

बाजीगर के तमाशे

कागज की कढ़ाई में पुआ उतारने का मंत्र–ॐ नमो घानी का तेल कागज की कढ़ाई शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–चलती घानी का तेल मंगावे कागज की कढ़ाई में नाखजे २७ बार मंत्र कढ़ाई पर फूंकजे

अग्नि पर सूढ़ाई पुआ उतारे ।
कढ़ाई बांधने का मन्त्र–ॐ नमो जल बांधूं जल वाई-वाई बांधूं बांधूं तूंबा ताई नौ से गांव का वीर बुलाऊं रहो २ रे कढ़ाई जती हनुमंत की दुहाई ।
विधि–सात कांकरी २१ बार मंत्रि के कढ़ाई पर मारे कढ़ाई बंध जाय उतारे तो उबले ।
हांड़ी में आग न लगे–मंत्र काची हांड़ी काची पाली ऊपर वज्र की थाली नीचे भैरूं किल कलाय ऊपर नृसिंह गाजे जो इस हांड़ी के आंच लगै तो अंजनी पुत्र लाजे दुहाई हनुमंत जती की दुहाई अंजनी पुत्र की शब्द सांचा पिंड काचा ।
विधि–नमक अथवा ठीकरा पर ७ बार मंत्रि के चूल्ला में डारे हांड़ी न पके ।
तुपक बांधने का मंत्र–ॐ नमो आदेस गुरु को जल बांधू जलवाई बांधूं बांधूं खाती ताई सवा लाख अहेड़ी बांधूं गोली चलै तो हनुमंत जती की दुहाई शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।
विधि–एक रंगी गाय का दूध मंत्रि के बन्दूक की की मुहतवर मार तो गोली चले नहीं ।

तलवार बाँधने का मन्त्र–ॐ धार धार अधर बांधू सात बार कटै न रोम ना भीजै चीर खांड़ा की धार ले गयो हनुमंत वीर शब्द।

विधि–मारग की धूर मंत्रि के तलवार पर मारो बंधे।

मन्त्र धार बंध–धार धार खंड धार बांधूं तीन बार उड़े लोह ना लागे घाव सीर रखै श्री गोरख नाथ राव लोह का कहा मूंज का बाण हनुमंत मेलही लाल यह पिंडलागे न पैनी धार शब्द।

विधि–मृतिका मंत्रि के अंग पर लगा क हथियारन से खेले लड़े तो घाव न लगे।

घाव पुरला का मंत्र–सार सार विजैसार बांधूं सात बार फूटे अनन ऊपजे घाव सीर रखै श्री गोरखनाथ।

विधि–सात बार घाव पै फूंके पीड़ा न हो।

मन्त्र अनी बंध-पंचंदर ऊंरक्त बंमसर होइ निर्विष आमंत भोनाथ होइ यह निर्विष।

विधि—३ बार मन्त्र पढ़ लोहा पर फूंके अणी न फूटे ३ बार मांटी मंत्रि के अंग पर लगावे अणी

न लगे ।

अथ भानमती के सूक्ष्म खेल तमाशे लाय आग थामने का मन्त्र–ओं नमो कोरा कर वाले गौरा के सिर पर धरिये पर धरिया ईश्वर ढोले गौरजा हाइ जलती आग सीतल हो जाइ शब्द ।

विधि–कोरा केर वाले के जल भरे ७ बार मन्त्रि के जेती दूर में छोटा मारे उतनी दूर में लाय न लगै ।

अग्नि बुझाने का मन्त्र—हिमालस्योत्तरे पार्श्वे मरीचो नाम राक्षसः तस्य मूत्र पुरीषाभ्यांहुताशस्त भयामि स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र से ७ बार २ जल मंत्रि के डाले तो अग्नि बुझे ।

लोपांजन मन्त्र–ॐ नमो भगवते रूद्रेश्वराय नमो-रूद्राय व्याघ्र चर्म परी धानाय डमरू चंद्रक कलाली स्वाहा ।

विधि १–काला कूकर भूखा राखे काले तिल दूध में मन्त्रि के खिलावे विष्टा के तिलले तेल कढ़ावे

उस तेल का काजल पाड़े नेत्र में आंजे तो लोप हो।
विधि २–अकोल के तेल में बच भिगोवे ७ दिन पूर्व मंत्र से मंत्रिक धरे मुख में राखे गायब हो।
विधि ३–अंकोल का तेल कबूर की बीट इन दोनों को पूर्व मंत्र से मंत्रि के तिलक लगावे लोप हो।
भूत वसीकरन मंत्र—ओं श्रीं वंबं मुं भूतेश्वरी मम वश्य कुरु २ स्वाहा।
विधि–चौका बचा जल मूल नक्षत्र में बबूल मूल में डाल के ४० दिन तक १०८ मंत्र नित्य जपे ४१ वें दिन जल न डाले तो भूत सन्मुख आके जल मांगे ३ वचन ले जो याद किये पर आके काम पड़ें सो करे फिर जब जय लों जले दे भूत सेवा में रहै।
हाजिरात का मन्त्र—बिस्मिल्लाहिर्रहमानि रहीम खुदाई बड़ी तू बड़ा जैनुद्दीन पैगम्बर दुना तेरा सादात फुरो बाद ना मुरादी बबुनियादी तुर्कमापीर ताइयासिलार देखूं तेरी शक्ति बेगि बांधि-

ल्याव नौ नाहरसिंह चौरासी कलवा बारा ब्रह्म अठारासै शाकिनी कामन दुसमन छल छिद्र भूत प्रेत चोर चाखर आगिय बेताल बेगी बांधिल्याव जो न बांधिल्यावे तो दुहाई ।

सुलैमान पैगम्बर की विधि—शुक्र के शुक्र तेल फुलेल लोंग धूप मिठाई से पूजन करे १२ मन्त्र जपै ४० दिन में सिद्धि हो जब हाजिरी करनी हो तब प्रथम मृतिका से जमीन लीप कर चावल की मसजिद बनावे कपास की बाती बनावे पट्टा पर त्रिशूल लिख क्वारी कन्या को स्नान कराय स्वच्छ वस्त्र पहराय बैठावे चावल मंत्रि के कन्या पर मारे उसके मस्तक दीपक धरे फिर जो पूछना हो पूछे सत्य कहेगी ।

प्रत्यक्ष हाजिरात कामाख्या—ॐ नमो कामाक्षायै सर्व सिद्धि दायै अमुक कर्न कुरु २ स्वाहा।
संकल्पः—यस्य मंत्रस्य वन्हिक ऋषी जगती छन्दः कामाख्या देवता प्रणव शक्ति अव्यक्ति कीलक अमुक कर्माणि जपै विनि योग ।
अथ न्यास—ॐ नमो अंगुष्ठाभ्यांनमः कामा-

ख्यायै तर्जनीभ्यांनमः स्वाहा सर्व सिद्धि दाये मध्यमाभ्यां बौषट् अमुक कर्म अनामिकाभ्यां नमः हुंकुरु कुरु कनिष्टकाभ्यां बौमट् स्वाहा करतल करपृष्टाभ्यां अस्त्राय फट् ओं नमो हृदयाम कामाख्याय शिरसे स्वाहा सर्व सिद्धि दाये शिखायै वषट् अमुक कर्म कवचाय हुं कुरु नेत्र त्रयाय वौषट स्वाहा अस्त्राय फट ॥

ध्यान—योनि मात्र शरीराया कंगु वासिनिका मंदारजास्वला महा तेजा कामाक्षी ध्येयतांसदा ।

सिद्धि करन विधि—दस सहस्त्र मंत्र जप गुड़ हलके पत्तों की एक सहस्त्र आहुतिदे तर्पण मार्जन कर ब्राह्मण भोजन करावे तो मन्त्र सिद्धि हो मन्त्र जप के संकल्प का जल मेढ़ले के फूलों पर डाले । हाजिरात करे तब यह जंत्र लिखे–रुई में

१	८	३	८	त
५	६	३	६	र
७	२	९	२	क
७	४	५	४	सी

मेंढक की राख मिलाके बाती बनावे तेल दीपक में रख पूजन कर उसके आगे आठ या दस वर्ष की कन्या या बालक जो उच्च वंश का देवता गण हो बैठा के दीपक आगे यन्त्र को रखके पूजन करे फिर जंत्र को बालक देखे और बालक की हथेली में मेंढक की राख तेल में सान लगावे फिर उससे पूंछे जो चाहे सो सारी बात सत्य २ बतावेगा।

चौकी चढ़ावा का मन्त्र—ॐ नमो आहांकंत जुगराज फटंत कार्य जिस कारण जुगराज में तोकूं ध्याया हांक मारता जुगराज आया गाजंत आया घोरंत आया सिरस के फूल लेता उड़ाता आया और की चौकी उठाता आया आपकी चौकी बैठाता आया और का किवाड़ तोड़ता आया अपना किवाड़ मारता आया अपना किवाड़ मारता आया बांध २ किल्या बांध भूत को बांध प्रेत को बांध उड़ंत को बांध गड़ंत को बांध जोगिनी को बांध देव को बांध दांत बर्र के बांध ६३ कला को बांध ६४ जोगिनी को बांध आकाश की परी को बांध धरती को बांध डाकिनी को बांध

खेचरी को बांध नाटक को बांध चेटक को बांध छल को बांध छिद्र को बांध कीया को बांध कराया को बांध ऊपरी को बांध पराई को बांध मैली को बांध कुचेली को बांध स्याह को बांध सफेद को बांध काली को बांध पीली को बांध रेगढ़ गजनी का मुहम्मद बीर बिसर जाय तेरा तीसों रोजा हलाल उलटिमार पटकि पछार कब्जा चढ़ाई मुख बुलाय शशिखाय शब्द सांचा० ।

भूतादिक बक्राबा का मन्त्र-ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय किल तरवाइ सद्दंष्ट्र कराल वक्ताय त्रिनैन भूषिताद धग धग तपश्टंग ललाट नेत्राय तीव्र को पान लाय मिते तजपात शूल खडांग डमरुक धनुर्वाणा मुद्गर भूयदंड त्रास मुद्रा वेगदश दौर दराड मंडि तायकपिल जटाजूट कूटार्द्ध चन्द्र धारग भस्मराग रंजित विगहाथ उग्र फणपति घटा टोप मंडितकंठ देशाय जय जय भूत डामरस आतम रूपं दर्शे २ सर २ चलसाशोन बंध२ हुंकारेन त्रासय २ बज्र दंडेन हन२ निशितिखडेन छिंद२ शूला ग्रेण भिंध२ मुग्दरेण चूर्णय२ सर्वग्रहाणां आवेशय २ ॥

विधि–इस मंत्र को पूर्व युक्त से सिद्ध करें गाय के घी में गूगर नीम की पत्ती सांप की कांचली मिला कर मंत्र पढ़ बहुत सी धूप दें और मंत्र उड़द पर पढ़ पढ़ रोगी पर मारे तो भूत बकरे फिर नृसिंह के मंत्र से बाकों काढ़े ॥

तथा–ॐनमो आदेस गुरु को नारी जाया नार सिंह अंजनी जाया हनुमंत वाने जारी बीज भवंताबा तोड़ी गढ़लंक तेरी पाखरी कोन भरे नाहर सिंह बलवंत वन में फिरे अंकलड़ा भंवर खिलाये के खारा भाटी मर्दकी पीवे बारा बकरा खाय न धापे तोबू नाहर सिंह दौड़ि मसाणा जाय सात पांच ने मारि खाप सात पांच ने चरन खाय देखूं नाहरसिंह बीर तेरे मंत्र की शक्ति हाड़२ में सूं चाम २ में सूं नख २ में सूं रोम २ में सूं अमुकी के नौ नारी बहत्तर कोठा में सूं पेद का पकड़ आन हाजिर ना करे तो माता नाहरी का चूंखा दूध हरामकरे राजा रामचन्द्र की पीढ़ी फाट भंपड़े शब्द सांचा पिंड कांचा ॥

विधि–मंत्र सिद्ध कर काली मिरच सात बार मंत्रि

के खिलावे तो बकारे।

भूतादिके उतारिवा का मत्र–ॐनमो उंहां ह्रींहूं नमो भूत नायक समस्त भुकाभूतानिसाध्य २ठ्हे३॥

विधि–शनिवार से नित्य २१ दिन तक १४४ जाप करे दीपक आगे गूगर खेफूल पत्तासा चढ़ावे सिद्धि हो मोर पांख सूं माड़जे।

तथा–ॐनमो नारसिंह नारी का जाया याद किया सो जल्दी आया पांच पान का बीड़ा मध की धार चाल २ नाहर सिंह कहां लगाई राती बार देसूं केसर कूं मुर्गा की ताज कड़ो देसूं मंद की धार अरोधां आयो नहीं कहां लगाई एलीवार देखूं नाहर सिंह तो तेरा कीया अमुकी घट पिंड बांध मेरे हाथ दिया मारता का हाथ बांध बोलता की की जीभ बांध झांकता का नैन बांध हीया बूका बकड़ो बांध बोटी २ बांध पकड़ लटी पछाड़ मार मेरा पग तले लापछाड़ चढ़ता देसूं केसर कूकड़ो उतर ता देसूं मध की धार इतना दे जब उतर जो खेल जो धोरं धार हमारा उतारा उतर जो और का उतारा उतरे तो नाहरसिंह तू सही चिंडाल

शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।
विधि—मुर्गा का केस चना बराबर गूगर मध मिला के गोली बांध पूजन के समय आग पर धरे पतासा ५ पान का बीड़ा खोपरा लोंग इलायची सुपारी भोग धर दीपक आगे १०८ जाप करे ७ दिन में सिद्धि हो होली दिवाली ग्रहण में जाप किया करे।
भूतादिक के मारने का मंत्र—ॐनमो आदेश गुरु को हनुमंत बीर बजरंगी बज्र धार डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत जिन्द खईस को ठीक २ मार २ नहीं मारे तो निरंजन निराकार की दुहाई।
विधि—शनिवार से २१ दिन हनुमान जी का पूजन करे विधि युक्त नित्य १२१ मन्त्र जो सिद्ध हो फिर चौराहा की कांकरी अथवा उड़द को मंत्रि के रोगी पर मारे।
भूतादिक के कैद करने का मंत्र—बंध बध शिव बंध शिव बंध शिव।
विधि—उड़द पढ़कर रोगी पर मारे।
छोड़ने का मंत्र—या खालिसा या मुखल्लिस या खल्लास खाजेखिज अहतर लयास विधि युक्त।

डाकिनी शाकिनी के उतारवा का मंत्र-ॐ नमो हनुमान जी आया कोई कोई डाकिनी शाकिनी आन२ कुरु स्वाहा।
विधि-प्रथम मंत्र को सिद्धि करले फिर उलटी चाकी का पिसा सतनजा जोगी की माता का पिसा तिसका पुतला बनावे दूसरा पूतला रोगी की माता के लंहगा की लामन का बनावे उसे तिली के सवा पा तेल में भिगोकर ताकू में पिरोवे रोगी पर सात बार झाड़के जलावे सिर की ओर सों३ मंत्र पढ़के उड़द जलते पूतला पर मारता जाय सवा पा उड़द मंगा राखे फिर सतनजा के पूतला को थाली में खड़ा करे थाली में पाणी भरे ताके डाकिणी जाणे पाणी के बीच में रुकी हुई कढ़नस के उस जलते पूतला पर तेल पड़े तो डाकिनी की देहो दहै जल्दी जल्दी तेल की बंद पड़े तो डाकिनी हाजिर हो रोगी का रोग कढ़ जाय परन्तु जब ऐसा काम करे तब अपना प्रबंध डाकिनी की चोट से करले देह रक्षा का मंत्र अपने ऊपर दम करे।
मसान जगावा का मन्त्र-ॐ नमो आठ काठ

की लाकड़ी मंज बनी का बान मूवा मुर्दा बोलै नहीं तो माया महावीर की आन शब्द सांचा पिंड कांचा।

विधि—पीवा की दारु एक सेर चंबेली का फूल एक लोबान की धूप छाड़ छबीला कपूर कचरी इतर सुगंधि लेकर मसाण में जाय बैठे ताल की धारा दे मसाण के मुर्दे को देख ने धूप दीजे फूल बखेर जे दूर आकर मंत्र पढ़जे मंच की धार दीजे मसाण जागे हाहा कार मचै सिद्धि हो इस ही।

जंत्र तंत्र मन्त्र तीनों के दूर करिवा को मन्त्र उलटंत वेद पलटंत काया उतर आव बच्चा गुरु ने वेग सत्तनाम आदेस गुरु को।

विधि—चौराहा में पतासा धर शराब डाले मंत्र पढ़ के चला आवे आवश्यकता के समय चौराहा की ७ कांकरी २१ बार मंत्रि के ४ तो चारों दिशा में फेंके और ३ अपने पास रखे जिस की देह में करतव करना हो उस की देह में एक दो कांकरी इस मंत्र से मारे।

रोजी मिलै धन की वृद्धि होई का मंत्र—ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्वजन मोहनी सर्व कार्य करनी मम

त्रिकल संकट हरणी भय मनोरथ पूर्णीमम चिन्ता चूरणी ॐ नमो पद्मावती नमः स्वाहा।
विधि–त्रिकाल एक २ माला जपै तो धन की वृद्धि हो और २५ का एक मंत्र लिख के धूप दीप से पूजन कर के उसको सामने रख के मंत्र जपै तो शीघ्र ही काय सिद्धि हो रोजी मिले।
रोजी मिले धन बढ़े–ॐ नमो भगवती पद्म पद्मावती ॐ ह्वी ॐ श्री पूर्वाप दत्तिणाय पश्चिमाय उत्तराय आशा पूरय सर्वजन वश्यं कुरु २ स्वाहा।
विधि–प्रातः काल बात करने से पहिले १०८ बार मंत्र पढ़के चारों कोणों में दशा २ बार मंत्र पढ़ के फूंके तो चारों दिशा से लाभ हो।
ऋद्धि करन मन्त्र–ॐ पद्मावती पद्मनेत्रे पद्मासने लच्मी दायिनी बांछा भूत प्रेत निग्रहणी सर्वशत्रु संहारणी दुर्जन मोहनी ऋद्धि वृद्धि कुरु २ स्वाहा ॐ ह्रीं श्री पद्मावत्यैनमः।
विधि–गुलाल गोरोचन छार छबीला कपूर कचरी इनकी चर्ण बराबर गोलियां करे १०८ शनि की रात तथा रवि दिन लाल वस्त्र पहर लाल कोयली

पर लाल पुष्प चढ़ाये १०८ बार नित्य करे मंत्र के साथ गोली अग्नि पर धरे एक मास में लक्ष्मी प्रसन्न हो फिर नित्य प्रति २१ गोली मंत्रि के अग्नि पर चढ़ाय करे तो ऋद्धि सिद्ध हो सही।

मन्त्र लक्ष्मी—ॐ पद्मावती पद्म कुशी वज्र वज्रां कुशी प्रत्यक्ष भवंति भवंति।

विधि—अर्द्ध रात्रि को मृत्तिका का दीपक बार के जौ पर धरे मृत्तिका की माला से १०८ मंत्र जपै २१ दिन में दर्शन पावे।

मन्त्र करालिनी सर्व कार्य सिद्ध करनी ओं हूं करि कराल नीक्षं क्षां फट्।

विधि—एक पांव से खड़ा होकर १०८ बार मंत्र जप बकरी का मास भोग धर लाल फूल चढ़ावे छः मास में देवी सिद्धि हो जो बर मांगे सोदे और सर्वदा प्रसन्न रहै।

मन्त्र कामाख्या देवी—ओं क्लीं नमः। योन्हां देवीं ज्ञात्वा जापं समाचरेत् बर वस्त्री व्रता देवा चालियंत्रदशा।

कुवेर का मन्त्र धनदा—यक्षाय कुवराय वै श्रव-

णाय धन धान्याधिपतये धन धान्य समृद्धिं में देहि दापयस्वाहा ।

संकल्प-अस्यवर्णं रामाक्षर मंत्रस्यविश्रवा मुनिः वृहती छन्दः शिवनिधनोवरो देवता ममोपरि प्रसन्नार्थ जपे विनिः

न्यास-ॐयक्षाय अंगुष्टायभ्यांनमः कुवेराय तर्जनी भ्यांनमः जैश्र वणाय मध्यमाभ्यांनमः धन धान्याधि पतये अनामिका अभ्यांनमः धन धान्य समृद्धिं में कनिष्ठ का भ्यांनमः दोही दापय स्वाहा करतल कर पृष्टा भ्यांनमः ॥

षड़ग न्यास-यक्षाय हृदयाय नमः कुवेरायशिरसे नमः स्वाहा वैश्रवणायनमः शिखायै वषट्धन धान्याधिपतये कव चायनमः हुंधनधान्य समृद्धि में नेत्राय नमः वौषट् देहिदायम स्वाहा अस्त्राय नमाः फट् ।

ध्यान-मनुवाम विमान वरस्थितं गरुड़ रवतीननि धेमाव कं शिनशैया इत्यादि विभूषितं वर भव दां धजं नम हुनिर ।

अस्यपुरयरणा-लक्षमेकं तदशांशं जुहुया त्तिलै ।

मन्सा सिद्धि करन मंत्र-ओं ग्रां ग्रं स्वाहा ॥
विधि-इस मन्त्र को नित्यप्रति १ सहस्त्र बार जपै ब्रह्मचर्य से रहे हलका भोजन करे धन बढ़े रोजी मिलै सवा लक्ष प्रयोग तदनन्तर दशांश होमादि करे॥
व्यापार द्वारा धन लाभ का मन्त्र-ओं ह्रीं श्री क्रीं श्री क्रीं क्लीं श्री लक्ष्मी मम ग्रहे धन पूरय२ चिंताय दूरय२ स्वाहा।
विधि-प्रातः काल दंतधावन करके १०८ बार मंत्र जपै धन लाभ हो सत्य ३ ॥
उपद्रव नाशन मंत्र घंटा करिणी-ओं घंटा कारिणी महावीरी (देवदत) सर्व उपद्रव नाशन कुरु कुरु स्वाहा।
विधि-पूर्वमुख बैठ धूप दीप नैवेद्य कर्पूर से पूजन करे।३५०० बार मन्त्र का जाप करे फिर पश्चिम मुख हो के गूगर की एक सहस्त्र गोली मंत्र के अग्नि में डालें। इसी प्रकार ३दिन करें सर्वोपद्रव दूर हों ॥
अन्य मन्त्र-ओं आकर्षय।
विधि इस मन्त्र को अर्द्ध रात्रि के समय आकाश

के तले एकांत में खड़ा होके १२०० बार जपै स्त्री का ३ दिन में आकर्षण हो ॥
सहदेई कल्प—ॐनमो भगवती मातंगी सर्व व्रतश्वरी सर्व मन हरणी सर्व लोक वशी करणी सर्वसुख रंजनी महा माये लघु२ वश्यं कुरु२ स्वाहा ।
विधि—कृष्णाष्टमी का व्रत रखे सहदेई को न्यौंत१ को प्रभात जाय उखाड़ लावे ईशान दिशा में बैठ २३०बार मन्त्र पढ़के इसी प्रकार ६ रात्रि मन्त्र पढ़ै १४ तक सिद्ध हो फिर सहदेई का चून करके जिसके माथे पर नाखे वश्य हो अथवा पान में खवावे वा गोरोचन मिलाके तिलक कर जिसे देखे वश्य हो । वा चूरन में मैनसिल मिलाय नेत्र में आंजे जिस पर दृष्टि डाले वश्य में हो चूरन को सिर में घालके रण में जाय जय हो । ऋतु समय बंध्या स्त्री ने चूरन खवावे तो गर्भ रहे । बालक के माथ में बांधे तो अत्तीसार नाश हो यग्रह पीड़ा न हो सहदेई की जड़पल्ला में बांधे तो सर्व रोग मिटैं। जड़ मुख में रख जिस को बोले वश्य में हो ।
विद्या मंत्र—ॐह्रीं श्री अर्हंवद २ बार वादिनी

भगवती सरस्वती ऐं नमः स्वाविद्या देहि मम ह्रीं सरस्वती स्वाहाः ।
विधि–ग्रहण में १४४ बार मन्त्र जपे फिर २१ दिन में विधि युक्त त्रिकाल एक सौ आठ २ जाप करे और नित्य १ माला जपे तो दिन २ विद्या बढ़े ॥
पढ़ी हुई विद्या न भूले–ॐनमो भगवती सरस्वती परमेश्वरी वाग्वादिनी मम विद्या देहि भगवती हंस वाहिनी समारू का बुद्धि देहि प्राज्ञादेहि २ विद्यां देहि २ परमेश्वरी सरस्वती स्वाहाः ।
विधि–रविवार से २१ दिन १०८ बार पढ़े ब्रह्म चर्य से रहे एक बार भोजन करे तो जो पढ़े वो कंठ से भूले नहीं ।
अन्य मन्त्र–ॐनमोॐह्रीं श्रीं क्लीं वद २ वाग्वा दिनी बुद्धि वर्द्धभों ह्रीं नमः स्वाहाः ।
विधि–ग्रहण में जाप करके नित्य १ माला जपे तो विद्या बढ़े ॥
मन्त्र उच्छिष्ट गणपति–ॐग्लां श्रीं ह्रीं हुंहं हः उच्छिष्टाय स्वाहाः ।
न्यास–ॐ अंगुष्टा भ्यांनमः ओंतर्जनीभ्यां नमः ओं

ह्रींमध्यमाःभ्यांनमः ओं हैंकनिष्ट का भ्यांनमः ओं हु अनामिका भ्यांनमः ओंहः उच्छिष्टाय स्वाहाः करतल करपृष्ठाभ्यांनमः ओं ह्रां हूं दयायनमः ओं ह्रीं शिर से स्वाहा ओंह्रीं शिर बाये वषट् ओंहुं कवचा यहुं ओंहु ने त्वयाय वौषट् ओंही उच्छिष्टाय स्वाहा अस्त्राय फट् ।

विधि-तिथि वारोननक्षत्रं नोपवासो विधियते। नक्षत्रोम्दवं काष्टां क्रीयते ॥

विधि मुतभगा-अंगुष्ट प्रमाणा गणेश मूर्ती कृत्या एकांत स्थानो यस्त्रीय नामोच्चारणं अग्रे उपवेश्य मंत्रे जपित्वास्त्री आकृषण भवति मध्यस्थापिअष्टा विशति २८ बार जयेत राजा वश्य भवति प्रसन्न भवेत कृष्णाष्टमी गीतारम्यः१४ पर्यंत १०८ मंत्र जपित्वासिद्धि भवति । इति ॥

स्वप्न में प्रश्नोत्तर मिलने का मन्त्र-ॐनमो माणि भद्रा चेट काय सर्वार्थ सिद्धि कर जाग्रम स्वप्ने दर्शनाय कुरु २ स्वाहा ।

विधि-कनेर का रक्त पुष्पला १०८ मंत्रि के सिर हाने रख सोवे ६ या ७ दिन इसी प्रकार करे

होनहार हो सो स्वप्न में कह जाय ।

अन्य मन्त्र–ॐ स्वप्नावली किनी सिद्धि लोकनी स्वप्नेक कथत स्वभाव एक विंश्रति बार जपे सिद्धि।

तथा–ॐ नमो जायत्रि नेत्राय पिंग लाय महात्मने कमाय विष्णु मुख्याय स्वप्नाधिपतये नमः स्वप्ने कथयमेतथ्यं सर्वा कार्याय षोषतः क्रिया सिद्धिं सविधास्यामि त्वत्प्रसादात गणेश्वरे ।

विधि—एवं मत्रैः शिवप्रार्थ्यनिद्रा कुर्यात् निराकुलः स्वप्नं दृष्टे निशिप्रातर्गुरु वे विनिवेदयत् ।

चोरी काढ़िवा का मन्त्र—ओं नमो इन्द्र अग्नि मुख बंधु उसारा अग्नि मुख बंधु स्वाहा ।

विधि—जिन पर शुबा हो उनके नाम लिख २१ बार मन्त्र पढ़ २ नामो पर दम करे फिर अग्नि में नाखे चोर का नाम न जलेगा। फिर मन्त्र को प्रथम रविवार से २१ दिन तक १४४ बार नित्य पढ़ गूगर धूनी दे मिठाई चढ़ाय के सिद्ध कर लेवे ।

कटोरी चलावा का मन्त्र–ॐ मलि मन्त्र चलता चले सेत भयंकार चले पग नायक चले पिदर मादर चलै कोगा की शक्ति चलै जती

हनुमंत की शक्ति चलै क्यों बंधा चलै अरड़ती चलै मरड़ती चलै धोरती चलै की लाउ कीलती चलै गाड़रय उखलती चलै चलि २ हो भद्रनाम ऋषीश्वर तोस्यों मस्तक टूटे धरणी चुवे श्री महा-देव की आज्ञा फुरे फणिंद्र स्वाहाः।
विधि—अलिगांव को गिहली दीजे ऊपर कटोरी धरि जे उड़द और बांया पग कालो हीका छींटा दीजे ११८ मन्त्र जाप कर उड़दों को मंत्रि के कटोरी पर मारता जाये कटोरी चलै मनोर्थ सिद्धि हो। इति ॥
चोरी काढ़िवा के चावल—ओं नमो काल भैंरू खेचरा भैंरू ऊंचरा भैंरू आदि भैंरू जुगादि भैंरू थल भैंरू अवलावला सर्व जोता रण भैंरू एक गुगुल धूप धार भैंरू आयंत्रिपुरा देवी ऋद्धि सिद्धि लेती आई चोर का मुख सोखंत आई साह का मुख सोखंत आई देखूं भैंरू जी तेरी शक्ति०
विधि—प्रथम मन्त्र को सिद्धि करे फिर २७ बार चावल मन्त्रि के चबवावे।
कटोरी चलावा का मन्त्र—ॐ नमो चक्रेश्वरी

चक्र वेदीनी चक्र वेगेन शंख भ्रमय स्वाहाः ।
विधि–प्रथम १०००० वार मंत्र सिद्धार्थ जपे फिर चावल १०८ बार मन्त्र कटोरी पर मारे तो चलै ।
लड़किनी सासरा में रहै रूठ कर न जाय
ॐ नमो भोगराज भयंकर परिभूप उतइत धरइ जो २ दीखे मार करे तासो २ दीसें पाय परंता ॐ नमो ठः ठः स्वाहा ।
विधि—सांभर लोण की १०८ कांकरी मंत्रि के देतो सासरा में सुख सों रहे ।
कुश्ती जीतवा का मंत्र–ॐ नमो आदेश गुरु कों अंगा पहरूं भुजंगा पहरूं, पहरूं लोहासार घाते के हाथ तोड़ूं पैर तोड़ूं मैं हनुमंत बीर उठ २ नाहरसिंह बीर तूजा उठ सोला सो सिंगार मेरी पीठ लगै माटी हनुमंत बीर लजावे तोहि पान सुपारी नारियल अपनी पूजा लेहू आप नासा बल मोहि पर देहु मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो० ।
विधि–गेरू का चौका लगाय लुंगी का लंगोट बांध धूप दीप कर हनुमान् जी की पूजा कर मंगल वार से ४० दिन तक नित्य १०८ मंत्र जपै मंगल

वार को पान सुपारी खोपरा भोग धरा करे नित्य लाडू सिद्धि हो फिर कुश्ती करे जब हनुमान जी की दंडवत् करिके ७ बार मंत्र को अपने ऊपर दम कर कुश्ती लड़े तो बैरी को पछाड़े।

बैरी के जेर करिवा का मंत्र—ॐ नमो हनु-मंत बलवन्त माता अंजनी पुत्र हल हलंत आओ। चढ़ंत आओ गढ़ किल्ला तोरंत आओ लंका जाल वाल भस्म करि आओ ले। लांगू लंगूर ते लपटाय सुमिरते पट काओ चन्द्री चन्द्रावली भवानी मिल गावें मंगल चार जीते राम लक्ष्मण हनुमान जी आओ जी तुम आओ। सात पान का बीड़ा चावत मस्तक सिन्दूर चढ़ाओ आओ मन्दोदरी के सिंहासन डुलंता आओ यहां आओ हनुमान माया जागतें। नृसिंह माया आगे भैरू किलकिलाय ऊपर हनुमंत गाजे दुर्जन को डार दुष्ट को मार संहार राजा। हमारे सत्त गुरु हम सत्त गुरु के बालक मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—प्रथम मंत्र के सिद्धार्थ १०००० मंत्र जपै ४१ या २१ दिनों में ७ पान का बीड़ा ७ लड्डू मंगल को भोग धरे अन्य वार १ बीड़ा ७ बतासा

नित्य विधि युक्ति धूप दीप नैवेद्य से हनुमान जी का पूजन करे अन्त में सिंदूर को सान के चढ़ावे तो सिद्धि हो।

विधि १-बैरी की मूरत लिखे के छाती में नाम क सिर पर जूता मारे सेवे हंसै बावरा होवै।

विधि २-धरती में जहां तहां बीज लिख लिखे मंत्र पढ़के उस तो बैरी का सिर फूटै बुद्धि जाती रहै सत्य ३।

विधि ३—मोम का पूतला तसबीर के माफिक बनाके जहां २ बीज लिखा है पूतला में लिखे पूर्व को मुख कर बीज लिखे छाती पर बैरी का नाम लिखे। मुर्दे के हाड़ की कील छाती में ठोक पूतला कोम स्थन भूमि में गाढ़ मुर्दा के हाड़ की भस्मी से ढके तो बैरी बावला हो उठ भागे चलने से रुक जाय बीमार हो जब तक पूतला उखाड़ा न जाय हजारों आपत्ति बैरी के सिर पर रहें। उखड़ने पर

आपत्ति टरे नहीं तो मर जाय और इस बात पर ध्यान रखना चाहिये कि जो कुछ करे सो मन्त्र पढ़ कर करे लोहे की ४ कीला वैरी के घर की चारों दिशा में गाढ़े तो स्तम्भन होइ और जब पूतला पृथ्वी पर बनावे सो मोम का स्तंभन की कील गाढ़े तो खीर का भोजन हनुमान जी को भोग दे।

मन्त्र अन्नपूर्णा—ॐ नमो अन्नपूर्णा अन्न पूरे घृत पूरे गणेश देवता पाणी पूरे ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों देवता मेरी भक्ति गुरु की शक्ति गुरु गोरखनाथ की वाचा फुरै।

विधि—सिद्धार्थ एक लाख मन्त्र जपे फिर ब्राह्मण को भोजन करावे तब जो सामग्री होइ उसमें अछूती निकाल कर अन्नपूर्णा को भोग दे। और एक भाग कूवां में नारबके एक हाथ से जल का लोटा भर लावे फिर दीपक जलाके कोठा में अन्नपूर्णा और वरुण दोनों का पूजन करके एक माला मन्त्र की जप के ब्राह्मण भोजन करावे। गाल में घटि न आवे।

मन्त्र कार्त्त वीर्य—श्री गणेशाय नमः कार्त्तवीर्य खल द्वेषी कृतवीर्य सूतो बली सहस्त्र बाहुः शत्रु ओं

रक्त वासा धनुर्धरा ॥१॥ रक्त गंधो रक्त माल्यो राजा स्मर्त्तु र भी वृद्धः । द्वादशैतानि नामानि कार्त्तवीर्य स्यय: पठेत ॥२॥ अनष्ट द्रव्यतातस्य नष्टस्यपुनरायनः । संपदस्तस्य जायंते जनास्यस्य बसे सदा ॥३॥ इति कार्त्तवीर्य द्वादश नामानि ॥
विधि–जिसका धन चोरी डांड़ द्वारा नष्ट हुआ हो सो कार्त्तवीर्य के इन बारह नामो को २१ बार नित्य पढ़े तो गया धन आजाय और पढ़ने वाले का माल नष्ट न हो । प्रतिदिन धन की वृद्धि हो और लोग उसके वश हो जाय । इसलिये इन नामों को नित्य २१ बार पढ़ना चाहिये ॥
रुद्र मंत्र–ॐ नमो भगवते रुद्रायहुं फट् स्वाहा ।
विधि—धतूरा घृत कसूम तीनों को मिलाकर १० सहस्त्र होम करे । रुद्र प्रसन्न हो बर दे तो १ लक्ष होम करे निःसन्देह वर मिलै सत्य ३ ॥
मंत्र भगवती—ॐ नमो भगवती को रक्त पींठ नमः इस मन्त्र को रक्त वस्त्र पर एक सहस्त्र वार जपै दिन सात मध्ये हृदयस्थ लगतो भवंति ।
मंत्र कर्ण पिशाचिनी—ओं हं हन २ स्वाहा

प्रगट हो कि सब मंत्र महादेव जी ने कील दिये हैं जब मंत्र का उत्कीलन किया जाय तब मंत्र सिद्धि हो इस लिए उसकी विधि भी लिखी जाती है जो लोग इसके ऊपर अमल करेंगे उनका मंत्र सिद्धि होगा। इस मंत्र को जपै तो कर्ण पिशाचिनी सिद्धि होइ।

मंत्र उत्कीलन की विधि भूत डामर से लिखी जाती है पहली विधि—जिस मंत्र को जपै उसे भोजपत्र अष्ट गन्ध से १०८ वार धूप दीप नैवेद्य सौं पूजन करके ब्रह्म भोज करावे फिर ताम्रपत्र में पानी भरके भोजपत्र के मन्त्र को डालता जाय अथवा नदी की धारा में डाले तो उत्कीलन हो जाय।

अष्ट गंध की वस्तु-गोरोचन १, कपूर २, हाथी का मद ३, अगर ४, कस्तूरी ५, केशर ६, रक्त चंदन ७, श्वेत चंदन ८, इति।

दूसरी विधि—इष्टदेव की मृतिका की प्रतिमा बनावे पुरुषाकर उसकी प्राण प्रतिष्ठा करे फिर भोज पत्र पर १ मन्त्र शुभ तिथि शुभ घड़ी में लिखकर

प्रतिमा की छाती में लगावे उसका १ महीना तक धूप दीप नैवेद्य से पूजन कर। फिर गुरु से आज्ञा ले मन्त्र को जप प्रतिमा को नदी में नहावे ब्रह्म भोज करावे फिर मंत्र का जाप करे सिद्ध होवे।

तीसरी विधि १० संस्कार–संस्कार जन्म १ जीवन २ ताड़न ३ बोधन ४ अव शेष ५ विमलीकरण ६ आप्यावन ७ तर्पण ८ दीपन ९ और मोपन १०।

प्रथम संस्कार–मात्रा वर्णों का पुट लगाय मंत्र को जपै १०८ उदाहरण मन्त्र। ओं नमो नारायणाय और १६ स्वरों में ८ जोड़ हैं अ आ इ ई से अं अः तक एक २ जोड़ का पुट इस प्रकार लगावे ओं नमो नारायणाय आं इसी प्रकार आठों जोड़ का पुट लगाकर पढ़े।

दूसरा संस्कार—मंत्र में प्रवाण का पुट देकर १०८ बार जपे।

तीसरा संस्कार–मंत्रके अक्षर भोजपत्र पर लिखकर चंदन घी में कपूर मेल कर पानी तैयार करे। फूल लेकर वायु से जल को मंत्र पर १०८ बार छिड़के।

चौथा संस्कार–ताम्र पत्र पर मन्त्र को लिखे मंत्र

के जितने अक्षर हों उतने कनेर के पुष्प लेके हवन करे इस मंत्र से ओं फट् अर्थात् १०८ बार इस मंत्र से फूलों को मंत्र पर लगावे बोंधन हो जाय।
पांचवाँ संस्कार–मंत्र के जितने अक्षर हों उतने पीपल के पत्ते ले ताम्र पत्र पर मंत्र लिख कर सब पत्तों को इकट्ठा कर उनसे जल ले मूल मंत्र पर चढ़ावे।
छटा संस्कार–मन ही मन में मंत्र का ध्यान कर १०८ बार हुंफट् कहे।
सातवां संस्कार–प्रणव और आकाश बीज और अग्नि बीज तीनों बीजों पर गर्म जल को कुशा से प्रत्येक अक्षर पर जो तामा पत्र पर हैं चढ़ावे।
आठवाँ संस्कार–ताम्र पत्र पर मंत्र लिख कर १०८ बार मुल मंत्र से तर्पण करे।
नवाँ संस्कार–प्रणव माया बीज लक्ष्मी बीज तीनों का संपुट मंत्र से लगाकर १०८ बार जपे।
दसवाँ संस्कार गोपन–मंत्र को इस प्रकार जपै जो कोई न जाने यही गोपन है।
इसी प्रकार १०८ बार करे तो मन्त्र का चमत्कार

बहुत शीघ्र दृष्टि आवे।

मन्त्र बटुक–ॐ ह्रीं बटुकाय अष्टद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं स्वाहा।

न्यासः–ओं ह्रीं अगुष्टाभ्या नमः ओं ह्रीं तर्जनी भ्यां स्वाहा। ओंह्रीं मध्यमाभियां वषट् ओं ह्रैं अनामिकाभ्यां वौषट् ओं ह्रीं कनिष्ट काभ्यां हुम ओं ह्रः करतल करप्ट ष्टाभ्यां फाट् ओं ह्रां हृदयाय नमः ओं ह्रीं शिरसै स्वाहा ओं ह्रीं कब चाय हुं ओं ह्रू नेत्र त्रायाय पौषट् ओं ह्रों कव चाय हुं ओं हः स्त्रायफट।

ध्यान–कर कलित कपालः कुंडली दंड पाणिस्तरुणतिमिरनी लो व्याल यज्ञोपवीतः कृत समय सपर्य्या विघ्नविच्छेद हेतु जयति बटुक नाथः सिद्धिदः साध का नाम।

विधि–सिंदूर का चौका देकर उसमें त्रिकोण यंत्र बनावे, यंत्र में ह्रीं के ऊपर दीपक धरे संकल्प न्यास ध्यान करके आवह्नादि शोड़ष प्रकार से पूजन करे यंत्र के और पास तेल के पके उड़द के बड़े रख उनके पास दही उसके पास गुड़ धरे और थोड़ी

सामग्री अछूती अलग रखे भोग में बड़े दही और

गुड़ मिलाके रखे बटुकं के भोग ५ हैं। बड़े १ दही २, गुड़ ३, शराब ४, छोटी मछली अग्नि की भुनी हुई नित्य प्रति १ सहस्त्र मंत्र जप १०० आहुति देकर घृत शहद की ११ दिन पहिले प्रयोग में कार्य सिद्धि हो, दूसरे या तीसरे प्रयोग में कैसा ही कठिन मनोरथ हो निःसन्देह पूरा हो, इति बटुक मंत्र विधि।

मन्त्र सरस्वती–ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ओं सरस्वत्यै नमः विधि–सिद्धार्थ दस सहस्त्र मंत्र जपके हवन करे फिर गाय का घृत १ सेर बकरी के ४ सेर दूध में डाल के एक एक टक सहजना की जड़ सैंधा नमक धावद्य के फूल और लोध उसमें मिलाकर नर्म आग पर चढ़ावे दूध और दवा जल जाय तब घृत को

उतार धरे मंत्र से विधि पूर्वक सेवन करे तो गूंगा पन गिनगिना पन, अकाई खाय तो जाते रहैं। और बुद्धि इतनी बढ़े जो एक सहस्त्र श्लोक नित्य कंठ याद करे कदाचित घृत न बना सके तो माल कंगनी का तेल खाय। इति:

जुबाँबन्दी को सर्वोपार सिद्ध मंत्र

बंगलामुखी संकल्प–ॐ अस्य श्री बंगला मुखी महामाया मंत्र स्यनारद ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्री बंगलामुखी देबी लंबी जंही शक्ति कीलकं भाटि-तिमम शत्रूणानाशार्थे जपे निवियोयः।

अथन्यास–ओं ल्हां अंगुष्ठाभ्यानमः ओं हीं तर्ज-नीभ्यांनमः वौषट् ओं ल्हें कनिष्ट का भ्यांनमः ओं हः करतल करपृष्टाभ्यां फट ओं ल्हाह दयाय नमः ओं ल्हीं शिर से स्वाहा। ओं ल्हूं शिखायै वषट् ओं ल्हें कच चायहुं ओंल्ही नेव वयाय वौषट ओंल्हा अस्त्राय फट।

अथध्यानम–वादी मूकतिरंकतिक्षितिपतिर्वैश्वानरः शीततिक्रोधी शान्यति दुर्ज्जनः स्वजनतिक्षिप्रानुगः खंजति गर्वी खर्वतिसर्व विज्जड़यतित्वन् मंत्र नायंत्रिते

श्रीनित्ये बंगला मुखी प्रांतदिनंकल्याणितुभ्यंनमः ।
मन्त्री—ओं ह्रीं बंगला मुखी सर्वदुष्टानांवाचां मुखंपदंस्तंमय जिव्हां की लय बुद्धि विनाशय ह्रीं ओं स्वाहा ।
विधि—यह मंत्र बैरी के चुप करने और उसकी बुद्धि बिगाड़ने में और चलते बैरी को रोक रखने में सर्वोपर है और जो हाकिम या अफसर गाली देकर बोलें, उनके मुख बन्द करने को इक्का है। केवल मंत्र को ७ बार पढ़ कर हाकिम या बैरी की तरफ फूंक देना चाहिये। परन्तु प्रथम मंत्र को सिद्ध कर लेना चाहिये। ४१ दिन में सवा लक्ष मंत्र जपै, मंत्र का पूजन आवाहनादि षोड़श प्रकार से करे और हल्दी का चौका लगाकर पीले पुष्प चढ़ावे केशर से पूजन कर पीले अक्षर चढ़ावे। पीले लाडू का भोग धरे पीताम्बर पहन कर पीला आसन बिछाकर उस पर बैठ कर दीपक घृत से भर एक थाली में हल्दी सट् कर कोण यंत्र बनावे, मध्य में ह्रीं लिखकर छहों कोणों में ओं लिखे उसका पूजन करे सबा लक्ष का एक ही प्रयोग न हो सके

तो ३६ दिनों में ३६ हजार मंत्र जप ददांश होम तर्पण ब्राह्मण भोजन करावे तो मन्त्र अपना चमत्कार दिखावे परन्तु पूरा प्रयोग सवा लक्ष का है। मंत्र बड़ा चमत्कारी है और परीक्षण है। सत्य ३।

षट कोण यंत्र
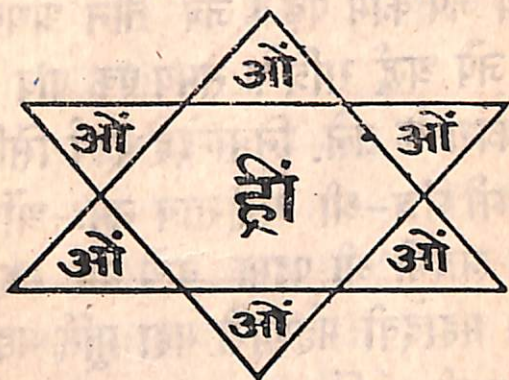
दूसरा यंत्र अष्टदल है, बहुधा पंडितों से मिलता है और उसके पूजन की विधि भी पंडित बता सकता है। जब इस मंत्र का पूजन किया जाय तो इस यंत्र पर दीपक धरा जाय जो कि इस यंत्र का पूजन सुगम है। और सब कर सकता है। इसलिये यही लिखा गया है।

मंत्र ज्वालमुखी—श्री गणेशाय नमः ओं ह्रीं श्री

क्लीं सिंहेश्वरी ज्वालामुखी ज्रंभनी स्ंथभिनी मोहनी वशीकरणी पर मन शोभिनी सर्व शत्रु निवारणी ग्रों ग्रां क्रों हीं चाहि २ अत्तो भय २ सर्व जनं अमुकं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।
विधि—प्रथम सिद्धार्थ २५०० मन्त्र जप एक सहस्त्र आहुति दे दो ब्राह्मणों को भोजन करावे फिर नित्य १०८ मंत्र जपै काम पड़ै। जब तीन अथवा सात दिन मंत्र जपै अर्द्ध रात्रि के समय एक पांव से खड़ा होके आकाश के तले. निःसन्देह कार्य सिद्धि हो।
महालक्ष्मी मंत्र—श्री गणेशाय नमः ओं हीं श्री क्लीं महा लक्ष्मी श्री पदमा वत्यै नमः महालक्ष्मी महाकाली महादेवी महेश्वरी महा मूर्ति महा माया महा धर्मेश्वरी आहिं १ मुक्ता माला धरा माया महामेधा महोदरी महा जननी जगन्माता महा मुद्योतिनी अहिं।२।
विधि—एष षोडष नामानि स्नात्वाशुचिर्ज पेन्नरः लाभंधनोयशो पुत्रं महालक्ष्म्यै नमोस्तुतेः इति महा लक्ष्मी स्तोत्र सं०।
सिद्ध मंत्र महालक्ष्मी—श्री शुक्ले महा शुक्ले

कमल दल निवासे श्री महालक्ष्मी नमो नमः लक्ष्मी माई सत्त की सवाई आओ चेतो करो भलाई ना करो तो सात समुद्रों की दुहाई ऋद्धि सिद्धि खगे तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई।
विधि-दुकानदार दुकान खोले तब महादेव के थड़े अर्थात दुकान की गद्दी पर बैठके इस मंत्र की प्रथम एक माला जपले फिर लैन दैन करै तो लाभ हो. धन की वृद्धि हो।

कर्ज उतारिवा का सिद्धि स्तोत्र मंत्र

संकल्प—ओं अस्य श्री मंगल स्तोत्र मत्रस्य विरुपाक्षऋषि। रनुष्टुप छन्दः ऋण हर्ता स्कन्दो देवता धन प्रदो मंगलाधि देवतामं बीजं गंशक्ति लं कीलकं ममा भीष्ट सिद्धयर्थें जपेविनी योगः।
ध्यान-रक्त माल्यांबर धरो शक्ति शूल गदाधरः चतुर्भुजो वृष गमो वर दश्च धरा सुतः।१। देहोहि भगवान् भौमः काल कान्त हर प्रभो त्वयिसर्वं मिदं प्रोक्तं त्रैलोक्य सचराचरः।
मंत्र-ओं क्रीं क्रीं क्रांस मंगलाय नमः नमामि मंगलो भूमिपुत्रश्च ऋण हर्ता धन प्रदः स्थिरासनो

महा काय सर्व कर्मा वरोधकः लोहितो लोहि ताक्ष-श्च सामगाना कृपा करः धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः अंगार को यमश्चैव सर्व रोगा-पहारकः वृष्टि कर्तापहर्ताच सर्व काम फलप्रदः इति एक विंशति मंगल नामानि।

विधि–ताम्र पत्र पर त्रिकोण यंत्र मंगल का लिख बनवा के लाल चन्दन लाल फूल कनेर से यंत्र का पूजन करे फिर २१ नामो को २१ बार जपै प्रत्येक नाम पर इस प्रकार मंत्र का संपुट लगावेः–
ओं क्रां क्रीं क्रौंसः मंगलाय नम ओं क्रां क्रीं क्रौंसः।
जुदे जुदे २१ नाम। मंगलाय १ भूमि पुत्राय २ ऋण हर्त्ताय ३ धन प्रदान ४ स्थिर रास नाय ५ महा कायाय ६ सर्व कर्मा वरोध काय ७ लोहिताय ८ लोहिताक्षाय ९ साम गानां कृपा कराय १० धरात्मजाय ११ कुजाय १२ भोमाय १३ भूतिदाय १४ भूमिनन्दनाय १५ अंगार काय १६ यमाय १७ सर्व रोगाय हार काय १८ वृष्टि कराय १९ तापहर्त्ताय २० सर्व काम फल प्रदाय २१ इन नामों को अंत में नमः लगाकर बीज मंत्र को आदि अंत

में लगाके २१ नामों को २१ बार जपै मंत्र आपके पीछे खैर की लकड़ी से बाईं ओर ३ लकीर खींच कर इस मंत्र को दुख दुर्भाग्य नाशाय धन सन्तान हे तवे कुतरे खात्रय बामे वाम पाद तले नुतः पढ़के बाएं पांव से मिटा दे और नामों जाप के बाद एक माला गायत्री की जपै ओं अंगार काय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात् फिर रेखा मिटाने के पीछे यह ध्यान पढ़के हाथ जोड़े ध्यान अस्टेज मरुणावणी रक्त माल्या वरांगं क नक २ माला ललित कमभ्यांविभ्रतं शक्ति शूले भजति धरणि सूनूं मंग लं मंगला नां फिर अर्घ देकर पूजा समाप्ति करे।

अर्घ मंत्र–भूमि पुत्र महातेज स्तादोभ्दवपि नाकिनः धनार्थीत्वां प्रयत्नेस्मिन ग्रहाणार्धनमो स्तुते इति मंगल पूजा विधि समाप्तम् शुभम्।

मुसलमानी मंत्र प्रथम ६ कुफल का वृताँत–

जो कोई इन छः कुफलों को कागज पर लिखकर हाथ में बांधे, भूत, प्रेत, जिन्न, शैतान, सांप, बिच्छू, बावरे कूकर का विष मसाणादि दोष का

मत्र न हो कष्टित स्त्री को मिठाई पर ७ बार पढ़
कर दे तो शीघ्र ही खल्लास हो, किसी का पुत्र या
सेवक या बांदी भाग जाय तो ७ कांकर पर ७ बार
छहों कुफल पढ़के अग्नि में डारे तो उसी समय
फिर कर घर चला आवे, और किसी का घोड़ा ऊंट
बैल आदि जाता रहा हो तो पानी पर ७ बार
पढ़के नदी अथवा कुआं में डाले तो ५ दिन के
भीतर गई हुई वस्तु आ जावे, किसी को मिरगी
आती हो या बावला हो गया हो तो ७ बार उसके
कान में उच्च शब्द से सुनावे अच्छा हो, और जो
कोई पढ़कर भूल जावे उसको धोकर ७ दिन
पिलावे तो फिर नहीं भूले, पढ़े सो कंठ याद हो।
इतिः।

पहला कुफल–बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मि-
ल्लाहिस्समीईल बसीरिल्लजी लैसा कमिस्लेही शई-
इन हुवा बेकुल्ले शईइन हकीम बिरहमतेका या
अरहमर्राहिमीन, सल्लल्ला हो अला मुहम्मदिन व
अला आलेही व अस्हाबेही अजमईन।

दूसरा कुफल–बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मि-

ल्लाहिलखालेकिल अजीमिल्लजी लैसा कमिस्लेही शईइन व हुवल फत्ताहुल अलीम बिरहमतेका या अरहमरीहिमीन।
तीसरा कुफल—बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिस्समीइल्लजी लैसा कमिस्लेही शईइन हुवल गनी इलकदीरो बिरहमतेका या अरहमर्राहिमीन।
चौथा कुफल-बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिस्समीइल अलीमिल्लजी लैसा कमिस्लेही शईइन व हुवल अजीजिल करीम बिरहमतेकाया अरहमरीहिमीन।
पाँचवाँ कुफल—बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिस्समीइल अलीमिल्लजी लैसा कमिस्लेही शईइन व हुवल अलीमिल खबीर बिरहमतेका या अरहमरीहिमीन।
छठा कुफल—बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिल अजाजिर्रहीमिल्लजी लैसा कमिस्लेही शईइन व हुवल अजीजुल गफूर वल्लाहो खैरुन हाफेजाव हुवा अरहमरीहिमीन।
फारसी में २८ अक्षर हैं—इनके सिद्ध करने से सारे मनोरथ सिद्ध होते हैं। जो मनुष्य इनको

सिद्ध करना चाहें। प्रथम ४१ दिन तक सब अक्षरों को नित्य प्रति एक सहस्त्र बार पढ़े और यंत्र को सामने सफेद् कपड़े पर रख दीपक धर कर लोबान अग्नि पर खेवे। यंत्र पर सुगंधित पुष्प इत्र मिठाई चढ़ाके पढ़ने को आरम्भ करे और यंत्र पर दृष्टि रख एक बार कहे, बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम फिर ११ दरुद पढ़े।

दरुद—अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व अला आलेही मुहम्मदिन व बारिक व सल्लम।

फिर इन अक्षरों को हजार बार पढ़ें :—अलिफ बे ते से जीम हे खे दाल जाल रे जे सीन शीन स्वाद द्वाद तोय जोय एन गैन फे काफ़ काफ लाम मीम नून वाव हे ये।

इन अक्षरों को पढ़ ११ बार ऊपर लिखी दरुद पढ़े फिर एक बार यह अजमत पढ़े :—बिस्मिल्लाहिर्रह-मानिर्रहीम अल्लाहुम्मा इन्नी असअलीका बिहक्क इस्माईकल व सिफातिकल उलया या रज्जाको या समीओ अनतकदोहाजतो अकसमतो अलैयकुम या अय्योहल मलायकतिल मवक्किलत अल्हाजिल

हुरु फ़ित्तामाति ताहिरात या दरदाईलो या किका-ईलो त्रिहक्के सईयदि कुमूत्रा अमीनिकुम अल अजीमत नहायू सो मंग यूसोइन्नमा अमरूह इजा

७८६

८	१	६
२००२	१९९४	१९९४
३	५	७
१९९६	१९९८	२००१
४	९	२
१९९७	२००३	१९९५

आरादा शैयन अनयकू लोलहू कुनन यफ कुनफ सुबहान ल्लजी बे यद्दहिन कुतो कुल्लश अइन अखै है तुर्जऊन ४१ दिन उपरान्त २८ अत्तरों को नित्य प्रति २८ बार पढ़ लिया करे आदि अन्त में पांच २ बार दरूद पढ़ा करे और जब किसी कार्य प्रीति या बैर आदि का प्रयोग किया चाहे तो यन्त्र लिख के उसके तले अपना मनोर्थ लिखे फिर बत्ती बनाके दीपक में जलाये तो ७ दिन में सिद्ध हो

जो मनुष्य इन सब अक्षरों को जकात दिया चाहे तो प्रथम अलिफ को इस प्रकार अस्सलाम अलैकुम या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्ला हो पढ़े नौ चन्दी जुमेरात को ११ बार निसाब को १००१ बार जकात अर्थात् इष्ट की सिद्धि को ३०१ बार असर अर्थात् होम को २५० बार निकूल अर्थात् तपस्या को १०१ बार दौरे गोल अर्थात् मार्जन को ५२ कर बस ब्रह्म मोज को १११८ बार पढ़े और अंत में ग्यारह २ बार दरूद पढ़े फिर कार्य की सिद्धि को बुद्ध से मंगल तक नित्य १०१ बार और प्रति दिन ४१ बार निसाब को ५० बार जवात को २५ बार और असर को १३ बार फल को १४ बार बज्ल को सम्पूर्ण १४५ बार पढ़े और १०१ मतलब को पढ़े और उचित दो यह है कि इन २८ अक्षरों में से प्रत्येक को ४४४४ बार एक २ दिन पढ़े ऐसे २८ दिन में अमलया प्रयोग को पूरा करे और इस बात भी ध्यान रक्खे कि प्रत्येक अक्षर के एक मवक्किल और एक नाम खुदा का मिलाकर ३ रीति से पढ़ते हैं। जैसे अक्षर अलिफ

का मवक्किल इस्राफील और नाम खुदा अलिफ पर अल्लाह है इनको मिलाकर नीचे लिखी ३ रीतियों में से जिसमें चित्त लगे उसको पढ़े रीति यह हैं।

पहली रीति–अलिफ या अल्लाह या इस्राफील।

दूसरी रीति–या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्ला हो।

तीसरी रीति–या सलाम अलैकुम या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्ला हो। २८ दिन पीछे सब अक्षरों को नित्य प्रति २८ बार या ३ बार या १ बार पढ़ लिया करे कभी नागा न हो तो अमल कासर बना रहे।

न्यारे २ अक्षरों के गुण और जाप और विधि का वृत्तान्त

अलिफ के पढ़ने की विधि–जो मनुष्य धन की वृद्धि चाहे सो सूर्योदय पहिले एक बार पूरी बिस्मिल्लाह पढ़के ११ बार दरूद पढ़े १४१ बार निसाब आदि को इस प्रकार पढ़े।

या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्ला हो।

फिर एक हजार बार या अलिफ पढ़ै। परन्तु हर सैकड़े के बाद १० बार पढ़ै आजिबो या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्ला होको ११ बार पढ़ै अस्सलाम अलैकुम या इस्राफील बहक्क या अलिफि या अवल्ला हो बिस्मिल्लाह अलाखैर खिल कही मुहब्म दिन व आल ही अजमईल ॥

इसी प्रकार हजार बार नित्य पढ़ै तो थोड़े ही दिन में धन की वृद्धि हो और इस यंत्र का पूजन करे पढ़ने के समय यंत्र पर अपनी दृष्टि राखे या इस्रा-

या अल्लाह　या अल्लाह　या अल्लाह

या जिब्राईल	६ २७	१ ५	८ ३४	या इस्राफ़ील
या जिब्राईल	७ ३६	४ २२	३ १४	या इस्राफ़ील
या जिब्राईल	२ १०	९ ३६	७ २७	या इस्राफील

या अलीफ　या अलीफ　या अलीफ

फील बहक्क या अलिफ या अल्ला हो मुझे धन

और दौलत दे या बुद्दूह ।
विधि–१००० अलिफ इस प्रकार (१) लिखके गोली बांध दर्या में बहावे कार्य सिद्ध हो ।

बेके पढ़ने की विधि

मंत्र–आजिबो या जिब्राईल बहक्क या बासितो ।
विधि—सूर्योदय पहले एक यंत्र लिखनाभि समान जल में ३३३३ बार मंत्र पढ़े तो ७२ दिन में मंत्र सिद्ध हो रोजी गैब से प्राप्ति हो ७२ दिन में ब्रह्म-चर्य से रहे पृथ्वी में सोवे जल से निकल स्वच्छ स्थान में जल ।

यंत्र :—

७८६

१८	४८	६
१२	२४	३६
४२		३०

घट आगे यंत्र को सफेद वस्त्र पर रख दीपक लोबान खेवे और सुगंधि के पुष्प इस मिठाई यंत्र पर चढ़ा के ७००० केवल या वासितो पढ़े तो ७२ दिन

बाद् गैय से ७२ टके चलन बाजार नित्य मिलें यंत्र के आदि अन्त में ग्यारह २दरूद पढ़े और आज के यंत्र को दूसरे दिन आटे में गोली बनाय बूरा में खाय दरिया में बहावे।

तेके पढ़ने की विधि—या आईल बहक्क या ते या तव्वावो ॥ बड़ाई मिलवे को नित्य पढ़े।

७८६

८	११	३८९	१
३८८	२	७	१२
३	३९१	९	६
१०	५	४	३९०

तेके पढ़ने की विधि—या मीकाईल बहक्क या से या साबितो। इस मन्त्र को नित्य १०३ बार पढ़े तो किसी का मुहताज न हो।

जीमके पढ़ने की विधि—या किलकाईल बहक्क या जीम या जव्वादी। इस मंत्र को ७ रात्रि तक नित्य तीन हजार बार पढ़े तो पैगम्बर साहब को स्वप्न में देखे केवल १ सहस्त्र कांसी की थाली

पर लिखकर मीठे जल सों धोके नामर्द पुरुष को पिलावे तो उसका कामदेव जाग उठे।
हेके लिखने की विधि—या तनका फील बहक्क या हे याहमी दो। इस मंत्र को ६२ बार नित्य पढ़े तो बैरी जाता रहे।
खेके लिखने की विधि—या महकाईल बहक्क या खे याख लिको सोने के समय आकाश के तले खड़ा होकर अर्द्ध रात्रि के समय १००० हजार बार पढ़े और गये हुए मनुष्य की तरफ फूक मारे तो चलती आवे और ६०० खे लिख के तकिया तले रख सोवे तो गये हुए मनुष्य को स्वप्न में देखे सब हाल मालूम करे अन्त में (या खलीरो) बढ़ाले तो अधिक हाल मालूम हो।
दाल का मंत्र—या दरदाईल बहक्क या दाल या दैयानो। सूर्योदय पहले एक सहस्र बार मंत्र पढ़े तो रोजी मिले धन की बृद्धि हो और उसी समय ७० बार पढ़के बैरी के घर की ओर फूंक दे तो बेग खराब हो।
जाल का मंत्र—या जुहराईल बहक्क या लाल

या जुल जलाल बलइक्राम। हाकिम की मिहर्बानी या धन की वृद्धि को प्रातःकाल ११०० बार पढ़ै और ७०० बार मिठाई पर दम करके जिसको खिलावे तो वश हो।

रे का मंत्र–या असवा कील बहक्क या रे या रहीम।

विधि–पृथ्वी का धन प्राप्त होने को प्रतिदिन प्रातःकाल एक सहस्त्र बार पढ़ा करे और श्वेत मुर्ग के कान में ८०० बार (यारे) इस प्रकार कहे और छोड़ दे जहां धन गढ़ा हों चौंच मारे और ६०० रे मृत्तिका की कोरी रकाबी में लिखकर उन पर लौण बिछा कर रख दे जिसमें अक्षर दीखे नहीं फिर सिरहाने धर कर सो जाय तो स्वप्न में धन की ओर दृष्टि आवे अथवा ८०० के कागज पर लिखके उस कागज को अपने कान में रखै तो एक घड़ी उपरोत काढ़ के कांसी की थाली या कलई दार रकाबी में रख कर ऊपर लौण बिछावे जिससे अक्षर ढ़क जायं फिर उसको अपने सिर के तले रखकर ८०० बार मंत्र पढ़कर सो जाय तो स्वप्न

में भरा हुआ धन दृष्टि आवे।
जे के लिखने का मंत्र—या सरफाईल बहक्क या जे या जाकियों।
विधि—बैरी का भय दूर करने को ५०० बार पढ़ा करे।
शीन का मन्त्र—या हमरा कील बहक्क या सीन समीओ।
विधि—दोपहर के दो बजे पर पढ़ा करे तो अनुभव हो।
शीन का मन्त्र—या इजराईल बहक्क या शीन या शहीदो।
विधि—बैरी की जीभ बन्द करिबे को ४० कागज के टुकड़ों पर ४० शीन लिखकर ४० रोटी की तह में रखके पकावे एक २ रोटी कूकरा को खिलावें तो बैरी का मुख बन्द हो और ३०० बार मंत्र पढ़के सो रहै तो गर्भवती स्त्री के पेट का हाल मालूम हो जाय कि बेटा है या बेटी।
स्वाद का मन्त्र—या अजमाईल बहक्क या स्वाद या समदो।

विधि–८०० बार नित्य पढ़ै पानी का मटका आगे रखे उस पर दृष्टि रखे ४० दिन में बैरी मित्र हो जाय और मारग चलता ५०० बार पढ़े तो हार न ब्यापे।

ज्वाद का मन्त्र–या इतराइल बहक्क या ज्वाद या जारों।

विधि–नित्य एक सहस्त्र बार पढ़े तो दिल की सुस्ती जाती रहै और हजार बार बैरी पर दम करै तो उसकी जुबां बंद हो।

तोय का मन्त्र–या इस्माईल बहक्क या तोय या ताहिरो।

विधि–किसी मंत्र के सिद्ध करने को १ तोय लिखके गोली बांध दर्या में बहावे और उन पर ७०० बार दम करे तो ७ दिन में कार्य सिद्धि हो और बसीकरन को ७०० लिखके उनके तले लिखे या इस्माईल अमुका को अमुका के वश्य करो बहक्क या तोय या सहिरो फिर उसका फलीता बनाय सुगंधि के तेल में जलावे और इत्र पुष्प दीपक आगे रख लोबान खेवे ऐसे १ दिन करे तो

वह मनुष्य या स्त्री वश्य हो परन्तु दीपक का मुख माशूक के घर की ओर रखे।

जोय का मन्त्र—या लौजाईलं बहक्क या जोय या जाहिरो।

विधि--वैरा का भय हो तो प्रातःकाल ४० बार नित्य पढ़े १ दिन में भय जाता रहै।

एन का मन्त्र-या लौमाईल बहक्क या ऐन् या अजीमो।

विधि-७ एन कस्तूरी केशरा से लिखके उन पर ७० बार मंत्र फूंक जिसे मिठाई में खिलावे या पानी में घोल कर पिलावे तो वो आज्ञाकारी हो जावें।

गैन का मन्त्र-या लौखाईल बहक्क या गैन या गुफ़ूरो।

विधि-७० गहुवा पर लिख उन पर १२८६ बार मंत्र दम करे बैरी के घर में गाढ़े तो बैरी का घर गिर पड़े और बैरी का नाम मिटै।

फे का मंत्र-या सरहमा कील बहक्क या फे या फत्ता हो।

विधि—एक सहस्त्र लिख उसके तले जिसको वश किया चाहे उसका और उसकी मां का नाम और अपना और अपनी मां का नाम लिखे इसी प्रकार या सरहना कील अमुका अमुकी का बेटा मुझ अमुका अमुकी के बेटे के वश हो बहक्क या फे या फत्ता हो फिर उस काफलीता बनाके जलावे इस पुष्प की मिठाई चढ़ावे १०८ बार मंत्र को पढ़े इस प्रकार करे तो हजार कोस से आकर हाजिर हो और मंगलवार को एक सांस में ८० फे मनुष्य की खोपरी पर लिखके बैरी के घर की नीव में गाढ़े तो उस घर में नित नई आपत्ति बनी रहै।

काफ का मत्र—या इतराईल बहक्क या काफ या काफियो।

विधि—४०० लिखके उसके तले या इतराईल लिखे अमुका अमुकी के बेटे की नींद बन्द करो बहक्क या काफ या कुद्दू सो फिर उस पर ४०० बार मंत्र दम कर भारी पत्थर के तले दावे तो उसकी नींद बंध जाय।

काफ का मंत्र—या हुरूजाइल बहक्क या काफ

या काफियो।

विधि-२००० लिखके जिसकी भुजा पर बांधे उसे विद्या बहुत सी आवे।

लाम का मंत्र-या त्वात्राईल बहक्क या लाम या लतीफो।

विधि—नित्य एक सहस्त्र बार पढ़के अपने ऊपर दम करे तो सब का प्यारा हो।

मीम का मंत्र-या रोमाईल बहक्क या मीम या महमनो।

विधि-१०० लिख के भारी पत्थर तले दावे तो सबका प्यारा हो।

नून का मंत्र-या लोलाईल या नून या नूरो।

विधि—शुक्र की राति या जिस राति के आगे शुक्र आवे २०० बार पढ़के सोवे तो स्वप्न में प्रष्टा का उत्तर मिलै और ४० दिन नित्य हजार बार पढ़ै तो उसको विद्या अनुभव होने लगे।

वाव का मन्त्र-या रक्ता माईल बहक्क या वाव या बहावो।

विधि-इस मन्त्र को पढ़ता हुआ जहां चाहे चला

जाय कोई रोके टोके नहीं कोई रोके तो उसके सामने ७० बार पढ़के फूंक दे ।

हे का मन्त्र—या दौराईल बहक्क या हे या हादियो ।

विधि-७० ईंट पर लिखके बेर की नीव में रखे अथवा ४ ठीकरी पर लिखके मकान में गाढ़ दे तो वह मकान बहुत वर्षों तक टूटे फूटे नहीं ।

ये का मन्त्र-या सराकी ताईल बहक्क ये यहियो।

विधि—१६० बार नित्य पढ़ै तो उसके सामने किसी और की जीभ न चलै सबकी जीभ बंद रहे ।

इति २८ अक्षर वृत्तान्त मौलवी मुहम्मद अली खलीफा शाह अब्दुल रहमान कृत

समाप्तम्

●

प्रगट हो कि—जितने मंत्र फारसी के लिखे हैं उनको पढ़े तब प्रथम एक बार बिस्मिल्लाह पूरी पढ़ के मंत्र के आदि अंत में साठ २ या ग्यारह २ या इक्कीस २ बार दरूद पढ़ लिया करे तो मंत्र का चमत्कार शीघ्र दीखे । इति ।

वैरी के जूता मारिवा का मंत्र

यंत्र

द	स	म	म	म	ल	ब	ह	अ
ह	द	य	ज	य	फ	व	च	ह
ल	अ	त	ल	अ	म	ह	ह	त
अ	र	म	अ	द	व	ह	ल	तं
अ	द	अ	र	अ	म	य	ल	ख
य	स	व	स	क	अ	म	व	ह
ल	अ	म	ह	नाम बैरी न	अ	य	न	ग़
अ	अ	म	ब	त	ब	व	ह	ल
य	ब	अ	अ	द	य	त	व	त

विधि—इस मंत्र को निकृष्ट मास के अंत में मंगल बार को फौलाद की छुरी से कच्ची ईंट पर लिखे दूसरी ओर बैरी का नाम लिख अर्द्ध रात्रि के

समय घृत का दीपक रख के फूल इत्र चढ़ा के एक बार पूरी बिस्मिल्लाह पढ़के ४१ बार दरूद पड़े फिर एक हजार बार (या कहहारो) परन्तु हर हर सैकड़े पीछे ५ जूती बैरी के नाम पर मार कर १० या १२ मंत्र पढ़े। इति

या कहहारो या इत राइलो या दौराइलो या अमवाकिलो अमुके की समस्त देह और मुंह को मेरी जूती की चोटी से घायल करो बहक्क या कहहारो और अंत में इकतालीस २ बार दरूद पढ़ मंत्र के सिद्धि करने को केवल (या कहहारो) नित्य १० सहस्त्र १० दिन तक पढ़के दशांश होमादिक करे।

बैरी का मारण—मोम का पूतला बनाकर शनिबार की पहली घड़ी में उस पर इस मन्त्र को १०१ बार दम करे बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम १ बार या कहहारो या कहर नायिल कहर्की कहर २ काया कहहारो १०१ बार। और मंत्र के आदि अंत में ग्यारह २ बार दरूद पढ़े फिर भाड़ू की सींक का तीर कमान बनाके उन पर ५०० बार इस मंत्र को पढ़ के दम करे।

मन्त्र–बिस्मिल्लाह पूरी एक बार या हूशियन लाइलाहइल्ला अंता सुबहानिकाइन्ना कुन्तो मिन-ज्जालमीन फिर तीर को कमान परूब ३ बार यह मंत्र पढ़े बिस्मिल्ला १ या कहहारो या इतराइलो या टौराइलो या अमबाकिलो अमुके की छाती और कलेजे को मेरे तीर की जर्ब से घायल करो बहक्क या कहहारो।

विधि—फिर तीर को पूतला की छाती या कलेजे पर मारे।

बसीकरण मन्त्र–अल्लाहुस्समद।

विधि–एक बार बिस्मिल्ला पढ़के हजार बार मंत्र को पढ़े आदि अंत में ग्यारह २ दरूद पढ़ै फिर दोनों हाथ की हथेली पर ११ बार मंत्र दम कर दोनों हाथों से बड़े जोर से पृथ्वी पर मार कर कहेया अल्लाह अमुके कूं मेरे वशतर।

तथा–लाइलाहइल्लिल्लाह धरती से आसमान तक लाइलाह इल्लिल्लाह अर्श से कुर्सी तक लाइला-ल्लिल्लाह लौह से कलम तक लाइलाह इल्लिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह अमुके अमुकी के बेटे को मेरे

वश्य कर।

विधि–इस मंत्र को २१ दिन प्रति दिन १४४ बार पढ़ सिद्धि करे फिर मिठाई या जल पर ११ बार पढ़ जिसे खिलावे वश हो।

राज सभा मोहिनी–बिस्मिल्लाह १ बार पढ़के ७ बार यह मंत्र सलामुन कौ लुज मिनरर्बिर्रहीम तनजी लुल अजीजुरहीम। दोनों हाथों की हथेली पर पढ़ फिर हाथों को मुंह पर फेर कर चला जाय राज दर्बार में जो मिलै वही प्रसन्न हो।

सम्पूर्ण मनोरथ की सिद्धि का मंत्र

शुक्रवार को	या अल्लाहो	या वाहिदो
शनिवार को	या रहमानो	या रहीमो
रविवार को	या वाहिदो	या अहदो
चन्द्रवार को	या समदो	या फरदो
मंगलवार को	या हयियो	या कयियूमो
बुधवार को	या हन्नानो	या सन्नानो
बृहस्पति को	या जुल जलाल	बल इकराम

विधि–स्वच्छ स्थान में नया दीपक रखे उसमें सुगंधित तेल या घृत लावे इमामहसन और इमाम

हुसैन का आवाहन करे सुगंधी पुष्प इत्र मिठाई चढ़ाके लोवान खेवे मंत्र को हजार बार पढ़े आदि में एक बार बिस्मिल्लाहतीन बार दरूद फिर अंत में ३ बार दरूद इस प्रकार सात दिनमें प्रयोग पूरा करै ७ दिन ब्रह्मचर्य सों रहे पृथ्वी में सोवे ३ बार हलका भोजन करे मनोर्थ सिद्धि हो।

रोजी मिलवा का मन्त्र–बिस्मिल्लाह पूरी। या बुद्दूह या हयियो या कायियूनो या अल्ला हो या फरले या बितरो या समदो या रहीमो या वारिसो या अहदो या लगय लिदो बलम यू लद बलम यकुन लुहू कु फ़ूवन अहदा इति मंत्रः।

विधि–इस मन्त्र को प्रति दिन १०० बार ७ दिन तक पढ़े आदि अंत में तीन २ बार दरूद पढ़े तो रोजी मिलै।

तथा–या इस्राफील बहक्क या अल्ला हो।

विधि–उड़द के सवाया आटे की रोटी बना स्वच्छ वस्त्र में चौथाई रोटी की जंगली बेर के समान गोलियां बांध हर एक गोली पर मंत्र दम कर वाको गोली समेत नदी की मछलियों को डाले

इस प्रकार ४० दिन में मनोर्थ सिद्ध हो।

इति फारसी मन्त्र

नजर का मंत्र—ओं नमो भगवते श्री पार्श्व नाथाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय आत्म चक्षु प्रेत चक्षु पिशाच चक्षु सर्वग्रह नाशाय सर्व ज्वर नाशाय २ त्रासाय त्रासाय ह्रीं नाथाय स्वाहा।

विधि-७ बार पानी मंत्रि के पिलावे नजर छाया सब दूर हों।

मूंठ थांमने का मन्त्र-ओं नमो आदेश गुरू कों चंडी चड़ी तो ऊपर चंड़ी आवत मूंठ करे नव-खंडी चक्कर ऊपर चक्कर धरूं चार चकर ले कहा करूं श्री नृसिंह का मुंह आगे धरूं मदमांस की करूं अग्यारी माकों चाचि मेरे साथ काकों चाचि तौ मूंठ फिराऊं तीन सौ साठ मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—मूंठ आवे तो मास का भोग देकर कहे जिसने भेजी है उसे जा मारि मारि मारि।

भूतादिक दोष निवारण मन्त्र—ॐ नमो आदेस गुरु को हरि बायें हरि दाहिने हरिहावों विस्तार

आगे पीछे हरि खड़े राखे सिर जजन हार चमकंत
बिजुली गाजन श्री नृसिंह फटंत खंभ आवता काल
राखि २ च्यार चक्र ले श्री नृसिंह के आगें मेलूं
इतना सूं दूरि जाय पड़े प्रातःकाल कंटक छलछिद्र
खेचरी भूचरा भूत दाना नाटक चेटन मारी मारी
लंडी का तीन सौ साठ उलटत नृसिंह पल टंत काया
भक्ति हेत श्री नृसिंह जी आया कपिल केरा उदर
सप्त श्री नृसिंह वली सदा सहाय श्री गुरु गोविन्द
के चर्णा बिन्द नमस्ते मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।
विधि–मोर पांख सौं ७ बार झाड़े ।
देह रक्षा–कचहरी या गांव में जहां कहीं जाय
इस मंत्र को ७ बार अपने ऊपर फूंक कर जाय ।
मन्त्र—ओं नमो आदेस गुरु को बज्र लोह मय
कोठा तिसमें मेरा जीव बैठा बाहर श्री हनुमंत बीर
गदा लिए खड़ा अेजे आवें मार करंताते सब जाय
पाय लंगता मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र
ईश्वरो वाचा ॥
विधि—सात कांकर १०८ बार मंत्रि के गांव की

ओर नाखे फिर गांव में प्रवेश करै।
गंडा बनाने का मन्त्र–ॐ नमो आदेश गुरु कों लड़गढ़ी सों मुहम्मद पटाण चढ्या श्वेत घोड़ा श्वेत पलाण भून बांधि प्रेत बांधि कात्रि या मसाण बांधि चौंसठ जोगिनी बांधि अड़सठ म्याना बांधि बांधि रे चोखी तुर किनी का पूत बेगि बांधि जो तन बांधे तो अपने माता की सैया पर पांव धरे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।
विधि—सवा पैसा की मिठाई दीपक आगे रख लोबान खेवे लाल रेशम रोगी की चोटी से एड़ी तक नाप सतवला डोरा बना इस मंत्र से २१ गांठ दे रोगी के गले में बांधे।
परियों का खलल दूर करिवा का मंत्र–ॐ महकूब कूवमह विमलमह बड़ी नदी में चार देव कौण २ अंहकार महंकार मुहम्मदा वीर ताइया सिलार बजाऊं साजे मुग्रय्युद्दीन तुम्हारी खुशबोई में चढ़ी कमाण सुलैमान परी लंक परी को हुकम कीजे कौन २ परी स्याह परी सबज परी हूर परी अर्श कुर्स की लाऊली बीबी फातमा कीलों झीली

आयना पाना फल आय लेना सवा सेर शर्बत का प्याला आय ले आय हाजिर होना मीर मुहीयुद्दीन मख दूम जहानी या शेख सरफ अहिया पठाण आय हाजिर न हो तो रोज कयामत के दामन गीर हूंगा।
विधि—१५ बार झाड़ चून का चौमुखा दिया सन्मुख जलावे आठ पान का बीड़ा ले शर्बत का कच्चा प्याला भरे रोगी पर चौराहा में उतार कूप की मैंड पै रक्खे आती जाती बार बोले नहीं।
कीये कराये की रक्षा का मंत्र-ॐ नमो आदेस गुरु कों नूना चमारी जगत की बीजुरी मोती हेल चमके अमुक के पिंड में ज्यान करे बिज्यान करे तो उस लंड़ी के ऊपर पारो दुहाई तल सुलैमान पैगम्बर की मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।
विधि-मोर पंख से ७ या २१ बार झाड़जे।
भूतादिक दोष निवारण मंत्र-ॐ नमो आदेस गुरु कों हनुमंत वीर बीरन के बीर तिहारे तरकस में नोलख तीर नव वायें नव दाहिने कबहूं आमें होय धनी गुसांई सबता अमुके की काया भंग न

होय इन्द्रासन दो लोक में बाहर देखे मसान हमारी या अमुकी की देही छल छिद्र व्यापै तो जती हनुमंत की आन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—मोर पंख से ७ बार झाड़े तो भूत प्रेत खबई जिंद मसानादिक दोष जाय बालक के गले में मंत्र को पीपल के पान में लिख के बांधे।

नकसीर रोकने का मंत्र—ॐ नमो आदेश गुरु कों च्यार आटि च्यार घाटि निख निख है चौरासी वाटि बहै नीर भाजे चीर नाथ पै थांभि हो श्री नृसिंह बीर नथांभे तो अपनी माता का दूध पिया हराम करै मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि—रुई का फोहा मंत्र से चाक के लगावे त्योंही रुके।

नेत्र पीड़ा का मन्त्र—ॐ नमो समुद्र समुद्र में खाई रस मरद की आंख आई पाके न फूटै न पीड़ा करै गोरख जती की आज्ञा फुरै शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि--लोण को ७ कीकरी से चाकजे।

आंख दुखवा को मन्त्र--ॐ त्तां त्तं त्तः नेत्र पालायनमः स्वाहा २१ बार विभूति मन्त्र के लगावे।

सर्प खाया का मंत्र--न्हां न्हंडिया तैं काई सां घोर वांधोभिछयो मारि जासी अणर वांधाने पाणी प्यावे खाधो उतरि जासी।

विधि--जो कोई आदमी खबर लावे उसे पाणी मंत्रि के पिलावे।

मृगी का मंत्र--ॐ नमो श्री राम उठि २ धनुष चढ़ाव मृगमार २ ओंठः ठः स्वाहा। २१ बार तीर सौं झाड़े।

बावरे कूकर का मन्त्र--ओं गंगाधारी स्वाहाः। २१ बार विभूति मंत्रि के लगावे।

दांत किड़किड़ाने का मन्त्र--ओंहरः २ भ्रमरः २ रत्तां स्वाहा।

विधि--रविवार को सुपारी की २१ फाल बांट दीजे खाय दांत न किड़किड़ावे भाड़ का रेत मुख में में डाले।

आधा सीसी का मंत्र–ॐ अचल गुसाईं बन खंडे राय चोरन भंके वाघन कच्चे बनफल खाय, हांक मारी हनुमंत ने इस पिंड आधा सीसी उतर जाय शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–बार भाड़जे रोगी दर्द स्थान को पकड़े तो रोग जाय।

रक्षा मंत्र वनवासी का–ॐ अचल गुसाईं बन खंडे राय चोरन भंके वाघ न लाय सूते सर्प न घाले घृत खिणवायां खिमदा हिना फिर २ वायां होय अचल गुसाईं समर्ता मेरी काया नाश न होय के शोराय सदा सहाय तीन लोक को माखन खाय कीड़ा कांटा दिया बहाय अलेख २ बजरंगी सदां सप्त संगी। ओं स्वाहा।

विधि–भैसा गूगर की २१ गोली मंत्रि के अग्नि में होमें ७ शनिवार फिर ३ बार मन्त्र पढ़ अपने ऊपर दम करे तो चोर वाघ सर्प आदि का भय न हो।

जादू दूर करिवा को मंत्र–ॐवज्र में कोठा वज्र में

में ताला वज्र में बंध्या दसौं द्वारा जहां सूं आयौ जहां हीं जाय जाने भेजा जाही कूं खाय चःपंट ति असधान खखिति: तत्र इस पिराड की मूठि टोणा चामण बीर बेताल ज्ञान परि ज्ञान जे इस पिंड कूं कुछ करें तो ईश्वर महादेव की आज्ञा फुरे श्री गोरख नाथ की आज्ञा फुरै।

विधि–वृत्त की पाती २१ कूप का पानी तिराहा की धूल काची धाणी को तेल सण का चून कीरा घड़ा में पानी और जल घालै माल घिट कंठ से बांधे रात्रि को हवन करै प्रात छान की चैतन नीचे स्नान करावे तेल धूर चून मेल के औटावे १०८ बार मन्त्रि के सिर पर घाले वाको नाम लेके कामणादि दोष टलैं शरीर निर्मल हो।

कामनादि दोष जानने का मंत्र—ॐ नमो दुग्ध २ धवलेश्वरी आदि मूल परमेश्वरी तोहि देखि वालक कंपै तख्त बैठा राजा कंपै न रन को करे जा कंपै आप चक्र फेरि पर चक्र स्थिर रच २ गोरखनाथ डाकिनी शकिनी कुल देवका मणादे प्रगास आइ इह हंसे प्रकाश दे स्वाहा।

विधि—१६ दीपक तेल के बाल उनके तले १६ नाम जुदे २ लिखकर रखै डाकिणी १ शाकिणी २ भूतनी ३ प्रेतनी ४ जड़ली ५ अऊत ६ पितर ७ नाहरसिंह ८ कामण ९ कुलदेवी १० जलदेवी ११ क्षेत्रपाल १२ काली क्षेत्रपाली १३ कर्म रोग १४ शीत दोष १५ मुंड़ी १६ ये सब दीपक पर कोरा कूंड़ा उलड़ा धरे मंत्र पढ़ २ उड़द मारे रवि वार को जिसका दोष हो उसका दीपक रहै अन्य दीपक बुझ जायं इस प्रकार कामणादि दोष जाणा जाय।

स्त्री बसीकरन–मोहिनी मोहिनी कहां चली बरा खुदाई मक्का को चली और देखें जलें बलें मेरे देखे मेरे पायन पड़ें झूमत काया बाचा गुरु का सबक सब सांचा सत्तनाम आदेस गुरु का।

विधि—रविवार प्रातः काल गुड़का शर्वत बनाके पीवे दिन भर व्रत राखे रात्रि को ज्योति कर गूगर खेवे पेड़ा पान भोग धरे लौंग इलायची सुपारी तीनों का चूरन करे उस पर १०८ बार मंत्र दम करे फिर वृत खोलके पेड़ापान खाय फिर जिस

स्त्री पर मन चले उसके बायें पगतर की धूर में थोड़ा चूरन मिलाकर २१ बार मंत्रि के उस पर डाले तो आवे।
अबीर बसीकरन—आकाश की जोगिनी पाताल का नाग उड़ जा अबीर तू फलानी के लाग सूते सुख न बैठे सुख फिर २ देखे मेरा मुख हम कूं छांडि दूसरा करे जाय तो काढ़ि कलेजा नाहरसिंह वीर खाय फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।
विधि—अबीर को गूगर की धूनी देके पत्ता में रख मुंह में रखै जल में गोता लगाय ७ मंत्र जप के बाहर निकल अबीर को गूगर की धूनी लगाके जिसके मुंह पर लगावे वह हाजिर हो।
मारन मंत्र—जल की जोगिनी पाताल का नाग उठ अबीर जहां लगाऊं तहां दौड़ के मार दोड़कर मार दुहाई मुहम्मदाबीर की तुर्कनी के पूत की दुहाई भोला चक्रवी की फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।
विधि—पूर्व विधि उक्त जल में गोता लगाके ७ बार मंत्र पढ़ सिद्ध कर शत्रु के मुख पर डारे।
मारण—ॐ नमो काल रूपाय उमुकं भस्मि कुरु २

स्वाहा ।

विधि—प्रथम सिद्धार्थ २१ सहस्त्र जपै फिर भांग लौन दोनों का चूरन नाक दीपक की लौ पर १०८ बार मंत्र से बैरी पर डारे तो मरै ।

विधि २–मंगलवार को १५ का यंत्र विलोप करके चिता की भस्मी सों लिखे १०८ बार मंत्रि के मसाण की भूभर ऊपर सों डारे ।

उच्चाटन मंत्र–ॐ नमो भगवते रुद्राय दंडक रालाय अमुक मपुत्र बाधवै सहहन २ दह २ शीघ्र उच्चाटय २ हुं फट् स्वाहा ठः ठः ।

विधि–ब्रह्म दंडी और चिता की भस्मी दोनों को पीस कर महादेव के लिग पर लेप कर १०८ बार मंत्र जपै फिर १०८ काली सरसों १०८ बार मंत्रि के शत्रु के घर में नाखे उच्चाटन हो ।

इति श्री तृतीय पाद कौतुक रत्न मंजूष समाप्तम्

●

॥ श्री गणेशायनमः ॥

श्री गणपति को सुमिर के लिखूं यंत्र के भेद।
जासों कारज सिद्धि हों मिटें चित्त के भेद॥

जो मनुष्य यंत्र लिखने का प्रारम्भ करे उसको चाहिये स्नान कर पवित्र जगह में एक वस्त्र बिना सिला देह में धारन कर अकेला बैठे कार्य के अनुसार महूर्त विचार के कूर्म्म चक्र और बैठने की विधि अनुसार जो इस ग्रन्थ के प्रथम पाद में लिखी है आसन बिछा कर बैठे जितने दिन तक लिखे ब्रह्मचर्य्य से रह पृथ्वी पर सोवे स्त्री के पास न जाय हल्का भोजन करे नित्य एक समय पर लिखे और इस बात पर ध्यान दे कि यंत्र को रात्रि में लिखे या दिन में यंत्र को दीपक के सामने लिखे धूप देवे जल कुंभ स्थापित करे या गंगासागर आदि किसी पात्र में जल भरके सामने रख लेवे और अन्त के यंत्र का पूजन नैवेद्य पुष्पादि युक्त करे।

मित्रता के लिये यंत्र लिखे तो मिश्री या गाया

घृत मुख में रखके लिखे और अगर तगर चन्दन चूरा गूगल मिश्री गाया घृत सहत कपूर दारचीनी जायफल मेवा को एकत्र कर धूप देवे।
मारण उच्चाटन को लिखे तो सेंधा लोन नीब का पत्ता मुख में रक्खे इसी की धूप दे जिह्वा बन्द करने को लिखे बन्द करने को लिखे तो मोम मुख में रखे इसी की धूनी दे स्वप्न बन्द करने को लिखे तो लौन मुख में रखे और इसी की धूनी दे।
यंत्र लिखने वाले की राशि आबी जिससे मनोरथ हो उसकी आत्शी हो तो यंत्र आबी लिखे क्योंकि जल अग्नि से प्रबल है।
इसी प्रकार कर्त्ता की राशि बादी और दूसरे की खाकी हो तो यंत्र बादी लिखे। इसी प्रकार विचार करले यंत्र ४ प्रकार के इनके रूप गुण पृष्ठ ३५१ के चक्र से विदित होंगे।
यंत्र के ९ कोठों के नाम—प्रथम कारौल पुत्री २ का ब्रह्मचारणी ३ काचन्द्र घंटी ४ का कूष्मांड़ी ५ का स्कंद माता ६ का कात्यायनी ७ का काल-रात्री ८ का महा गौरी ९ का सिद्धि दाता। यह

यंत्र

नाम यंत्र	राशि यंत्र	राशि का मुवक्किल	लिखना	यंत्र का क्या करें	दिशा गुण राशि	पूर्व		
	वृष	इज़्राईल	अष्ट	पृथ्वी	दक्षिण	४	३	८
खाकी	कन्या	जिब्राईल	गंध	में	स्थिर	९	५	१
	मकर	सरकाईल	से	गाड़े	कार्य	२	७	६
	मिथुन	इस्राफील	सिवाहि	पश्चिम	पत्थर तले	प		
बादी	तुला	इस्राईल	रक्त	उच्चा	गाड़े या	४	९	२
	कुंभ	महकाईल	चंदन	मारपा	द्रुप पर लटकावे	३	५	७
						८	१	६
	कर्क	बहकाईल	ताजा	उत्तर	बहते	८	३	४
आबी	मीन	बकवाईल	स्याही	चर	जल मे	१	५	९
	वृश्चिक	सरसाईल	ही	कार्य	बहावे	६	७	२
	मेष	इस्राफील	नीलक	पूर्व	अग्नि	६	१	८
आतशी	सिंह	अहराईल	पुरमीगी	वैर	में जरा	७	५	४
	धन	सरताईल	स्याही	भाव	वे	२	९	३

भी जानने की बात है कि ९ कोठों के यंत्र के ८ जर्ब में उतना ही अंक आवे तो यंत्र शुद्ध है ८ जर्ब की सूरत यह है और पहला अंक बाहर के ८ घरों में से किसी घर में रखा जाय। उसी से यंत्र की प्रकृति वादी आवी आदि ४ प्रकार की जानी जाती है। यंत्र में ४ दिशा होती हैं और ४ विदिशा अर्थात् कोने कोण और दिशा का बायां कोना दिशा

<table>
<tr><td></td><td></td><td></td><td>१</td></tr>
<tr><td></td><td></td><td></td><td>२</td></tr>
<tr><td></td><td></td><td></td><td>३</td></tr>
<tr><td></td><td></td><td></td><td>४</td></tr>
<tr><td>८</td><td>७</td><td>६</td><td>५</td></tr>
</table>

ईशान	पूर्व	अग्निय
उत्तर		दक्षिण
वायव्य	पश्चिम	नैरुत

<table>
<tr><td></td><td></td><td colspan="2">पूर्व आतशी</td><td></td></tr>
<tr><td rowspan="2">उ० आवी</td><td>२</td><td>१</td><td>२</td><td></td></tr>
<tr><td>१</td><td></td><td>१</td><td rowspan="2">द० खाकी</td></tr>
<tr><td></td><td>२</td><td>१</td><td>२</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">प० वादी</td><td></td><td></td></tr>
</table>

में शामिल गिना जाता है जैसे पूर्व दिशा का बायां अग्नि कोण पूर्व दिशा में शामिल है इसी रीति से

प्रत्येक दिशा के दो घर हुये ४ प्रकार के यंत्रों को घर को यह सूरत हुई ।
१६ कोठों का यंत्र जो किसी के नाम का मारन बसीकरन आदि कामों को बनाते हैं जो जिस नाम का यंत्र बनाया जाय उस नाम के अक्षरों के अंकों को जोड़ के उसमें से ३० घटा के शेष अंक जो रहें उसकी चौथाई में पूरा अंक आवे अर्थात् आधा चौथाई न आवे तो उस अंक को पहले कोठे में रखके शेष १५ कोठे में एक २ अंक बढ़ाके रक्खे यंत्र के कोठे इस चाल से भरे ।

८	११	१४	पहला
१३	२	७	१२
३	१६	९	६
१०	५	४	१५

उदाहरण—रामचन्द्र के अंक २९८ हैं र के २०० अ का १ म के ४० च के ३ न के ५० द के ४३० घटाने से २६८ रहे चौथाई का अंक ६७ है तो यंत्र इस प्रकार भरा यह यंत्र २९८ का हो गया कदाचित नाम के अंकों ३० घटाने से शेष ऐसा अंक बचे जिसकी चौथाई में पूरा अंक न आवे आधा चौथाई आवे तो समस्त अंक में २१ घटावे

शेष बचे उनको १३ वें कोठे में रखे फिर एक २ अंक बढ़ाकर ३ कोठे १५।१५। १६ को भरे और आदि के १२ कोठों में १ से १२ तक अंक रखे।

७४	७७	८०	६७
७९	६८	७३	७८
६९	८२	७५	७२
७६	७१	७०	८१

उदाहरण–किशोरी लाल के अंक ५१७ मं हैं क २० श ३०० ओ ६ र २०० ई १० ल ३० तो ३० ल तो ३० घटाने से शेष ५६७ रहे इनके चौथाई १४१ पूरा अंक नहीं आया तो ५१७ में से २१ घटा कर शेष रहे ५७६ इन को १३ वें घर में रक्खा तो ५१७ होगया।

५	११	५७७	१
५७६	२	७	१२
३	५७९	९	६
१०	५	४	५७८

अब फारसी नागरी अक्षरों के अंकों का हिसाब भी लिखना आवश्यक हुआ इससे लिखता हूं। अंक यंत्र से नागरी अक्षरों के अंक इस प्रकार हैं:–

होवे अंगुली से पृथ्वी पर पीली मिट्टी बिछाय लिखके मिटावे जब लिखने की संख्या पूरी हो जावे तब अन्त के यंत्र का पूजन फल मिठाई धूप दीप से करके मंत्र जप किये पीछे उसको मिटा के पृथ्वी पर पानी डाले या बाकी मिट्टी को उठा कर नदी में डाले प्रथम मंत्र को सिद्ध करले फिर जिस मनोर्थ को लिखे वह मनोर्थ पूरा होवे।
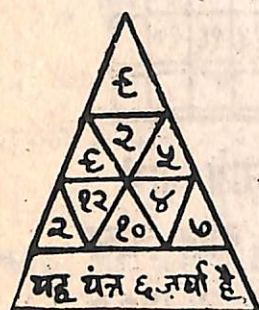
इस यंत्र को लिखे तो शाह फरीद जालंधर की आज्ञा चित से ले लेके ४० दिन तक नित्य प्रति २० यंत्र लिखे दीपक के आगे लोबान खेवे २० बें को कागज पर लिख के पूजन कर मंत्र जपे प्रथम एक बार बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम पढ़के ४० बार बड़ा मंत्र या तनका फील वह कस्या बुहूह पढ़ के दो सहस्त्र बार छोटा मंत्र पढ़ के या बुहूह पढ़ के फिर ४० बार पहला मंत्र पढ़े और चार घड़ी दिन रहे तब चार सौ बार बड़ा मंत्र पढ़ लिया करे यंत्र के सामने संध्या को यंत्र की गोली

बांध नदी में बहावे तो सिद्ध होवै फिर नित्य एक यंत्र लिखके १२ बार बड़ा मंत्र पढ़ लिया करे। मनोर्थ सिद्धि को यंत्र लिखे तो पूर्वोक्त पूजन कर २० सहस्त्र या बुद्दूह पढ़े अन्त में १ बार बिस्मिल्लाह और मंत्र के आदि अन्त में चालीस २ बार बड़ा मंत्र मुवक्किल सहित पढ़े और मंत्र के नीचे अपना मनोर्थ लिखे।

२ यंत्र १० जर्वा (चूल्हा में गाड़ देवे या सिल तले दाव देवे) इस यंत्र को लिख २ दरिया में

१	८	३	८
५	६	३	६
७	२	९	२
७	४	५	४

८	२	१०
९	७	४
३	११	६

बहावे मंत्र वही है जो ऊपर लिखा है। यंत्र ८ जर्वा इस मंत्र को पीपल के पात पर रात्रि को अगणित लिखा करे तो निस्सन्देह किसी दिन यंत्र की अशुद्धता निकल जायगी चार मुवक्किल हाजिर

होगे यंत्र लिखते समय बड़ा मंत्र जपता जाय अंत के यंत्र को नित्य लोबान की धूनी दे एक बार बिस्मिल्लाह पूरी पढ़ दो सहस्त्र बार या बुद्दूह पढ़ लिया करे और मंत्र के आदि अन्त में चालीस २ बार बड़ा मंत्र पढ़ें।

नीचे के दोनों यंत्रों के लिखने और पढ़ने की वही रीति है जो पहले यंत्र में लिखी गयी है। जितने
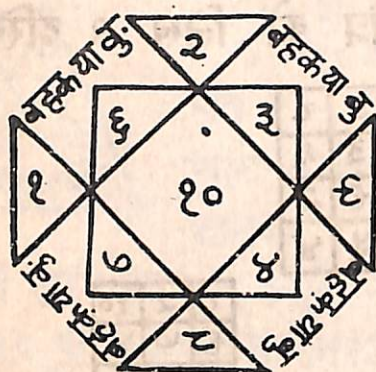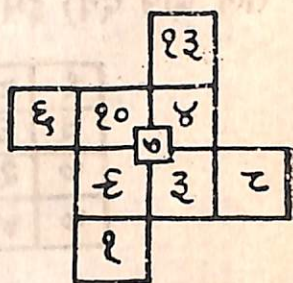
मुसलमानी मंत्र हैं उनके आदि अन्त में २१ या ११ या ७ बार दरूद अवश्य पढ़ले व दरूद पढ़ने से पैगम्बर साहब की मदद पहुंचती है।

दरूद-अल्ला हुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व

अला आले मुहम्मदिन व वारिक व सल्लम् ।

यंत्र या बुद्दूह रोजी मिलने का—इस मंत्र को उत्तम मास की पहिली बृहस्पति या ग्रहण या दिवाली की रात्रि को चंबेली के तेल का दीपक रख सवापा मिठाई सुगंध के फूल इत्र मंगवा के लोबान अग्नि पर खेवे ११ यंत्र को पृथ्वी पर उंगली से लिख २ कर एक २ बतासा फूल चढ़ा कर मिटाता जाय और लिखते समय बड़ा मंत्र या बद्दूह पढ़ता जाय बीसवा यंत्र कागज पर लिख कर बची हुई मिठाई फूल इत्र सब उस पर चढ़ाके दीपक के सिर की आग यंत्र को रक्खे दीपक के

या बुद्दूह	या बुद्दूह	या बुद्दूह	या बुद्दूह
या बुद्दूह	६२ ल	६४ ल	या बुद्दूह
या बुद्दूह	६४ ल	६२ ल	या बुद्दूह
या बुद्दूह	या बुद्दूह	या बुद्दूह	या बुद्दूह

आगे अग्नि पर लोबान खेवे फिर एक बार पूरी बिस्मिल्लाह पढ़के २१ बार दरूद और ४० बार बड़ा मंत्र फिर २० सहस्त्र बार छोटा मंत्र फिर ४० बार बड़ा मंत्र और २१ बार दरूद पढ़के यंत्र को सोने या चांदी के तावीज में रख दाहिने हाथ पर बांधे फिर नित्य यंत्र को लोबान की धूनी देके दो सहस्त्र बार या

बुद्दूह पढ़ लिया करे तो रोजी निस्सन्देह मिले।

उदर पूर्ण के लिए—नित्य प्रति १ यंत्र लिख धूप दीप नैवेद्य पुष्प से पूजन कर उस पर दृष्टि रखके १ सहस्त्र और १ बार जल के घट आगे मंत्र जपे रोजी खुले।

यंत्र ७८६—यह अंक बिस्मिल्लाह यंत्र के सिर पर लिखते हैं।

१९८	२०२	२०५	१९१
२०४	१९२	१९७	२०३
१९३	२०७	२००	१९६
२०१	१९५	१९४	२०६

मन्त्र—एक बार पूरी बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम पढ़। फिर १००१ बार या अल्ला हो या रहमानो या रहीमो या हैयो या कै यू मो और मंत्र के आदि अन्त में ग्यारह २ बार दरूद पढ़े।

१५ के यन्त्र की विधि—प्रथम शुभ मुहूर्त्त देख के ये वस्तु अपने पास रखले सवापा लापसी १० पूरी फराम का पका अनार की कलम रोली चावल गूगर फूल खोपरा के २१ टूक पान फाल सुपारी २१ दिन फिर विधि युक्त घट स्थापन कर पट्टा पर रोली बिछावे पट्टे पट्टे के सिर की ओर खड़ी

बाती का दीपक घृत भर जलावे पांव की ओर गूगर खेवे कों अग्नि धरे लापसी पूरी अर्द्ध भाग पट्टा के दायें बायें रखे फिर पट्टा पर अनार की कलम से एक यंत्र लिखे लिखने समय यह मंत्र पढ़े।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

मन्त्र—ओं नमो चामुंडा माई आई धाई मूवा मरा लिया उठाई बाल रखे बालनी कपाल राखे दाहीं भुजा नृसिंह वीर बायीं हनुमंत वीर राखै बीरों का बीर खेलता आवता वीर लगावे पाय जो यह घटपिंड की रक्षा करे न करे तो उलट वेद वाही पर पड़ चलो मंत्र ईश्वरो वाचा।

फिर यंत्र का पूजन कर रोली चावल फूल खोपरा का एक २ टूक पान सुपारी चढ़ा के गूगर खेवे यह खेवे यह मंत्र पढ़ एक बार ओं ऐं हीं क्लीं चामुंडा से विच्चे फिर यंत्र को मिटा के दूसरा यंत्र लिखके इसी प्रकार पूजन करे और ऐसे ही २१ यंत्र लिखके सबका पूजन करे २१ वें यंत्र के आगे न

चात्तर मंत्र का जाप ६ सहस्त्र करे २१ दिन में यंत्र सिद्ध होगा मंत्र भी सवा लाख हो जायेंगे तिसका दशांश होम तस्य दशांश मार्जन तस्य दशांश तर्पण तस्य दशांश ब्राह्मण भोजन करावे फिर नित्य प्रति एक यंत्र लिखकर एक माला मंत्र जप लिया करे।

आरम्भ करन विधि—जब किसी कार्य के सिद्ध करने को यंत्र लिखें तो शुभ कार्य के लिए शुक्ल पत्त में और अशुभ के लिये कृष्ण पत्त में आरम्भ करे। यंत्र का प्रमाण लक्ष्मी १ सरस्वती २ प्रसन्नता को परदेश के बुलाने को ३ सभा वश करने को ४ पंथ की सिद्धि को ५ औषधि की सिद्धी को ६ दो दो शहस्त्र यंत्र लिखें बैरी के नाश करने को ७ मनुष्य वश करने को ८ मित्र से मिलने को तीन २ सहस्त्र लिखे रोग खोने को १० कैद से छूटने को ११ छः सहस्त्र लिखे ईश्वर की प्रसन्नता को १२ राजा के प्रसन्न करने को १३ चार सहस्त्र लिखे खेती भली होने को १४ वांझ के पुत्र होने को १५ पांच सहस्त्र लिखे मनइच्छा पूर्ण होने को

सहस्त्र लिखे।

प्रयोग बैरी के नाश करने की विधि-१५ दिन में १५०० यंत्र आक के पत्ते पर लिख अग्नि में जलावे उसमें अपना मनोर्थ भी लिखे बैरी की मृत्यु चाहै तो मसान में गाड़े।

चोर के बुलावा का मन्त्र-यंत्र लिख के चरखा में बांध उलटा फेरे।

बाचा सिद्धि के अर्थ-अष्ट गंध के कागज पर १० हजार लिख मंत्र संयुक्त होम करे तो नाथ की सी बाचा सिद्धि होवे।

दरिद्र नाश करने का मन्त्र-पीपल की कलम से पीपल के नीचे दो हजार कृष्ण पक्ष की १४ से लिखे।

किसी मनोर्थ की प्राप्ति का मन्त्र-अनार की कलम से बरगद के पेड़ तले ४००० लिखे।

यंत्र के अंक रखने की विधि-सर्वत्र यंत्र की चाल पहले अंक से ९ तक है। परन्तु एक महा

पुरुष ने १५ के यंत्र की चाल जिस प्रकार बताई है वह यह है कि प्रथम १ फिर ५ फिर ६ फिर ८ फिर ३ फिर २ फिर ७ फिर ६ अंक धरे।

वाक्य सत्य करने का मंत्र—बेल की कलम से पवित्र स्थान २००० लिखे।

बादी में ७।५।३।६।१।८।२।६
आबी में २।५।८।६।४।६।३।७
आतशी में ४ ५।६।२।८।३।१।७।६

और जिस मनोरथ का यंत्र लिखै उसका दशांश हो सादिक ब्राह्मण भोजन कराना भी आवश्यक है और इस बात पर भी ध्यान रखना चाहिये कि यंत्र को सिद्ध किये बिना कोई कार्य सिद्धि नहीं होगा।

दिन विचार–रविवार को वैरी के बाउला करने को आक का दूध लावे उसमें ससान की राख मिलाय मुर्दे के कफन पर नाम संयुक्त यंत्र लिखे १०८ मंत्र जपे यंत्र पर दम करे वैरी की चौखट

तले गाढ़े वैरी का नाम यंत्र के तले लिखे वैरी बाउला होवे ।

चंद्रवार वश करने को दूब लावे केशर सेत त्रिमिठी सेत गाय का दूध में घिसके भोजपत्र पर यंत्र लिख गले या सिर में बांधे और यंत्र के नीचे जिसे वश करे उसका नाम लिख १०८ मंत्र जपे । नवाक्षर मंत्र के अन्त में अमुकस्य मम वश्यं कुरु २ स्वाहा

मंगलवार उच्चाटन कारण कांगला के पर की कलम और कागला के लोही में मुर्दा के कफन पर यंत्र लिख वैरी का नाम नीचे लिखे चौखट तले गाढ़े १०८ जाप में कुटुम्ब सहित उच्चाटन होवे

बुधवार वश करने को गज केसर गोरोचन मिलाय कागज पर यंत्र लिखे उसकी बत्ती बना मनुष्य की दो खोपरी मंगा एक में सरस्यों का तेल डालकर जलावे दूसरी में काजल पाडे १०८ मन्त्र जपै काजल आंख में लगावे तो नर नारी वश्य होवें ।

बृहस्पति वार बसीकरन गोरोचन तगर हल्दी घृत में मिला नाम सहित यंत्र लिखे अपने आसन नीचे गाढ़ उस पर बैठ १०८ मन्त्र जपै जिसके

नाम पर किया है वह बेचैन हो आजाय।

शुक्रवार स्त्री काम वश्य हो वच कूट सहत में मिला के भोज पत्र पर नाम संयुक्त यंत्र लिख अपने गले या सिर में बांधे स्त्री काम वश्य हो।

शनिवार मारन के लिये चिता के काठ की कलम बनावे कफन पर यंत्र लिख बैरी का नाम नीचे लिखे यंत्र उलटा भरे नीचे से चाल हो नो ऊपर से भरै वैरी की चौखट तले तो बैरी यमधाम को सिधारे।

१५ के यंत्र की मुसलमानी विधि—९ कोठों के अलग-अलग मन्त्र १—अजवो या इस्राफील बहक्क या अल्ला हो ॥१॥ अजवो या जिब्राईल बहक्क

या बुद्दूह ६	या रज्ज़ाके ७	या बुद्दूह २
या अल्लाह १	या हादियो ५	या लाहिरो ९
या हलीमो ८	या जमिरो ३	या दाइमो ४

बुद्दूहाशा अजवो या किल काईल बहक्क या जामि ओ ॥३॥ अज वोया दर दाईल बहक्क या दाइमो ॥४॥ अजवो या दौराईल बहक्क या हादियो ॥५॥ अजवो या रफ्ताईल बहक्क या रज्जा को ॥६॥ अजवो या सरफाईल बहक्क या

वुदूह ॥७॥ अज वोया तन्कफील बहक्क या हलीमो ॥८॥ अजवो या इस्माईल बहक्क या ताहिरो ॥९॥

विधि–उक्त मास की पहली बृहस्पति को कूर्म चक्र पर आसन बिछाय वार दिशा के विचार पर चंद्रमा शुभ वार सन्मुख जोगिनी को पीठ पीछे कर बैठे जल का पात्र दीपक रखे लोबान खेवे यंत्र लिखे प्रतिदिन १५ दिन ४० ताईं ९ कोठों के न्यारे २ मन्त्र हैं प्रथम पिछले यन्त्र पर पुष्प इत्र मिठाई ९ कोठों पर रखे फिर एक वार बिस्मिल्लाह पढ़ एक २ मन्त्र को १०१ वार पढ़ै मन्त्र के आदि अन्त में ग्यारह २ दरूद पढ़े ४० दिन में कैसा ही मनोर्थ हो सिद्ध हो ३ चिल्ली पीछे १५ दिन में कोई काम हो पूरा होवे।

७२ के यंत्र की विधि–यह यंत्र आबी है जल वट विधि युक्ति भरके आंव के पट्टे पर रोली बिछा कर अनार की कलम से एक यंत्र लिख के चंदन अक्षत फूल मिठाई धूप दीप करके पूजन करे मन में कामेश्वरी देवी का ध्यान करे लिखते समय एक

२ कोठा पर यह मन्त्र जपै।

श्री पार्श्व नाथायनमः

और यंत्र में पहले ६ का अंक फिर १२।१८।२४।३०।३६। ४२।४८ का रखे पूजन कर ७२ बार इस मन्त्र का जाप

करें। ॐ नमो कामदेवाय महा प्रभाय ह्रीं कामेश्वरी स्वाहा जप कर यंत्र को मिटावे इस प्रकार २४ यंत्र लिख पूजन करे २४ वें यंत्र के आगे २१ माला मन्त्र जपे ७२ दिन में सिद्ध हो आज के लिखे यंत्र को दूसरे दिन गेहूं के चून में थोड़ा शहद घृत बूरा मिलाके गोली बांध नदी में बहावे जौ की रोटी बथुवा की अलोनी भाजी खाय पृथ्वी पर सोवे ब्रह्मचर्य सों रहै झूठ न बोलै ७२ दिन में सवा लाख जाप हो जाय जिसका दशांश हो मादिक कर ब्राह्मण भोजन करावे। फिर नित्य प्रति १ यंत्र लिख उसकी पीठ पर लिखे ७२ टंक चलन बाजार दे।

उस आसन तले रख ७२ मन्त्र लिया करे ७२

टके चलन बाजार मिलें तो किसी से कहे नहीं कहने से बन्द हो जायेंगे जब फिर आसन नीचे न आवेंगे तब किसी प्रकार से कुटुम्ब के खर्च लायक प्राप्ति होता रहेगा और यंत्र को आसन तले से उठाकर पाग में रखै दूसरे दिन गोली बांध नदी में बहावे जो यंत्र किनारे पर आ जाय उसको एक आले में सफेद वस्त्र पर रख परदा डालदे नित्य पुष्प चढ़ाकर धूप दिया करे।

अन्य प्रकार—कागज पर नई स्याही से एक यंत्र सूर्य्योदय पहले लिखे उस मास की पहली बृहस्पति से आरम्भ करे और नाभि समान जल में खड़ा होकर पश्चिम मुख ४९ ४९ बार अथवा ३३ ३३ बार इस मंत्र को जपै एक बार पूरी बिस्मिल्लाह कहकर फिर यह मंत्र पढ़ै अजिवो या जिब्राईल वहक्क या वासियो मंत्र के आदि अन्त में ७१ बार दरूद पढ़ै तो ७२ दिन में सिद्धि हो और नित्य यंत्र को तागा में पिरोकर निज स्थान के दर्वाजे में टांक दिया करे दूसरे दिन चून में गोली बांध के गोली बूरा में लपेट के नदी में बहावे

७२ दिन पीछे एक यंत्र लिखकर ७२ मंत्र जप लिया करे आरम्भ करने के १० दिन पीछे खर्च के माफिक कहीं से प्राप्ति होवेगा ७२ दिन पीछे दस पांच ब्राह्मणों को भोजन करावे।

इति ७२ यंत्र विधि समाप्तम्।

लक्ष्मी प्राप्ति का यंत्र–इस यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिख मंत्र जपै तो लक्ष्मी प्राप्ति होवे।

यंत्र यह है

मन्त्र–ओं श्रीं ह्रीं क्लीं महा लक्ष्म्यै नमः प्रथम तीन लक्ष जपै सिद्ध होवे फिर दशांश होगा दि कर ब्राह्मण भोजन करावे फिर नित्य प्रति यंत्र को

धूप दे १०८ बार मन्त्र जपै मंत्र पाग में राखे।

यंत्र :—

बं	बं	तं	तं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

मनवांछित फल पाने को इस यंत्र को रक्त चंदन से बेलपत्र पर लिख १०८ यंत्र शिव पर चढ़ावे ३० दिन श्रावण मास में और शिव व्रत के दिन तो धन संतान सर्व सुख प्राप्त होवे और नित्य ४४ ४४ बार शिव मन्त्र को जपै यंत्र विधि सों लिखै सर्व कार्य सिद्धि हों।

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	६	८	१
४	५	१०	१३

इस यंत्र को कागज पर हल्दी से लिखे यंत्र के तले मनोर्थ लिखे फलीता बनाय रविवार को दीपक इस प्रकार ७ रविवार करै तो सर्व दुःख नाश होयं और हल्दी की माला से यह मंत्र ११ माला जपै।

मन्त्र—ओं ह्रीं हं सः

पूर्व यंत्र की दूसरी विधि–रविवार को प्रातः स्नान काल करके थाली में हल्दी से यंत्र को लिखै उस पर खड़ी बत्ती का चौमुखा दीपक घृत का रख हाथ में ले सूर्य के सन्मुख रखे मन्त्र का जाप करता जाय जो २ सूर्य फिरे आप भी फिरता जाय सूर्य अस्त होने पर अर्घ देकर व्रत खोले स्त्री की दृष्टि न पड़ै इसी प्रकार ७ रविवार करे तो दुनिया में ऐसा कोनसा काम है जो सिद्धि न हो सही ३ ।

अटूट भण्डार–बालाजी का यंत्र दिवाली की रात्रि को लिख कर धूप दीप नैवेद्य से विधि पूर्वक हनुमान जी का पूजन कर यंत्र आगे रख इस मंत्र को १२५ बार जपै ।

मन्त्र–बौरी लछमीदेवी लछमी दे लिछि करणी मम भंडार पुरी क्रियं स्वाहा फिर यंत्र को द्रव्य मांझ अथवा अन्न मांझ रख १ दिन पीछे खर्च तो वटी न आवे ।
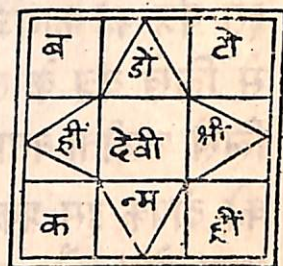
बाल रक्षा के यंत्र मन्त्र
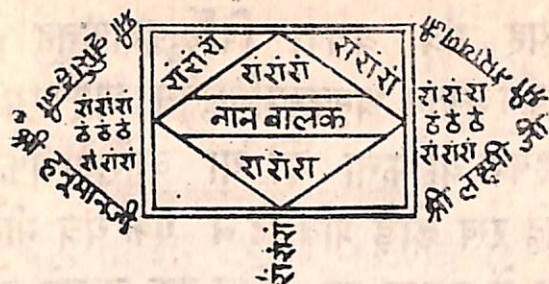
मन्त्र---ॐ महाबीर हनुमंत बीर तेरे तरकस में सौ २ तीर त्तरण बाएं त्तरण दाहिने त्तरण-त्तरण आगें होय अचल गुशाईं सेवता काया भंग न होय इन्द्रासन दी बांध के वारे घूमें मसान इस काया को छल छिद्र व्यापे तो हनुमंत तेरी आन।

विधि-मंगल को हनुमान का पूजन कर १०८ वार मंत्र जपै ७ मंगल में सिद्धि हो पीछे पीपल के पत्ते पर लिख गूगल के डोरा में बांध ३ गांठ दे प्रति गांठ ७ वार मंत्र जपै दाहिनी भुजा पर बांधे नजर जाय भूतादिक दोष जाते रहें।

दुकान की बिक्री-किसी ने बन्द करदी हो तो खुल जाय और माल बहुत बिकने लगे शुक्ल पक्ष की पहली बृहस्पति को बार चक्र की रीति पर बैठ

७ यंत्र लिखे फिर यंत्र पर पुष्प रख लोबान खेवे उसके आगे यह मंत्र जपै १ बिस्मिल्लाह ११ दरूद १०१ यह मंत्र अथवा बिरिज्कुलफत्तूह दुकान अमुकस्य बिसुतन अमुकस्यबिसुतन अमुकस्य जारी-गर्दी बहक्क या फत्ता हो या वासितो फिर ११ दरूद पढ़ रख छोड़े प्रति दिन एक यंत्र मीठे तेल के दीया में दुकान पर ७ दिन तक जलावे तो माल बिकने लगे और यंत्र के नीचे मन्त्र लिखै।

यंत्र :-

८२४	८२७	८३०	८१६
८२९	८१७	८२३	८२८
८१८	८२३	८२४	८२२
८२६	८२१	८१९	८३१

यंत्र के नीचे ऊपर का मंत्र लिखे।

दुकान में माल की बिक्री हो--दो यंत्र शुभ घड़ी शुभ तिथि में लिख एक कोसहत में रख शकर बूरा में डाले फिर मीठे अनार के पेड़ में बांधे दूसरे को दुकान के दरवाजे में बांधे।

विधि—पहला अक्षर पहले घर में दुसरा दूसरे में इसी प्रकार १६ घरों में धरे।

यंत्र लिखने का यंत्र चाल दिखाने का

ब	अं	ह्रं	वं
व	ह	अ	बं
अं	व	व	हं
हं	व	व	अ

८	११	१४	१
१३	१२	७	११
३	१६	९	६
१०	५	४	१५

स्वप्न आवे तो इस यंत्र को भोजपत्र पर अष्ट गंध से लिख गूगर खेवे तो फिर स्वप्न न आवे सत्य सत्य सत्य और तीन २ बार इन पांच नामों का स्मरण करके सोवे गणपति गणेश काटो क्लेश १ हे बली पायक हनुमान २ काली काली महा काली ३ हे भैरव ४ हे नृसिंह ५ ।

नं	छं	जं	थं
छं	नं	जं	ठं
ठं	जं	ठं	छं
नं	छं	जं	ठं

घोड़ा का यंत्र–इस यंत्र को घोड़े के गले में बांध कस्तूरी कपूर केशर से उत्तम मास के पहले रविवार को लिखे कागज पर गूगर खेवे तो दंगा नहीं करे स्वामी का शुभ-चिंतक रहे ।

२६	३३	२	७
६	३	३०	२९
३२	२७	८	१
४	५	२८	३१

भैंस का यंत्र

३४	१८	३९

जो भैंस बच्चा को न लगावे और दूध न दे इसके सींग पर इस यंत्र को बांधे।

गौ का यंत्र–इस यंत्र को केशर गोरोचन कुम कुम से भोजपत्र पर लिख गौ के गले में बांध गूगर खेवे तो गौ बहुत दूध दे।

२८	३५	१	७
६	३	३२	३१
३४	२६	८	१
४	५	३०	२३

बैरी के घर में कलह हो–इस यंत्र को स्याही से कागज पर निकृष्ट मास की निकृष्ट घड़ी में शनिवार को लिखगूगर खेवे बैरी के दर्वाजे पर गाढ़े जब तक उखाड़े नहीं उसके घर में कलह रहै यंत्र की रीति से यंत्र को भरे।

३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१
३१	३९	३१	३१
३१	३१	३१	३१

बैरी के जूता मारिवा का यंत्र–शनिवार को जलते मुर्दा जाति के तेली या ठाकुर की कमर तले

से एक अगार लेके मध अथवा तेल पानी का कुल्ला उस पर कर उठा लावे पीछे फिर कर देखे। कोइला की गूगर धूनी देकर एक पतासा अग्नि पर दे फूल चढ़ावे भूत प्रसन्न हो फिर उस कोइला ओहरताल को मिलाके पुराने लत्ताया कफन पर यंत्र लिखे उसके तले बैरी का नाम लिख यंत्र पर जूता मारे तो निश्चय बैरी माथा में लगे इस पुस्तक की आदि में यंत्र बनाने की विधि लिखी है उसके अनुसार बैरी के नाम का यंत्र बनावे और उस पर जूता मारे अति श्रेष्ट है।

१२२

५३	६०	२	७
६	३	५७	५६
५[illegible]	५५	८	१
४	५	५	५८

बैरी बर्बाद होवे—वृश्चिक के चन्द्रमा में गधे की खाल पर इस यंत्र को लिखे फिर बैरी और उसकी माता का नाम यंत्र के तले लिखकर गूगर धूनी दे और १०८ मन्त्र पढ़े और बैरी के

घर की चौखट तले अथवा घर के आंगन में अथवा मारग में गाढ़े तो बैरी को दुख प्राप्ति हो।

मन्त्र–ओं ह्रीं श्री त्रपुर भैरू त्रपुर वीर मम शत्रू अमुकस्य पीड़ा कुरू २ स्वाहा।

बैरी का नाश करन का यंत्र–रवि दिन मसान का कोयला पूर्व युक्ति से लाया हुआ और हरिताल दोनों को जल में सान रोटी पर इस यंत्र को लिखे दो बतासा गूगर अग्नि पर रख यंत्र को धूनी दे और १०८ मन्त्र यंत्र पर दम करे मसान व चौराहा में गाड़े तो ३ मास में शत्रु का नाश होवे।
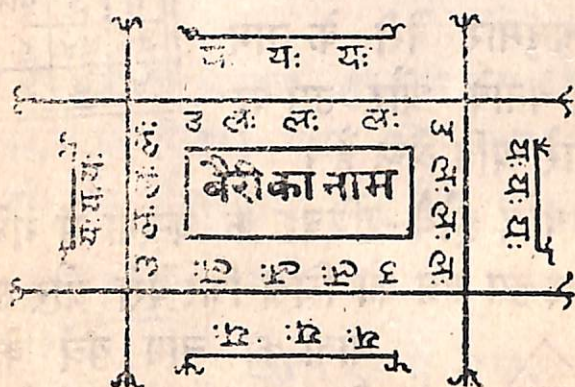
पूर्वोक्त यंत्र का मन्त्र–ओं ह्रीं श्रीं क्ली महान वीराय अमुकस्य नाशय २ विध्वंसय २ स्वाहा।

गया हुआ पुरुष फिरै–जो मनुष्य रूठ के कहीं

चला जाय तो इस यंत्र को भोज पत्र पर कुम कुम गोरोचन से लिख चर्खे से बांध उलटा फेरे तो वह पुरुष उसी समय जबलों घर पर न आजाय नित्य चर्खे में उलटे २१ चक्कर दिया करे।
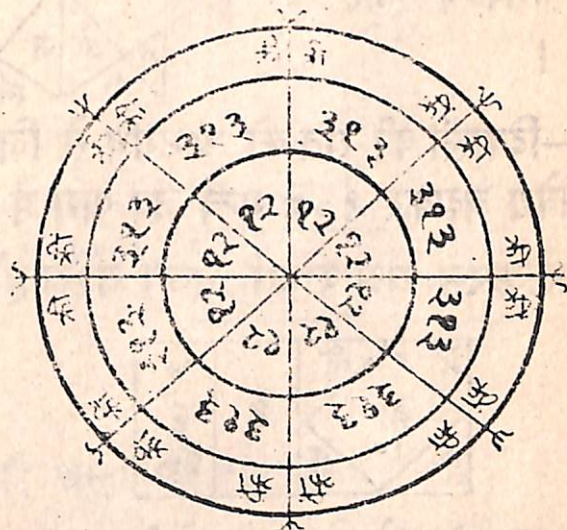
सर्व बसीकरन यंत्र–यह यंत्र पत्थर पर लिख

७ग४४ ब ७००
१०० ११७० ४७६० ३० ४
५:: ७४-२३-१:: ÷ ७

चूल्हे में गाड़े ७ दिन राखे यंत्र के नीचे जिसे बश

वश करे उसका और उसकी माता का नाम लिखे।

वसीकरन मन्त्र–ओं क्लीं ह्रीं श्रीं सर्व जनस्य हृदयं ममवश्यं कुरु २ स्वाहा।

विधि–दिवाली की रात को अष्टगंध से लिख धूप दीप नैवेद्य चढ़ाकर १०८ मन्त्र जप पाग में राखे।

वसीकरन यंत्र राजा प्रजा वश्य होवें
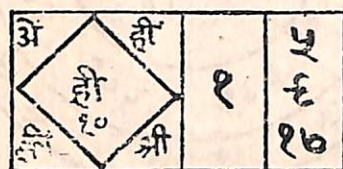
विधि–इस यंत्र को गेहूं की रोटी पर लिख कारे कूकर को खवावे तो सुसर वश हो कूंकरी को खवावे तो सास वश हो।

बसीकरन–इस चिंतामणि नाम यंत्र को चंदन सिंदूर से भोज पत्र पर लिख माथे पर राखे तो तीर न लगे और केशर कस्तूरी से लिखे तो सर्व कामना सिद्धि हों केशर कस्तूरी से वश करन यंत्र

को कपड़े पर लिख बाती बना जलावे उसकी राख खिलावे वश्य हो ।

आमुकी अमुका के वश्य हो ।

बसीकरन—इस यंत्र को आसन तले गाढ़े राजा प्रजा वश्य हो ।

४४	कीं	४५
हौं ह्रीं ख्वदत्त योह्रिरागो		
४४	कीं	४४

नजर लगने का यंत्र--इस यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध से लिख जिसके गले में बांधे उसे नजर कभी न लगे।

३५	१०	१८	७
१८	७	३५	१०
७	१०	१०	३५
७	३५	७	१८

जुआ जीतने का यंत्र--रविवार पुष्य नक्षत्र में लिख हस्तमें पंवार की मूलला यंत्रमें लपेट धूनी दे सवा पाव मिठाई भूखो को खिला जूवा खेले तो जीते सत्य ३।

[illegible]	२२१	३२।	२३।
३॥।	२७॥	३॥५	३८॥।
२।।	८।।	२४।।	१२१।।
२४	१४।।	५।।।	५।।।

सत्य ३

घरन यंत्र-इस यंत्रको एक सांस में दिवाली की रात को भोज पर लिखे तो धरनन डिगे कमर में बांधे रहें सत्य ३
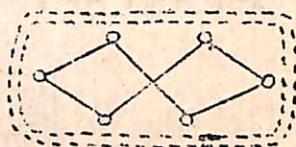
ॐ श्रीं पं वं फं यं फट स्वाहा

हाजिरात--बालक को स्नान कराय पवित्र वस्त्र

पहराय सुगंध लगाय बैठावे एक रुपया सवा सेर मेवा मिठाई और इत्र बादशाह की भेंट को रख दीपक में चंबेली का तेल जलावे यंत्रके काले घर बालक दृष्टि रखे फिर इस अजीमत को पढ़े बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अज बोधा जिब्राईल या दरदाईल या रफ्क माईल या तन्क फील बहक्क या बुद्दूह हम्मन हम्मन हम्मन बहक्क लाइलाह इल्लिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह या हेकल या हैकलन या कोकल या कोकलन बहक्क सुलमान नबी बिन दाऊद अलैहुस्सलाम।

हाजिरात का यंत्र—इस यंत्र को घुटे हुये कागज पर सब कोठे समान बना कर लिखे १ के अंक से २४ तक लिख उस पर इत्र लगा के लिखे और एक सफेद चादर बिछा कर उस के चारहों कोने में लोह की कील गाड़ उसपर बालक के गले में फूल माला पहना कर बिठावे इत्र लगावे चावल और फूलोंपर अजीमत पढ़ बालक पर मारता जाय जब बादशाह

१६	६६	२२	१०
२१	१०	२५	५०
११		१७	४
१८	१३	१२	२३

आवे तब मेवा मिठाई भेंट कर पूछना हो पूंछले ॥
भूतादिक दोष निवारण यंत्र—यह यंत्र शाह अब्दुल कादर जालानी को प्रणाम कर लिखे यंत्र में रोगी का नाम लिख नये वस्त्र में लपेट बाती बना दीपक में चंबेली का तेल भर रोशन करे पवित्र स्थान में रख जमीन को पोता माटी से पोते फूलमिठाई दीपक धरे जबरोगी लौ पर दृष्टि करे तो रोग जाता रहे चंगाहो जाय सत्य ३ ।

भूत बकरे—इस यंत्र को कागज पर लिख फलीता

बनाकर सुंघावे तथा इस यंत्र में राई भर जलावे तो भूत जिन्न उतर जाये।

१२	११
३	३

कामन करने को फलीता—इस फलीता को काले कपड़े में लपेट कर एक २ यंत्र में सुर्व रख
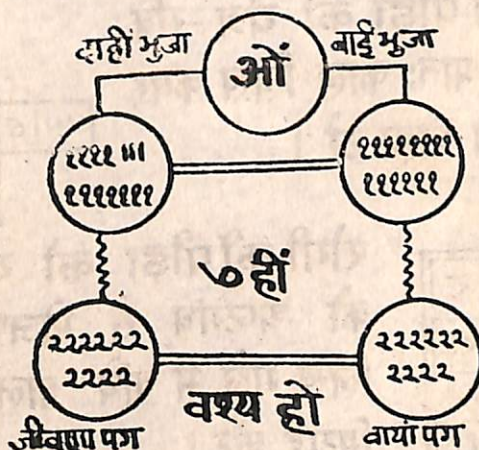
काले रेशमी डोरामें पिरोके चूल्हे में गाढ़दे जिसके नाम से करे वह नामर्द हो जावे॥

काला कलवा लगा हो तो गले में इस यंत्र को बांधे तो उतर जाय।

इस यंत्र की बाती कर दीपक में जलाने से प्रेत बश होय।
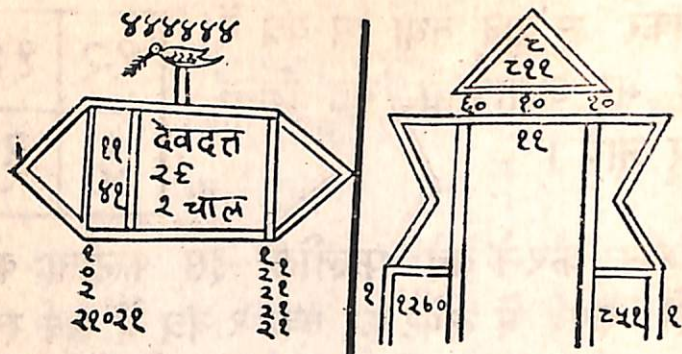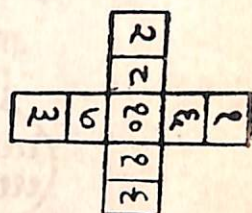
बसीकरन यंत्र–ओं नमो नृसिंहाय सर्व दुष्ट विना गाय सर्वजन मोहनाय सर्व राज्य वश्यं कुरु २ स्वाहा १००० दिन जपैसिद्ध के ७ बार मंत्र से विभूति-मस्तक पर लगा जाय।

ह्री	ह्री	ह्री	ह्री	ह्री
ह्री	ह्री	ह्री	ह्री	ह्री
ह्री	ह्री	ह्री	ह्री	ह्री
ह्री	ह्री	ह्री	ह्री	ह्री
ह्री	ह्री	ह्री	ह्री	ह्री

यंत्र तिजारी का जैमने हाथ पर बांधे			यंत्र सीतला का गले में बांधे			यंत्र आधासीसी मस्तक का बांधे पर			
७१	७१	७१	श्रीं	श्रीं	श्रीं	१०	१७	२	७
७१	७१	७१	श्रीं	श्रीं	श्रीं	६	३	१४	१३
७१	७१	७१	श्रीं	श्रीं	श्रीं	१६	११	८	१
						४	५	१२	१५

आकर्षण यंत्र–इन दोनों यंत्रों को बहेड़ा के पत्ते पर आमने सामने लिख विधि पूर्वक पूजन कर पृथ्वी में गाढ़े जिस किसी से मिला चाहे आप आय मिले।
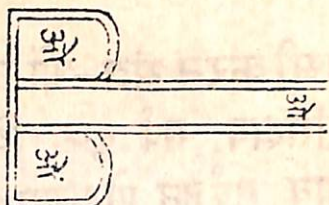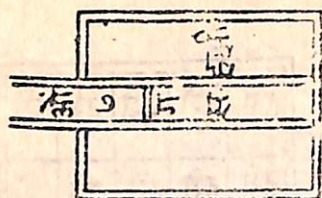
इस यंत्र को शनिवार को नील से लिख खेत में गाढ़े तो खेत को कीड़ी न खाय।

इस यंत्र को खेत में गाढ़े अन्न बहुत उपजे क्षेत्रफल की पूजा करे।

६ ५ ५
२१ ५ १६
४ ४ ३

२	१०	२	८
७	३	८४	२४
२६	८१	६	१
४	६	२२	२५

दो यन्त्र अष्ट सिद्धि के मन्त्र सहित

मन्त्र—ॐ श्रीं ह्रीं क्ली महा लक्ष्मयै नमः।
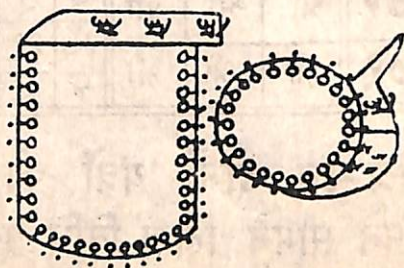
विधि–दिवाली की रात्रि को तांबा की चौखूंटी कटोरी बनवा के उसमें रक्त चन्दन से यंत्र लिख

पूजन कर १ सहस्त्र मन्त्र जपै तो अष्ट सिद्धि प्राप्ति हो।

यंत्र

इस यंत्र को शुभ घड़ी में लिख बालक के गले में बांधे तो मसाण का खलल जाय।

पुरुष स्त्री के वश होवे—इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोजपत्र पर लिख स्त्री के बांये हाथ पर बांधे।

भूतादिक काढिवा का फलीता

इस फलीता की नाक में धूनी दे तो समस्त रोग भूतादिक मिटें बहस्क या रफ्ताईल बहस्क या जिब्राईल या तनका फील हाजिर करो या दरदाईल
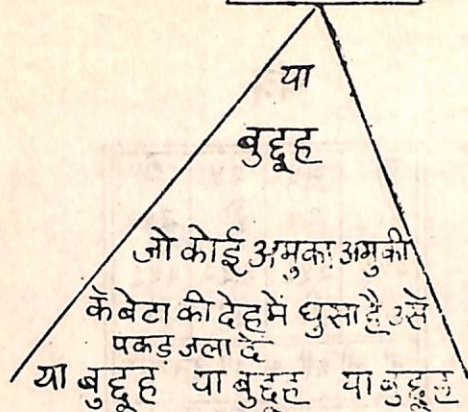
बहक्क या बुद्दूह या बुद्दूह इस यंत्र को भोज पत्र पर अष्ट गंध से लिख भुजा पर बांधें तो जहां जावें आदर सत्कार हो।
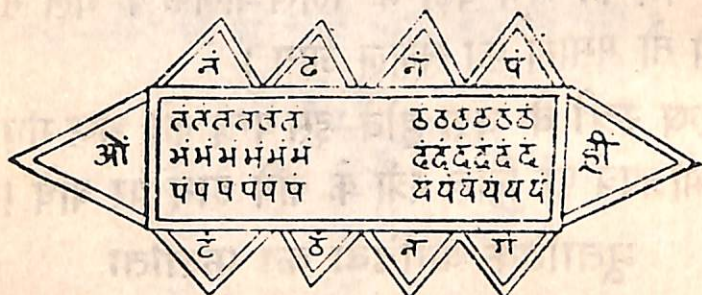
स्वामी का बसीकरन—इस यंत्र को भोजपत्र पर गोरोचन से लिख पूजन कर दो शिकारों के मध्य
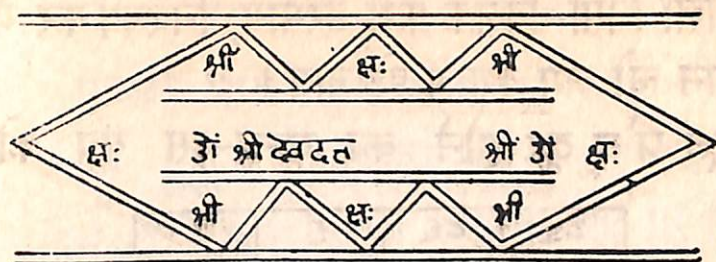
में रख अग्नि में ऐसा जलावे कि यंत्र जलकर भस्म हो जाय जब शिकोरे ठंडे हो तब यन्त्र की राख को पानी में घोल कर पी जाय तो स्वामी वश्य हो।

राजा का बसीकरन—इस यन्त्र को भोजपत्र पर गोरोचन या श्री खंड कुमकुम या दूध दही अनामिका के लोही से लिखे।

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं देवदत्त मध्य नाम ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

बेहतरीन व आसान मोहिनी तिलक—पत्ता बेल का लाय कर साये में लो सुखाय, कपला गाय के दूध में गोली लो बनवाय। जब चाहे

गोली घिसो—तिलक करो हरसाय, निश्चय कर ये जान लो जग वश में हो जाय।

भूत प्रेत दूर होने का यन्त्र—इस यंत्र को

८५	८६	१	१२
६	६०	६२	१३
४६	४	१८	६१
५	६९	२८	५८

असगंध से भोजपत्र पर लिखकर घर में रखे तो जरा भी डर न लगे।

इस यंत्र को चांदी की तस्तरी पर शमशान की मिट्टी से लिखकर भूत के सताये हुए मरीज के सर पर दो मिनट तक रखकर तालाब में फेंक आवे तो भूत प्रेत जो कुछ भी हो फौरन भाग जावे।

राज दरबार में इज्जत पाने का यंत्र—इस यंत्र को चमेली की कलम से लिखकर अपनी भुजा पर बांधे तो राजमान हो। ये यंत्र अगर गुलाब के रस से भोजपत्र पर लिख कर अपने हाथ पर बांधे

३६	५८	६	३८
६	९	६२	६१
८७	५४	६	८
८	५	८३	८५

तो राज दरबार में जाने से इज्जत मिले ।

मच्छर भगाने का मन्त्र व यन्त्र–जिस दिन मच्छर रात में दुख देवें बहुताय तेल लोंग का खाट पर छिड़कत ही भग जांये ।
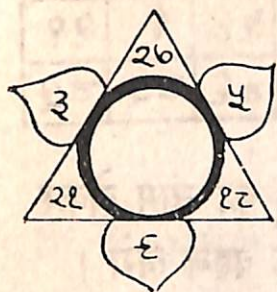
बकरी के दूध में गंधक और नौसादर पीसकर उसकी स्याही से काले कागज पर नौ मरतबा इस यंत्र को लिखकर अलग २ उन नौ टुकड़ों को फाड़लो, उपला की आंच सुलगाकर उसमें दो २ मिनट बाद इन टुकड़ों को डालता जावे थोड़ी देर बाद मच्छर भाग जायेंगे ।

शीतला का यन्त्र–(१) इस यंत्र को कागज पर लिखकर जिस बालक के शीतला निकले उसके गले में बांध देने से शीतला दूर हो जाती है ।

[illegible]	[illegible]	६	५१
७४	४	४	५२
३	[illegible]	८७	६१
६	५	३६	३५

(२) इस यंत्र को कागज पर चन्दन से लिखकर और गूगल धूप का धूप देकर शीतला जिसके निकली हो उसके गले में तावीज बनाकर बांध दें ।

नाक बहने का यंत्र-

७	४	५७	३२
५२	६	६२	५२
४५	५४	१	११
३५	८६	८३	८५

(१) इस यंत्र को सरसों के पत्ते पर लिखकर चबाने से नाक बहने लगती है।

(२) इस यंत्र को कनेर के पत्ते पर स्याही से लिखे और शत्रु का नाम लेकर उसको सुई से छेदे तो उसकी नाक बहने लगे।

मदारी को पछाड़ने का मन्त्र- ॐ नमों गदाधारी हनुमंत वीर स्वामी का तेज वैरी का शरीर और शत रुकमा तू का लका चलाया चलो वैरी न थरे में कर ही तेरे जीव की मरात में ना डरो ना डी तेर गुरु पुर से मारो तुझे टूक ही तीर से मेरा मारा ऐसा चूमें टोसै नारंगी सर्प की लहर परे तो वे हेरत मारू बान फेर चले तो गुरु गोरख नाथ की आन दुहाई मेरे गुरु की दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि-उड़द के दानों पर सात बार मंत्र पढ़कर मारे तो मदारी बेहोश होकर गिरे।

मदारी को पछाड़ने का यन्त्र- इस यंत्र को

सात पीपल के पत्तों पर लिख कर बबूल कीकर के
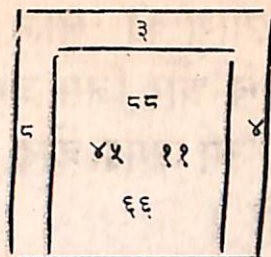
काटों में सातों पत्तों को पिरोकर जहां खेल होता हो छोड़ दे तो मदारी फौरन चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़ेगा पत्ते काटों में से निकालने से फिर ठीक हो जायेगा ।

व्योपार बढ़ाने का यन्त्र–इस यंत्र को दीवाली के दिन महालक्ष्मी का पूजन कर लाल चंदन से दुकान या बैठने की जगह पर लिखे तो व्यापार में बढ़ोत्री हो ।

६	७२	८	८
८	६	७	६२
७७	२६	८	२
७	५	७६	७४

इस यन्त्र को शुभ घड़ी में असगंध से भोजपत्र पर लिखकर दुकान की तिजोरी या गल्ला में रखदे तो व्योपार जरूर बढ़े ।

ढोल फूटने का यन्त्र–(१) इस यन्त्र को
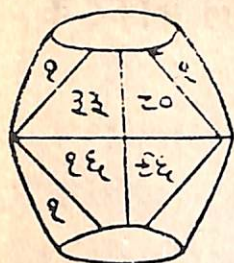
दिवाली या चन्द्र ग्रहण की रात को खरगोश की खाल पर कोयले से लिखे और जिस जगह ढोल बजता हो उस जगह छोड़ आवे तो ढोल फूटे ।

(२) सूखे हुए चमड़े पर तालाब की मिट्टी से लिखकर बजते हुए ढोल के सामने जाकर दिखावे तो ढोल फूल जावे ।

दुशमनी कराने का यन्त्र–(१) इस यन्त्र को कागज पर लिखकर जिन दो आदमियों के दरम्यान झगड़ा कराना हो उनके रहने की जगह में गाढ़ दे तो दोनों लड़ने लगेंगे ।

५	३५	१	१४
८	७	५८	७५
६४	५८	२६	४
५	९	२२	७५

(२) इस यन्त्र को गधे की लीद से कागज पर लिखे जिसके घर झगड़ा कराना हो उसके यहां डाल आवे तो जरूर आपस में झगड़ा हो ।

मसान का यंत्र–(१) इस यंत्र को कागज पर

लिख कर गले में बांधे तो मसान न सतावे।

५६	५७	६	६
६	६	४५	५३
७६	३६	६	८
७	५	७५	५४

(२) इस यन्त्र को शमशान की मिट्टी से कागज पर लिखे और पीले कपड़े में रखकर ताबीज बनावे फिर जिस मरीज के बाजू में बांधे तो मसान ना रहे।

भूत प्रेत नाशक यन्त्र—इस यन्त्र को जाफरान भोजपत्र पर लिखकर लौंग और कपूर के साथ रोगी के सामने धूनी दे तो भूत प्रेत दूर हो जाय।
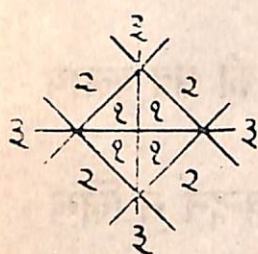
प्रेत नाशक यंत्र—(१) इस यन्त्र को शनिवार के दिन कागज पर काली स्याही से लिखे और पूजन

८५	६५	१	४५
६	२३	२६	१५
२५	८	८५	११
८	८३	८४	८५

करके उसमें आग लगादे तो मोहब्बत टूट जाय।

(२) इस यन्त्र को कोयले से लिखकर सिद्धि के मुताविक सिद्ध करके जिसे तुम प्रेम करते हो उसे दिखाओ तो प्रेम का नाश हो।

बलाय दूर करने का यन्त्र—(१) इस यन्त्र को भोजपत्र पर चन्दन से लिखकर विधि पूर्वक

८५	६७	६	९
६	४	६५	५२
७६	२३	९	८
७	५	५६	५४

पूजन करके घर में गाढ़ दे तो घर की सब बलाय दूर हो।

(२) इस यन्त्र को कागज पर लाल चन्दन से लिख कर बाजू पर बांधे तो बलाय दूर हो।

प्रेम बढ़ाने का यन्त्र-(१) इस यंत्र को कपूर से कागज पर लिखकर फ़िलेल जलादे तो प्रेम बढ़े।

८ १ २
९ ७
६ ३ ४
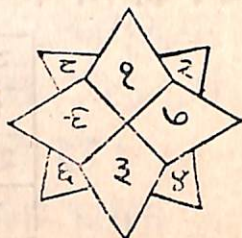
(२) इस यंत्र को रेशमी रूमाल पर रोली से लिखकर जिमसे तुम प्रेम करते हो उसके हाथों से उस रूमाल में आग लगवा दो तो वो प्रेम करने

लगे।

दुश्मन उच्चाटन यन्त्र–(१) इस यन्त्र को तांबे

के पात्र पर लोहे की कलम से लिखकर रखे तो शत्रु का उच्चाटन हो।

(२) इस यन्त्र को रेशम पर लिखकर तांबे के पात्र का ताबीज बनवाकर शत्रु के बांधे तो उसको जरूर २ उच्चाटन हो।

(३) यदि इस यन्त्र को लाल चन्दन से लिखकर एक टूटे हुए मटके में आग जलाकर कागज को उस आग में जलादे तो ज्यों ज्यों आग का धुआं निकलेगा त्यों त्यों दुश्मन को उच्चाटन होता जायेगा।

बुरे ख्वाब न आने का यन्त्र–(१) इस यन्त्र को इतवार के दिन कागज पर रोली से लिखे और ताबीज बनाकर जो भी उसे अपने गले में बांधे तो रात में सोते वक्त उसे बुरे २ ख्वाब न आवें।

(२) इस यंत्र को भोजपत्र पर लिख कर सोते समय सरहाने रखे तो बुरे ख्वाब बिलकुल न आवें।
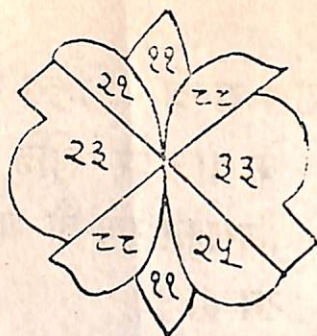
भूत दिखाई देने का यंत्र–(१) इस यन्त्र को गिलोय के रस में भोजपत्र पर लिखे और मंगल वार को रात के समय धूप और रोली से पूजन करके सोते समय इसे सरहाने रखे।

फट अदम फट
६ ३
कलेन ३ ६
सु आना
फट फट
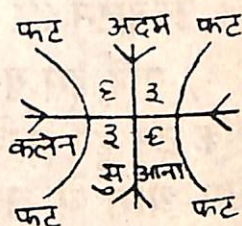
(२) इस यंत्र को शमशान की राख ने कागज पर लिखे और अपनी चारपाई के नीचे रखे तो भूत दिखाई दें।

आधा शीशी का यंत्र–(१) इस यंत्र को इतवार
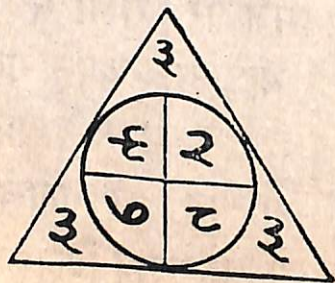
के दिन कागज पर लिख कर मांथे पर बांधे तो ठीक हो।

(२) सफेद चन्दन से कागज पर लिखकर गूगल वगैरहा की धूप देकर बांजू पर बांधे।

सर्प विष नासक यन्त्र-(१) इस यन्त्र को कागज पर चन्दन से लिख कर गंगाजल ने धोकर जिसके साप ने काटा हो उसको ये जल पिलाने से ठीक हो जाता है।

७७	५५	५	९
६	९	४५	५३
७६	३६	९	८
७	५	७४	५४

(२) इस यंत्र को लाल कपड़े पर लिखे और सिद्धि करके ताबीज बनाकर दाहिने हाथ में बांधने से जहर उतर जाता है।

सर्व सिद्धि यन्त्र-(१) इस यन्त्र को चीड़ की लकड़ी से लिखे तो चक्रवर्ती राजा भी वश में हो।

३९	३३	५२	४९
१४	३६	५३	६१
४४	११	३२	७५
५४	४५	२२	४६

(२) इस यन्त्र को भोजपत्र पर सफेद चन्दन से लिखें, सिद्धि प्रयोग के अनुसार अपने साथ जिस राजा के पास ले जावे वो जरूर वश में हो जावे।

शत्रु का मुँह सुजाने का यंत्र-(१) इस यंत्र को इतवार के दिन शत्रु का नाम तेल से कागज

१६	१५	३६	१६
२६	४९	३४	६३
७४	६१	२१	६४
४४	५२	५६	६५

पर लिखकर जमीन में दबा दे तो दुश्मन के मुंह पर सूजन आ जावे।

(२) लोहे की कलम से लिखकर जूता मारने से

शत्रु का मुंह सूजे ।

कुम्हार के बरतन बिगड़ने का यंत्र–(१) इत-

८	५६	१	३५
२६	४२	३४	६२
७४	११	२१	१५
५४	४२	५६	७५

वार के दिन इस यंत्र को कुम्हार के चाक पर लिखने से बर्तन बिगड़ें ।

(२) इस यंत्र को नीले कागज पर रोली से लिख-कर जिस जिस कुम्हार के आंव के नीचे जमीन में गाढ़ देवे उसका एक भी बर्तन पकने न पावे ।

औरत कष्ट निवारण यन्त्र–(१) इस यंत्र को गधे की हड्डी पर लिखकर औरत की कमर में बांधे तो ठीक हो ।

७६	५०	६	५४
६	४२	६२	१५
५७	७२	८५	११
८	३८	८४	५८

(२) इस यन्त्र को गधे के चमड़े पर हरे रंग की स्याही से लिखे और उसको औरत के रहने की जगह पर ही रखे तो उसको कोई तकलीफ न रहे।

शत्रु भयनाशक यन्त्र-(१) इस यंत्र को धतूरे के रस से लिख कर गले में बांधे तो भय न हो।

९	४४	९	५१
७४	४	४	५२
३	२८	२९	९१
९	५	३८	४५

(२) इस यन्त्र को आक का दूध लाकर कागज पर लिखे और सिद्धि के मुताबिक हमराह उसे रखे तो कभी भी किसी शत्रु की तरफ से डर न रहे।

कुत्ता नचाने का यन्त्र-(१) इस यन्त्र को इतवार के दिन कुत्ते के कान पर लिखे तो कुत्ता नाचने लगे।

७	४	५७	३२
५२	९	६२	५२
४५	५४	१	११
३५	८९	८३	८५

(२) इस यन्त्र को शमशान की राख लाकर किसी पत्ती की खाल पर लिखे और कुत्ते के गले में बांध दें तो वो नाचने लगेगा।

(३) इस यन्त्र को शनिवार के दिन लिखकर कुत्ते की दुम में बांधे तो भी नाचने लगे।

सर्प नाशक यंत्र-(१) इस यन्त्र को मालकंगनी से लिखकर घर में रखे तो सांप न आवे।

७५	७५	४	६
६	१	२५	३५
५७	६२	६	८
७	५	३७	५३

(२) इस यन्त्र को कौवा की बीट पानी में घोलकर केले के पत्ते पर लिखे और गूगल की धूप देकर उस पत्ते का रस निकाले फिर उस पत्ते के रस को सांप के बिल पर छोड़ आवे तो सांप भाग जाय।

नजर मारन यंत्र-(१) इस यन्त्र को तांबे के पत्तर पर लिखे और ताबीज बना बालक के गले में मंगलवार व इतवार को बांधे तो नजर न लगने पावे।

४६	१	८५	८५
८	९	४२	२५
७८	७२	९	५५
७	५	३९	८

(२) इस यन्त्र को कोयले से कुम्हार के आंवे का ठीकर लेकर उस पर लिखे और बालक के खेलते समय वो घर से बाहर जाते समय साथ रखे तो उस बच्चे को कभी भी नजर न लगे।

सर्व सिद्धि यंत्र–(१) इस यन्त्र को भोजपत्र पर गीदड़ के नाखून से लिखकर गूगल वगैरह की धूप देकर बाजू पर बांधें तो जो भी काम करे सिद्ध हो।

६	४४	९	५१
४	४	२	५२
८७	२८	८७	९१
९	५	३९	४५

(२) इस मन्त्र को भेड़ के दूध के साथ कागज पर लिखे और अगर असगंध वगैराह की धूप देकर किसी पीपल के नीचे गाढ़े तो सब काम

सिद्ध हो।

भय निवारण यन्त्र–(१) इस यन्त्र को लिखकर बालक के गले में इतवार के दिन बांधे तो बच्चा डरे नहीं और ख्वाव में रह २ कर चौंकना भी बन्द हो जाय।

६३	१	८५	८५
८	६	६२	२५
७८	७२	६	५५
७	५	३६	८

(२) इस यन्त्र को लाल कागज पर तुलसी के पत्तों का रस निकाल कर उससे लिखे और जो बालक डरता हो उसे दिखाकर जंगल में दबा आवे तो उस का डर दूर हो।

शत्रु मुख भजन यंत्र–(१) इस यन्त्र को लोहे

७१	४२	१	१०
८७	७	६५	७८
२६	४१	११	४२
५७	१३	६४	७५

की कलम से कागज पर लिखे और साथ ही उसमें दुश्मन का नाम भी लिखदे फिर उस पर जूता मारे तो शत्रु का मुंह भजन हो।

(२) इस यन्त्र को कागज पर गधे की लीद से लिखे और बाजू पर बांधकर अपने शत्रु के सामने जावे तो उस का मुख भजन हो।

आधा शीशी का मंत्र–ॐ नमों में बसी बानवी उछल पेड़ पर जाय कूद कूद शाखन पर बैठी फल खाय आधा तोड़े फोड़े आधा जबरन मोड़े, खोल धरे जो घूंघट अपना आधा शीशी जाय।

विधि–जमीन पर हाथ पानी खींचे और सात आड़ी लकीरें काटता चले इस तरह कई मरतबा करे तो आहिस्ता आहिस्ता आधा शीशी का दर्द ठीक हो जाय।

शत्रु नाशक मंत्र–ओंम हरे क्ली आयली भौग पुरवा भैरवी मातंगी त्रिलोक बसे मास्या स्वाहा।

विधि–इस मन्त्र का एक हजार जाप करे गोरोचन और मैन्सल का तिलक लगाकर शत्रु के पास जावे मन ही सात बार इस मन्त्र को पढ़कर हर बार एक

उड़द के दाने पर फूंक दे फिर इन सातों उड़दों के दानों को दुश्मन पर फेंकदे तो या तो वो दुश्मन तुम्हारे वश में हो जायेगा या फिर बीमार होकर १ चारपाई पर ही पड़ा रहेगा।

शत्रु नाशक यंत्र
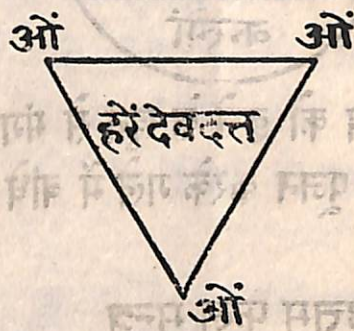
विधि—इस यन्त्र को कौवा का पंख लेकर हर-ताल से लिखे और रात के समय पूजन करके शम-सान में गाढ़ आवे तो शत्रु की अचानक मृत्यु हो।

बिच्छू का जहर उतारना—ॐ नमों आदेश गुरु को समुद्र समुद्र है खाई इस मंत्र को सिद्ध करे फिर जिस को बिच्छू ने काटा हो इस मन्त्र को पढ़कर पानी पिला दे तो जहर उतर जाये काटा हुआ शांति पाये।

उच्चाटन का यंत्र

विधि–इस यन्त्र को कुत्ते के खून से मंगलवार को लिखे विधि पूर्व पूजन करके गले में बांधे तो उच्चाटन हो।

उत्तम फल मन्त्र

विधि–इस यन्त्र को गोरोचन कुमकुम से भोजपत्र पर लिखे और शराब के सम्पुट में रखकर धूप वगैराह से खूब अच्छी तरह पूजन करे, दूसरे दिन निकाल कर अपनी चोटी में बांधे तो इसका फल मिलेगा।

मन्त्र बिच्छू उतारने का–ॐ नमो कांमरू देश का मार्द्धा देवी जहां बड़े इस्तेमाली जोगी ने पाली

कुत्ती दस कालीदस काबरी दस पीली दस लाल रंग बिरंगा दस खड़ी दस ठिकावें भाल इनका विष हनुमंत हरे रच्चा करे गुरु गोरखनाथ फुरो मंत्र ईश्वर वाचा।

विधि—इस मन्त्र को ग्रहन की रात को एक हजार बार जपे तेल का दीपक जलावे मिठाई का भोग लगावे इस तरह सिद्ध करके जिसके काटा हो उपलो की राख सात बार मन्त्र पढ़कर काटी हुई जगह के चारों तरफ लगादे तो जहर धीरे २ उतर जायेगा।

विदेश में शत्रु मारने का यंत्र

विधि—इस यंत्र को मोर के पंख से लिखकर शराब
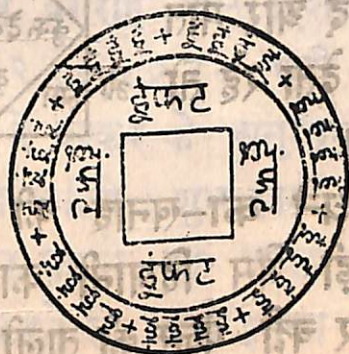
के बर्तन में रख उसका मुंह बंद करदे और शमशान

भूमि में गाढ़ आवे ऐसा करने से जब उसके ऊपर सूरज की किरनें या वारिष पड़ेगी तब विदेश गये हुए शत्रु पर रोग सञ्चार हो जायगा।

बसीकरन मन्त्र–ॐ ननो किस पर कामनी अमुकी विशायमान हूं फट स्वाहा।

विधि–तांवे की पुतली लेकर इसका पूजन करे और मौम रहकर हर रोज एक सो जाय २१ दिन तक करके पुतली के सामने कुछ फूल लेकर जिस आदमी पर डाले वो फौरन वश में हो।

अग्नि शांत यन्त्र

विधि–इस यन्त्र को भोजपत्र पर पीली स्याही से लिखकर जमीन में दबा दे और सात दिन तक पानी देता रहे तो अग्नि शांत हो।

ओं ओं
ओं लम गुरु लम ओं
कुरु देवदत्त कुरु
ओं लम कुरु लम ओं

मन्त्र हांड़ी बांधने का–खनाह की माटी चूने का पानी गधे चढ़ी भैंस हिलानी काची हांड़ी कच्ची पाली ऊपर चढ़ी पंजर की ताली तले भैंरू की कीलें ऊपर नरसिंह गाजे बांधी हांड़ी उबले तो

गुरु गोरखनाथ–लाज रखे।

विधि–रास्ते की सात कंकरी लाकर हर एक कंकरी पर मंत्र पढ़ कर सात बार हांड़ी पर मारे तो वो हांड़ी बंध जायेगी यानी गरम ना होगी चाहे जितनी आंच पर उसे रखा जावे।

मन्त्र दाढ़ के दर्द का–ॐ नमो देवताये विथा या खंडताये नमो नमः।

विधि–इस यन्त्र को एक बार किसी एक कांसी के कटोरे में भरे हुए जल पर फूंके और थोड़ा सा कपूर डालकर रोगी को पिलादे तो दांत का दर्द फौरन अच्छा हो जायेगा।

चद्र भ्रमण विचार–मेख सिंह धन वगैराह का चन्द्रमा पूरब वगैराह आंठ दिशाओं में क्रमशः १७,१५,१२,१६,१४,२० घड़ी भ्रमण करता है चन्द्र राशी में चक्कर के अनुसार दिशा जानकर काम करना चाहिये। शुभ कामों के लिये चन्द्रमा दाहिने और सामने का अच्छा होता है किसी काम को करने से पहले इसका ध्यान रखें मेष, सिंह और धन का चन्द्रमा पूरब में वृष, कन्या और

मकर का चन्द्रमा दक्षिणमें मीन तुला और कुम्भ का चन्द्रमा पश्चिम में कर्क वृश्चिक और मीन का चन्द्रमा उत्तर में वास करता है इस बात का ध्यान रखे ।
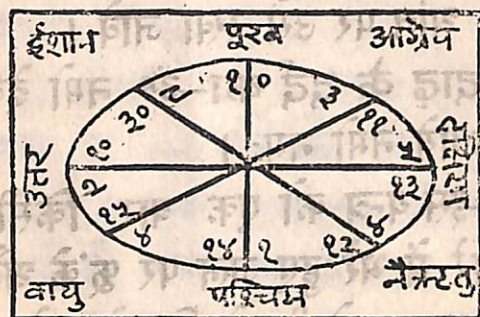
योगिनी दिशा चक्र-परवा नौमी पूरब वासा उत्तर दोत्यां विदर्शमी नवाला तीस इकादशी आग-

नेय रही नैरत्य कौन में चौथे दुहाई पंचमी नेरस
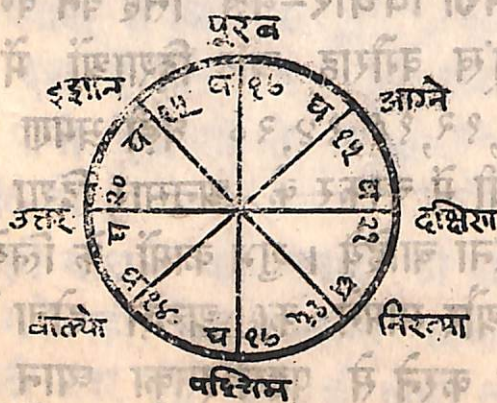
दक्खिन विराजे चौदस के दिन शिवजी गाजे पूनम साते वायु रही आठ अमावश शहई योगिनी बहू-काल दिखाय सन्मुख दाहिने नहीं दिखाय। बायें पीछे रक्षक होई। बस ज्योतिष के लक्षण येही।

आसन विचार—इन समस्त विचार के साथ आसनों का भी भेद रखना चाहिये जैसा के शुरू में बताया गया है। इसके अनुसार कर्म चरम को देखकर कम शिखर पर आसन बिछाकर बैठे तो मंत्र सिद्ध होवे जिस जगह पर बैठे उसके नौ हिस्से करे फिर जगाह के मिले हुए हरफों को देखे उसके भी नौ हिस्से करे फिर पहले अक्षर में मात्रा होवे तो इसी में आसन बिछाकर बैठे। इसी तरह दिन और दिशाओं का भी विचार है जिस दिन लिखने और मंत्र जपने बैठे उस दिन पूरब दिशा में करे दूसरे को अग्निकोण में दक्षिण इसी तरह उत्तर में सातो दिन करे इसका कोण खाली रहे अगर शुभ काम हो तो चन्द्रमा वगैराह को सामने रखे तो योगिन दिशाशूल निकृष्ट दार को पीछे और बायें रखे तो कारज सिद्ध हो।
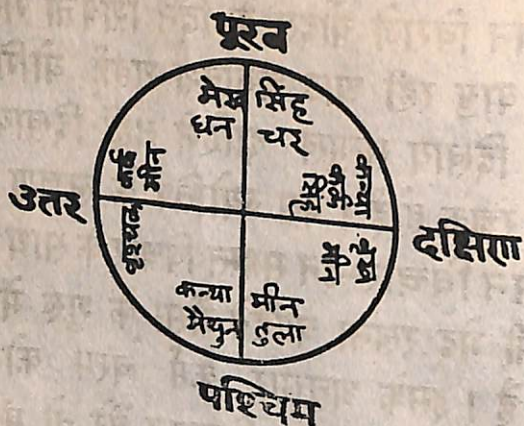
बसीकरन सुपारी मन्त्र–ओं नमो भगवते वासुदेवाय त्रिलोक नाथ तिरपुला बारनाये असोकम यम विषमं कुरु २ स्वाहा।

विधि—इस मंत्र को साही योग में १०८ बार जपे और जिसको अपने वश में करना हो उसका नाम सुपारी पर पढ़ कर फूंक दे जिसको ये सुपारी खिलादे वश में हो।

बसीकरन पान मन्त्र—हरें पान हरलाये पान चिकनी सुपारी श्वेत खर दाहि के कर में चूना ही ले हाथ रस लेवे पेट दें टीट रसले श्री नरसिंह वीरथारी शक्ती मेरी भगती फुरो मंत्र ईश्वर महा-

देव जी की वाचा।
विधि—एक देशी पान लगाकर सात बार ये मंत्र फूंके तो जिसे खिला दे वश में हो।
अन्य बसीकरन मंत्र-ॐ श्वेत परन सुत पर्वत वासनी ऊपर ती हितम कार्य कुरु कुरु ठ ठ स्वाहा।
विधि—मिट्टी समेत सफेद पमिंटा के फल कोले आटा और कृष्णा पक्ष की चतुरदश या अष्टमी को जमीन में गाढ़ देवे और नीचे लिखा हुआ मंत्र पढ़कर सींचे।
ओं नमो हरें भगवती हरें श्वेतवासे अग्र स्वाहाः।
राजा बसीकरन मन्त्र—ॐ नमो आदेश गुरु का जिला बांधू शहर बांधू, शहर बांधू, अग्नि बार बन बांधू शो पत्र हर चुन्ड बांधू राजा इकरसा आसन छोड़ मुझे वैसन देशी असली जो कूं चन्दन ललाट टीको कांठी बिसर्जन कमाऊं पीर गुरु की भक्ति मेरी फ़ुत करो। मंत्र ईश्वर वाचा।
विधि—धूप दीप नेवैद्य देकर के पारवती का ध्यान करे शनिचर के दिन से शुरू करके इक्कीस रोज तक जाप करे मंत्र सिद्ध हो जायेगा बाद में

कुमकुम चन्दन गौरोचन मिलाकर गाय के दूध में तिलक कराके जो सामने जावे तो देखते ही राजा वश में हो जाय।

अन्य राजा बसीकरन मन्त्र–ॐ धूं धूं बीन बीन चीन धां धां जन्नत दरवित भाजान कहता वो मातंगी ममान अमां अमां ओंत्त ओंत्त फट २ ठ ठ ओं फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–सफेद रंग के रेशमी कपड़े पहनकर मोती माला से जाप करे श्वेत दुर्गा और कामनी के फूलकी आगने आहुती दे तो राजा वश में हो जाय।

वैश्या बसी करन मंत्र–ओं कनक काकुनी आठ बाठसोल राजापांचाल पांचाल ओं यम यम यम नवः स्वाहा।

विधि–बेलके पेड़के नीचे काले मुर्ग के चरमासन पर बैठ कर सफेद कांसनी के फूल और बेल के पत्ते लेकर मंत्र पढ़ २ कर अग्नि से आहुती दे जिस वैश्या का ध्यान मन में करे फौरन वश में हो और बगैर पैसों के वही दासी बनी रहे वफादारी में जरा भी शक नाहो।

सर्वजन बसीकरन मंत्र—ओं नमो आदेश गुरु का राजा मोंहू पिरजा मोंहू, मोंहू वा ब्राह्मण बनिया हनुमंत रूप में जगत को मोंहू जो रामचन्द्र पर मनियां गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वर वाचा।

विधिः—इस मंत्र को पहिले २१ दिन तक एक हजार बार जपे और चन्दनफूल धूप दीप नैवेद्य से उसकी पूजा करता रहे भगवान रामचन्द्र का ध्यान जप कर चौराहे की धूल उठाकर उस पर २१ बार इस मंत्र को जप कर माथे पर बिन्दी लगा दे जो उसे देखेगा वह वश में हो जायेगा।

त्रिभुवन बसीकरन यंत्र—इस यंत्र पुष्य नक्षत्र में जाफरान की स्याही बना कर अनार की कलम से भोज पत्र पर लिखे और चन्द्र ग्रहण या दीवाली की रात को कांसी के बर्तन में थोड़ा सा गुलाब का इत्र डाल कर इस यंत्र को रात भर उसमें भीगा रहने दे दूसरे दिन से उसका तिलक माथे में लगा दे।

त्रिलोक्या बसीकरन भूतनाथ यंत्र–ओं नमो भूत नपाया समस्त भूतानि साध्य हूं ओंनाम फट २ स्वाहा।

विधि–इस मंत्र का एक लाख बार जाप करने से आकाश पाताल के सब जीव वशीभूत होते हैं।

टिड्डी दूर करने का मंत्र–ओं आमीर गंगेल का तीर उलटा आया सीधा भाय अनेक

विधि–इसको कागज पर लिखकर जहां टिड्डी हो वहां पर आग लगा दे तो टिड्डी भाग जावे।

सिह बांधने का मंत्र–ओं नमो हूकाल बकाल आखी खिल खिल खेलत बंधत हित जाय जाहूत जाहूत।

विधि–इस को २१ बार इमली फूल पर पढ़कर शेर के ऊपर फेंकदे तो सिंह बंधे।

डाकिनी का यंत्र–इस यंत्र को खैर की लकड़ी के कोयले से चमड़े पर लिखे तो मस्त डाकिनी लिखने के पाससे भाग जावे।

(२) इस यंत्र को नीबू के रस से कोरे कागज पर लिख कर शमशान की जगह में पीपल के पेड़ के

नीचे गाड़ आवे तो तमाम डाकिनी इस पर योग करने वाले के पास न आएँ।

३८	६५	१	२९
५	६३	६२	१६
४५	५	८९	६६
८	६६	६८	५८
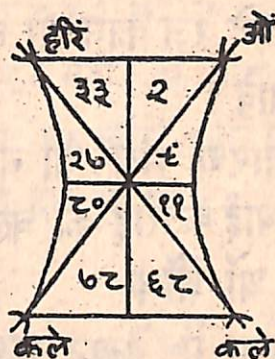
गये हुए को बुलाने का यंत्र–इस मंत्र को रास्ते की धूल से कागज पर लिखे और फिर एक नीम के पेड़ पर चिपका कर उसपर कौड़े मारे। तो गया हुआ आदमी लौट आवे।

(२) इस यंत्र को गये हुए आदमी का नाम तलाब की मिट्टी लेकर वरगद के पत्ते पर लिखकर आने वाले की दिशा में गाड़ दे तो वो फौरन चला आवे।

काम दर्द मी फूंक का मंत्र–ओंम कनक पसार वानुवर धारम प्रवेश कर डार डार पात पात झार-

झार मार मार हंकार शब्द सांचा आदेश गुरू का फुरो मंत्र ईश्वर वाचा।

विधिः-सर्प की बांधी रज से २१ बार इस मंत्र को पढ़ कर झाड़दे रज कान से लगा दे तो सब तरह का रोग जावे।

कंठ कष्ट निवारण मंत्र-ओं नमोनार संनहार आदेश गुरू का धाई कतराई का चलता करता बज्र वेदन भेदन ओं ओं ओं।

विधि-उत्तर दिशा में बैठकर कुंआ के पास की घास को इस मंत्र को पढ़कर मरीज को देने से कंठ या गले की बाधा दूर रहती है घास मरीज अपने गले छुआता रहे।

मोहिनी मंत्र-इस मंत्र को अष्टधातु की कलम से खरगोस या भेड़यें की लहू से भोज पत्र पर लिखे और चान्दी के तावीज के बंद करके दाहिनी बाजू में बांध तो बसीकरन हो।
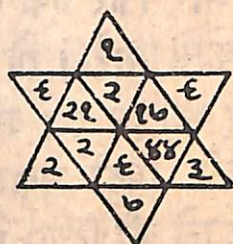
भूख न लगने का मंत्र-ओं गुजा दर्दियां उन मुख सुख मास घल तो मी आहूंम आहूम।

विधि—अगर चरगोई का फूल इस मंत्र को पढ़कर खाले तो भूक न लगे।

माथे की पीड़ा हरने का यन्त्र—चांदनी रात में इस मंत्र को बैठ कर मरीज के सामने एक लोहे की कील से जमीन पर खींचे और सात लोटा पानी और छोड़ दे तो दर्द दूर हो।

नकसीर छूटने का मंत्र—ओं मारवती लारती घों दिशा धावती पार्वत करे खंडखंड उड़के देवे दंड स्वाहा।

विधि—इस मंत्र को पढ़ कर पानी में फूंक मारे और उस पानी को नाक से ऊपर खींचे तो नकसीर ठीक हो।

शूल होने का यन्त्र—इस यंत्र को कनेर के पत्ते पर स्याही से लिखें और दुश्मन का नाम लेकर

७	४५	६	८४
२	५	७७	१६
८७	६८	८	२
६	५	३६	७५

उस को कील से छेदे तो उसके शूल उठने लगे।
(२) ऊपर के यंत्र को सफेद कपड़े पर सेई का काटा ला कर नीली रोशनाई से लिख कर दुश्मन को दिखाकर जमीन में गाड़दे और उस जगह तीन किसी को न जाने दे तो शूल उठे धूप छायरु का असर पड़ने के साथ ही दुश्मन के पेट में शूल उठना शुरू हो जायेगा।

मर्द को वश में करने का यन्त्र—इस यंत्र को

१	६५	१	६२
७८	६	२	५२
६७	२८	८७	६१
६	४	३६	४५

बानके रस से लिख कर बाजू पर बांधे तो वह मर्द औरत के वश में होकर उसके हर हुक्म का पालन करे।

(२) इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर औरत अपनी साड़ी से बांधे तो उसका मर्द (खाविन्द) उसके वश में हो जाय यह निश्चय सच बात है।

शत्रु वशोकरण यन्त्र—इस यंत्र को नगाड़े पर लिख कर नगाड़ा बजादे तो शत्रु वश में हो।

२७	११	६	८९
४४	३४	४३	५६
२१	१७	७१	६६
११	१८	८१	३३

(२) ये यंत्र कागज पर लहू से लिख कर शत्रु के सामने गाड़ दे और उसको सात रोज तक पानी देता रहे तो दुश्मन वश में हो।

नोटः—अगर किसी कारण से शत्रु वश में नहीं तो फिर उस कागज को लाकर जला दे।

स्त्री बसीकरण मंत्र—इस मंत्र को स्त्री के रज

यानी माहवारी के खून से या चन्दन से हथेली पर या कागज पर लिख कर औरत को दिखादे तो वह अपने वश में हो।

३९	२७	८८	२७
११	५६	५८	३३
३३	१५	९३	१९
३२	७२	६४	११

(२) इस यंत्र को लाल रंग के कागज पर चन्दन से लिखे इत्र से तर करदे फिर जिस औरत को वश में करना हो उसकी साड़ी में पिन के साथ लगा दे तो वश में हो।

बचन सिद्ध मंत्र—इस यंत्र को भोजपत्र पर कुलजन के रससे लिखकर सोने के ताबीज में भरवाकर गले में बांधे तो बचनसिद्धि प्राप्त हो।

६८	३७	३	८
८	९	२७	२६
८७	२७	१	८
७	५	७७	९४

(२) इस मंत्र को लालरंग के कपड़े पर दूध से लिखे और उसका तावीज बना कर बांधे तो शर्तियां ही बचन सिद्धि प्राप्त हो।

बुद्धी पैदा होने का यंत्र-(१) इस यंत्र को शुक्ल पक्ष की चतुरदशी की रात को अपनी जीभ पर लिखे तो बुद्धि बढ़े।

७	७४	९	५६
२२	९९	११	३७
२७	१५	३३	४९

(२) इस यंत्र को गुलाब की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर एक पीले रंग के रेशमी कपड़े में रखकर ताबीज बनाले बसंत पंचमी या सरस्वती पूजा के विधिपूर्वक धूप दीप से पूजन के बाद अपनी दाहिनी भुजा पर बांधे।

खाना ज्यादा खाने का मंत्र-इस मंत्र को भोजपत्र पर कीटी के खून से लिखकर चूल्हे के पीछे गाढ़ दे तो खूब खाये।

(२) इस मंत्र को चन्दन से भोजपत्र पर लिखकर भोजन करते समय अपनी थाली के नीचे रक्खे।
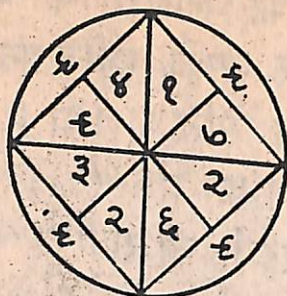
विच्छू निवारन तंत्र–एक विच्छू को मारकर धूनी देने से घर के सब विच्छू भाग जायेंगे।

नकसीर मंत्र–(१) कागज में नौसादर रख कर सूंघने को देवे तो नकसीर बंद हो जायेगी। (२) ऊंट के बालों की सूंघनी बनाने और धूप में बैठकर सूंघने से नकसीर बन्द हो जायेगी।

विवाह होने का तंत्र–अगर किसी का विवाह न होता है तो मंगलके दिन चींटियों को आटा डाल दिया करे और उसी दिन उपवास रखे तो तो उसका जल्दी ही ब्याह होगा ऐसा विद्वानो का कहना है।

बसीकरण पान मन्त्र–हरे पान पर लाये पान चिकनी सुपारी श्वेतखर दाहिने कर चूना मोही लेहापान हाथरस लेवे पेट टीटरस ले श्री नर सिंह

वीर थारी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो बाचा।
अर्द्ध कपारी का यंत्र—इस यंत्र को बरोज इतवार स्याही से लिख कागज को सुअर के बैठने की जगाह गाड़ दे और वहां की रज लावे तो आधा शीशी दूर हो।

(२) इस यंत्र को अच्छे नक्षत्र में सुरमा से कागज पर लिखे और फिर किसी पेड़ के नीचे गाढ़ आवे और कुछ दिन बाद उसको उखाड़ लावे।

३८	८५	१	३२
६	७	२६	५२
४८	४६	८७	७६
८६	६८	३४	११

शत्रु मारन यन्त्र—इस यंत्र को कागज पर हाथी दांत से लिखकर मरघट में गाढ़े।

(२) इस यंत्र को पेड़ के नीचे की धूल लाकर कागज पर लिखे और उसके दाहिने स्थान पर गाढ़ दे तो जरूर शत्रु की मृत्यु हो।

(३) अगर फिर भी जिन्दा रहे तो अमल व भावना की ही कमीं समझो ऐसी हालत में शुद्ध मन से

फिर करना शुरू करदे।

१३	६	१२	४८
१७	११०	८८	११
१३	५२	७८	३६
४८	१०२	८५	१७

राजमान यन्त्र—इस यंत्र को चेमेली की कलम से लिख कर अपने बांजू पर बांधे तो राजमान हो।

(२) इस यंत्र को अगर गुलाब जल से भोजपत्र पर लिख कर अपनी भुजा पर बांधे तो राज दरबार में जाने से इज्जत मिले।

कान दर्द से छूटने का यन्त्र—इस यंत्र को अनार के रस से कागज पर लिख कर अगर कान
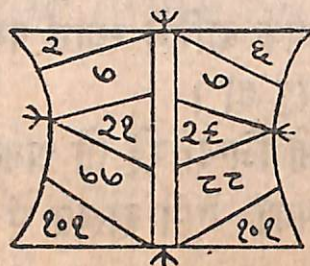
में बांधे तो कान दर्द दूर हो जायेगा।
(२) इस यंत्र को तुलसीपत्र पर लिखे बाद में इसका रस निकाल ले और गरम करके कान में डाले तो कान का कष्ट दूर हो साथही कटेली झाड़ चम्मच नुमा पत्ता करके इस का अर्क भी कान में डाले।
चाक पर बर्तन चिपकाने का यंत्र–इस यंत्र को कुम्हार के चाक पर खैर की लड़की के कोयले से लिखे तो बर्तन चाक पर ही चिपक कर रह जाय छूटे नहीं।
(२) इस यंत्र को मौलश्री के रस में लाल कागज पर लिख कर कुम्हार के चाक के नीचे गाढ़ आवे तो उसका एक भी बर्तन साबित न उतरे।

३	८	७
५	२११	६
४२	६४	३३

मोहिनी यन्त्र–इस यंत्र पुष्य नक्षत्र में भोजपत्र पर दूध से लिख कर बांजू पर बांधे तो वह औरत दासी बन कर रहे।

(२) इस यंत्र को लाल रंग के कागज पर चन्दन

४४	१७	८६	३
८३	९४	१८	९२
२४	८७	२६	२८
३२	५१	५८	११

से लिखे और इत्र में भिगोकर जिस औरत को बश में करना हो उसकी साड़ी में लगादे तो मनोरथ सिद्ध हो।

कुत्ता भौकने का यंत्र–इस यंत्र को काली स्याही से शनिश्चर के दिन कुत्ते के कान पर लिखने से कुत्ता भौकने लगेगा और जब हटा देंगे तो भौकना

३७	७४	८	९
६	६	७१	७३
७६	६८	८	९
५	८	३९	७५

बंद हो जायेगा।

(२) इस यंत्र को पंजावे की मिट्टी लाकर उससे बेल के पत्ते प' लिखे और जिस कुत्ते को भोकना हो उसे बेल का वह पत्ता खिलादे कुत्ता भौकने लगेगा।

व्यापार बढ़ाने का यंत्र–बरोज़ दिवाली या ग्रहण की रात को अनार की कलम बना कर बड़ी खूबसूरती से लाल चन्दन घोलकर अपनी दुकानपर लिखे तो व्यापार ज्यादा हो।
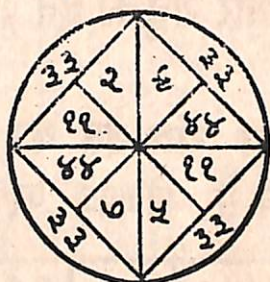
(२) इस यंत्र को पुष्प नक्षत्र में भोजपत्र पर असगंध से लिखे और दुकान पर अपने गल्ले में रखकर रोज धूप जलाया करे तो व्यापार में खूब नफा हो।

लड़ाई झगड़ा कराने का यंत्र–इस यंत्र को

मंगल के दिन उल्लू के पंख से कुम्हार के आवे से निकले हुए ठीकरे पर लिखे और दुश्मन के घर में फेकदे तो जरूर लड़ाई हो।

(२) इस यंत्र को कपिला गाय के गोबर से आक के पत्ते पर लिखे और शत्रु की छत पर डाल आवे तो झगड़ा हो।

जुऐ में जीतने का यंत्र—इस यंत्र को गोरोचन केसर और असगंध से भोजपत्र पर स्वाती नक्षत्र

८	६४	८	१६
४६	३४	६४	५४
६४	२१	१२	२१
४४	१५	६५	५६

में लिख कर दीवाली को पूजा कर दाहिने बाजू से जुआ जरूर जीते।

(२)—इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर मुकाबिल जुऐ बाज के नीचे रखकर और कागज पर लिखकर अपने नीचे रख छोड़े तो जरूर व जरूर जीत होगी।

विदेश में गये हुए को बुलाने का यन्त्र—इस

यंत्र को रास्ते की धूल से कागज पर लिखे और उस लिखे हुए पर कौड़े की मार लगाये तो कुछ ही

३८	६५	१	२१
६१	६२	२६	१६
४२	८४	१४	४८
८२	६७	७५	२७

कुछ ही दिनों में गया हुआ आदमी लौट आये।
(२)-इस यंत्र को नींबू के रस से कोरे कागज पर लिख कर शमशान में पीपल के नीचे गाढ़ आवे तो विदेश गया हुआ आदमी फौरन वापस चला आवे।
डांकिनी दूर करन का यन्त्र-इस यंत्र को आंक (मदार) के दूध से कागज पर लिख कर रात में

८०	६४	२१	१७
३६	१३	६४	५३
६६	१६	२१	११
३४	२५	६५	५६

सोते समय सरहाने एक जूते के नीचे दबाकर सो

जाये तो डाकिनी दूर हो।

(२)–इस यंत्र को चिरमटी की जड़ पीस कर पानी में घोल अनार की कलम से कागज पर लिखे और मरीज के सहराने गूगल की धूनी में कागज को जला दे तो मरीज तन्दुरुस्त हो।

महा मोहन मन्त्र–ओं भैरू घू घू ठंठ ओं हरें स्वाहा पड़वा के दिन चिप का पत्ती का पंख लाकर कस्तूरी में पीसकर मंत्रको पढ़कर फूंके फिर उसका माथे पर तिलक लगाकर जहां भी जाये देखे वह फौरन वश में हो जाय जो चाहे उससे अपना कामले वह इंकार नहीं करे।

राजा बसीकरन यन्त्र–इस यंत्र को अष्टगंध और तुलसी की कलम से सफेद पीपल के पत्ते पर

१०	६०	६०	१०
६०	१२	१३	८०
२०	७०	७०	४०

लिख कर सोने के तावीज में मढ़े और दाहिनी बाजू में बांध कर राज दरबार में जावे तो देखते

ही राजा वशीभूत हो कर इज्जत से पेश आवे।
(२)-पुष्य नक्षत्र में इतवार के दिन सहदेयी को उखाड़ लावे और साये में सुखा ले फिर पान में रखकर इस यंत्र के साथ छुआ कर जिस आदमी या औरत को खिलाये वो वश में हो।

बसीकरण यन्त्र-इस यंत्र का नाम चिन्तमणी है इसको चन्दन और सिन्दूर से भोजपत्र पर लिखकर माथे पर रखे तो डर नहीं लगे और केसर कस्तूरी से लिखे तो सब काम सिद्ध हो।
(२)-इस यंत्र को केसर कस्तूरी से किसी सफेद कपड़े पर लिख कर बत्ती बनावे और घी के दीपक

३	६	२१	७
२४	८	६	४२
२	१	७	८६

में रखकर उसे जला दे फिर उस की राख जिसे खिलादे वो वश में हो।

राजा या हकीम बसीकरण यंत्र-इस यंत्र को २१ दिन तक कागज पर लिखकर और आटे में

रखे फिर रोटी बनाकर काले कुत्ते को खिलादे और बाईसवें दिन की रोटी को जला कर उसकी राख माथे पर लगा फिर जिसके सामने जावे वह जरूर उसके वश में हो जावे ।
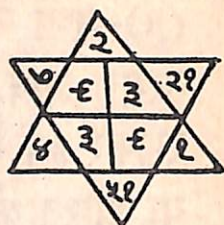
जगत बसीकरण मन्त्र—इस मंत्र का यह गुण है कि आदमी इस को सिद्ध करके जिस जगह या जिस रास्ते से होकर निकल जावे उधर जो औरत मर्द इसको देखे तो उसके वश में हो जावे या जिस सभा में जाके बैठे उस में सभी आदमी उसकी तारीफ के पुल बांधते हुए न थकें यह मंत्र बड़ा शक्ति वान है इसमें जरा भी सन्देह नहीं ।

मन्त्र ये हैं—ओं नमो भगवते रुद्राय नमः सर्व जगत विशेष कुरु कुरु फट २ स्वाहा । ये मंत्र महाबली महात्मा रावण का बनाया हुआ है इकतालीस दिन विधि पूर्वक जाप करने से इसकी सिद्धि होती है । विधि—स्नान करके बरगद के पेड़ की जड़ में अश्विनी नक्षत्र बरोज इतवार से सिद्धासन लगा कर बैठे और इस मंत्र का जाप करना शुरु करे

सवा लाख वार बड़ी श्रद्धा भक्ति के साथ इस मंत्र को जपे तो सिद्धि को पढ़कर फूंक दे तो वो जरूर २ वश में हो।

अन्य बसीकरन मन्त्र—ओं नमों भूवन भास्कराय जगदीशीम दरोया भवानी पश्चात मुखम पश्यन्ती तीतम विशेय स्वाहा।

विधि–चाक की मिट्टी आंवे की राख इन दोनों चीजों को मिला कर पहले चौंका लगावे फिर स्नानादि से निवट कर सुबह सवेरे कुद्धा सिन लगाकर बैठे और विश्वास के साथ लगातार रात दिन तक जाप करे एक ही सांस में पूरे मंत्र को पढ़े। इस तरह पूरे ४२ दिन में यह मंत्र सिद्ध हो जावेगा।

मर्द बसीकरन मंत्र–जिस औरत का पति या खाविन्द उसके वश में न हो दूरी औरत को चाहे या उसका कहना न माने उसे औरत को चाहिए

११ ३२ ७ ९९	११ २१। ३३ ९९
३ ८८ ७८ ११	३ ४ ८८ ११

के वह शनिचर की शाम से इस यंत्र को रोटी पर

लिखकर काले कुत्ते को खिलावे और ऐसा वह लगातार सात रोज तक करती रहे तो उसका पति जरूर वश में हो जायेगा।

बसीकरण तिलका–(१) बेल पत्र और मातंगल को बकरी के दूध में मिला कर तिलक करने से आम आदमी वश में हो जाते हैं।

(२)–भांग का बीज और घी कुआर की जड़ का माथे पर करने सब लोग वश में हो जाते हैं।

(३)–हड़ताल असगंध और सिन्दूर को केले के रस में मिला कर ललाट पर तिलक करे तो बसीकरण हो।

(४)–अपामार्ग का बीज बकरी के दूध में मिलाकर तिलक करने से सब लोग वश में हो जाते हैं।

(५)–पान और तुलसी के पत्तों को कपला गाय के दूध में मिलाकर मस्तक पर लगाये तो सब वश में हो।

(६)–मंगल और असगंध को आंवले के रस में मिलाकर माथे पर तिलक करे तो खूब बसीकरण हो।

बसीकरण–कोवा किसका धन हरे कोयल किस

को देय मीठे वचन सुना के जग अपना कर लेय। मगर भाइयो संसार बड़ा कठिन है या मूली नुसखे से काम नहीं चलता इसीलिये तंत्र मंत्र के जरिये सब कामों की सिद्धि बतलादी गयी है आदमी क्या पशु पक्षी भूत प्रेत सभी वश किये जा सकते है।

स्त्री बसीकरण तंत्र–कांगनी-तगर-कूट-चन्दन-नाग केसर काले धतूरे का पंचांग यानी फूल पत्ती बीज दहनी और जड़ इनसब दवाइयों के बराबर बराबर लेकर कूट पीस और कपड़छन करके एक गोली बनावे और साये में सुखा डाले फिर इस गोली को पान में रखकर जिस औरत को खिलादे चाह कितनी ही संग दिल क्यों न हो पान खाते ही वश में जावे।

बालक की हिफाजत का यंत्र–(१) इस यंत्र

७२	५१	३३	४२	१०
७१	९८	८२	९	१९
२५	३७	४९	५२	११
२२	४५	२७	९	७१

को तांबे के पत्र पर खुदवाकर बच्चे के गले में

बांधे तो बच्चे की नजर न लगे।
(२) इस यंत्र को अनार की कलम से केसर की स्याही बनाकर भोजपत्र पर लिखे और धूप दिखा कर दावे के ताबीज में बच्चे के गले में डाल दे तो कभी भी बीमार न हो।
आधा शीशी का मन्त्र–ॐ नमो आदेश गुरु का काली चिड़ी चिगधिग करे धोली आवे दास हरे जनी हनुमाना हांक मारे मिथवाई आधा शीशी नाश करे गुरु की फुरो मन्त्र ईश्वर वाचा।
विधि–इक्कीस बार मंत्र पढ़कर झाड़े तो आधा शीशी दर्द दूर हो।
मुर्दा से बातचीत करना—इस खेल को करने का तरीका भी बहुत अजीब है लोग इस खेल को देखकर बड़े ही दंग रह जाते हैं। यह खेल इस तरह पर है कि एक मुर्दा आदमी का जिस्म तमाम हाजरीन को दिखाया जाता है जिसमें कि बिलकुल जान नहीं होती सब लोग देखते ही कि वाकयी ये एक बेजान का मुजिस्मा इन्सान मगर प्रोफेसर साहब इस मुजिस्में के अन्दर अपने जादू के जोर

से जान डाल देते हैं और वह बात चीत करने लगता है जिसको देखकर लोग हैरान रह जाते हैं और बिलकुल ठीक मानने लगते हैं। कि वाकयी मुर्दा आदमी के अन्दर जान पैदा हो गयी है इस खेल को इस तरह किया जाता है कि एक मुजिस्मा इन्सान का बनावटी मिट्टी या लकड़ी का बनवाया जाता है और उसके अन्दर एक बिजली की मशीन फिट की जाती है और इसमें से एक तार लगातार बिजली के करेंट के साथ लगादी जाती है और कुछ तारों से उस मुजिस्मा के अन्दर तमाम ऐजाओ के अन्दर वायरिंग कर दिया जाता है। और फिर इस मुर्दा जिस्म को जिस वक्त के खेल करना होता है तमाम हाजरीन के सामने लाकर किसी चीज सहारे खड़ा कर दिया जाता है मगर ये बात याद रखने के काबिल है कि इस मुर्दा जिस्म को बाहर से रंग रोगन के साथ ऐसा पेंट किया हुआ होता है कि दूसरा आदमी पहचान नहीं सकता बस इसको किसी के सहारे खड़ा करके उसके पीछे गुप्त रूप से एक और आदमी खड़ा कर दिया जाता है फिर

प्रोफेसर साहब लोगों को अपने खेल की हकीकत समझाते हैं और कहते हैं कि ये मुर्दा अब मेरे जादू के जोर से बात चीत शुरू करेगा। आप लोग कोई सवाल करें ये उसका जवाब देगा इतना कहकर प्रोफेसर साहब अपनी जादू की छड़ी को इसके मुंह पेट और पैर तक घुमाते हैं और एक दो तीन कहते हैं बस तीन कहते ही इसका दूसरा साथी बिजली का बटन खोल देता है जिससे मुर्दा के अन्दर हरकत होनी शुरू हो जाती है जिसे देखकर लोग हैरान होते हैं। बाद में प्रोफेसर साहब हाजरीन मौंजिमा को मुखातिब करके कहते हैं। कि आप लोग कोई सवाल करें ये मुर्दा बराबर आपको उसका जवाब देगा बस उन लोगों में से कई मनुष्य ऐसे निकलेंगे। जो कि उस मुर्दा से कई तरह के सवालात करते जायेंगे और इस मुर्दा के पीछे जो दूसरा आदमी छुपकर गुप्तरूप से खड़ा हुआ है वो तमाम बातों का जवाब देता जायेगा मगर लुफ्त की बात तो ये है कि मुर्दा आदमी के होट भी हिलते जायेंगे जिससे लोग ये ही सम-

भेंगे कि शायद ये मुर्दा ही हमारी बातों का जवाब दे रहा है इस तरह चाहे सैकड़ों आदमी सवाल करेंगे।

मुर्दा के पीछे खड़ा हुआ आदमी इसका जबाव देता रहेगा लोग इस काम को देखकर हैरान व दंग रह जाते हैं। और आपको पूरा-पूरा जादूगर ही स्वीकार करेंगे जिस समय खेल को खतम करना हो उस समय प्रोफेसर साहब को फिर कोई इशारा

करके इस मुर्दा के सर पर अपनी जादू की छड़ी घुमानी चाहिये और लोगों को ये बताना चाहिये कि अब हम इसका जादू दूर करते हैं ये फिर उसी तरह से मुर्दा हो जायेगा और बाद में ये किसी की बात का जवाब न दे सकेगा बस इतना कहने के बाद छड़ी उसके सर पर फेर कर खुद अलग हो जावे और इसके पीछे छुपा हुआ आदमी भी पीछे की तरफ से निकल जावे और बिजली के तारों को भी अलग करदे फिर उस मुर्दा को उठा कर लोगों के सामने अन्दर ले जावे जब इसको उठालोगे तो लोगों को यकीन हो जायेगा कि वास्तव में मुर्दा है। जो कि खुद चल भी नहीं सकता और लोग और भी हैरत जुदा हो जायेंगे।

मुर्दा रूह से बातचीत करना—अगर आप के पास आकर कोई ये कहे कि मैं अपने फलां रिश्तेदार के साथ जो कि मर चुका है बातचीत करना चाहता हूं या वह स्वयं मुर्दा रूह के साथ बातचीत करने का इच्छुक हो तो पहले उस मनुष्य से ये बात कहो कि तुम अपने जिस मरे हुए रिश्ते-

दार की रूह के साथ हम कलाम होना चाहते हैं। इसका कोई कपड़ा जैसे कोट कमीज या पगड़ी वगैरा अपने घर से ले आओ। बेहतर हो अगर सर या गले का कोई कपड़ा मंगाया जाये कपड़ा मिल सके तो अच्छा ही है वरना फिर एक सादे कागज पर ही ये अमल करना शुरू करो अर्थात शनिश्चर के रोज सुबह सवेरे उठकर नहा धोकर पाक साफ हो जाये और धुले हुए कपड़े पहन ले फिर अपने ही मकान के ऐसे कोने में जहां शोर गुल जरा भी न हो पूर्व की जानिब मुंह करके बैठ चिराग में खरगोश की चर्बी डाल कर रोशनी करो फिर हुद हुद के परो से हिरन और चीते के लहू से अगर चीते का लहू न मिले तो बाघ या भेड़िया के खून के साथ दोनों को मिलाकर उस मनुष्य के कपड़े पर निम्नांकित विधि से एक सो ग्यारह मरतबा लिखो और हवा में किसी दरख्त की साख में बांध दो इस नक्स को हुद हुद के खून के साथ लिखे और फिर इस अमल को जारी करे जो अमल के इसके मौनक्कल ने अपने अपने

हाजिर होने का बताया हुआ है इस अमल को
करे और दिल में अपने तसव्वर को मजबूत करले
उसका मौवक्कल फौरन ही हाजिर होगा बस
उसको इज्जत के साथ बैठावे और उसे फल वगैराह
खाने को दे और फिर उससे कहे कि फला आदमी
फलां दिन और फलां वक्त में फौत हुआ है तुम
उसकी रूह का पता लगाओ कि वो इस समय
कहां पर है उसके साथ फलां आदमी हम कलाम
होना चाहता है। वह जिस जगह भी मिले तुम
फौरन उसकी रूह को यहां लाकर हाजिर करो
तब आपका यह मोवक्किल कहेगा कि जब आपका
हुकम तो मुझे काम करने में कोई उजर नहीं है
मगर पहले मुझको मेरा सदका मिलना चाहिये
बस वो सदका में जो चीज मांगे उसको देनी
चाहिये और उसको खिला पिला कर खाना करे
और वो फौरन उठ बैठे मगर दिल के तसव्वर को
किसी समय न भूले बस कुछ ही देर बाद तुम्हा
सामने एक ऐसी तेज रोशनी नमूदार होगी जैसे
हजार सूरज एक वारगी ही उसे कमरे में आ

फौरन ही होशियार होकर बैठ जाओ और उस आदमी को भी जो अपने रिश्तेदार की मुर्दा रूह के साथ गुफ्तगू करना चाहता है अपनी बगल में बैठालो और चारों तरफ एक गहरी लकीर जमीन में खींचलो ताकि वो रूह किसी तरह का नुकसान न पहुंचा सके अब उस रोशनी के दरमियान के दरमियान तुम्हारा मुवक्किल तुम्हें अपने सामने खड़ा हुआ दिखाई देगा और वो तुम्हें बतायेगा कि जिस रूह के साथ तुम हम कलाम होना चाहते हो उसको वह ले आया है जो बातें करनी हों वो करलो इसके इतना कहते ही तुम उस आदमी को बताकर कहो कि जो कुछ बातें तुम इस रूह के साथ तुम करना चाहते हो वो बेधड़क कर सकते हो जब वो आदमी ये कहे कि मैं उसको अपने सामने देखना चाहता हूं तो ये बात तुम अपने मो क्कल से कहकर पूरी करा सकते हो मगर आम तौर पर अधिकांश गायब रहकर ही ग फ्तगू किया करती है मगर ये मोवक्कल की ता पर निर्भर है अगर वो काफी ताकतवर

और खास तौर पर उस रूह से ज्यादा बलवान हुआ तो इसमें कोई शक नहीं कि वो उस रूह पर दबाव डालकर उसे जाहिर होने के लिये मजबूर कर देगा मगर साल वा साल के तजरबों के बाद ये देखा गया है कि रूहह मकलाम हो सकती है मगर जाहिरा दिखाई नहीं देती अगर मवक्किल के दबाव डालने पर जाहिर हो तो महज उसका सर ही सर दिखाई देता है पूरा जिस्म नजर नहीं आता बातचीत फौरन करने के बाद ही रूह और मवक्किल को विदा कर देना चाहिये नक्स दर्ज है।

चौकी हनुमान बीर की–रंग हनुमान बारह
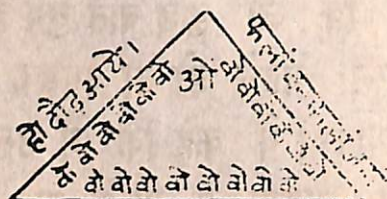
वर्ष का जवान लठ मुख में पान होकसा रावन आ ओसाया हनुमान।

विधि–महीने के पहले मंगल को व्रत रखे और लाल कपड़ा पहनकर मूंगे की माला से जाप करे

और धूप दीप हनुमान बजरंगवली की मूर्ति के आगे रखे पवित्र जगह पर बैठे और तेल हिन्दुवा का चढ़ाय गुड़ गेहूं गुणधानी सवा सेर की चढ़ाय यानि रोट पका कर चढ़ाये और उसमें से एक बार आप भी खाये और इस मन्त्र का जाप ग्यारह सो मरतबा चालीस दिन तक करे बीर हाजिर होगा और अपने नफस पर गालिब रहे और हर शनि-श्चर व मंगलवार को ब्रत रखे और पूजा करता रहे जो चाहोगे वही होगा।

सब ऐश व इशरत देने वाला मंत्र–राम जो मंत्र है वो सब सुख को देने वाला है जो अपना मंत्र सिद्ध करना चाहे वो इसकी गोली मुस्क व जाफरन में लाल चन्दन को घिसकर मिला दे और शुरू में श्री और आखीर में जी लिखकर गंगा जमना में चढ़ावे तो सर्व सिद्ध परास्त हो लेकिन शुरू से आखीर तक मनमें पूरा पूरा भरोसा रखे। चालीसवें दिन अनार की कलम से लिखे और सवा लाख गोलियां बनाकर मछलियों को खिलादे जब खतम हो जाये तो हवन करे और गौड़ ब्राह्मणों को

भोजन करादे मनो कामना पूर्ण होगी।
उच्च कोटी का मन्त्रतंत्र सिद्ध करने का मंत्र
ओं पर ब्रह्मा पर तहफे नहा जक व शाम्त्री अस्तुत
परे करायें पर हम हर हराय तो गना सर्प को नक
दरस य नहता तंत्राय सदजंग कर स्वाहा।
विधि—घी का चिराग जला कर धूप अमर चन्दन
फल और फूल चढ़ावे एक सो आठ बार जपे सिद्ध
यानि नेक साहससे एक दिन सिद्ध होवे जिस पर
जो मंत्र करे इस मंत्र से करे।
हिफाजत बदनी का मन्त्र—ओंम पर ब्रह्म
बाथने सर हरी पाह २ कुरु कुरु स्वाहा इसको
करने की तरकीब नीचे दर्ज की जाती है गौर से
पढ़े इस मंत्र को एक सो आठ बार पढ़ कर अपने
ऊपर फूंके तो कोई इसको ऐजा न पहुंच सके।
इन्द्र जाल का मन्त्र—ओंम सनारा सनोर
भौसराय इन्द्रजाल करत कान दर्शन सिन्द्धंग कुरु
कुरु स्वाहा।
विधिः—इस मंत्र से इन्द्रजाल की विद्या हासिल
करे।

मोर के हों तो पहले दर्जे का बेईमान होगा अगर सांप जैसी बनावट हो तो साहब इकबाल और बेफैज और अगर कोई आदमी अल्लाह गुफ्तगू में आंखों को इधर उधर हरकत देवे तो यकीनन जान लो कि ऐसे मनुष्य के कौलों फेल का कोई एत-बार नहीं ।

सर—सर का मामूली हालत में वश होना अला-मत धनवान व अकल मंदी और बुजुर्गी की है ऐसे सर वाला आदमी बड़ा भाग्य शाली और धनवान होता है मामूली हालत से सर का छोटा होना निशानी बेवकूफी है औसत दर्जे में सर का होना उसकी हालत औसत दर्जे की होती है अगर सर के बाल नर्म बारीक और घुंघरवाले हों तो ऐसा मनुष्य इश्क पसंद होता है बाल का मोटा और खुर-दरा व सख्त होना जफा कशी है दिमाग पर बालों का ज्यादा न होना भाग्यवान व अकलमंदी है ।

कमर—अगर किसी मनुष्य की कमर मानिन्द रीछ के हो तो ऐसा इन्सान दुनिया में अव्वल तो आराम हासिल नहीं कर सकता यदि हासिल करे भी तो

बहुत कम अगर कमर मोटी हो तो सहायेत्र पुत्र वाला हो और शोहबत परस्त हो और अगर कमर की बनावट शेर के मानिन्द हो तो उसकी औलाद सहामी जवां मर्द और होशियार होती है और खुद भी सहायेत्र मरतबा और फैजमंद होता है अगर कमर की बनावट जरा चौड़ी हो तो वह स्वार्थी (मतलबी) होता है।

पीठ-सख्त और तख्ता की मानिन्द हो तो जान लो कि ऐसी पीठ वाला इन्सान बरबादी की सख्त मेहनत से बसरे औकात करे अगर पीठ चौड़ी हो तो इन्सान कमीना और रजील हो अगर पुश्त की हड्डियां तादाद में नौ हों तो वह इन्सान सोभाग्य शाली और खुश किस्मत होता है अगर हड्डियों की तादाद बारह १२ या चौदह हो तो दुनियां में बे आरामी की जिन्दगी बसर करेगा पीठ झुकी हुई हो तो लाखों मुफलस साबित हो।

रान-अगर किसी मनुष्य की रान मोटी हो तो उसकी उमर बड़ी होगी अगर बहुत पतली हो तो जानलो कि हमेशा रोगी रहेगा। अगर रान मोटी

पुर गोश्ता हो तो समझ लेना चाहिये कि बहुत मोहब्बत परस्त हो और अगर ऊपर नीचे से रान एकसी हो तो ऐसा आदमी बेहया और बेशर्म होता है अगर घोड़े की रान के समान हो तो सहावे हकूमत होगा हमेशा सफर में रहेगा अगर चौड़ी और तंग रान हो तो बदयकन और औलाद कम होगी अगर रान की बनावट ममल्ल कैंवि के हो तो सहावे मरतबा और ऐश पायेगा अगर रान की बनावट कुत्ते की रान जैसी हो तो हर काम में होशियार और चौकन्ना रहे अगर मानिन्द शेर के हो तो ऐसा मनुष्य फजूल खर्च और भोग विलासी हो।

जानों-अगर जानों पर बाल हों तो हमेशा सफर में रहे जानों लम्बाई में कम गैर मामूली हों तो गरीब व बुद्धि हीन और कम उमर का हो अगर गोश्त से पुर हो तो अपनी जिन्दगी में कम से कम एक दफा जरूर कैद हो।

पिंडली-अगर किसी मनुष्य की पिंडली लम्बी हो तो वो मनुष्य चुगलखोर हुआ करता है अगर

पुर गोश्त हों तो अनदार सानी खिलफत अगर सदृश्य हिरन या घोड़े के हो तो सवार कोश और भाग्यशाली होगा।

पांव-अगर चलने में किसी मनुष्य के पांव का निशान टेढ़ा पड़े तो जानो के वह मनुष्य पागल लापरवाह है अगर पांव की बनावट टेढ़ी हो तो वो मनुष्य चुगलखोर और कृतघ्न होगा नेकी का बदला हमेशा बदी से देगा अगर पांव की तली सुर्ख रंग की हो तो ऐसा मनुष्य नेक साहसी भाग्य शाली होता है अगर पांव चौड़ा हो तो हमेशा कंगाल रहेगा अगर मिकदार से छोटा हो तो वह मनुष्य भी हमेशा कंगाल और रोजगार की तलाश और अविश्वासी होगा। पैर अगर दरमियानी हो तो उसकी उमर औसत हालत में रहेगी और उस आदमी की माली हालत भी औसत दर्जे पर ही रहेगी अगर पांव पर गोश्त हो तो साहिबे इक-बाल होगा।

नाखून-अगर किसी मनुष्य के नाखून चमकदार या जरदी माईल हों तो हमेशा धनवान् रहेगा

अगर जरासे नीलगों हों तो साहिबे इकबाल और फैजरिसाल होगा अगर नाखूनों का स्याही माइल रंग हो तो समझलो वह मनुष्य चोर बदमास है अगर नाखून का रंग सबजी माइल हो तो जिना-कार होगा अगर नाखून खुरदरे और टढ़े और बे ढंगे बने हों तो वह हमेशा तकलीफ में रहेगा गरीबी की उसे आम शिकायत रहेगी अगर नाखून का रंग आधा सफेद और आधा रंग सुर्ख हो तो ऐसा मनुष्य हमेशा आसूक हाल रहेगा।

बाल—अगर सारे शरीर पर बाल हों तो गरीबी और कम अक्ल हो अगर हर जड़ से सिर्फ एक ही बाल पैदा हुआ हो तो वह मनुष्य बादशाह होगा अगर हर जड़ से दो दो बाल उगे हों ऐसा आदमी अकलमंद और भाग्यशाली होगा एक २ जड़ से अगर तीन तीन बाल उगे हों तोऐसा मनुष्य हमेशा सच बोलने का आदी होता है। और अगर हर जड़ में से चार चार बाल पैदा हुए हों तो वह मनुष्य निर्धन बुद्धू और अशिक्षित साबित होगा।

बाजू—अगर बाजू मिकदार से छोटे हो तो गरीबी

कमजोरी का सामना करता रहे अगर बाजू मिक बार से ज्यादा लम्बे होतो वह फिसादी लड़ाका होने पर भी हमेशा फिकश्त खाता रहे अगर बाजू जिस्म के मुताबिक ठीक हों तो खुश नसीब मिलन औ मेहन्ती हो अगर हाथों की ऊंगलियां लम्बी हों और सीधी करने पर दरमियान में सूराख न रहे तो धनवान तथा दानी हो अगर उंगलियां मुनासिब और दरमियान में सूराख न दे तो वह मनुष्य फिजूल खर्ची होगा अंगुलियां सीधी करने पर हथेली में गढ़ा पड़े तो धनवान होगा सुन्दर और सुरखी माइल गोल नाखून मोहब्बत और खुश अखलाकी है अगर बदनुमा बदरंग हों तो वो गरीब निर्धन हो।

तलवे—गोश्त से भरपूर मुलायम और सुन्दर तलवो वाला आदमी धनवान इज्जतदार औलाद वाला होता है सूखे हुए बिना खून या कम गोश्त के तलवो का आदमी निर्धन नादार बदकिस्मत होता है यह लक्षण विद्या अनुमान के अनुसार है आगे वह ईश्वर ही जाने।

दाढ़ी–अगर किसी मनुष्य की दाढ़ी सुन्दर और भरपूर हो तो ऐसा मनुष्य मिलनसार और नेक होता है जिस मनुष्य की दाढ़ी कम और छोटी हो वह घमंडी होता है। अगर किसी मनुष्य की बहुत लम्बी दाढ़ी हो तो वह हिम्मती तथा साहसी होता है बिना दाढ़ी का मनुष्य जन्म से ही कमजोर कम हिम्मत वाला होता है। अब आगे औरत के बारे में पढ़िये।

स्त्री लक्षण

कद-लम्बे कद वाली औरत नेक व ईश्वर भक्त होती है मध्यम कद वाली स्त्री अपने स्वामी की प्यारी शील स्वभाव। छोटे कद वाली स्त्री चरित्र हीन और निर्लज्ज हुआ करती है। जो स्त्री बिना मतलब घर दर फिरे और आंखें इधर उधर हर समय हरकत करती रहें और बिना मतलब बातचीत करती रहे उस स्त्री पर किसी किस्म का विश्वास नहीं करना चाहिये जिस औरत की सोते समय आंख खुली रहे वह अपने पति की आज्ञाकारी नहीं होती जिस स्त्री के हंसते समय गालों में गढ़ा

पड़ें और आंखें फड़के वह स्त्री अपने पति की हत्यारी होगी ऐसी स्त्रियों पर विश्वास नहीं करना चाहिये।

मुंह—छोटे मुंह वाली स्त्री से हमेशा रंज व गम और तकलीफ पहुंचती है। बहुत लम्बे मुंह वाली दुख दर्द को दूर करती है। टेढ़े मुंह वाली बहुत जल्द असुहागिन हो जाती है जिस स्त्री की ठोड़ी पर बाल या मूंछे हों वह अकसर बदचलन हुआ करती है।

पेशानी—अगर पेशानी लम्बी और चौड़ी हो तो ससुर की मृत्यु जल्दी हो। अगर पेशानी ऊंची हो खुद असुहागिन हो जाये अगर पेशानी पर सुर्ख रंग के खड़े बाल हों तो तंगदस्त और लाचार हो जाती है। अगर माथे पर निशान न हो तो नेक ख्याल मिलनसार और पति की आज्ञाकारी होती है।

नेत्र—अगर सफेदी नुमा सुर्ख हो तो दुनियां में सुख पावे अगर जर्द हों तो तकलीफ उठाये अगर सुर्ख हों तो चरित्रहीन और दगाबाज हो अगर स्याह हों और किसी कदर सुर्खी की झलक नजर

आये तो ऐसी स्त्री पर जान तक निछावर कर देना उचित है आज हाल तो में मतवाली आंखें बद चलनी का निशान होती है मगर बदचलनी का आसार दूसरे भागों पर होता है जो स्त्री चलते समय इधर उधर देखे और आंखों की हरकत करे वह पहले दर्जे की बदमाश होती है।

नाक—अगर नाक की नोक लम्बी होती है तो वह स्त्री झगड़ालू होती है अगर नाक में बाल हों तो बदकार होती है। अगर नाक की नोक नीचे की तरफ झुकी हुई होगी तो वह अक्लमंद अगर नाक तोते की तरह हो तो कुनबा वाली हो, अगर नोक छोटी हो तो कम माया निर्धन अगर चौड़ी हो तो बहुत जल्द वेश्या हो जायेगी ऊंची और सुतवां हो तो खुश किस्मती अगर नाक चपटी हो तो पति की प्यारी होगी।

गाल—अगर मुस्कराते समय गालों में गढ़ा पड़े तो ऐसी औरत पति को प्यारी होती है और अगर दोनों गाल जरा उभरे हुए हों तो पति से बहुत प्यार करे और खुश मिजाज व काबिल हो अगर गालो का

रंग सुर्ख हो तो हर किसी को प्यारी होती है मगर कुछ ऐसी औरते खुद गर्ज भी होती है। अगर गालों पर उंगली लगाने से गल पड़े तो वह स्त्री चरित्र हीन होती है अगर किसी स्त्री के गालों पर बात चीत के समय गढ़ा पड़े तो वह बदकार होती है।
होट—जिस स्त्री के होट का रंग स्याह हो वह अभागन होती है जिस के होट गुलाबी और बारीक हों वह पति की प्यारी और खुशनसीब होती है अगर होट लम्बे हों तो वह हैरानी और परेशानी में उमर व्यतीत करती है अगर हद से ज्यादा छोटे हो तो भी निर्धनता इसका साथ नहीं छोड़ेगी अगर दोनों होटों के मिलने से मुंह छोटा बन जाये मगर इससे कम न हो तो पति की प्यारी होती है।
गर्दन—अगर गर्दन में तीन रेखाये हों तो खुश हाली होती अगर किसी औरत की गर्दन लम्बी मानिन्द बगले के होगी तो वह स्त्री खुदगर्ज और मक्कार होगी जिसकी गर्दन गुदाज हो वह बहुत जल्द असुहागिन हो जायेगी अगर गर्दन छोटी हो तो बेऔलाद रहेगी गर्दन मानिन्द सुराही के हो तो ऐसी स्त्री खुशनसीब नेक चलन और पति की

नाम का जप करना चाहिये।

बन्धन मुक्ति के लिये–दामोदरं बन्धगतो नित्य-मेव जपेन्नरः।

बन्धन में पड़ा हुआ मनुष्य नित्य ही 'दामोदर' नाम का जप करे।

नेत्र-बाधा-नाश के लिये–केशवं पुण्डरीकाक्षम-निशं हि तथा जपेत्। नेत्र बाधासु सर्वासु........'

सम्पूर्ण नेत्र–बाधाओं में नित्य-निरन्तर 'केशव' एवं 'पुण्डरीकाक्ष' नाम का जप करे।

भय नाश के लिये–हृषीकेशं भयेषु च।

भय के अवसरों पर उसके निवारण के लिए 'हृषी-केश' का स्मरण करे।

औषध सेवन के लिये–अच्युतं चामृतं चैव जपे-दौषधकर्मणि।

औषध सेवन के कार्य में 'अच्युत' और 'अमृत' नामों का जप करे।

युद्ध स्थल में जाते समय–संग्रामाभिमुखे गच्छन् संस्मरेदपराजितम्।

युद्ध की ओर जाते समय 'अपराजित' का स्मरण करे।

पूर्वादि दिशाओं में जाते समय—चक्रिणं गदिनं चैव शङ्गिणं खड्गिनं तथा। क्षेमार्थी प्रवसन् नित्यं दिक्षु प्राच्यादिषु स्मरेत् ॥

पूर्व आदि दिशाओं में प्रवास करते (परदेश जाने या रहते) समय कल्याण चाहने वाला पुरुष प्रति दिन 'चक्री' ('चक्रपाणि')'गदी'('गदाधर') 'शार्ङ्गी' (शार्ङ्गधर') तथा 'खड्गी' ('खड्गधर) इन नामों का स्मरण करे।

सारे व्यवहारों में—अजितं चाधिपं चैव सर्वं सर्वेश्वरं तथा। संस्मरेत् पुरुषो भक्त्या व्यवहारेषु सर्वदा ॥

समस्त व्यवहारों में सदा मनुष्य भक्ति भाव से 'अजित' 'अधिपद' 'सर्व 'सर्वेश्वर'- इन नामों का स्मरण करे।

क्षुत-प्रस्खलनादि, ग्रहपीडादि और दैवी विपत्ति-निवारण के लिये—नारायणं सर्वकालं क्षुतप्रस्खलनादिषु। ग्रहनक्षत्रपीडासु देवबाधासु सर्वता ॥

छींक लेने, प्रस्खलन (लड़खड़ाने) आदि कि समय,

ग्रह पीड़ा, नक्षत्र पीड़ा तथा दैवी बाधाओं में सर्व-
तोभाव से हर समय 'नारायण' का स्मरण करे।
डाकू तथा शत्रुओं की पीड़ा के समय—अंध-
कारे तमस्तीव्रे नरसिंह मनुस्मरेत् ॥
अत्यन्त घोर अन्धकार में डाकू तथा शत्रुओं की
ओर से बाधा की सम्भावना होने पर मनुष्य बार-
म्बार 'नरसिंह' नाम का स्मरण करे।
अग्निदाह के समय—अग्निदाहे समुत्पन्ने संस्म-
रेत् जलशायिनम्।
घर या गांव में आग लग जाने पर 'जलशायी'
का स्मरण करे।
सर्प विष से रक्षा के लिये—गरुड़ध्वजानुस्मरणाद्
विषवीर्यं व्यपोहति।
'गरुड़ध्वज' नाम के बारम्बार स्मरण से मनुष्य सर्प-
विष के प्रभाव को दूर कर देता है।
स्नान, देवार्चन, हवन, प्रणाम तथा प्रदक्षिणा
करते समय—कीर्तयेद् भगवन्नाम वासुदेवेति
तत्पर ॥
स्नान, देवपूजा, होम, प्रणाम तथा प्रदक्षिणा करते

समय मनुष्य भगवत्परायण हो 'वासुदेव'—इस भगवन्नाम का कीर्तन करे।

वित्त-धान्यादि-स्थापना के समय—कुर्वीत तमना भूत्वा अनन्ताच्युद कीर्तनम्।

धन-धान्यादि की स्थापना के समय मनुष्य भगवान् में मन लगाकर 'अनन्त' और 'अच्युत' इन नामों का कीर्तन करे।

दुःस्वप्न-नाश के लिये—नारायणं शार्ङ्गधरं श्रीधरं पुरुषोत्तमम्। वामनं खड्गिनं चैव दुष्ट स्वपने सदा स्मरेत्॥

बुरे सपने आने पर मनुष्य सदा 'नारायण', 'शार्ङ्ग-धर,' 'श्रीधर', 'पुरुषोत्तम', 'वामन' और 'खड्गी' का स्मरण करे।

महार्णव में—महार्णवादौ पर्यङ्कशायिनं च नरः स्मरेत्॥

महा सागर आदि में गिर पड़ने पर मानव 'पर्यङ्क शायी' ('शेषशायी') का स्मरण करे।

सर्व कर्म-समृद्धि के लिये—बलभद्रं समृद्धयर्थं सर्वकर्माणि संस्मरेत्।

समस्त कर्मों में उनकी सम्पन्नता के लिये मनुष्य 'बलभद्र' का स्मरण करे ।
संतान के लिये–जगत्पतिमपत्यार्थं स्तुवन् भक्त्या न सीदति ।
संतान की प्राप्ति के लिये भक्ति पूर्वक 'जगत्पति' (जगदीश या जगन्नाथ) की स्तुति करने वाला पुरुष कभी दुःखी नहीं होता ।
सर्व प्रकार के अभ्युदय के लिये–श्रीशं सर्वाभ्युदयिके कर्मण्याशु प्रकीर्तयेत् ॥
सम्पूर्ण अभ्युदय-सम्बन्धी कर्मों में शीघ्रता पूर्वक श्रीशः (श्रीपति) का उच्च स्वर से कीर्तन करे ।
अरिष्ट-निवारण के लिये–अरिष्टेषु ह्यशेषेषु विशोकं च सदा जपेत ।
सम्पूर्ण अरिष्टों के निवारण के लिये सदा 'विशोक' नाम का जप करे ।
निर्जन स्थान में तथा आंधी-तूफान आदि उपद्रवों में मृत्यु के समय–मरुत्प्रपाताग्निजल बन्धनादिषु मृत्युषु । स्वतन्त्रपरतन्त्रेषु वासुदेवं जपेद् बुधः ॥

स्वेच्छा या परच्छा वश अथवा स्वाधीन या प-
धीन अवस्था में किसी निर्जन स्थान में पहुंचने
पर आंधी-तूफान (ओला-वर्षा), अग्नि (दावानल)
जल (अगाध जल-राशि में नियज्जन) तथा बन्धन
आदि के कारण मृत्यु या प्राण संकट की अवस्था
प्राप्त हो तो बुद्धिमान् मनुष्य 'वासुदेव' नाम का
जप करे (ऐसा करने से बाधाएं दूर हो जाती हैं

कलियुग के दोष-नाश के लिये–तन्ना

कर्म जंलो के वाग्जं मानसमेवच। यन्नतपयते पाप
कलौ गोविन्द कीर्तनात्॥

कलयुग में इस जगत के भीतर ऐसा कोई कर्मज
(शारीरिक), वाचिक और मानसिक पाप नहीं हैं,
जिसे मनुष्य 'गोविन्द' नाम का कीर्तन करके नष्ट
न करदे।

शमायस्लं जलं बहेस्तमसो भास्करोदयः।
शान्त्यै कलेरघौघस्य नामसंकीर्तनं हरेः॥

जैसे आग बुझा देने के लिये जल और अंधकार
को नष्ट कर देने के लिये सूर्योदय समर्थ है, उसी
प्रकार कलियुग की पाप राशि का शमन करने के

सम 'श्रीहरि' का नाम कीर्तन समर्थ है।

'राकचान्द्रायणतत्तकृच्छ्रैर्न देहशुद्धिर्भवतीतिताहक्ः
कलौ सकृन्माधव कीर्तनेन गोविन्दनाम्ना भवतीह
याहक् ॥

कलियुग में एक बार 'माधव' या 'गोविन्द' नाम
के कीर्तन से यहां जीव की जैसी शुद्धि होती है,
... इस जगत में पराक, चान्द्रायण तथा तप्तकृच्छ्र
सदृ बहुत से प्रायश्चितों द्वारा भी नहीं होती।

सकृदुच्चारयन्त्येतद् दुर्लभं चाकृतात्मनाम्।
कलौ युगे हरेर्नाम ते कृतार्था न संशयः ॥

जो कलियुग में अपुण्यात्माओं के लिये दुर्लभ इस
'हरि' नाम का एक बार उच्चारण कर लेते हैं,
वे कृतार्थ हो गये हैं, इसमें संशय नहीं।

किसी विपत्ति के समय कौन-सा नाम उच्चारण करें ?विष्णु धर्मोत्तर में मार्कण्डेय-वज्र संवाद में कहा गया है।

जल-प्रतरण के समय—कूर्म वराहं मत्स्यं वा जल
प्रतरणे स्मरेत्।

जल से पार होते समय भगवान् 'कूर्म' (कच्छप)

'वराह' अथवा 'मत्स्य' का स्मरण करे।

अग्निदाह के समय–भ्राजिष्णुमग्निजनने जपे-
न्नाम त्वखण्डितम् ।

कहीं आग लग गयी हो तो उसकी शांति के लि
भ्राजिष्णु'–इस नाम का अखंड जप आरम्भ कर दे
आपत्ति-विपत्ति, ज्वर, शिरोरोग तथा वि
वीर्य में–गरुडध्वजानुस्मरणादापदो मुच्यते नर
ज्वरजुष्टशिरोरोगविषवीर्यं शाम्यति ॥

'गरुड़ध्वज' का नाम बारम्बार स्मरण करके मनुष
आपत्ति में छूट जाता है, साथ ही वह ज्वर रोग
सिर दर्द तथा विष के प्रभाव को भी शांत क
देता है।

युद्ध के समय–बल भद्रं तु युद्धार्थी।

युद्धार्थी मनुष्य 'बलभद्र' का स्मरण करे।

कृषि, व्यापार और अभ्युदय के लिये–
········कृष्यारम्भहलायुधम् ।········

उत्तारणं-वणिज्यार्थी राममभ्युदये नृप।

नरेश्वरः खेती के आरम्भ में किसान 'हलायुध'
का स्मरण करे। व्यापार की इच्छा वाला वैश्य

उतारण को याद करे और अभ्युदय के लिये 'राम' का स्मरण करे।

मङ्गले-मङ्गल्यं मङ्गलं विष्णुं मङ्गल्येषु च कीर्तयेत्।
माङ्गलिक कर्मों में मङ्गलकारी एवं मङ्गलमय 'श्री विष्णु' का कीर्तन करे।

सोकर उठते समय-..........उत्तिष्ठन् कीर्तयेद् विष्णुम्.........।
सोकर उठते समय 'विष्णु' का कीर्तन करे।

निद्रा काल में-ॐप्रस्थगन् माधवं नरः।.....
सोते समय मानव 'माधव' का स्मरण करे।

भोजन के समय-भोजन चैव गोविन्दं सर्वत्र माधुसूदनम्॥
भोजन काल में 'गोविन्द' का और सर्वत्र सदा 'मधुसूदन का चिन्तन करें।

विविध सोलह कार्यों में विविध सोलह नाम

औषधे चिन्तये विष्णुं भोजने च जनार्दनम्।
शयनेपद्मनाभं च विवाहे च प्रजापतिम्॥
युद्धे चक्रधरं देवं प्रवासे च विधिक्रमश।
नारायणं तनुत्मागे श्रीधरं श्रीयसंग मे॥

दुःस्वप्ने स्मर गोविन्दं संकटे मधुसूदनम् ।
कानने नारसिंह च पात्र के जलशायिनम् ॥
जलमध्ये वराहं च पर्वते रघुनन्दनम् ।
गमने वामनं चैव सर्वकार्येषु माधवम् ॥
मोडशैतानि नामानि प्रातरुत्था ययः पठेत् ।
सर्वपाप विनिर्युक्तो विष्णुलोके महीयते ॥

औषध–सेवन के समय 'विष्णु' का भोजन में 'जनार्दन' का शयन में 'पद्मनाभ' का विवाह में 'प्रजापति' का, युद्ध में 'चक्रधर' का, प्रवास में 'त्रिविक्रम' का, शरीर त्याग के समय 'नारायण' का प्रिय मिलन में 'श्रीधर' का, दुःस्वप्न-दोष नाश के लिये 'गोविन्द का' संकट में 'मधुसूदन' का, जंगल में नृसिंह का अग्नि लगने पर 'जल-शायी भगवान्' का, जल में 'वराह' का पर्वत पर 'रघु-नंदन' का, गयन में 'वामन का और सभी कार्यों में 'माधव' का स्मरण करना चाहिये । जो प्रातः काल उठकर इन नामों का पाठ करता है, वह सब पापों से मुक्त होकर विष्णु लोक (बैकुण्ठ) में पूजित होता है ।

भगवद्वाराधन—देवाराधन

पारमार्थिक और लौकिक कुछ सरल अनुष्ठान—प्राकृतिक जगत् अनित्य अपूर्ण और विनाशी है; अतएव दुःखालय है। प्राकृतिक वस्तुओं और स्थितियों में सुख की खोज करना वास्तव में मूर्खता ही है। यहां जो कुछ भी मनुष्य प्राप्त करता है, वह स्थायी नहीं होता, अधूरा होता है और उसका वियोग अवश्यम्भावी है। यहां वास्तविक सुख उसी को मिलता है, जो सारे जगत् को भगवान् में देखता है, और भगवान् को जगत् में भरा देखता है, वही नित्य पूर्ण परमानन्द स्वरूप भगवान् को देखता हुआ नित्य आनन्दमय बना रहता है।

भगवान् ने कहा है—

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहंन प्रणश्यामि सच में न प्रणश्यति॥

(गीता ६।३०)

'जो सर्वत्र मुझ को देखता है और सब को मुझ में

देखता है मैं उससे कभी अलग नहीं होता और वह मुझ से कभी अलग नहीं होता।'
फिर यहां जो कुछ भी हानि-लाभ, सुख-दुख आदि भोग रूप में प्राप्त होते हैं, वह सब प्रारब्ध के ही फल हैं कर्म तीन प्रकार के होते हैं—क्रियामण संचित और प्रारब्ध। इस समय हमें जो कुछ भी कर्मफल के हेतु से कर रहे हैं, उन्हें 'क्रियमाण' कहते हैं। फल है तुक कर्म सम्पन्न होते ही कर्म संचय के के भंडार में चला जाता है। यह वर्तमान के और पूर्व के किये हुये कर्मों का, जिनका फल अभी नहीं भोगा जा चुका है, संग्रह ही, 'संचित कहलाता है और इस संचित में से एकजन्म के लिये कुछ अंश लेकर कर्म जगत् का नियन्त्रण करने वाली प्रभु-शक्ति एक जन्म के लिये जो कुछ फलका निर्माण कर देती है, उसका नाम 'प्रारब्ध' है। इस प्रारब्ध के अनुसार योनि, आयु और फल आदि पहले से ही निश्चित हो जाते हैं। अतएव जब जो कुछ भी, प्रारब्ध वश फल रूप में प्राप्त होना हैं स्वेच्छा, 'परेच्छा' और 'अनिच्छा'। किसी फल भोग के

लिये कोई कर्म हमारी अपनी इच्छा से बन जाय, यह 'स्वेच्छा कृत, फल भोग है। जैसे आग में हाथ डालने की इच्छा होने पर हाथ डालना और उस का जल जाना। किसी प्रारब्ध का फल, परेच्छा दूसरे की इच्छा से होता है। इसका रूप है-किसी दूसरे के मन में हमारा अच्छा बुरा करने की इच्छा हो जाना और तदनुसार उस कर्म के सम्पन्न होने पर हमें फल प्राप्त होना। जैसे हमारे घर में आग लगने वाली हो, पर द्वेषवश दूसरा कोई इच्छा करने आग लगा दे। इसी प्रकार कुछ फल 'अनिच्छा' से उत्पन्न होते हैं--जैसे हम रास्ते में चल रहे हैं। अकस्मात् किसी पेड़ की डाल टूट कर हम पर गिर जाय और हमें चोट लग जाय। फल भोग में प्रारब्ध वश परतन्त्र होते हुये भी इन 'स्वेच्छा' और 'परेच्छा' कृत फल भोगों में हम या दूसरे अपनी भली-बुरी इच्छा के अनुसार क्रियमाण कर्म करके अपने लिये अच्छे संचित का निर्माण करते हैं, जो भविष्य में हमारे लिये सुख-दुख का कारण बन सकता है, क्योंकि संचित और प्रारब्ध वश अच्छी-बुरी इच्छा-

ओं के उदय होने पर भी मनुष्य को भगवान् ने अच्छे-बुरे की पहचान के लिये विवेक, आदर्श शुभ कर्म करने के लिये विधि–निषेधात्मक शास्त्र वाणी और कर्म करने का अधिकार दिया है, 'कर्मण्ये वाधिकारस्ते' गीता का प्रसिद्ध वचन है। यदि हम शास्त्र की अवहेलना करके मनमाना अनाचारदुराचार करते हैं, तो उसका फल दुःख, और सदाचार सद्व्यवहार करते हैं तो उसका फल सुख भविष्य में होगा ही। प्रारब्ध का फल अवश्य मेव भोगना ही होगा, इसमें कोई संदेह नहीं। पर जो मनुष्य भगवान् के शरणागत होकर अपने को सर्वतोभावेन भगवान को समर्पित कर चुकते हैं अथवा जिन्हें तत्त्वज्ञान स्वरूप आत्मसाक्षात्कार हो जाता है, उनके शरीर में प्रारब्धानुसार फल का उदय होने पर भी उन्हें दुःख-सुख नहीं होता और सकाम भावन होने से नवीन कर्म फल प्रदान करने वाली कर्म संचित में वैसे ही नहीं जमा होते, जैसे भुने हुए बीज खेत में डालने पर उसे अकुंर नहीं निकलते पूर्व के सारे संचित-कर्म भगवान् की सहज 'कृपा' अथवा 'ज्ञाना-

ग्नि' से सर्वथा भस्म हो जाते हैं। इस प्रकार वह कर्म बन्धन से मुक्त हो जाता है। तथापि शरीर से प्रारब्ध फल का भोग तो होता ही है यह कर्म सिद्धान्त है।

परन्तु कुछ ऐसे 'प्रबल कर्म' भी होते हैं—जैसे सकाम भगवदाराधन या देवारा धन, किसी कारण वश या वरदान—जो तत्काल 'प्रारब्ध' बन कर फल-दानोन्मुख प्रारब्ध के फल को रोक कर बीच में अपना फल भुगता देते हैं। जैसे किसी के प्रारब्ध में पुत्र-प्राप्ति का संयोग नहीं है, अमुक समय पर मृत्यु का योग है; पर वे विधि पूर्वक 'पुत्रे-ष्टियज्ञ' का अनुष्ठान करने पर नवीन प्रारब्ध- निर्माण के द्वारा पुत्र प्राप्त कर सकते हैं, ऐसे बहुत से उदाहरण प्राचीन ग्रन्थों में मिलते हैं, और 'मृत्युंजय आदि अनुष्ठान करने पर अल्पायु मनुष्य 'दीर्घ जीवन का सविधि लाभ कर सकते हैं। मार्कण्डेय जी का भगवान् शंकर की उपासना के फल स्वरूप अमरत्व प्राप्त करना भी प्रसिद्ध है। इसी लिये हमारे शास्त्रों में 'सकाम उपासना' का विस्तृत उल्लेख है यद्यपि

सकाम उपासना बुद्धिमानी नहीं है, क्योंकि उसके द्वारा प्राप्त होने वाला फल अनित्य, अपूर्ण और दुःख प्रदही होता है, तथापि सात्त्विक सकाम उपासना से उपासना के स्वरूपानुसार न्यूनाधिक रूप में अन्तकरण की शुद्धि होती है, जिसका फल अन्त में निष्कामता की प्राप्ति होता है और भगवान् को प्राप्त करने वाली होती ही है। भगवान् ने स्वयं अपने अर्थार्थी और 'आर्त' भक्तों को भी 'उदार बतलाते हुए अन्त में अपनी प्राप्ति होने की घोषणा की है। 'उदाराः सर्व एवैते' और 'मद्भक्ता यान्ति मामपि'। अतएव सकाम देवाराधन और भमकदाराधन बुद्धिमानी न होते हुए भी लोक में समृद्धि सुख और अन्त में क्रमानुसार भगवत्प्राप्ति में हेतु होने के कारण अकर्तव्य नहीं है। पाप तो है ही नहीं। अवश्य ही 'तामस देवताओं' और तामस देवताओं, और 'तामस तत्वों' की उपासना कभी नहीं करनी चाहिये। और न ऐसी कोई उपासना-आराधना करनी चाहिये जिसमें दूसरे के अहित की कामना हो। 'तामस उपासना' और 'पर-अहित

की कामना' से की गयी उपासना-दोनों ही अन्तः करण की अशुद्धि में हेतु और बार बार आसुरी योनि' दुःख और अधोगति की प्राप्ति में ही कारण होती हैं। यह भी सत्य है कि भगवान् अपनी मङ्गलमयी सर्वज्ञता और इच्छा से हमारे लिये जो कुछ भी फल विधान करते हैं चाहे वह हमारी सीमित और अदूर दृष्टि के कारण हमें अशुभ या दुःख प्रद ही जान पड़े। वास्तव में वह परम शुभ और परम मङ्गलकारी ही होता है। इसलिये भगवान् पर और उनकी मंगलमगता पर विश्वास करने वाले भक्त यही चाहते हैं कि उनकी 'मंगलमयी इच्छा' ही सदा सर्वत्र अपना काम करती रहे। हमारी कोई भी इच्छा' उस मंगलमयी इच्छा में कभी बाधक हो ही नहीं। तथापि जो लोग भोग-कामना और भोग-वासना को छोड़ नहीं सकते और कामना एवं आसक्ति से अभिभूत होकर 'अन्याय और असत् मार्ग' का अवलम्बन करके भोग सुख की आशा रखते हैं, उनके लिये तो भगवद्दारा धन और देवाराधन अवश्य ही सेवन करये योग्य है।

इसमें लाभ-ही लाभ है। यदि श्रद्धा और विधि पूरी हो तो 'नवीन प्रारब्ध' का निर्माण होकर मनोरथ की पूर्ती हो जती है। कदाचित् प्रति बन्धक रूप प्रारब्ध अत्यन्त प्रबल होने के कारण मनोरथ-पूर्ति न भी होतो पुण्य कर्म का अनुष्ठान तो बनता ही है। इसके विपरीत सांसारिक साधन चाहे जितने भी किये जांय, उनके द्वारा प्रारब्ध का फल बदल नहीं सकता अतः एव वे वैधहोने पर भी व्यर्थ होते हैं। और आज कल तो विवेक भ्रष्ट हो कर सारा जगत् ही भोग-सुख की आशा-आकांक्षा में उन्मत्त हो रहा है, वह किसी भी पाप से बचना नहीं चाहता। 'अर्थ' और 'अधिकार' की अदम्य लालसासे उन्मत्त होकर वह अनाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार, पापाचार, व्यभिचार और अत्याचार, असदाचार आदि के द्वारा सफलता प्राप्त करने की भ्रान्त चेष्टा कर रहा है: इसका फल तो निश्चय ही सब प्रकार से 'अधःपात' और 'दुःख' ही होगा। आज का मनुष्य दूसरे जीवों के दुःख-सुख को भूल गया है, वह केवल अपने ही सुख की लालसा में

उन्मत्त है । इसलिए जगत् में नये-नये 'भोगवाद' उत्पन्न होकर नये-नये द्वेष-कलह की आच्छादनीय सृष्टि कर रहे हैं । और इसी लिये मनुष्य नये-नये पापों का आयोजन करने में 'प्रगति' मान रहे हैं । भारत वर्ष भी इस पाप की आंधी, से फंस रहा है । इसी से आज देश में अनेक प्रकार के वाद, दल बन्दियां, परस्पर एक दूसरे को मिटाने और दुःख पहुंचाने की चेष्टा, जीव हिंसा के नये-नये कारखाने और वैज्ञानिक हत्यालय आदि निर्माण के प्रयत्न बढ़ते जा रहे है खाद्य-पदार्थों के लिये भी मांसाहारी जगत की देखादेखी मांस निर्मित पदार्थों का प्रसार-प्रचार किया जा रहे है । सत्य, ईमानदारी, चारित्रिक पवित्रता आदि तो आज मानो कहने की वस्तु बनते जा रहे हैं । यहां दम्भ, दर्प अभिमान बेहद बढ़ते चले जा रहे हैं । यही स्थिति चलती रही तो पता नहीं हमारा पतन कहा जा कर रुकेगा । इस अवस्था में भोग-सुख के साधन के रूप में ही यदि हम अन्याय असत्-मार्ग का सर्वथा परित्याग करके भगवद्दारा धन

और देवाराधन प्रवृत्त हों तो पतन से बचने की और जीवन में सफलता प्राप्त करने की निश्चित आशा की जा सकती है। इन भावों का प्रचार होना चाहिये 'कल्याण' के इस भगवन्नाम-महिमा और प्रार्थना-अङ्क के प्रकाशन का यह भी एक उद्देश्य है। यहाँ नीचे कुछ थोड़े-से अनुष्ठानों के प्रयोग लिखे जा रहे हैं, जिनके करने पर 'पारमार्थिक' और 'भौतिक' लाभ हो सकते हैं। इनमें कई तो बहुत-से लोगों के द्वारा अनुभूत है। आशा है, 'कल्याण' के पाठक इनसे यथोचित लाभ उठायेंगे।

भगवत्प्रेम की प्राप्ति के लिये

गोप्यः स्फुरत्पुरट कुण्डल कुन्तलत्विड्
गण्डश्रिया सुधित हासनिरीक्षणेन।
भावं दधत्य ऋषभस्यजगुः कृतानि
पुण्यानि तःकररुहस्पर्शप्रमोदा :॥
ताभिर्युतः श्रममपोहितुमङ्गसङ्ग-
घृष्टस्रजः स कुचकुङ्कुमरञ्जितायाः।
गन्धर्वपालिभिरनुद्रुत आविशद् वाः

श्रान्तो गजीभिरिभराडिवभिन्नसेतः ।
सोऽम्भस्यलं युवतिभिः परिषिच्यमानः
प्रेम्णेक्षितः प्रहसती भिरितस्ततोऽङ्ग ॥
वैमानिकैः कुसुमवर्षिभिरीड्यमानो
रेमे स्वयं स्वरतिरत्र गजेन्द्रलीलः ॥
ततश्च कृष्णोपवने जलस्थल-
प्रसूनगन्धानिलजुष्टदिक्तटे ।
चचार भृङ्ग प्रमदागणावृतो
यथा मदच्युद् द्विरदः करेणुभिः ॥
(श्री मद्भागवत २०।३३।२२।२५)

विक्रीडितं व्रजवधूभिरिदंच विष्णोः
श्रद्धान्वितोऽनुशृणुयादथ वर्णयेद्यः ।
भक्तिं परां भगवति प्रतिलभ्य कामं
हृद्रोगमाश्वपहिनोत्यचिरेण धीरः ॥
(श्रीमद्भागवत २०।३३।४०)

उपर्युक्त श्रीमद्भागवत (१०।३३।२२।३५) चारों श्लोकों को श्री मद्भागवत के ही उपर्युक्त (१०। ३३।४०) श्लोक के द्वारा सम्पुटित करके कम से-कम २१ पाठ प्रति दिन करे। पाठ करने से पूर्व

भगवान् श्री राधा माधव का चित्रपट सामने रखकर उसका पञ्चोपचार से पूजन करे और पाठ के समय घृत दीपक रक्खे। स्नान करने बात शुद्ध आसन पर शुद्ध कपड़े पहनकर पाठ करे। इस प्रकार ३३ दिन पाठ करने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर जब तक भगवतप्रेम का प्रादुर्भाव न हो जाय, तब तक पाठ करता ही रहे। प्रेम प्राप्त करने का तीव्र वेदना पूर्ण उत्कराठा के साथ ही भगवान् श्री राधा माधव शीघ्र ही अपना प्रेम अवश्य २ प्रदान करेंगे ही, ऐसा—दृढ़ विश्वास करके पाठ करता रहे।

भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा तथा दिव्य प्रेम की प्राप्ति के लिये—निम्नलिखित स्तोत्र माहेश्वर तन्त्र के ४६ वें पटल से दिया जा रहा है। इस स्तोत्र की विशेषता क्या है—इस विषय में पार्वती जी प्रश्न करती हैं कि 'शिवजी। बिना जप के, बिना सेवा के श्रीकृष्ण प्रसन्न हों, ऐसा कोई उपाय हो तो वह मुझे बताइये इसके उत्तर में श्री शिवजी कहते हैं—हे पार्वती जी बिना जप, बिना सेवा एवं बिना पूजा के भी केवल जिस स्तोत्र मात्र से ही

श्रीकृष्ण-कृपा प्राप्त हो सकती है वह स्तोत्र मैं तुम्हारे लिये कहता हूँ।

यथा— पार्वत्युवाच

भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि यथा कृष्णः प्रसीदति।
विना जपं विना सेवां विना पूजामपि प्रभोः ॥१॥
यथा कृष्णः प्रसन्नः स्यात्तमुपायं वदाधुना।
अन्यथा देवदेवेशः पुरुषार्थो न सिद्ध्यति ॥२॥

शिव उवाच

साधु पार्वति ते प्रश्नः सावधानतया शृणु।
विना जपं विना सेवां विना पूजा मपि प्रिये ॥३॥
यथा कृष्णा प्रसन्नः सयात्तमुपायं वदामिते।
जप सेवादिकं वापि विना स्तोत्रं न सिद्ध्यति ॥४॥
कीर्तिप्रियो हि भगवान् परमात्मा पुरुषोत्तमः।
जपस्तन्मयतासिद्ध्यै सेवा स्वाचाररूपिणी ॥५॥
स्तुतिः प्रसादनकरी तस्मात् स्तोत्रं वदामिवे।

अथ ध्यानम्

सुधाम्भोनिधिमध्यस्थे रत्नाद्वीपे मनोहरे ॥६॥
नवखण्डात्मक तत्र नवरत्नविभूषि ते।
तन्मध्ये चिन्तयेद् रम्यं मणिगेहमनुत्तमम् ॥७॥
परितो वनमालाभिर्ललिताभिर्विराजिते।

तत्र संचिन्तयेच्चारु कुट्टिमं सुमनोहरम् ॥८॥
चतुःषष्ट्या मणिस्तम्भैश्चतुर्दिक्षु विराजतिम् ।
तत्रसिंहासने ध्यायेत् कृष्णं कमललोचनम् ॥९॥
अनर्घ्यरत्नजटितमुकुटोज्ज्वल कुण्डलम् ।
सुस्मितं सुमुखाम्भोजं सखीवृन्दनिषेवितम ॥१०॥
स्वामिन्याश्लष्टवामाङ्गं परमानन्दविग्रहम् ।
एवं ध्यात्वा ततः स्तोत्रं पतेद्भवि जितेन्द्रियः ॥११

'सुधासागर के मध्य भाग में मनोहर रत्नद्वी
शोभा पाता है । उसके नौ खंड हैं वह दीप नूतन
रत्नों से विभूषित है । उस रत्नदीप के बीच मे
परम उत्तम रमणीय मणिमय भवन का चिन्तन करे
वह भवन सब ओर से ललित वन मालाओं द्वार
विभूषित एवं सुशोभित हो रहा है । उस भवन के
भीतर परम मनोहर अतिरमणीय मणिजटित पक्का
आंगन है—ऐसा ध्यान करे । वह आंगन चारों
दिशाओं में (सोलह-सोलह के क्रम से) चौंसठ मणि
निर्मित खंभों द्वारा विराजमान है । उस आंगन पर
एक सुन्दर सिंहासन है, जिसके ऊपर कमलनयन
भगवान् श्री कृष्ण विराजमान हैं । उनके स्वरूप

का इस प्रकार चिन्तन करे—वे मस्तक पर अमूल्य रत्नजटित मुकुट और कानों में उज्ज्वल कुण्डल धारण किये मन्द-मन्द मुस्कुरा रहे हैं। उनकी यह मुस्कान बड़ी मनोरम है। उसके कारण मुखारविन्द का सौन्दर्य और भी खिल उठा है। झुण्ड-की-झुण्ड सखियां उनकी सेवा में लगी हैं। स्वामिनी श्री राधा उनके वामाङ्ग से सटी बैठी हैं। श्री हरि का श्री विग्रह परमानन्द मय हैं।'
इस प्रकार ध्यान करके इन्द्रियों को पूर्णतः वश में रखते हुए स्तोत्र का पाठ करे।

अथ स्तोत्रम्

कृष्णं कमलपत्राक्षं सच्चिदानन्दविग्रहम्।
सखीयूथान्तरचरं प्रणमामि परात्परम्॥१२॥
शृङ्गाररसरूपाय परिपूर्णसुखात्मने।
राजीवारुणनेत्राय कोटिकंदर्परूपिणे॥१३॥
वेदाद्यगम्यरूपाय वेदवेद्यस्वरूपिणे।
अवाङ्मनसविन्द्यनिजलीलाप्रवर्तिने॥१४॥
नमः शुद्धाय पूर्णाय निरस्तगुणवृत्तये।
अखण्डाय निरंशाय निरावरण रूपिणे॥१५॥

संयोग विप्रलम्भाख्यभेदभावमहाऽद्वय ।
सदंशविश्वरूपाय चिदंशाशररूपिणे ॥१६॥
आनन्दांशस्वरूपाय सच्चिदानन्दरूपिणे ।
मर्यादातीतरूपाय निराधाराय साक्षिणे ॥१७॥
मायाप्रपञ्चदूराय नीलाचलविहारिणे ।
माणिक्यपुष्प रागाद्रिलीलाखेलप्रवर्तिने ॥१८॥
चिदन्तर्यामिरूपाय ब्रह्मानन्दस्वरूपिणे ।
प्रमाणपथदूराय प्रमाणाग्राह्यरूपिणे ॥१९॥
माया कालुष्यहीनाय नमः कृष्णाय शम्भवे ।
क्षरायाक्षररूपाय क्षराक्षर विलक्षिते ॥२०॥
तुरीयातीतरूपाय नमः पुरुषरूपिणे ।
महाकामस्वरूपाय कामलक्ष्यार्थवेदिने ॥२१॥
दश लीलाविहाराय सप्ततीर्थविहारिणे ।
विहाररसपूर्णाय नमस्तुभ्यं कृपानिधे ॥२२॥
विरहानल संतप्तभक्तचित्तोदयाय च ।
आविष्कृतनिजानन्द विफलीकृतमुक्तये ॥२३॥
द्वैताद्वैतमहामोहतमः पटलपाटिने ।
जगदुत्पत्तिविलयसाक्षिणेऽविकृताय च ॥२४॥
ईश्वराय निरीशाय निरस्ताखिलकर्मणे ।

संसारध्वान्तसूर्याय पूतनाप्राणहारिणे ॥२५॥
रासलीलाविलासोर्मिपूरिताक्षर चेतसे ।
स्वामिनीनयनाम्भोजभावभेदैकवेदिने ॥२६॥
केवलानन्दरूपाय नमः कृष्णाय वेधसे ।
स्वामिनीकृपयाऽऽनन्द कन्दलाय तवात्मने ॥२७॥
संसारारण्यवीथीषु परिभ्रान्तामनेकधा ।
पाहिमां कृपया नाथ त्वद्वियोगाधिदुःखिताम् ॥२८॥
त्वमेव मात्रपित्रादिबन्धुवर्गादयश्च ये ।
विद्या वित्तं कुलं शीलं त्वत्तो मे नास्तिकिंचन ॥२९॥
यथा दारुमयी योषिच्चेष्टते शिल्पशिक्षया ।
अस्वतन्त्रा त्वया नाथः तथाहं विचरामिभोः ॥३०
सर्वसाधनहीनां मां धर्माचारपराङ्मुखाम् ।
पतितां भवपाथोधौ परित्रातुं त्वमर्हसि ॥३१॥
माया भ्रमणयन्त्रस्थामूर्ध्वाधो भयविह्वलाम् ।
अदृष्टनिजसंकेता पाहि नाथ दयानिधे ॥३२॥
अनर्थेऽर्थदृशं मूढां विश्वास्तां भयदस्थले ।
जागृतऽथेशयानां मामुद्धरस्व दयापर ॥३३॥
अतीतानागतभवसतान विवशान्तराम् ।
बिभेमि विमुखाभूय त्वत्तः कमललोचन ॥३४॥

मायालवणपाथोधिपयः पानरतां हि माम् ।
त्वत्सांनिध्यसुधासिन्धुसामीप्यंनयमाचिरम् ॥३५॥
त्वाद्वियोगार्तिमासाद्य-यज्जीवामीतिलंज्ज्या ।
दर्शयिष्ये कथं नाथः मुखमेतद्विडम्बनम् ॥३६॥
प्राणनाथवियोगेऽपिकरोमि प्राणधारणम् ।
अनौचिती महत्यषा किं नलज्जयतेहियाम् ॥३७॥
किं करोमि क गच्छामि कस्यात्र प्रवदाम्यहम् ।
उत्पद्यन्ते विलीयन्ते वृत्तयोऽब्धो यथोर्मयः ॥३८॥
अहंदुःखाकुला दीना दुःखहान भवत्परः ।
विज्ञान प्राणनाथेदं यथेच्छसि तथा कुरू ॥३९॥
ततश्च प्रणमेत् कृष्णां भूयोभूयः कृताञ्जलिः ।
इत्येतद् गुह्यमाख्यातं न वक्तव्यंगिरीन्द्रजे ॥४०॥
एवं यः स्तौति देवेशि त्रिकालं विजितेन्द्रियः ।
आविर्भवति तच्चित्ते प्रेमरूपीस्वयप्रभुः ॥४१॥

संस्कृत से अनभिज्ञ पाठकगण किसी संस्कृत के विद्वान् से स्तोत्र का अर्थ समझकर दिन में तीन बार प्रातः, सायं एवं मध्यान्ह में पाठ करेंगे तो अनन्त गुना लाभ मिल सकेगा । यह पाठ प्रतिदिन बिना नांघ चलना चाहिये । रोग आदि के समय

अशक्ति होने पर किन्हीं सदाचारी ब्राह्मण द्वारा कराया जा सकता है। तीव्र उत्कण्ठा के साथ-साथ ब्रह्मचर्य का पालन और इन्द्रिय-संयम आवश्यक है। इससे भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा तथा उनके दिव्य प्रेम की प्राप्ति होती है।

भगवान श्रीराम के दर्शन के लिये—एक एकांत कमरे को सब सामान हटाकर खाली करके धोकर स्वच्छ कर लेना चाहिये। सूर्योदय से पूर्व ही स्नान करके उस कमरे में किसी ब्राह्मण-द्वारा कलश-स्थापना कराके गणेश जी का पूजन कर लेना चाहिये और शुद्ध घी का अखण्ड दीपक जला लेना चाहिये।

सूर्योदय के समय से ही 'राम'—इस नाम को स्पष्ट रूप से बोलना प्रारम्भ कर देना चाहिये और दूसरे दिन सूर्योदय तक अर्थात पूरे चौबीस घंटे 'राम-राम' बोलते रहना है। इसके लिये केवल इतने नियम हैं—१. एक क्षण को भी राम-राम का बोलना बन्द न हो। २. उस कमरे से बाहर न जाया जाय। ३. उस कमरे में दूसरा कोई इस बीच में न आये।

द्वार भीतर से बन्द रहे। ४. अखराड दीपक बुझने न पाये।
एक दिन पहले ऐसा भोजन करना चाहिये कि अनुष्ठान के दिन शौच-लघुशङ्का अधिक तंग न करें। अनुष्ठान वाले कमरे में जल रखना चाहिये आवश्यक होने पर बोलते हुए जप चलता रहे और लघुशङ्का से निवृत हुआ जा सकता है कमरे में ही नाली पर। उस कमरे में अनुष्ठान करने वाला बैठे खड़ा हो, टहले चाहे जैसे रहे; किन्तु नामोच्चारण बंद न हो इतना ध्यान रक्खे।
दूसरें दिन प्रातःकाल कलशादि का विसर्जन कर दिया जाता है।

रहेउ एक दिन अवधि अधारा।
समुझत मनदुख भयउ अपारा॥
कारन कवन नाथ नहिं आयउ।
जानि कुटिल किधौं मोहि बिसरायउ॥
अहह धन्य लछिमन बड़भागी।
राम पवार बिंद अनुरागी॥
कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा।

दाढ़ी–अगर किसी मनुष्य की दाढ़ी सुन्दर और भरपूर हो तो ऐसा मनुष्य मिलनसार और नेक होता है जिस मनुष्य की दाढ़ी कम और छोटी हो वह घमंडी होता है। अगर किसी मनुष्य की बहुत लम्बी दाढ़ी हो तो वह हिम्मती तथा साहसी होता है बिना दाढ़ी का मनुष्य जन्म से ही कमजोर कम हिम्मत वाला होता है। अब आगे औरत के बारे में पढ़िये।

स्त्री लक्षण

कद-लम्बे कद वाली औरत नेक व ईश्वर भक्त होती है मध्यम कद वाली स्त्री अपने स्वामी की प्यारी गीज स्वभाव। छोटे कद वाली स्त्री चरित्र हीन और निर्लज्ज हुआ करती है। जो स्त्री बिना मतलब घर दर फिरे और आंखें इधर उधर हर समय हरकत करती रहें और बिना मतलब बातचीत करती रहे उस स्त्री पर किसी किस्म का विश्वास नहीं करना चाहिये जिस औरत की सोते समय आंख खुली रहे वह अपने पति की आज्ञाकारी नहीं होती जिस स्त्री के हंसते समय गालों में गढ़ा

द्वार भीतर से बन्द रहे। ४. अखण्ड दीपक बुझने न पाये।
एक दिन पहले ऐसा भोजन करना चाहिये कि अनुष्ठान के दिन शौच-लघुशङ्का अधिक तंग न करें। अनुष्ठान वाले कमरे में जल रखना चाहिये आवश्यक होने पर बोलते हुए जप चलता रहे और लघुशङ्का से निवृत हुआ जा सकता है कमरे में ही नाली पर। उस कमरे में अनुष्ठान करने वाला बैठे खड़ा हो, टहले चाहे जैसे रहे; किन्तु नामोच्चारण बंद न हो इतना ध्यान रक्खे।
दूसरें दिन प्रातःकाल कलशादि का विसर्जन कर दिया जाता है।

रहेउ एक दिन अवधि अधारा।
समुझत मनदुख भयउ अपारा॥
कारन कवन नाथ नहिं आयउ।
जानि कुटिल किधौं मोहि बिसरायउ॥
अहह धन्य लछिमन बड़भागी।
राम पदार बिंद अनुरागी॥
कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा।

ताते नाथ संग नहिं लीन्हा ॥

जौं करनी समुझै प्रभु मोरी ।

नहिं निस्तार कलप सत कोरी ॥

जन अवगुन प्रभु मान न काऊ ।

दीन बंधु अति मृदुल सुभाऊ ॥

मोरे जियं भरोसदृढ़ सोई ।

मि लहहिं राम संगुन सुभ होई ॥

बीते अवधि रहहिं जौं प्राना ।

अधम कवन जग मोहि समाना ॥

उपर्युक्त चौपाइयों का आर्तभाव से भगवान् श्री राम के शीघ्र दर्शन की अत्यन्त उत्कृट उत्कण्ठा को लेकर जब तक कार्य सिद्ध न हो जाय, कम-से-कम इक्कीस बार जप करे और साथ ही, 'ऊंरां रामाय नमः' मन्त्र की ११ माला का जप करे ।

—सु० सिं०

भगवान् श्री कृष्ण के दर्शन के लिये

(१)

कच्चित्तुलसि कल्याणि—

गोविन्दचरण प्रिये ।

सह त्पालि कुलैर्बिभ्रद्
दृष्टस्तेऽतिप्रियोऽच्युतः ॥
(श्री मद्भागवत १०।३०।७)

इस मन्त्र को विल्व काष्ठा की छोटी पीठि का (चौकी) बनवाकर तुलसी काष्ठ के चन्दन से और तुलसी काष्ठ की ही कलम से लिखकर रोज षोडशोपचार से पूजन करे और कम-से-कम ३२००० जप-संख्या पूरी करे। ब्रह्मचर्य का अखण्ड पालन करे और सत्य का आचरण करे।

(२)

व्रजवनौ कसां व्यक्तिरङ्ग ते
वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम्।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्पृहात्मनां
स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम् ॥
(श्री मद्भागवत १०।३१।१८)

इस मन्त्र की एक माला का जप करके (ऊं गोपी-जन वल्लभाय नमः, मन्त्र की ११ माला का प्रति दिन जाप करे। ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है।

(३)

तासामाविरभूच्छौरिः स्मयमान मुखाम्बुजः ।
पीताम्बरधरास्त्रग्वी साक्षान्मन्मथ मन्मथ । १।

(श्री मद्भागवत १०। ३२। २)

इस मन्त्र की एक माला का जप करके 'ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा' इस मंत्र की कम-से-कम ११ मालाओं का जाप प्रतिदिन शुद्ध होकर करे । ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है।

भगवान् के बाल रूप में दर्शन के लिये

(१)

यत्पादपांसुर्बहुजन्मकृच्छ्रतो
धृतात्मभिर्योगिभिरप्यलभ्यः ।
स एव यद्दृग्विषयः स्वयं स्थितः
किं वर्ण्यते दिष्टमतो व्रजौकसाम् ॥

(श्री मद्भागवत १०।१२।१२)

इस मन्त्र का १०८ जप करे और भागवत के दशम स्कन्ध के पूर्वार्धका पारायण प्रतिदिन तीन अध्याय के हिसाब के से १६ दिनों में पूर्ण करे । सोलहवें दिन चार अध्याय का पाठ करे । पाठ के पूर्व और

अन्त में उपर्युक्त मन्त्र का सम्पुट दे।

श्री बाल कृष्ण के ध्यान से सर्वविपत्तियों का नाश तथा भगवान् के दर्शन।

(२)

वालं नवीनशत मत्रविशाल नेत्र
बिम्बा धरंसजल मे घरुचिमनोज्ञमम् ।
मन्दस्मितं मधुर सुन्दर मन्दयानं
श्रीनन्दनन्दन महंमनसा नमामि ॥ १॥
मञ्जीरन् पूररणान्नवरलकाञ्ची–
श्रीहार के सरिनखात्रलियन्त्र संधम्।
दृष्ट्यातिहारिषिविन्दुविराजमानं
वन्दे कलिन्दतनुजाततटवाल केलिम्॥ २॥
पूर्णेन्दुसुन्दर मुखोपरि कुञ्चिताग्राः
केशानवीनधननीलनिभाः स्फुरन्त ।
राजन्त आनतशिरः कुमुदस्य यस्य
नन्दात्मजायसबलायनमोनमस्ते ॥३॥
श्री नन्दनन्दनस्तोत्रं प्रातरुत्थाययः पठेत्।
तन्नेत्रगोचरं याति सानन्दोनन्दनन्दनः ॥
श्री नन्दनन्दन के नेत्रनवीन कमल के समान

विशाल हैं, पके हुए बिम्बफल के समान लाल-लाल ओठ हैं, जल से भरे हुए मेघ की सी अङ्ग कान्ति है। मन्द मन्द मुसकराते हुए वे अत्यन्त मनोहर जान पड़ते हैं; उनकी धीमी चाल भी अत्यन्त आकर्षक और सुन्दर है। उन बाल गोपाल को मैं मन से प्रणाम करता हूं। उनके चरणों में पायजेब और नूपुर सुशोभित हैं। नवीन रत्ननिर्मित करधनी खन-खन शब्द कर रही है। वक्षःस्थल पर सुनहरी रेखा के रूप में लक्ष्मी जी, मुक्ता हार बघनखों की पंक्ति तथा यन्त्रों का समूह शोभा दे रहा है। ललाटपर दृष्टि दोष जनित पीड़ा का निवारण करने वाला का जल का डिठौना विशेष सुन्दर लग रहा है। कलिन्दतनया श्री यमुना जी के तटपर वालो चितक्रीड़ा करते हुए श्रीकृष्ण की मैं बन्दना करता हूं। नीचे की ओर झुका हुआ जिनका शिरोभाग प्रफुल्ल कुमुद की सी शोभा धारण करता है, पूर्णिमा के चन्द्रमा की भांति सुशोभित परम सुन्दर श्री मुख पर नवीन मेघ के समान नीले रंग की घुंघरारीं अलकें लहरा रही हैं।

बलदाऊ भैया के सहित उन नन्द के लाड़िले ! आप को मेरा बार-बार प्रणाम।

प्रातःकाल उठकर जो इस नन्दनन्दन–स्तोत्र का पाठ करता है, आनन्दमूर्ती श्री नन्दनन्दन उसके नेत्रों के आगे नाचने लगते हैं।

बालकों (और बड़ों को भी) को प्रातःकाल शय्यासे उठते ही हाथ मुंह धोकर श्री श्यामसुन्दर नन्द के उपर्युक्त बाल रूप का नित्य नियम पूर्वक प्रेम सहित ध्यान करना चाहिये। इससे सारी विपत्तियों का विनाश होकर भगवान् श्री बाल कृष्ण के दर्शन प्राप्त होते हैं।

श्री राधा जी का आश्रय पाने के लिये

कृपयति यदि राधा बाधिताशेषवाधा
किमपरमवशिष्टं पुष्टिमर्यादयोर्मे।
यदि बदति च किंचित् स्मेरहा सोदित श्री
द्विजवरमणिपङ्क्त्या मुक्ति शुक्त्यातदाकिम ॥

श्यामसुन्दर शिखराडशेखर
स्मेरहास्य मुरली मनोहर।
राधिकारसिक मां कृपानिधे

स्वप्रियाचरणकिंकरीं कुरु ॥
प्राणनाथ वृषभानुनन्दिनी
श्री मुखाब्जरसलोल षट्पद ।
राधिका पदतले कृतस्थितिं
त्वांभजामि रसिकेन्द्रशेखर ॥
संविधाय दशनेतृणं विभो
प्रार्थये व्रजमहेन्द्रनन्दन ।
अस्तु मोहन तवातिवल्लभा
जन्मजन्मनि मदीश्वरी प्रिया ॥
राधा रासेश्वरीरम्या परमा परमात्मि का ।
रासोद्भवा कृष्ण कान्ता कृष्णावक्षःस्थलस्थिता ॥
कृष्ण प्राणधिका देवी महाविष्णु प्रसूरपि ।
सर्वदा विस्णुमाया च सत्य सत्या सनातनी ॥
ब्रह्मस्वरूपा परमा निर्लिप्ता निर्गुणा परा ।
वृन्दावने च विजया यमुनातटवासिनी ॥
गोपाङ्ग नानां प्रथमा गोपिका गोपमातृ का ॥
सानन्दा परमानन्दा नन्दनन्दनकामिनी ॥
वृषभानुसुता कान्ता शान्तिदानपरायणा ।
कामा कलावती कन्या तीर्थ पूता सनातनी ।

शुभानि सप्तत्रिंशच्च वेदोक्तानि शतानिच ॥
सार भूतानि पुरायानि सर्वनामसु नारद ॥

उपर्युक्त स्तोत्र के परम श्रद्धा तथा दृढ़ शिवास के साथ प्रतिदिन श्री राधिका जी के चित्र पट का पञ्चोपचार से पूजन करके तीन पाठ करने चाहिये।

सर्वव्याधिनाश पूर्वक दीर्घायुकी प्राप्ति के लिये महामृत्युंजयका विधान

भगवान् श्री शंकरके 'रुद्राध्याय' तथा 'मृत्युंजय' महामन्त्र से भारत के कोने–कोने में अभिषेक किया जाता है। श्रावण में तो इसकी बहार देखने योग्य होती है। हम आज यहां उसी 'मृत्युंजय' महामन्त्र की अर्थ-गम्भारता पर कुछ विचार करते हैं। यह विचार निश्चय ही परम पुराय प्रद है।

ऊं हौं जूंसः। ऊं भूर्भुवः स्वः। ऊं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योमामृतात्। स्वः भुवः ऊं। सः जूं हौं ऊं।–

यह सम्पुटयुक्त मन्त्र है

ऊं कारका प्रतीक शिवलिङ्ग है, उसी के ऊपर अविच्छिन्न–अनवरत जलधारा के प्रवाहवत् अपनी

दृष्टि स्थिर करते हुए विश्वास पूर्वक मृत्युं जय महा मन्त्र का जप करता रहे तो ध्यानावस्था प्रत्यक्ष खड़ी हो जाती है और एक विलक्षण आनन्द की अनुभूति होती है।

सृष्टि के आदि, मध्य और अन्त–तीनों 'हौं' और 'जूँ' से अपने समक्ष उपस्थित करते हुए त्रिलोकी में जप करने वाला व्यक्ति श्री त्र्यम्बकेश्वर के प्रति अपने आप का समर्पण कर रहा है। त्र्यम्बकेश्वर की कृपारूपीसुगन्ध फैल रही है और उपासक के रोम-रोम में ऐसी स्फूर्ति होने लगती है कि उस का आध्यात्मिक प्रभाव छिप नहीं सकता। इन्द्रायण (तूँबे) की बेल सूख जाने पर फल बंधन से मुक्त होकर आस पास की अनन्तता में छिप जाता है, उसी प्रकार जप करके उपासक अपनी मोक्ष की अवस्था को प्रत्यक्ष कर सकता है।

'एकोऽहं वहु स्याम्'—परब्रह्म की यह इच्छा होती है, और महा प्राण की अलौकिक गति प्रस्तुत होती है। उसका सूचन महाप्राण अक्षर 'ह' से होता है। प्रकृति विकृत होने लगे, पञ्च-

तन्मात्रा उद्भूत हो, शब्द गुण आकाश सृष्टि को झेलने के लिए तत्पर हो जाय, उस दृश्य का आभास 'ओं' की ध्वनि करा रही है। जू=जन्म, ऊ=उद्भव=विकाश, विस्तार=शून्य, प्रलय। इस प्रकार 'जूं' सृष्टि की तीनों अवस्थाओं का दिग्दर्शन करा रहा है। सः=पुरुषः=विराट्–यही तो प्रलय के समय अवशिष्ट रहता है। 'पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्, के साथ 'यदापूर्वमकल्पयत्' इन वाक्यों का स्मरण ऐसे समय क्यों नहीं होगा? ऐसी सृष्टि 'भूर्भुवःस्वः' की त्रिलोकी है। उस त्रिलोकी का निवासी उपासक त्र्यम्बकेश्वर के सामने जपयज्ञ कर रहा है और फल स्वरूप वह सहज ही अपुनरा-वृत्तिवाली मुक्ति प्राप्त करता है। ऊपर कहा गया है कि शिवलिङ्ग ॐ कार का प्रतीक है, वह कैसे है–यह जानने के लिये उ,॒,ँ, ॐ के इन तीनों भागों पर विचार करे। उपासक पूर्वाभिमुख बैठता है। जल झेलने वाला भाग 'उ' उत्तर दिशा की ओर जल को बहा कर ले जाता है। '॒' यह भाग आधार है, जो जल हरि को ऊँचे

उठाये रहता है । "ँ" यह भाग लिङ्ग के रूप में ऊपर को विराजमान रहता है। किसी भी शिव मन्दिर में जाकर पूर्वाभिमुख रह कर इस दृश्य का साक्षात्कार किया जा सकता है।

(२) महा-

मृत्यु विनिर्जितो यस्मात् तस्मान्मत्युंजयः
भगवान् मृत्युंजय के जप-ध्यान से मार्कण्डेयजी, श्वेत राजा आदि के काल भय निवारण की कथा शिव पुराण, स्कन्द पुराण, काशी खण्ड, पद्म् पुराण-उत्तर खण्ड-माघमाहात्म्य आदि में आती है। आयुर्वेद के ग्रन्थों में भी मृत्युंजय-योग मिलते हैं । मृत्यु को जीत लेने के कारण ही इन मन्त्र योगों को 'मृत्युंजय 'कहा जाता है-

मृत्युर्विनिर्जितो यस्मात् तस्मान्मृत्युंजयः स्मृतः
(रसे० सारसंग्रह, अ०२ज्वर १)

मन्त्र शास्त्र में वेदोक्त 'त्र्यम्बकं यजामहे' (ऋक् ७।५९।१२,यजुः३।६०।, अथर्व०१४।१।१७,तैत्ति० स० १।८।६।२, निरुक्त१४।३५) इत्यादि को ही मृत्युंजय नाम प्राप्त है। यों पुराणों में, विविध

निबन्ध ग्रन्थों में तथा मृत्युंजय-तन्त्र, मृत्युंजय कल्प,मृत्युंजय पञ्चाङ्ग आदि में इस मन्त्र का भाष्य, विधान, पटल,पद्धति, स्तोत्र आदि सब कुछ मिलते हैं। शिवपुराण, सती खण्ड ३८।२१।४२ में इसका विस्तृत भाष्य है। वहां इसको शुक्राचार्य की 'मृत संजीवनी-विद्या' कहा गया है तथा स्वयं शुक्राचार्य ने ही इसका दधीचि को उपदेश किया है। विष्णु धर्मोत्तर आदि में इसके हवनादि के भेद से अनेक अर्थ-कामसाधक आदि दूसरे भी काम्य प्रयोग बतलाये गये हैं। यथा–

कन्या नाम गृहीत्वा च कन्या नाम करः स्मृतः।
त्र्यम्बकं यजा महेति होमः सर्वार्थसाधकः॥
धत्तूर पुष्पं सघृतं तथा हुत्वा चतुष्पथे।
शून्ये शिवालये वापि शिवात्कामान वाप्नुयात्॥
हुत्वा च गुग्गुलं राम स्वयं पश्यति शंकरम्।

(विष्णु धर्म ०२।१२५।२३–२५)

ऋग्विधान आदि में भी ऐसा ही बतलाया गया है। ब्रह्म वैवर्त पुराण, प्रकृतिखण्ड के ५१ वें अध्याय में कहा गया है कि भगवान् श्री कृष्ण

ने अङ्गिरा की पत्नी को मृत्युंजय-ज्ञान दिया था। यहां संक्षेप में उसके जप की विधि दी जा रही है। यद्यपि तन्त्रसार शारदा तिलक आदि एवं मंत्र महार्णव आदि में एक साथ ही त्र्यक्षर, पञ्चाक्षर आदि कई मृत्युंजय मन्त्र बतलाये गये हैं, तथापि यहां सर्वाधिक प्रचलित 'त्र्यम्बक मन्त्र के ही विनियोग, ध्यान आदि लिखे जा रहे हैं। इससे रोग, भय–दुःख-दारिद्रय आदि का नाश तथा सभी कामनाओं की सिद्धि होती है।

साधक को चाहिये कि किसी पवित्र स्थान में स्नान, आचमन, प्राणायाम, गणेशस्मरण पूजन वन्दन के बाद तिथि वारादिका कीर्तन करते हुए इस प्रकार संकल्प करे–

अमुकोऽहं अमुकवासरादौ स्वस्य(यजमानस्य वा)निखिलारिष्टनिवृत्तये महा मृत्युंजय मन्त्र जपमहं करिष्ये।

तत्पश्चात् हाथ में जल लेकर इस प्रकार न्यासादि करना चाहिये।

ॐ अस्य श्रीमहा मृत्युंजय मन्त्रस्य वामदेव कहोल वशिष्ठा ऋषयः पंक्ति गायत्र्युष्णि गनुष्टु

भश्छदांसिः सदाशिव महा मृत्युंजय रूद्रो देवता ह्रीं शक्तिः श्री बीजं महा मृत्युंजय प्रीतये ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।
यों कह-कहकर हाथ का जल छोड़ दें।
पुनः वामदेव कहोलवशिष्ठ ऋषिभ्यो नमः, मूर्ध्नि। पङ्क्ति गायत्र्य नुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः, वक्त्रे। सदाशिवमहा मृत्युंजय रुद्र देवता यै नमः हृदि। ह्रीं शक्त्ये नमः, लिङ्गे। श्रींबीजाय नमः पादयोः॥
उपर्युक्त मन्त्रों से सिर, मुख, हृदय, लिङ्ग तथा चरण का स्पर्श करे।
तत्पश्चात् निम्न मंत्रों से पहले अंगूठे आदि का स्पर्श करते हुए करन्यास करके फिर उन्हीं मन्त्रों से हृदयादि को स्पर्श करते हुए हृदयादिन्यास करना चाहिये।
ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणाये स्वाहा।
ऐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवतेरुद्राय अष्ट मूर्तये मामृजी वय।
ॐहौंॐजूंसः भूर्भुवः स्वः सुगन्धि पुष्टिवर्धम्ॐनमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिर से जटिने स्वाहा।

ॐ हौंॐ जूंसः भूर्भुवःस्वः उर्वारुकमिव बन्धनात्।
ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रौं।
ॐहौं ॐजूंसः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ
नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय।
ॐ हौं ॐजूंसः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐनमो भग-
वते रुद्राय अग्नि त्राय उज्ज्वलज्वाल मांरक्ष अाघोराय।
इस मंत्र के जप में ध्यान परमावश्यक है।
शिव पुराण में यह ध्यान इस प्रकार बतलाया
गया है हस्ताम्भोज युगस्थ कुम्भ युगला दुध्दृत्य
तोयं शिरा सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतंस्वाङ्के
सकुम्भौ करौ। अक्षस्त्रङ् मृगस्त ममबुजगतं मूर्द्धस्थ
चन्द्रस्रावत्-पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं त्र्यक्षं च
मृत्युंजयम्। (सतीख, ३८।२४)
ध्यान का स्वरूप यह है कि भगवान् मृत्युं-
जय के आठ हाथ हैं। वे अपने ऊपर के दोनों
कर कमलों से दो घड़ों को उठाकर उसके नीचे के
दो हाथों से जल को अपने सिर पर उडेल रहे
हैं। सबसे नीचे के दो हाथों में भी दो घड़े लेकर
उन्हें अपनी गोद में रखलिया है। शेष दो हाथ

में वे रुद्राक्ष तथा मृग धारण किये हुए हैं। वे कमल के आसन पर बैठे हैं और उनके शिरःस्थ चंद्र से निरंतर अमृत वृष्टि के कारण उनका शरीर भीगा हुआ है। उनके तीन नेत्र हैं तथा उन्होंने मृत्यु को सर्वथा जीत लिया है उनके वामाङ्ग–भाग में गिरिराज नन्दिनी भगवती उमा विराजमान हैं। इस प्रकार ध्यान करके रुद्राक्षमाला से मन्त्र का जप करना चाहिये। मन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है–

करन्यास	हृदयादिन्यास
अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। (तर्जनीसे अंगूठों को छूए)	हृदयाय नमः। (पांचों अंगुलियों से हृदय का स्पर्श करे)
तर्जनीभ्यां नमः। (दोनों तर्जनी अंगुलियों को अंगूठों से मिलाये)	शिरसि स्वाहा। (सिरकास्पर्शकरे)
मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट् (शिखा छुए)
अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुम्।

(दाहिने हाथ से बाएं कंधे
तथा बाएं हाथ से दाहिना
कंधा छुए।)

कनिष्ठकाभ्यां नमः। नेत्र त्रयाय वौषट्।
करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। अस्त्राय फट।

"ॐ हौं। जूं सः' ॐभूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमि व बंधना न्मृत्यो मुंक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूं हौं ॐ। यह सम्पुटयुक्त मन्त्र है। इसका प्रायः सवा लाख जप सर्वार्थ साधक माना गया है। जप के बाद इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिये।

गुह्याति गुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धि र्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर॥
मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।
जन्म मृत्यु जरारोगैः पीडितं कर्म बन्धनैः॥

जप के अन्त में दशांश हवन, उसका दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन आदि कराना-करना चाहिये।

सर्वव्याधिनाश के लिये लघु मृत्युंजय-जप

ॐ जूं सः (नाम जिसके लिये किया जाय) पालय पालय सः जूं ॐ ।

इस मन्त्र का ११ लाख जप तथा एक लाख दस हजार दशांश का जप करने से सब प्रकार के रोगों का नाश होता है इतना न हो तो कम-से-कम सवा लाख जप और साढ़े बारह हजार दशांश जप अवश्य करना चाहिये । इस ही आगे लिखा यंत्र भी हाथ में बांध देना चाहिये ।

इसे भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर गुगुल का धूप देकर पुरुष के दाहिने हाथ और स्त्री के बायें हाथ में बांध देना चाहिये । गोत्र, पिता का नाम, पुत्र या पुत्री (रोगी का नाम यथा स्थान) लिख देना चाहिये ।

इन्द्राक्षी-यन्त्र को विभूति में लिखकर निम्नलिखित प्रकार से जप करें—

ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षी स्तोत्रमहामन्त्रस्य शची पुरन्दर ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । इन्द्राक्षी दुर्गा देवता । लक्ष्मीर्बीजम् । भुवनेश्वरी शक्तिः भवानीति कील-

श्री महा मृत्युंजय-कवच-यन्त्रम्
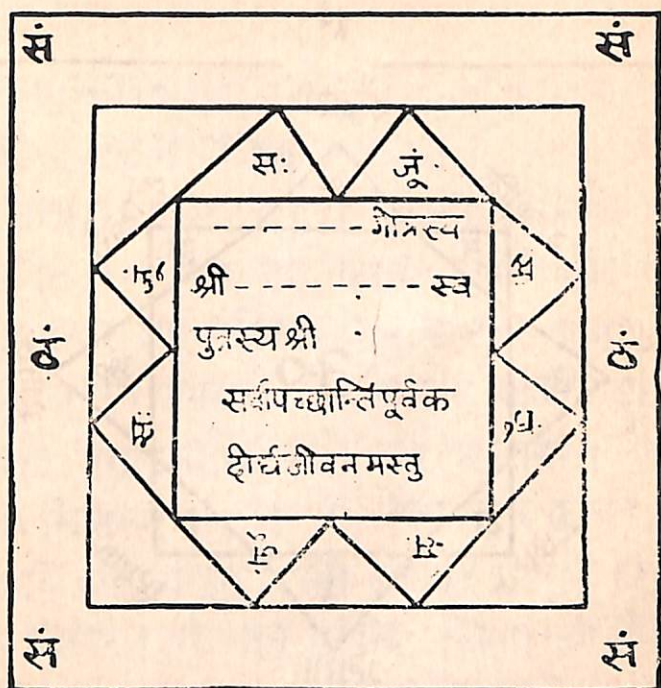
कम्, मम इन्द्राक्षी प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।
ॐ इन्द्राक्षीत्युङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ महालक्ष्मीरिति तर्जनीभ्यां नमः। ॐ महेश्वरीति मध्यमाभ्यां नमः। ॐ अम्बुजाक्षीत्यनामिकाभ्यां नमः। ॐ कात्यायनीति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ कौमारीति करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

इन्द्राक्षी-यन्त्र
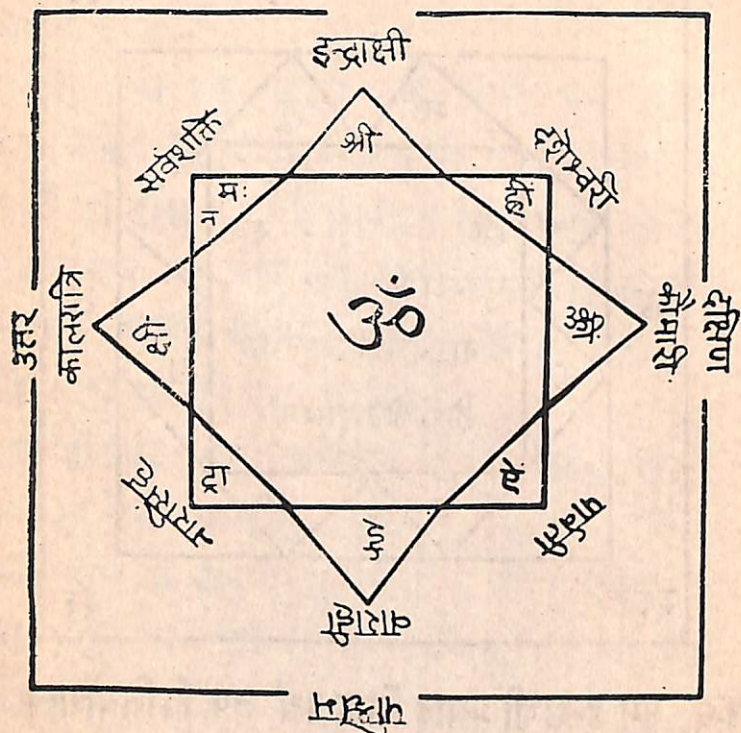
ॐ इन्द्राक्षीति हृदयाय नमः। ॐ महा लक्ष्मीरिति शिर से स्वाहा। ॐ माहेश्वरीति शिखायै वषट्। ॐ अम्बुजाक्षीति कवचाय हुम्। ॐ कात्यायनीति नेत्र त्रयाय वोषट्। ॐ कौमारीत्य स्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवस्स्वरोमिति दिगबन्धः।

सर्व कार्य सिद्ध के लिये

(१)

ॐनमो भगवते सर्वरक्षकाय ह्री ॐ मां रक्ष-रक्ष सव सौभाग्य भाजनं मां कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र का हरिद्रा अथवा तुलसी की माला पर प्रतिदिन १०८ बार जप करना चाहिये और जप के अनन्तर राम चरित मानस के उत्तर काराड के निम्नलिखित ग्यारहवें दोहे के बाद वाली चौपाई अर्थात् 'प्रभुबिलोकि मुनि मन अनुरागा। तुरत दिव्त सिंघासन मांगा।' से लेकर उत्तर काराड के चौदहवें दोहे अर्थात् 'वरनि उमापति रामगुन हरषि गए कैलास। तब प्रभु कपिन्ह दिवाए सब विधि सुखप्रद वास ॥' तक पाठ करना चाहिये ।

रक्षा–रेखा–मन्त्र 'सिद्ध' करने के लिये या किसी संकट पूर्ण जगह पर रात व्यतीत करने के लिए अपने चारों ओर जल या शुद्ध कोयले से रक्षा की रेखा खींच लेनी चाहिये। लक्ष्मण जी सीता जी की कुटी के आस-पास जो रक्षा-रेखा खींचीं थी, उसी लक्ष्य पर निम्नलिखित रक्षा-मंत्र बनाया गया

है। इसे एक सौ आठ आहुतियों द्वारा सिद्ध कर लेना चाहिये। रक्षा-रेखा का मन्त्र एक बार सिद्ध कर लेने पर वह जीवन भर के लिये हो जाता है दुबारा सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है।

[रक्षा-रेखा-मन्त्र]

मामभिरक्षय रघुकुलनायक
धृतबर चाप रुचिर कर सायक॥

विविध-कामना-सिद्धि के मन्त्र

(१) विपत्ति-नाश के लिये

राजिव नयन धरें धनु सायक।
भगत विपति भंजन सुखदायक॥

(२) संकट नाश के लिये

जौं प्रभु दीन दयालु कहावा।
आरति हरन बेद जसु गावा॥
जपहिं नामु जन आरत भारी।
मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी॥
दीन दयाल बिरिदु संभारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी॥

(३) कठिन-क्लेश-नाश के लिये

हरन कठिन कलि कलुष कलेसू ।
महा मोह निसि दलन दिनेसू ॥

(४) विघ्न-विनाश के लिये

सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेही ।
राम सुकृपां बिलोकहिं जेही ॥

(५) खेद-नाश के लिये

जब तें रामु ब्याहि घर आए ।
नित नव मंगल मोद बधाए ॥

(६) महामारी, हैजा और मरीका प्रभाव न पड़े, इसके लिये

जय रघुवंस बनज बन भानू ।
गहन दनुज कुल दहन कृसानू ॥

(७) विविध रोगों तथा उपद्रवों की शान्ति के लिये

दैहिक दैविक भौतिक तापा ।
राम राज नहिं काहुहि ब्यापा ॥

(८) मस्तिष्क की पीड़ा दूर करने के लिये

हनुमान अंगद रन गाजे ।

हांक सुनत रजनीचर भाजे ॥

(९) विष-नाश के लिये

नाम प्रभाउ जान सिव नीको ।
काल कूट फलु दीन्ह अमी को ॥

(१०) अकाल मृत्यु-निवारण के लिये

नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट ।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट ॥

(११) भूत को भगाने के लिये

प्रनवउं पवन कुमार खल बन पावक ग्यान घन ।
जासु हृदयं आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥

(१२) नजर झाड़ने के लिये

स्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी ।
निरखहिं छवि जननीं तृन तोरी ॥

(१३) खोई हुई वस्तु पुनः प्राप्त करने के लिये

गई बहोर गरीब नेवाजू ।
सरल सबल साहिब रघुराजू ॥

(१४) जीविका-प्राप्ति के लिये

विश्व भरन पोषन कर जोई ।
ताकर नाम भरत अस होई ॥

(१५) दरिद्रता दूर करने के लिये

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के।
कामद धन दारिद दवारि के॥

(१६) लक्ष्मी-प्राप्ति के लिये

जिमि सरिता सागर महुं जाहीं।
जद्यपि ताहि कामना नाहीं॥
तिमि सुख-संपति बिनहिं बोलाएं।
धरमसील पहिं जाहि सुभाएं॥

(१७) पुत्र-प्राप्ति के लिये

प्रेम मगन कौसल्या निसिदिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बाल चरित्र कर गान॥

(१८) सम्पत्ति की प्राप्ति के लिये

जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं।
सुख संपति नाना विधि पावहिं॥

(१९) ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त करने के लिये

साधक नाम जपहिं लय लाएं।
होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएं॥

(२०) सर्व-सुख प्राप्ति के लिये

सुनहिं बिमुक्त बिरत अरु बिषई।

लहहिं भगति गति संपति नई ॥

(२१) मनोरथ-सिद्धि के लिये

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरुनारि।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि॥

(२२) कुशल-क्षेम के लिये

भुवन चारिदस भरा उछाहू।
जनक सुता रघुबीर बिवाहू॥

(२३) मुकदमा जीतने के लिये

पवन तनय बल पवन समाना।
बुधि बिबेक विज्ञान निधाना॥

(२४) शत्रु के सामने जाना हो, उस समय के लिये

कर सारंग साजि कटि भाथा।
अरि दल दलन चले रघुनाथा॥

(२५) शत्रु को मित्र बनाने के लिये

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई
गोपद सिंधु अनल सितलाई

(२६) शत्रुता-नाश के लिये

बयरु नकर काहू सन कोई।

राम प्रताप विषमता खोई ॥

(२७) शास्त्रार्थ में विजय पाने के लिये

तेहिं अवसर सुनि सिवधनु भंगा ।
आयउ भृगुकुल कमल पतंगा ॥

(२८) विवाह के लिये

तब जनक पाइ वसिष्ठ आयसु ब्याह साज संवारिकै ।
मांडवी श्रुत की रति उरमिला कुंअरि हंकारिकै ॥

(२९) यात्रा की सफलता के लिये

प्रविसि नगर कीजै सब काजा ।
हृदयं राखि कोसलपुर राजा ॥

(३०) परीक्षा में पास होने के लिये

जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी ।
कवि उर अजिर नचावहिं बानी ॥
मोरि सुधारिहि सो सब भांती ।
जासु कृपा नहिं कृपां अघाती ॥

(३१) आकर्षण के लिये

जेहि के जेहिं पर सत्य सनेहू ।
सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू ॥

(३२) स्नान से पुण्य लाभ के लिये

सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग।
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग॥

(३३) निन्दा की निवृत्ति के लिये

राम कृपां अवरेब सुधारी।
बिबुध धारि भइ गुनद गोहारी॥

(३४) विद्या-प्राप्ति के लिये

गुरु गृहं गए पढ़न रघुराई।
अलप काल विद्या सब आई॥

(३५) उत्सव होने के लिये

सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्ह कहुं सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु॥

(३६) यज्ञोपवीत धारण करके उसे सुरक्षित रखने के लिये

जुगुति बेधि पुनि पोहि अहिं राम चरित बरताग।
पहिरहिं सज्जन बिमल उर सोभा अति अनुराग॥

(३७) प्रेम बढाने के लिये।

सब नर करहिं परस्पर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥

(३८) कातर की रक्षा के लिये

मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ।
एहिं अवसर सहाय सोइ होऊ॥

(३९) भगवत्स्मरण करते हुए आराम से मरने के लिये

राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्हतनु त्याग।
सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानइ नाग॥

(४०) विचार शुद्ध करने के लिये

ताके जुग पद कमल मनाऊं।
जासु कृपां निरमल मति पावऊं॥

(४१) संशय-निवृत्ति के लिये

राम कथा सुन्दर कर तारी।
संशय बिहग उड़ा बनिहारी॥

(४२) ईश्वर से अपराध क्षमा कराने के लिये

अनुचित बहुत कहेउं अग्याता।
छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता॥

(४३) विरक्ति के लिये

भरत चरित करी नेमु तुलसी जे सादर सुनहिं।
सीयराम पद प्रेमु अवसि होय भवरस विरति॥

(४४) ज्ञान प्राप्ति-के लिये

छिति जल पावक गगन समीरा।
पंच रचित अति अधम सरीरा॥

(४५) भक्ति की प्राप्ति के लिये

भगत कल्पतरु प्रनत हित कृपासिंधु सुखधाम।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करिराम॥

(४६) श्री हनुमान् जी को प्रसन्न करने के लिये

सुमिरि पवन सुत पावन नामू।
अपने बस करि राखे रामू॥

(४७) मोक्ष-प्राप्ति के लिए

सत्य संध छांड सर लच्छा।
काल सर्प जनु चले सपच्छा॥

(४८) श्री सीतारामजी के दर्शन के लिये

नील सरोरुह नील मनि नीर रूप धर स्याम।
लाजहिं तन साभा निरखि कोटि कोटि सत काम॥

(४९) श्रीजानकी जी के दर्शन के लिये

जनक सुता जगजननि जानकी।
अति सय प्रिय करुनानिधान की॥

(५०) श्री राम चन्द्र जी को वश में करने के लिये

केहरि कटि पट पीतधर सुषमा सील निधान।
देखि भानु कुल भूषनहि बिसरा सखिन्ह अपान॥

(५१) सहज स्वरूप–दर्शन के लिये

भगत बछल प्रभु कृपा निधाना।
बिश्वास प्रगटे भगवाना॥

बालक के ज्वर–नाश के लिये

गूगल, बत्र, कूट, मैनसिल, शिला जीत, हल्दी, आमीहल्दी, नीम के पत्ते और शहद–(सब चीजें असली होनी चाहिये) सब को बराबर मात्रा में कूट कर असली घृत में मिलाकर धूप बनाले और ज्वर होने पर–'दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज काहू नहिं व्यापा॥' का १०८ बार जप करके अग्नि में डाल कर रोगी के समीप धूप दे तो ज्वर का वेग, विशेष रूप से बालकों के ज्वर का जोर तुरंत ही नष्ट हो जाता है और बालक नीरोग होता है।

१

सब अनिष्टों के नाश के लिये

ॐ नमो भगवते तस्मै कृष्णाया कुण्ड मेधसे।
सर्व व्याधि विनाशाय प्रभो माम मृतं कृधि॥

इस मंत्र का प्रतिदिन प्रातः काल जगते ही बिना किसी से कुछ बोले तीन बार जप करने से अनिष्टका नाश होता है इसका अनुष्ठान ५१००० मन्त्र का जप तथा ५१०० दशांश हवनसे सम्पन्न हो जाता है।

२

विपत्ति-नाश के लिये

राजिवनयन धरे धनु सायक।
भगत बिपति भंजन सुखदायक॥
रामाय रामभद्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥

ब्राह्म मुहूर्त में उठकर स्नान करके प्रतिदिन उपर्युक्त अर्धाली सहित मन्त्र की सात माला (१०८) दाने की प्रत्येक जपं करना चाहिये और प्रत्येक माला की समाप्ति पर धूप-गुग्गुल की अग्नि में आहुति

देनी चाहिये। सातों माल पूरी होने पर इस भस्म को यत्न से उठाकर रख लेना चाहिये और प्रति दिन कार्य में लगते समय उसे ललाट पर लगा लेना चाहिये यह जप तथा भस्म-धारण प्रति दिन करते रहने से विपत्तियों का नाश और कार्य में सफलता की प्राप्ति होती है।

३

सब प्रकार की विपत्तियों के नाश के लिये और सुख-सौभाग्य की प्राप्ति के लिये

ॐ ऐं ह्रीं श्री नमो भगवते हनुमते मम कार्येषु ज्वल ज्वल प्रज्वल आसाध्यं साधय साधय मां रक्ष रक्ष सर्व दुष्टेभ्यो हुं फट् स्वाहा।

मंगलवार से प्रारम्भ करके इसमन्त्र का प्रति दिन १०८ बार जप करता रहे और कम-से-कम सात मङ्गलवार तक तो अवश्य करे। इससे इसके फलस्वरूप घरका पारस्परिक विग्रह मिटता है, दुष्टों का निवारण होता है बड़ा कठिन कार्य भी आसानी से सफल हो जाता है।

४

पुनि मन बचन करम रघुनायक।
चरन कमल बंदौं सबलायक ॥
राजिव नयन धरे धनु सायक।
भगत बिपति भंजन सुखदायक ॥
ॐ नमो भगवते सर्वेश्वराय श्रियः पतये नमः ॥

उपर्युक्त चौपाई सहित इस मंत्र का प्रति दिन १०८ बार कम से-कम जप करे। इससे विपत्तिनाश सुख लाभ और स्त्रियों के द्वारा जपे जाने पर उनका सौभाग्य अचल होता है।

५

विपत्ति-नाश के लिये

हे कृष्ण द्वारका वासिन् क्वासि यादव नन्दन।
आपद्भिः परिभूतां मां त्रायस्वाशु जनार्दन ॥

इस मंत्र का कम-से-कम १०८ बार स्वयं जप करे। कुछ दिन जपने के बाद स्वप्न में आदेश होना सम्भव है। अनुष्ठान के लिये ५१००० जप और दशांश के लिये ५१०० जप या आहुतियां आवश्यक हैं।

६

संकट दूर होने के लिये

हा कृष्ण द्वारका वासिन् क्वासि यादव नन्दन।
आपद्भिः परिभूतां मां त्रायस्वाशु जनार्दन॥
हा कृष्ण द्वार का वासिन् क्वासि यादव नन्दन।
कौरवैः परिभूतां मां किं न त्रायसि केशव॥

उपर्युक्त दोनों मन्त्रों का ३२ हजार जप करने से बड़े-बड़े संकट दूर हो जाते हैं।

७

अकस्मात् आई विपत्ति के निवारण के लिये

हनूमन् सर्वधर्मज्ञ सर्व कार्य विधायक।
अकस्मादागतोत्पातं नाशयाशुनमोऽस्तु ते॥

अथवा

हनूमन्नञ्जनीसूनो वायुपुत्र महाबल।
अकस्मादा गतोत्पतं नाशयाशु नमोऽस्तु ते॥

प्रति दिन तीन हजार के हिसाब से ११ दिनों में ३३ हजार जाप हो, फिर ३३०० दशांश हवन या जप करके ३३ ब्राह्मणों को भोजन करवाया जाय इससे अकस्मात् आयी हुई विपत्ति सहज ही

टल जाती है।

१

विघ्ननाशपूर्वक सर्वार्थ-सिद्धि के लिये

ॐ यं गणपतये नमः ।

श्री गणेश जी का पूजन करके या उन्हें नमस्कार करके उपर्युक्त मंत्र का प्रति दिन भोजन से पूर्व शुद्ध होकर पांच हजार जप करें। यों २५० दिनों तक करने का विधान है, कम-से-कम २५ दिन तो करना ही चाहिये। अनुष्ठान के समय ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है।

२

सर्व कार्य की सिद्धि के लिये

ॐ कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामित्वां धर्मसम्मूढचेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चतं ब्रूहितन्मे
शिष्यस्तेऽहंशाधिमां त्वांप्रपन्नम् ॥

प्रति दिन विधिवत् भगवान् श्री कृष्ण का या भगवान् श्री विष्णु का पूजन करके उपर्युक्त मन्त्र का १२ दिन में २५००० जप करने से स्वप्न से

के द्वारा कार्य सिद्धि का ज्ञान होता है।

३

अनिष्ट नाश पूर्वक सर्वार्थ सिद्धि के लिये

ॐ रां श्रीं ऐं नमो भगवते वासुदेवाय ममा-
निष्टं नाशय नाशय मां सर्वसुख भाजनं सम्पादय
सम्पादय हूं हूं श्रीं ऐं फट् स्वाहा।
इस मन्त्र का प्रति दिन १०८ बार जप करना
चाहिये।

४

अभीष्ट की सिद्धि के लिये

नमः सर्वनिवासाय सर्वशक्ति युताय ते।
ममाभीष्टं कुरुष्वाशु शरणागत वत्सल॥
इस मन्त्र का २१००० बार जप करना या कराना
चाहिये तथा दशांश के लिये २१०० जप अथवा
हवन करना चाहिये।

५

सब प्रकार की मनोकामना की पूर्ति के लिये

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते राधा प्रियाय राधा

रमणाय गोपीजनवल्लभाय ममाभीष्टं पूरय पूरय हुं फट् स्वाहा—इस मन्त्र को कदम्ब काष्ठ की छोटी पीठिका (चौकी) पर अष्ट गन्ध अथवा कपूर और केशर से अनार की कलम से लिखकर षोडशोपचार से जन करे। परन्तु प्रति दिन का जप १८०० से कम नहीं होना चाहिये। कुल जप-संख्या सवा लाख है। फिर साढ़े बारह हजार दशांश होम के लिये जप करना चाहिये।

६

रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयेऽनयः।
रक्षां कुरु श्रियंदेहि त्राहि मां शरणागतम्॥

उपर्युक्त मन्त्र के द्वारा प्रतिश्लोक को आद्यान्त में सम्पुटित करके 'विष्णु सहस्र नाम' के २१ पाठ प्रति दिन किसी भी मनोऽभिलाषा की पूर्ति के लिये किया जाय। पाठ करने से पूर्व भगवान् विष्णु के चित्र पट का षड्शो पचार से पूजन कर लिया करे।

दरिद्रता के नाश तथा धनसम्पत्ति की प्राप्ति के लिये

१

ॐ ऐं ह्री श्रीं श्रियै नमो भगवति मम समृद्धौ ज्वल ज्वल मां सर्व सम्पदं देहि देहि ममा लक्ष्मीं नाशय नाशय हुं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र से सूर्य ग्रहण या चन्द्र ग्रहण के समय १०८ घृत की आहुति दे कर मन्त्र सिद्ध करलेना चाहिये। फिर प्रति दिन १०८ मन्त्र का जाप करते रहना चाहिये।

विपत्ति-नाश, सर्व कार्य-सिद्धि और धन-प्राप्ति के लिये।

२

ॐ ह्रीं श्रीं ठंठं नमो भगवते मम सर्व कार्याणि साधय साधय मां रक्ष रक्ष शीघ्रं मां धनिनं कुरु कुरु हुं फट् श्रियं देहि प्रज्ञां देहि ममापत्ति निवारय निवारय स्वाहा।

उपर्युक्त मन्त्र से सात बिल्व पत्र [त्रिदल] शिव लिङ्ग पर चढ़ाने चाहिये। लिङ्ग पार्थिव हो या शिवालय में प्रतिष्ठित हो बिल्वपत्र चढ़ाने के बाद इसी मन्त्र का १०८ बार जप करना चाहिये। जप घर पर कर सकते हैं या मन्दिर में जाकर।

उपयुक्त स्थान हो तो मन्दिर में ही करना चाहिये। जब तक कार्य सिद्ध न हो, प्रतिदिन जप करना चाहिये।

धन-सम्पत्ति की प्राप्ति के लिये।

३

कुबेर त्वं धना धीश गृहे ते कमला स्थिता।
तां देवीं प्रेषयाशु त्वं मद्गृहे ते नमो नमः ॥

कमल का फूल, श्वेत दूर्वा, गुगल, गो घृत इन सब चीजों को मिलाकर लगातार २१ दिनों तक प्रति दिन १०८ बार मन्त्र जप कर के हवन करे।

४

ॐश्रींश्रियै नमः स्वाहा।

इस मन्त्र से श्री वाल्मीकिय रामायण, सुन्दर काण्ड के प्रत्येक श्लोक के अन्त में श्लोक पढ़कर घी की आहुति अग्नि में देनी चाहिये। तदनन्तर सर्ग समाप्त होने पर।

ॐराम भद्र महेष्वासर रघुवीर नृपोत्तम।
भो दशास्यान्त कास्माकं रक्षां देहि श्रियंचते ॥
श्रींश्रियै नमः मह्यं श्रियंदेहि-देहि दापय दापय स्वाहा।

इस मन्त्र से सर्ग के जितने श्लोक हों, उतनी घी की आहुति देनी चाहिये। इस अनुष्ठान का आरम्भ दीपमालिका की रात्रि को दीपक जला देने के पश्चात् करना चाहिये।

आठ दिनों तक प्रतिदिन सात सर्गों का और नवें दिन बारह सर्ग का पाठ करके नौ दिनों में पाठ पूरा करना चाहिये। अथवा प्रतिदिन सात, तीन या एक सर्ग का (सुविधानुसार) पाठ करके अड़सठ दिनों में सात, तीन या एक पाठ पूरे करने चाहिये। इस प्रयोग से लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

(५)

ॐ तारा त्रिपुरायै नमः ऋद्धि-वृद्धि
कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र की ११ (१०८ दाने की) माला का जाप प्रतिदिन रात्रि को दस बजे के बाद करना चाहिये। जप करते समय दीपक जलते रहना चाहिये और अपने सुविधानुसार किसी भी चीज का पूरा तीन पाव (साठ तोले) भोग लगाकर जप पूरे होने के बाद सब को बांट देना चाहिये।

सर्पभय से मुक्ति के लिये

नवनागस्तोत्रम्

अनन्तं वासुकिं शेषं पद्मनाभं चकम्बलम् ।
शङ्ख-पालं धृतराष्ट्रं तत्तकं कालियं तथा ॥१॥
एतानि नव नामानि नागा नांच महात्मनाम् ।
सायं काले पठेन्नित्यं प्रातःकाले विशेषतः ।
तस्य विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत् ॥२॥
इसके नित्य पाठ से सर्प काटने का भय नहीं रहता ।

ऋण-मोचन के लिये

कुश की जड़, बिल्व का पञ्चाङ्ग (पत्र,फल, बीज, लकड़ी और जड़) तथा सिन्दूर–इन सब का चूर्ण बनाकर चन्दन की पीठिका पर नीचे लिखे मन्त्र को लिखे । तदनन्तर पञ्चोपचार से पूजन करके गो-घृत के द्वारा ४४ दिनों तक प्रति दिन सात बार हवन करे । मन्त्र की जप-संख्या कम से-कम १०,००० है, जो ४४ दिनों में पूरी होनी चाहिये । ४३ दिनों तक प्रति दिन २२८ मन्त्रों का जाप हो और ४४ वें दिन ११६ मन्त्रों का ।

तदनन्तर १००० मन्त्र का जप दशांश के रूप में करना आवश्यक है मन्त्र यह है–

ॐ आं ह्रीं क्रौं श्रीं श्रियै नमः ममा लक्ष्मी नाशय नाशय मामृणोत्तीर्णं कुरु कुरु सम्पदं वर्धय वर्धय स्वाहा।

दुःस्वप्न–दोष निवारण मन्त्र

(१)

ॐ अच्युतं केशवं विष्णुं हरिं सत्यं जनार्दनम्।
हंसं नारायणं चैव ह्येतन्नामाष्टकं शुभम्॥
शुचिः पूर्व मुखः प्राज्ञो दशकृत्वश्चयो जपेत्।
निष्पापोऽपि भवेत्सोऽपि दुःस्वप्नःशुभवान्भवेत्॥

अच्युत, केशव, विष्णु, हरि, सत्य जनार्दन, हंस और नारायण–

इन आठ नामों का शुद्ध हो पूर्व मुख बैठ कर दस बार जप करने से दुःस्वप्न शुभकारक हो जाता है।

(२)

ॐ नमः शिवं दुर्गां गणपतिं कार्तिकेयं दिनेश्वरम्।
धर्मं गङ्गांच तुलसीं राधां लक्ष्मीं सरस्वतीम्॥
नामा न्येतानि भद्राणि जले स्नात्वा चयो जपेत्।
वाञ्छितं च लभेत् सोऽपिदुःस्वप्नः शुभवान-भवेत्॥

शिव, दुर्गा, गणपति, कार्तिकेय, सूर्य, धर्म गंङ्गा तुलसी, राधा, लक्ष्मी, सरस्वती।

जल से स्नान करके इन ग्यारह नामों का उच्चारण करके नमस्कार करने से दुस्सह स्वप्न शुभकारक होता है और वाञ्छित फल देता है।

ॐह्रीं श्रीं क्लीं दुर्गति नाशिन्यै महामायायै स्वाहा। कल्प वृक्षेति लोकानां मन्त्रा सप्तदशाक्षरः। शुचिश्च दशधाजप्त्वा दुःस्वप्नः सुखवान् भवेत्।

उपर्युक्त मन्त्र का पवित्र होकर दसबार जप करने से दुःस्वप्न सुख देने वाला हो जाता है।

गजेन्द्र-स्तुति-पाठ से भी दुःस्वप्न दोष का नाश होता है। गजेन्द्र-स्तवन इसी में अलग छपा है।

भूत-प्रेत बाधा एवं गाय की पशुरोग से निवृत्ति के लिये

स्थाने हृषी केश तव प्रकार्त्या
जगत हृष्यत्य नुरज्यतेच्च॥
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति
सर्वेनमस्यन्तिच सिद्ध संघाः॥

(श्रीमद्भागवद् गीता ११।३६)

इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिये ३००० जप करे इस के बाद जब कभी आवश्यकता हो, किसी में भूत प्रेत का आवेश होने पर मिट्टी के किसी शुद्ध पात्र या बर्तन में गङ्गाजल या कुएं का जल लेकर सात बार मन्त्र बोलकर उसमें दाहिने हाथ की तर्जनी अगुंली फिरादे फिर उस जलमें से थोड़ा सा रोगी को पिलादे बाकी उसके सारे अङ्गों पर और सारे स्थान पर छिड़करे। जब तक रोगी की प्रेत बाधा का नाश न हो, तब तक प्रतिदिन दो बार इस प्रयोग को करते रहें।

इसी प्रकार अभिमन्त्रित जल को सानी के साथ मिलाकर या किसी प्रकार भी गाय को पिला देने पर उसकी 'पशु-रोग' से रक्षा हो जाती है।

श्रेष्ठ वर-प्राप्ति के लिये कन्या के द्वारा

१

हे गौरि! शंकरार्धाङ्गि! यथात्वं शंकरप्रिया।
तथा मां कुरु कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभाम्॥

श्री पार्वती देवी का पूजन करके श्रद्धा-विश्वास पूर्वक इस मन्त्र का प्रति दिन पांच माला जप करे। नहीं हो सके तो एक माला अवश्य करे।

श्री पार्वती जी का पूजन करके श्री राम चरित मानस के बालकाण्ड के २३४ दोहे बाद 'जय जय गिरि-बरराज किसोरी।' से 'मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे।' २३६ दोहे तक प्रतिदिन श्रद्धा विश्वास से पाठ करे।

जय जय गिरिबर राज किसोरी।
जय महेस मुख चंद चकोरी॥
जय गज बदन षडानन माता।
जगत जननि दामिनि दुति गाता॥
नहिं तव आदि मध्य अवसाना,
अमित प्रभाउ बेदु नहिं जाना॥
भव भव विभव पराभवकारिनि।
बिस्व विमोहनि स्वबस बिहारिनि॥
पति देवता सुतीय महुं मातु प्रथम तवरेख।
महिमा अमितन सकहिं कहि सहस सारदासेष॥
सेवत तोहि सुलभ फल चारी।
बरदायनी पुरारि पिआरी॥
देवि पूजि पद कमल तुम्हारे।
सुरनर मुनि सब होहिंसुखारे॥

मोर मनोरथ जानहु नीकें।
बसहु सदा उर पुर सबही कें।
कीन्हेउ प्रगट न कारन तेही।
अस कहि चरन गहे वैदेही॥
विनय प्रेम वस भई भवानी।
खसी माल मूरति मुसुकानी॥
सादर सियं प्रसादु सिर धरेऊ।
बोली गौरि हरषु हियं भरेऊ॥
सुनु सिय सत्य असीस हमारी।
पूजिहिमन कामना तुम्हारी॥
नारद बचन सदा सुचि साचा।
सो बरु मिलिहि जाहिं मनुराचा॥
मनुजाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर
सांवरो।
करुनानिधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥
ऐहि भांति गौरि असीस सुनिसिय सहित हियं
हरषी अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर
चली॥

जानि गौरि अनुकूलसिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजु मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥
(श्रीराम चरितमानस-बालकाण्ड दोहा २३५-३६)

भगवत्कृपा से पुत्र की प्राप्ति के लिये

१

रविवार के दिन 'सर्पाक्षी' को जड़, डाली तथा पत्तोंसमेत उखाड़ लाये । फिर एक वर्णवाली गौ के दूध के साथ उसे कुमारी के द्वारा पिसवाकर एक ही वर्ण वाली गौके दूध के साथ मिलाकर रजो-दर्शन से शुद्ध होकर चौथे दिन से छठे दिन तक तीन दिन पीये । दवा की मात्रा एक तोला प्रतिदिन मिश्री मिला कर दूध भात का भोजन करे । अधिक परिश्रम न करे । दवा पीने पूर्व से नीचे लिखे दोनों मन्त्रों की एक-एक माला (१०८ दाने) श्रद्धा-विश्वास पूर्वक अवश्य जप करले ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गता ॥

तदनन्तर प्रतिदिन दवा पीने के पूर्व उपर्युक्त 'देवकी

सुत गोविन्द.....' मंत्र की एक माला का जप करले। साथ ही नीचे लिखे (७२) यन्त्र का भी प्रयोग करे।

०८	०१	३४	२६
३०	३३	०४	०५
०२	०७	२८	३५
३२	३१	०६	०३

इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर बायीं भुजा, कमर या कण्ठ में तांबे के ताबीज में डालकर धूप देकर धारण करले।

(२) हरिवंश पुराण के श्रवण से भी पुत्र प्राप्ति होती है।

सुख पूर्वक प्रसव होने के लिये

प्रसव होने में अधिक देर होती हो और गर्भवती स्त्री प्रसव-वेदना से छटपटा रही हो तो वटके पत्ते

पर नीचे लिखा सुख प्रसव-मन्त्र तथा बत्तीसा यन्त्र लिख कर उसके मस्तक पर रख देने से सुख पूर्वक प्रसव हो जाता है।

अस्ति गोदावरी तीरे जम्भला नाम राक्षसी।
तस्याः स्मरण मात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत् ॥

१	८	९	१४
११	१२	३	६
७	२	१५	८
१३	१०	५	४

मिल सके तो, जिसके फूल न आये हों, ऐसे इमली के छोटे वृक्ष की जड़ सिर के सामने वालों से बांध देनी चाहिये। इससे बिना कष्ट के सहज प्रसव हो जाता है; परन्तु सन्तान प्रसव होने के साथ ही उसी क्षण तुरंत उन बालों समेत उसे कैंची से काट

देना चाहिये ।

मृतवत्सानिवारण मन्त्र

क्रूं क्रूं क्रूं द्रूं द्रूं द्रूं दुर्गे दुर्गे महादुर्गे नाशय नाशय हन हन पच पच मथ मथ बन्ध बन्ध हिस्रान् महाषष्ठीरूपेणाइमं बालकं रक्ष रक्ष चिरजीविनं कुरु कुरु ह्रां श्रीं क्रूं द्रूं फट् स्वाहा ।

इस मंत्र को नीचे लिखे चौवन के यन्त्र सहित भोजपत्र पर लिखकर तांबे के तावीज में रखकर गूगल का धूप देकर गर्भ के पांचवे महीने में गर्भिणी की कमर में धारण कराद । बालक के जन्म लेने पर कमर से खोलकर बालक के गले में धारण करादे इससे मृतवत्सा (जिसके बच्चे मर जाते हैं) का वह बच्चा नहीं मरेगा ।

१५	२०	१९
२२	१८	१४
१७	१६	२१

चेचक रोग के निवारण के लिये शीतला की प्रार्थना का मन्त्र

ॐ श्रीं श्रीं श्रूं श्रैं श्रः ॐ खरस्थां दिगम्बरां विकटनयनां तोयस्थितां भजामि स्वाहा स्वाङ्गस्थां प्रचण्डरूपां नमाम्यात्म विभूतये।

इस मन्त्र को ग्यारह बार श्रद्धा पूर्वक उच्चारण करते हुये जिसको शीतला निकली हो उसको चिमटे या मनोर पंख से झाड़दे और इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल उसे पिला दे तथा उसके बदन पर उसके छींटे दे दे। जब तक शीतला शान्त न हो जाय तब तक प्रदिदिन सुबह-शाम दो बार यों करते रहें।

प्रेत बाधा नाश के लिये

मङ्गल वार के दिन यन्त्र लिखकर रोगी के बांध दें। फिर ॐभूर्भुवः स्वःतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। इस गायत्री-मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित करके उक्त जल रोगी को पिलादे तथा उसके सारे अङ्गों पर छिड़क दे। यन्त्र बंधा रहे और गायत्री-प्रयोग प्रति

(६४)

२४	३१	२	७
६	३	२८	२७
३०	२५	०८	१
४	५	२६	२६

दिन दो बार किया जाय।

प्रवास में सुविधा प्राप्ति के लिये

आप किसी यात्रा में हैं और किसी अपरिचित स्थान में आपको रुकना है। स्वाभाविक है कि आप चाहेंगे कि वहां ठहरने की तथा भोजन आदि की सुव्यवस्था आपको सरलता से प्राप्त हो जाय इसके लिये निम्न मन्त्र उज्जीवित कर रक्खें। होली अथवा दीपावली की रात्रि में तथा चन्द्र-सूर्य ग्रहण के समय का १०८ बार जप करने से वह

उज्जीवित हो जायेगा। इन अवसरों पर आपको प्रत्येक बार इतना जप करते रहना चाहिये, अन्यथा मन्त्र आपके लिये प्रसुप्त हो जायेगा।

मंत्र

गच्छ गौतम शीघ्र त्वं ग्रामेषु नगरेषुच।
अशनं वसनं चैव तांबूलं तत्र कल्पय॥

प्रयोगः—जहां आपको ठहरना है, उस स्थान की सीमा में पहुंच कर इस मन्त्र को सात बार पढ़ें मन्त्र पढ़ते समय सफेद दूर्वा के तीन छोटे टुकड़े हाथ में रक्खें। मन्त्र को सात बार पढ़कर दूर्वा के टुकड़ों को शिखा या बालों में उलझा दें। ठहरने के स्थान पर सब व्यवस्था मिलने तक इन टुकड़ों को केशों में उलझा रहने दें। आपको यदि लगता है कि ठीक समय पर सफेद दूर्वा नहीं मिलेगी तो उसे साथ लेजा सकते हैं। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक (एक दिन-रात) उखाड़ी दूर्वाकाम देती है।

सर्पभय से रक्षा

सर्प घर में या सामने है तो मन्त्र का जप करने से

वह आप पर आक्रमण नहीं करेगा। यदि कहीं अंधेरे में, बनमें या ऐसे स्थान में जाना है तो पुष्य नक्षत्र में गिलोय (गुडूची) लाकर उसके छोटे टुकडों की माला बनाकर सौ बार मन्त्र का जप करके वह माला गले में पहिन कर जाने से सर्प का भय नहीं रहेगा।

मन्त्र—मुनिराजं आस्तीकं नमः।

अग्निशामक प्रयोग

कहीं आग लगी हो तो मन्त्र को पढ़ते हुए सात अञ्जलि जल अग्नि में डाल देने से अग्नि देव शीघ्र शान्त हो जाते हैं। इस मन्त्र को होली दीपावली तथा ग्रहणों में १०८ बार जप करके उज्जीवित रखना चाहिये।

मन्त्र—ॐनमोऽग्निरूपाय ह्रीं नमः।

इस मन्त्र को पढ़कर रविवार के दिन सफेद कनैर की जड़ दाहिनी भुजा में बांध लेने से अचानक अग्नि से जलने का भय नहीं रहता।

किसी वस्तु पर या अङ्ग पर घी कुआरका गूदा भली प्रकार लगाकर सुखा दिया जाय तो उस वस्तु या

अङ्ग को अग्नि जला नहीं पाता। यदि किसी वस्त्र को तीन बार घी कुआर के रस में भिगोकर सुखाया जाय तो वह वस्त्र सर्प या अग्नि रक्षित हो जाता है।

ताप, तिजारी, मथवा, आधा शीशी के नाशके लिये

मोर–पुंख से झाड़े।

ॐकामर देश कमक्षा देवी, तहां बसै इस्माइल जोगी। इसमाइल जोगी के तीन पुत्री। एक रोलै, एक पछौले। एक ताप तिजारी इकतरा मथवा आधा शीशी टोरै। उतरै तौ उतारौ, चढ़ै तौ मारौ। ना उतरै तो गगुं रुड़ मोर हंकारौ। सबद साचा पिंड काचा। फुरो मन्त्र ईश्वरो बाचा।

बिच्छू जहर उतारने के लिये

बन्धन देकर नीम या आम की डाली अथवा मोर पंख से झाड़े।

ॐकाला बिच्छू कंकड़वाला। सोने का, रूपे का प्याला। मैं क्या जानूं, बिच्छू, तेरी जात। जन्म्या

चौदस-मावस की रात। चढ़ी को उतारो, उतरती को मारो । सहव मंकड़ी फुकारो फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाचा ।

किसी भी कष्टसे छूटने के लिये।

१०८ बार उच्चारण करे ।

ॐरां रां रां रां रां रां रां रां कष्टं स्वाहा ।

ऐसे हजारों साबर मन्त्र हैं। इन से काम होते भी देखे गये हैं। सम्भव है विश्वास की प्रधानता भी इनकी सफलता में एक प्रधान कारण हो।

कुछ उपयोगी यंत्र

मन्त्रों की भांति ही यन्त्र भी बड़े प्रभावशाली होते हैं । कुछ यन्त्रों के साथ मन्त्र भी होते हैं और केवल अङ्कात्मक यन्त्र होते हैं। विभिन्न यन्त्र विभिन्न कार्यों की सिद्धि और रोग निवृति आदि के लिये काम में लाये जाते हैं। प्रत्येक यन्त्र साधारण तथा भोज पत्र पर अष्टगन्ध से लिख कर तांबे के तावीज में भर कर गुग्गुल का धूप देकर स्त्रियों के बायें हाथ या गले में एवं पुरुषों के दाहिने हाथ या गले में बांधा जाता

है। मन्त्रात्मक यन्त्र को तो चंद्रग्रहण और सूर्य ग्रहण के समय मन्त्र का कम-से कम १०८ बार जप करके मन्त्र का पूजन कर लेना चाहिये। केवल यन्त्र हो तो उसका पूजन मात्र कर लेना चाहिये। विश्वास पूर्वक इनका सेवन करने से लाभ होता है। यहां ऐसे ही कुछ यन्त्र दिये जाते हैं।

भगवान विष्णु की प्रसन्नता तथा उनके दर्शन के लिये
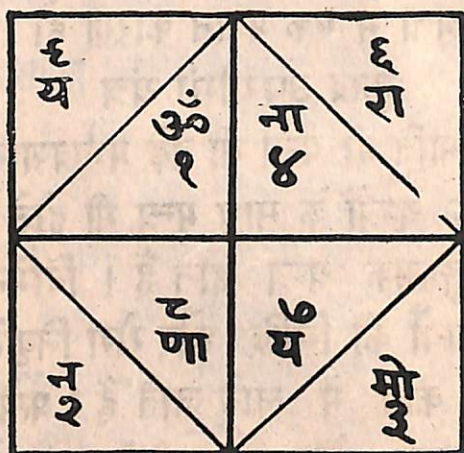
इस वामा यन्त्र में 'ॐनमो नारायणाय' मन्त्र संख्या क्रमसे लिखा है। इसको चन्दन की पाटिका (चौकी) पर सफेद चन्दन से तुलसी डंडी से लिखकर या

तांबे के पत्तरपर खुदवा कर प्रतिदिन पूजा करनी चाहिये तथा भगवान् विष्णु की पूजा करके इस मन्त्र का कम-से-कम १०८ बार जप करना चाहिये। साथ ही प्रत्येक श्लोक के आदि-अन्त में इसी मंत्र का सम्पुट लगा कर 'विष्णु सहस्त्र नाम' का पाठ करना चाहिये।

(२००) एकतरा ज्वरनाश के लिये

६२	६६	२	७
६	३	६६	६५
६८	६३	८	१
४	५	६४	६७

(३००) तिजारी ज्वरनाश के लिये

१४२	१४९	२	७
६	३	१४६	१४५
१४८	१४३	८	१
४	५	१४४	१४७

(१८) ज्वरनाश के लिये

१	८	२	७
६	३	५	४
७	२	८	१
४	५	३	६

भगवान् श्रीकृष्ण की शरणागति और उनका आश्रय प्राप्त करने के लिए

विश्वास पूर्वक आगे लिखे बीसा यन्त्र का पञ्चो-पचार से पूजन करके प्रतिदिन 'श्रीकृष्णः शरणं

मम' इस मन्त की (१०८ तुलसी के दानों की) ५ माला श्रद्धा-भक्ति पूर्वक जप करे।
यह बीसा यन्त्र तांबे के पत्तर पर खुदवाकर श्री गङ्गाजी या श्री यमुना के जल से धोकर धूप देकर पूजा में रक्खे।
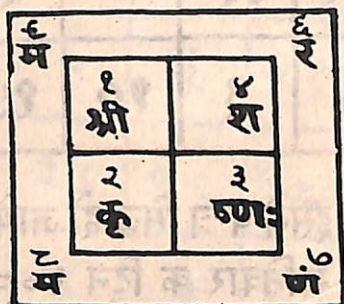
सर्प, चोर, निशाचर, शत्रु, ग्रह, भूत-पिशाच के भय से बचने तथा विषम ज्वर और विपत्ति-नाश के लिए

इस चौंतीसा यन्त्र को सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण या दीपावली की रात्रि को ३४ बार लिखकर सिद्ध करले। सफेद कागज या भोजपत्र पर अनार की कलम से अष्टगन्ध—(सफ़ेद चन्दन, लाल चन्दन, केसर, कुंकुम, कपूर, कस्तूरी, अगर, तगर) के

६	१६	५	४
७	२	११	१४
१२	१३	८	१
६	३	१०	१५

द्वारा लिखे। इससे यन्त्र सिद्ध हो जायेगा शीघ्र सिद्ध करना हो तो शनिवार के दिन १०८ बार उपर्युक्त प्रकार से लिखे और धोबी घाट पर बैठकर एक-एक बार लिखकर यन्त्र धोबी घाट से भरे कुंड के जल में डालता जाय। फिर उन १०८ यन्त्रों को इकट्ठा करके बहते जल में बहादे। तदनन्तर पुनः भोजपत्र पर उपर्युक्त प्रकार से लिखकर धूप देकर गले में बांध दे।

गर्भधारण के लिए

[५०]

१७	२४	२	७
६	३	२१	२०
२३	१८	८	१
४	५	१९	२२

पुत्र प्राप्ति के लिए

[७२]

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	३३

बच्चों के डब्बारोग-निवारण के लिए

पीपल के पत्ते या भोजपत्र पर लाल चन्दन से अनार की कलम से चार यन्त्र लिखे। फिर धूप देकर एक यन्त्र जल से धोकर वह जल बच्चे की माता को पिलादें; दूसरा बच्चे को पहले दिन, तीसरा दूसरे दिन और चौथा तीसरे दिन माता के दूध के साथ पिला दे। सवा रुपये का चूरमा या मीठा चावल बनाकर पहले थोड़े से किसी साधु को देकर बंटवा दे, खुद भी खा ले।

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

राम राम राम राम
राम राम राम राम
राम राम राम राम
राम राम राम राम

इस चौंतीसा यन्त्र को भोजपत्र पर लाल चन्दन से तथा अनार की कलम से लिखकर धूप देकर एक छोटे कपड़े में बांधकर बच्चे के गले में लटकादे और पक्षियों को दाना डलवा दे।

बच्चों के सूखा रोग निवारण के लिए

८	८	८	
३३४	३३४	३३४	
३३४	३३४	३३४	
३३४	३३४	३३४	
७	७	७	

पीपल के पत्ते या भोजपत्र पर लाल चन्दन से अनार की कलम से चार यन्त्र लिखे। फिर धूप देकर एक यन्त्र जल से धोकर वह जल बच्चे की माता को पिला दें; दूसरा बच्चे को पहले दिन, तीसरा दूसरे दिन और चौथा तीसरे दिन माता के दूध के साथ पिला दे। सवा रुपये का चूरमा या मीठा चावल बनवाकर पहले थोड़े से किसी साधू को देकर बंटवा दे, खुद भी खाले।

भगवती की कृपा प्राप्त करने के लिये

भगवती की शरणागति, भक्ति की प्राप्ति तथा सब विपत्तियों नाश तथा कार्य में सफलता एवं सुख समृद्धि की प्राप्ति के लिये विश्वास पूर्वक नीचे लिखे बीसा यन्त्र का प्रतिदिन पञ्चोपचार से पूजन करके कम-से-कम नवार्ण मन्त्र (ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे) की एक माला (१०८ रुद्राक्ष के दानों की) जप और 'सप्तशती,' चतुर्थ अध्याय तथा 'सिद्ध कुञ्चिका' स्तोत्र का पाठ करे। यन्त्र तांबे
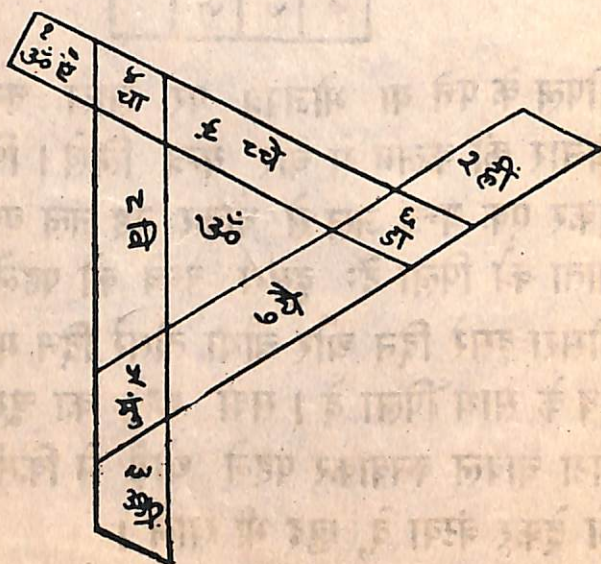
के पत्तर पर खुदवाकर गङ्गाजल से धोकर धूप देकर पूजा में रक्खे। इस मंत्र में संख्या क्रम से 'नवार्ण मंत्र' लिखा है।

रक्त-पित्त रोग नाश के लिए

[११२]

४८	५५	२	७
६	३	५२	५१
५४	४९	८	१
४	५	५०	५३

मिर्गी नाश के लिये

[१००००]

४९९२	४९९९	२	७
६	३	४९९६	४९९५
४९९८	४९९३	८	१
४	५	४९९४	४९९७

वायुशूल-नाश के लिये

[८०]

३२	३९	२	७
६	३	३६	३५
३८	३३	८	१
४	५	३४	३७

देवी की प्रसन्नता और किसी भी रोग के नाश के लिये
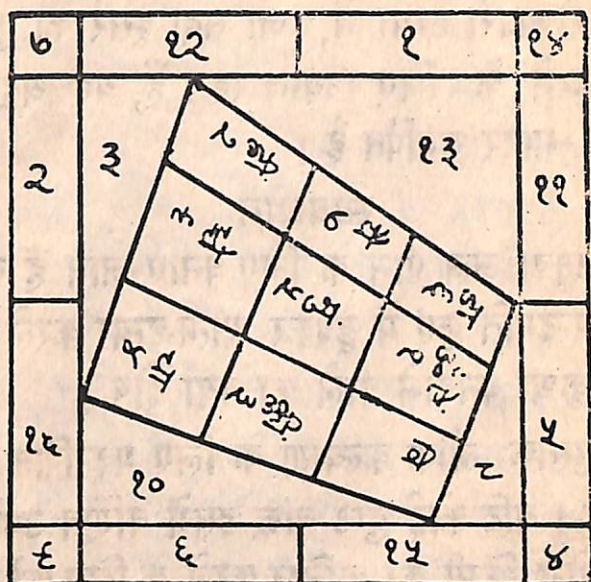
इसमें ३४ और १५ का यन्त्र है। १५ के यन्त्र में भगवती का नवार्णमन्त्र है। ऐसे यन्त्र बना कर उसमें इस मन्त्र को १०८ बार लिखने से मन्त्र सिद्ध होता है। फिर लिखकर रोगी को देना चाहिये तथा तांबे के ताबीज में डालकर गुग्गुल का धूप देकर पुरुष के दाहिनी और स्त्री के बायीं भुजा में बांध देना चाहिये।

कर भला, हो भला।
अन्त भले का भला॥

उन परोपकारी हाथों में, जो सदा दूसरे का दुःख दूर करने के लिए व्यस्त रहते हैं, यह अद्भुत पुस्तक सादर समर्पित है।

सावधान

कुएं ठण्डा जल पीने के लिए बनाए जाते हैं यदि कोई मन्दमति कुएं में डूबकर आत्म-हत्या करले तो इसमें कुआं बनवाने वाले का क्या दोष ?

यह पुस्तक लोक कल्याण के लिए प्रकाशित की गई है। यदि कोई दुष्ट बुद्धि इसमें वर्णित उपायों का प्रयोग किसी का अनिष्ट करने के लिए करे तो इसमें हमारा भी क्या दोष ?

आवश्यक बातें

सर्व प्रथम तैंतीस करोड़ देवी देवताओं को हृदय से नमस्कार करके मैं उस परम प्रभु परमात्मा का स्मरण करता हूं जिसके पुन्य आशीर्वाद से मैं साक्षात् पशुपति श्री शिव शंकर के कन्ठ से निकले इस इन्द्रजाल को सम्पूर्ण कर सका।

उस परमपिता परमात्मा को कोटि कोटि बार मैं नमस्कार करता हूं जिसने इस समस्त ब्रह्माण्ड की रचना की, जड़ में चेतना भरी और चेतन मनुष्य को मूढ़ बना डाला। जो कि सर्व शक्ति मान मन्दिरों में राम, मस्जिदों में अल्लाह, गिरजा घरों में योशु और श्रद्धालुओं के हृदय में आत्म विश्वास बनकर विराजमान है, उसको मैं नमस्कार करता हूं।

जो, प्रभु समस्त संसार में व्याप्त है, अन्तर्यामी है, जिसको दिकता देवी बनकर समस्त चराचर में शक्ति रूप में विद्यमान हैं, या देवी सर्वभूतिषु शोक्त रुपेण संस्थि और जो आदि शक्ति बीज रूप में वर्तमान रह कर प्राणी से संभव-असंभव कराती है, बड़ी शक्ति इस इन्द्रजाल की अधिष्ठात्री शक्ति है, उसे मैं नमस्कार करता हूं।

(१)ईश्वर पर भरोसा रखो:–इन्द्रजाल के आदि रचयिता भगवान शिव माने जाते हैं। जो व्यक्ति ईश्वर पर पूरा विश्वास और भरोसा रख कर, पूरी ईमानदारी और एकाग्रता से इसके यन्त्र तन्त्रों को

साधता है, उसकी प्रत्येक इच्छा पूरी होती है। विधि के अनुसार अपने मन वचन और कर्म को पूरी श्रद्धा और भक्ति के सांचे में ढालकर जो मनुष्य सिद्ध करता है, वह भले ही किसी मत मतान्तर का हो, जो चाह सो कर सकता है। वह पानी में आग लगा सकता है, हवा में उड़ सकता है, अनजानों को पलक झपकते वश में कर सकता है, अपने शत्रुओं को देखते देखते पछाड़ सकता है है, उसके लिये संसार में कोई काम असम्भव नहीं, हां उसमें पूरी-श्रद्धा होनी चाहिये और सिद्धि के लिये पूरे गुण। श्रद्धा में तर्क वाद-विवाद की कोई गुंजायश नहीं होती। श्रद्धा एकदम अंधी होती है और परमपिता परमात्मा हर अंधी श्रद्धा ही साधक का वह गुण है जो इस इन्द्र जाल को सुलभ कर सकता है।

एक बार किसी देश में सूखा पड़ा। अनेकों ऋषि मुनि वहां यज्ञ द्वारा वर्षा कराने गए, किन्तु छाता लेकर कोई नहीं गया। यज्ञ में एक व्यक्ति छाता लेकर आया तो ऋषियों ने उसकी हंसी उड़ाई, वह

व्यक्ति बोला-अरे तुम जिससे वर्षा मांग रहे हो, उसमें तुम को इतना भी विश्वास नहीं है कि वह वर्षा देगा और तुम सब लोग भींग जाओगे।

(२) श्रद्धा रखना जरूरी हैः—तो इन्द्रजाल के साधक में उस व्यक्ति जितनी श्रद्धा होनी आवश्यक है। जिसे इस पुस्तक की नेक नियति पर और अपने कर्म के फल पर श्रद्धा नहीं, या जिसकी श्रद्धा में संदेह की गुंजाइश है, उसके लिये यह पुस्तक व्यर्थ है। वह शिव के आशीर्वाद का भागी नहीं बन सकता ऐसे श्रद्धालुओं को यह पुस्तक नहीं मंगानी चाहिये। सन्देह श्रद्धा का शत्रु है। आजके, नए युग के सन्देह शील मनुष्य न पना कल्याण करते हैं व दूसरे के मंत्र तन्त्रों को वे खिलौना और मजाक समझते हैं। ईश्वर के अस्तित्व पर भी उनको विश्वास नहीं होता। वे इस बात को क्या जाने कि हमारे प्राचीन यन्त्र और तंत्र शास्त्री इस विधि को कहां से कहां ले गये थे। उस समय आत्म विश्वास और श्रद्धा सहज ही प्राप्त हो जाती थी किन्तु आज उसके दर्शन भी दुर्लभ

हैं। प्रभु की कारीगरी में विश्वास न रखने वाले, उस ईश्वर अल्ला गौड और आत्मिक शक्ति को बकवास समझने वाले, तर्क हीन अविवेकी मनुष्य इस पुस्तक को मंगाने का कष्ट न करें।

(३) साधक कैसा होः—जिस श्रद्धालु को भगवान पर पूरा भरोसा होगा जिसने कभी झूठ न बोला होगा, जिसकी आत्मा शुद्ध स्वर्ण जैसी होगी, जिसके विचार निर्मल होंगे। जिसने ब्रह्मचर्य व्रत का पूरी तरह पालन किया होगा, जो इस कलि काल में भी ईमानदारी और सच्चरित्रता से जीवन यापन करता होगा, उसका प्रत्येक काम सिद्ध होगा, यह इन्द्रजाल उसके लिये रक्षा कवच का काम करेगा, इसमें सन्देह नहीं है।

(४) दान करना जरूरी है :—इन्द्रजाल से लाभ उठाने के बाद दान पुण्य आवश्यक है, इस पुस्तक का आधार पौराणिक साहित्य है। अतः दान कुपात्र को नहीं सुपात्र देखकर करना परमावश्यक है। गौ-ब्राह्मण को अन्न, वस्त्र, साधु सन्तों को भोजन, चिड़ियों को दाना और

बन्दरों को केले चने और रोटी तथा अन्य जानवरों को अनाज तथा चीटियों को चारा आदि दान करने से अनेकों सिद्धियां स्वयं प्राप्त हो जाती हैं। साधक को यदि वह हिन्दु है तो प्रतिदिन देव दर्शन के लिये मंदिर में जाना चाहिये और यदि वह मुसलमान है तो उसे प्रत्येक दिन मस्जिद में जाना चाहिये। विचार शुद्ध के लिये सन्ध्या बंदन भी आवश्यक है।

(५) शंका न करें :—इन्द्रजाल में शंका करने से परिणाम उल्टा और भयंकर भी हो सकता है। अतः शंका न करें अन्यथा लेखक पर परिणाम की जिम्मेदारी नहीं होगी। वही वाली कहावत कि कुआं तो बनाए कोई और कोई स्त्री गृह क्लेष के कारण या किसी अन्य कारण से कुएं में डूब मरे तो कुआं बनाने वाले का क्या दोष है ? अतः यह बात याद रखें कि यहां शंका की कोई गुंजाइश नहीं है। यह एक वार्निंग है। शंका करोगे तो दुःख उठाओगे। न इधर के रहोगे न उधर के और लेखक को मुफ्त में कोसोगे। सिद्ध करने से

पहले अपने दिल को टटोल कर देखलो कि वहां श्रद्धा कितनी है। अधूरी श्रद्धा सब किए कराए पर पानी फेर सकती है।

मेरे तान्त्रिक जीवन में भी कई अवसर ऐसे आए हैं जब अचानक मेरी श्रद्धा डगमगा गई है और मुझे उसके अनेकों बुरे परिणाम भुगतने पड़े हैं और तो और यह पुस्तक भी मेरी प्रेरणा पर और मेरी जिम्मेवारी पर छापी गयी है, अन्यथा प्रकाशक महोदय तो इस झंझट में हाथ भी डालना नहीं चाहते थे।

लोक कल्याण करें:—यह पुस्तक पवित्र पुस्तक है। किसी को भी इसका दुरुपयोग करने का साहस नहीं करना चाहिये। ऐसा करने से भी भीषण परिणाम निकल सकता है। इन्द्रजाल प्रभु की माया का चमत्कार है। उसका दिव्य शक्तियों का एक छोटासा अंश है इसका पूरा सम्मान किया जाना चाहिये जहां शब्द मारण आया है, वहां अभिप्राय मारने से नहीं प्रत्युक्त हानि पहुंचाने से है और जहां खून निकालने का प्रसंग है,

वहां नली से रक्त को टैस्टिंग करने जैसा खून निकालने से है। ऐसे शब्द चलताऊ भाषा ही में ज्यूं के त्यूं लिख दिये गये हैं इनका भावार्थ समझना चाहिए। इसके लिये साधक में प्रखर बुद्धि का होना आवश्यक है।

इसी प्रकार पुस्तक में जहां शूद्र शब्द आया है वहां इसका तात्पर्य केवल उन व्यक्तियों से है जो दुरा चारी तथा अनिष्ट करने वाले हैं। साधक को ऐसे व्यक्तियों के सम्पर्क से हमेशा बचना चाहिये।

शुद्ध विचार रखिए:—प्रत्येक सिद्धि पूरे मनो योग से हृदय में भगवान शंकर का ध्यान रखकर करनी चाहिये। यदि मन शुद्ध है, विचार शुद्ध है और चित एकाग्र है तो देवी देवता सम्पूर्ण कार्य सिद्ध करेंगे। सफलताएं आपके कदम चूमेंगी किन्तु यदि किसी कारण वश आप असफल रहे तो कर्म दोष है। आप का समय अनुकूल नहीं है अथवा आप के पूर्व जन्म का फल आपकी साधना के आड़े हाथों आ रहा है। यह भी सम्भव है कि मंत्रों के बीज आपके शक्ति चक्र के विपरीत पड़ रहे हों

अथवा आपके नक्षत्र उस घड़ी में आप को कोई सिद्धि न देना चाहते हों।

होनहार भावी प्रबल:—कर्म रेखा बड़ी प्रबल है। बड़े-बड़े मान चित्रों और तान्त्रिकाचार्यों को होनी के आगे घुटने टेकने पड़े हैं अनेक साधनाओं में कर्म की रेखा आड़े हाथों आती है। परिणाम शून्य हो जाते हैं सुफल कुफलों में बदल जाते हैं आशा निराशा के घनघोर बादलों में छिप जाती है और सिद्धि एक दम दूर नजर आने लगती हैं। देव के कार्यों में हाथ डालना किस के लिये सम्भव है? कोई भी मान्त्रिक अथवा तान्त्रिक, चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो गया हो, आज तक कर्म की रेखा को नहीं मिटा सका है, होनी को नहीं टाल सका है। होनी होकर ही रहती है। होनी और भाग के आगे उच्चाटन और मारण-यंत्र बेकार हो जाते हैं। वशीकरण तन्त्रों का प्रभाव उलटा पड़ने लगता है। स्तम्भन योग बे असर हो जाते हैं। योगिनी और डाकिनी साधक पर आक्रमण कर डालने का साहस पा जाते हैं। तभी कहा गया है

कि साधक सभी प्रकार से पवित्र होकर साधना करें, किसी का अहित न करे। बदले की भावना से कोई सिद्धि न करें। पूजा पाठ करे।
मन्दिर मस्जिद जाए, दान-पुराय करे ताकि उसके नवग्रह शान्त हों। उसकी कुप्तराशियों को शान्ति मिले मातेश्वरी, इस सृष्टि का पालन करने वाली जगदम्बा, सब विधि उसका कल्याण करें महा इन्द्र-जाल प्रणेता आदि विश्व नाथ बाबा उसको संरक्षण प्रदान करें और ब्रह्माराड के रचियता परम पिता पर-मात्मा उसको सफलता दें, ऐसी मेरी अभिलाषा है। करना मनुष्य के हाथ की बात है। फल वहीं से आता है जहां के संकेत पर ठूंठ में पत्ते फूट आते हैं, रेगिस्तान में पानी के सोत्र्ता फूट पड़ता है और बिना चाहे, बिना मांगे आठों सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं।
परमात्मा सर्व शक्ति मान है—मनुष्य एक साधन है। वह केवल कल्पना कर सकता है। मान्त्रिक और तान्त्रिक अपनी साधनाओं के फला फल पर विचार करके, उनसे निष्कर्ष निकाल कर

कुछ घोषणा कर सकते हैं, किन्तु उसे सफल अथवा असफल कर देना परमपिता के ही हाथों में है होनी बनी ही होने के लिये है। बीज को धरती में बोते समय हर किसान यही आशा करता है कि बीज फूटेगा। और धरती में गिर कर हर एक बीज फूटता है, ऐसी किसान की भी मान्यता है। किन्तु बीज सचमुच फूटेगा ऐसा कोई कह नहीं सकता। उसका फूटना सत्य होते हुए भी उस के भाग्य पर निर्भर है और भाग्य को न कोई मेट सकता है और न कोई मेट सकेगा।

भगवान रामके राजतिलक की भविष्य वाणी और मुहूर्त महान मंत्र ज्ञाता और विद्वान महर्षि गुरु वशिष्ठ जी ने निकाला था, किन्तु तब भी राम को राजतिलक जैसे मांगलिक समारोह न देख कर पिता की मृत्यु और बन गमन जैसे दारुण दृश्य देखने और झेलने पड़े यह सब विधि का विधान है। होनी बलवान का प्रमाण है।

सुनहु भरत, भावी प्रबल बिलखि कहें मुनी नाथ।
हानि. लाभ. जीवन. मरण. यश, अपयश विधि हाथ॥

मेरा काम था-इस ग्रन्थ को अपने प्रिय साधकों के सामने रखना ताकि उनको सारी मान्त्रिक तान्त्रिक साधनाएं एक स्थान पर एकत्रित मिल जाएं। परम पिता परमात्मा की महान अनुकम्पा से मैं इस काम में सफल हुआ। जादूपिता की महान कृपा हा से मुझे इस ग्रंथ को प्रकाशित करने के लिये इतने बड़े प्रकाशक का सहयोग मिला है, जो मेरी जिम्मेदारी पर इस ग्रंथ को प्रकाशित करने पर सहर्ष तैयार हो गया है। यह सब उस दयामय की कृपा दृष्टि का संकेत है।

उसी के पावन चरणों का ध्यान धर कर मैं इस परीक्षा में सफल हुआ। उसी का तन मन धन से स्मरण करने पर, पूरी श्रद्धा भक्ति से इन्द्रजाल पर क्रिया करने से सभी साधक मनोवांछित फल की प्राप्ति करेंगे, ऐसी मेरी आशा है।

दूसरों के लिये कुआं मत खोदो:—इसकी सिद्धियां अधिक कठिन हैं। हां, कठिन है साधक को उन सिद्धियों के लिये स्वयं को तैयार करना। प्रत्येक सिद्धि की सफलता या असफलता पूर्णतः साधक पर निर्भर है। जिस आटे के साथ साथ

पत्थर का एक छोटा सा टुकड़ा पिस जाने पर उस से बनी रोटीयां मुंह में नहीं चलती, उसी प्रकार साधक के तन मन पर छोटासा भी कलंक आ जाने पर सिद्धि दूर हो जाती है। यह पुस्तक लोक कल्याण के दृष्टिकोण को लेकर लिखी गयी है, किन्तु यदि साधक इसका उपयोग किसी का अनिष्ट करने का, या किसी को गलत राह पर डालने के लिये करे और स्वयं उसी का अनिष्ट हो जाए तो इसमें भला किसी का क्या दोष। जो दूसरों के लिये कुआं खोदता है, वह उसमें स्वयं गिरता है। प्रतिशोध की भावनाओं से इस पुस्तक का लाभ उठाना एकदम वर्जित है।

जिस प्रकार साधु सन्तों के सुवचन और आशीर्वाद दूसरों के लिये फलदायक होते हैं। बड़ों की अच्छी नजर अपने लिये नहीं, अपने छोटे के लिये कल्याण कारी सिद्ध होती है, उसी प्रकार इस इन्द्रजाल की सिद्धियां और मंत्र भी दूसरों के कल्याण के लिये अपना पूरा-पूरा प्रभाव दिखाने की क्षमता रखते हैं।

अपना ही भला मत सोचोः—केवल अपना

ही अपना चाहने वाला साधक इस अमूल्य ग्रंथ से पूरा लाभ नहीं उठा सकता। इससे लाभ उठाने के लिये उसे लोक कल्याण और जन-सेवा का व्रत लेना पड़ेगा। उसे अपने इष्ट देव के सामने यह प्रतिज्ञा करनी पड़ेगी कि वह हस्तलिखित व इन्द्र-जाल के साधनों से सशक्त बनकर किसी का अनिष्ट नहीं करेगा ऐसी ही प्रतिज्ञा प्रत्येक तान्त्रिक और मान्त्रिक अपने शिष्यों से कराता है। इस प्रतिज्ञा और ऐसा जन कल्याणकारी भावनाओं के बिना किसी को भी सिद्धि प्राप्त नहीं होती। डाक्टर अपनी दवा स्वयं नहीं कर सकता। वकील अपना मुकद्दमा स्वयं नहीं लड़ सकता। इसी लिये इन्द्रजाल का साधक सारी सिद्धियां अपने ही लिये नहीं कर सकता। यदि ऐसा होता तो आज संसार पर किसी मांत्रिक का राज्य होता। कोई तान्त्रिक सारे संसार को गुड्डे गुडियों की भांति नचाता। किन्तु ऐसा नहीं होता मन्त्र और तन्त्र दूसरों के कल्याण के लिये होते हैं।

सिद्धि की नुमायश न करे :—जो साधक

इन्द्रजाल की सिद्धियों को नुमायश या प्रदर्शन का साधन बनाना चाहें, वे भी सावधान रहें। सिद्धि प्रदर्शन नहीं चाहती। कभी-कभी उनका दर्शकों पर इतना बुरा प्रभाव पड़ता है कि लेने के देने पड़ जाते हैं। यही कारण है कि तान्त्रिक और मान्त्रिक संसार के लोगों की दृष्टि से दूर एकान्त में बैठ कर साधना करते हैं और वहीं से अपने प्रियजनों का कल्याण करते रहते हैं।

सच्चा साधकः—सच्चे साधक को किसी भी वस्तु का मोह नहीं होता। वह जो मिल जाए उसी में सन्तोष और सुख का अनुभव करता है। उसे सांसारिक—मोह माया और विषय मांग नहीं सकते वह कठोर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता है। कठोर संयम से रहता है तभी तो सारी शक्तियां उसके आधीन रहती हैं। वह जो चाहे सो कर सकता है, किन्तु इतना शक्तिवान होते हुए भी वह जन कल्याण के विपरीत कुछ नहीं कर सकता।

वह मरे हुये को भी जीवन दान दे सकता है सूनी कोख को हरी भरी बना सकता है, मौत के मुंह में

जा रहें रोगी को नीरोगी कर सकता है। अकाल पीड़ित क्षेत्रों में वर्षा करा सकता है, शत्रुओं के हृदय बदल सकता है, किंतु किसी का अनहित नहीं कर सकता, दूसरे लोगों में फूट डलवा कर लड़ाई करा देने से उसकी सारी साधना मिट्टी में मिल सकती हैं।

देवता या राक्षस :—अंत में इस इन्द्रजाल के वे साधक जो तनमन की शुद्धि के साथ इस का उपयोग लोक कल्याण के कार्यों में करेंगे देवता योनि को प्राप्त करेंगे ऐसे देवता साधकों की साधना दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करेगी, किन्तु जो साधक इस इन्द्रजाल का उपयोग अपनी दूषित प्रवृतियों को सफल करने में करेंगे। उनको पुराणों में राक्षस के नाम से पुकारा गया है। वे ऐसा करके अपना यह लोक भी बिगाड़ेंगे और परलोक भी।

जड़ में चेतन:—हिन्दू-शास्त्रों में जहां मूर्ति पूजा का विधान है, वहां बट और पीपल जैसे वृक्षों की पूजा भी फलदायिनी मानी गयी है। जनक

नन्दिनी सीता को क्लेश की कारागर में अशोक-वृक्ष ने शरण दी थी और वानर राज बालि का वध भी भगवान राम ने वृक्ष की ओट लेकर समाप्त किया था।

भगवान बुद्ध को अक्षय वट की छाया में तत्वज्ञान प्राप्त हुआ था और महर्षि वेद व्यास ने भी महा भारत जैसे बे जोड़ महा-काव्य की रचना बट वृक्ष के नीचे सम्पन्न की थी। आर्यों के बड़े बड़े दिग्गज महर्षि सदा से वृक्षों की छाया में बैठकर साधना करते आये हैं। उस परमपिता परमात्माने इस पुनीत वृक्षों में वह जीवन दायिनी और फल प्रदायिनी शक्ति भर दी है जिसे पुराणों में या देवी सर्व भूतेषु सिद्धि-रूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमोनमः कह कर पुकारा गया है।

इस इन्द्रजाल के साधक को वृक्षों में आरोहित इस देवी शक्ति को सदा नमस्कार करना चाहिये। साधना के मध्य वृक्षों को काटना कटवाना छांटना, छटवाना या वृक्ष स्थान अपवित्र करना, वृक्षों पर थूकना आदि पूर्ण रूपेण वर्जित समझ

जाना चाहिये । जिस कुशा के आसन पर बैठ कर साधारण साधु संत योगीश्वर और मुनीश्वर बने, जिस कुशासन पर बालमीकि, वेद व्यास और वशिष्ठ को अनेकों सिद्धियां मिली । जिस कुशासन के बल पर दुर्वासा के शाप वचन पलक झपकते ही साकार हो उठते थे, वह कुशासन स्वयं वृक्ष प्रदत्त है । इस प्रकार जड़ पदार्थों में चेतन जगाने वाले, उनमें सिद्धि दायिनि अमोघ शक्ति भरने वाले समस्त ब्रह्माण्ड के स्वामी उस परम पिता परमात्मा की सभी वंदना करते हैं ।

प्रगति की दौड़ः—एक समय था जब हमारा देश भारत सारे संसार को गुरु मन्त्र देता था। विदेशों से भी लोग भारत में ही विद्याध्ययन करने आते थे उस समय न मशीनें थी और न एटमी हथियार, फिर भी वे सारे काम जो आज मशीनों से ही सम्भव है, केवल इच्छा मात्र से सम्पन्न हो जाया करते थे । आज क्या हुआ ? साइंस के इस युग में मनुष्य की वह शक्ति कहां गयी ? महा भारत काल में माता गान्धारी ने तमाम उम्र

नन्दिनी सीता को क्लेश की कारागर में अशोक-वृक्ष ने शरण दी थी और वानर राज बालि का वध भी भगवान राम ने वृक्ष की ओट लेकर समाप्त किया था।

भगवान बुद्ध को अक्षय वट की छाया में तत्वज्ञान प्राप्त हुआ था और महिर्षि वेद व्यास ने भी महा भारत जैसे बे जोड़ महा-काव्य की रचना वट वृक्ष के नीचे सम्पन्न की थी। आर्यों के बड़े बड़े दिग्गज महर्षि सदा से वृक्षों की छाया में बैठकर साधना करते आये हैं। उस परमपिता परमात्माने इस पुनीत वृक्षों में वह जीवन दायिनी और फल प्रदायिनी शक्ति भर दी है जिसे पुराणों में या देवी सर्व भूतेषु सिद्धि-रूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमोनमः कह कर पुकारा गया है।

इस इन्द्रजाल के साधक को वृक्षों में आरोहित इस देवी शक्ति को सदा नमस्कार करना चाहिये। साधना के मध्य वृक्षों को काटना कटवाना छांटना, छटवाना या वृक्ष स्थान अपवित्र करना, वृक्षों पर थूकना आदि पूर्ण रूपेण वर्जित समझ

जाना चाहिये । जिस कुशा के आसन पर बैठ कर साधारण साधु संत योगीश्वर और मुनीश्वर बने, जिस कुशासन पर बाल्मीकि, वेद व्यास और वशिष्ठ को अनेकों सिद्धियां मिली । जिस कुशासन के बल पर दुर्वासा के शाप वचन पलक झपकते ही साकार हो उठते थे, वह कुशासन स्वयं वृक्ष प्रदत्त है । इस प्रकार जड़ पदार्थों में चेतन जगाने वाले, उनमें सिद्धि दायिनि अमोघ शक्ति भरने वाले समस्त ब्रह्माण्ड के स्वामी उस परम पिता परमात्मा की सभी बंदना करते हैं ।

प्रगति की दौड़ः—एक समय था जब हमारा देश भारत सारे संसार को गुरु मन्त्र देता था। विदेशों से भी लोग भारत में ही विद्याध्ययन करने आते थे उस समय न मशीनें थी और न एटमी हथियार, फिर भी वे सारे काम जो आज मशीनों से ही सम्भव है, केवल इच्छा मात्र से सम्पन्न हो जाया करते थे । आज क्या हुआ ? साइंस के इस युग में मनुष्य की वह शक्ति कहां गयी ? महा भारत काल में माता गान्धारी ने तमाम उम्र

आंखों पर पट्टी बांधे रखी, फिर भी उन्होंने जीवन पर्यन्त अन्धे धृतराष्ट्र की समुचित सेवा की। आज की कोई मशीन मृत-शरीर प्राण नहीं फूंक सकती, किन्तु आज से हजारों वर्ष पूर्व एक साधारण सी नारी सावित्री ने अपने पति सत्यवान को मृत्यु के चंगुल से छुड़ा लिया। गौतम ऋषि की स्त्री अहिल्या जो श्रापवश पत्थर हो चुकी थी राम चन्द्र जी ने उसे पुनः नारी बना दिया था। आखिर कैसे ? लोग कहते हैं कि समय आगे आगे दौड़ रहा है इस दौड़ में पीछे रहने वाला "पिछड़ा" बन जायेगा। इस दौड़ में सभी मनुष्य अपने अतीत को भूले जा रहे हैं। अपने आदर्शों, कर्म-काण्डों को सन्देह की दृष्टि से देख रहें हैं। क्या यह सच-मुच प्रगति है ? क्या हम सच-मुच आगे जा रहे हैं ? यदि आगे जा रहे हैं तो मशीनों से वह सब कुछ सम्भव क्यों नहीं हैं। जो कल बिना मशीनों के सम्भव था। आज मनुष्य ने भगवान को भुला दिया। उसकी शक्ति को सन्देह भरी दृष्टि से देखना आरम्भ कर दिया है। वह भूल

गया कि उस परम ब्रह्म की लीला अपरम्पार है। इस नास्तिकवाद ने मनुष्य के हृदय में अश्रद्धा, सन्देह और स्वार्थ को जन्म दिया है। आध्यात्मिक दृष्टि से आज का मनुष्य बहुत पिछड़ गया है। न उसके दिल में लगन रही है और न श्रद्धा। भगवद् भजन को वह ढकोसला समझने लगा है और पूजा पाठ को दिखावा। इसी "आर्यावर्ते भरत खण्ड," वाले भारत में जहां उस समय में जनता को ताले लगाने की जरूरत नहीं पड़ती थी तथा जहां पहले दूध की नदियां बहती थीं उसी ईश्वर में अविश्वास के कारण आपसी फूट के कारण पतन की ओर जा रहे हैं।

आपा बुरा है :-इस प्रकार असार संसार में मिथ्यावाद की पूजा हो रही है। जो हमारे वेद-पुराणों में त्याज्य है, वही आज कल ग्राह्य है। आपा बुरा है-इसे कोई नहीं देखता। दुष्कर्म किए जा रहे हैं और सत्कर्म दुष्कर्म बन रहे हैं। इन्द्र जाल के साधक को इस दिशा में सोचना समझना चाहिये। बुरी प्रवृतियां उल्टा प्रभाव

डालकर साधक से समस्त सिद्धियां छिन सकती हैं। दुष्कर्म में प्रवृति बुरा आपा अपना ही अहित करता है । कुएं ठण्डा जल पीने के लिये बनाए जाते हैं। यदि कोई मन्द मति उसमें डूबकर आत्म-हत्या करले तो इसमें कुआं बनवाने वाले का क्या दोष । इन्द्रजाल की समस्त साधना भगवान के अर्पण है। उसी की कृपा से सारे काम सिद्ध होते हैं । जिसके संकेत के बिना वृक्ष का एक पत्ता तक नही हिल सकता, जिसके आदेश बिना राजा, राजा नहीं रह सकता। जिसकी कृपा से रंक राजा बन कर सुख भोगता है, इन्द्रजाल की समस्त सिद्धियां उसी की कृपा दृष्टि का प्रसाद हैं। यदि वह खुश है उसकी इच्छा है तो साधक को एक के बाद एक सिद्धियां प्राप्त होती चली जाती हैं। अन्यथा नहीं।

छल कपट से दूर रहे :—इन्द्रजाल की यह खोज पूर्ण अभूत पूर्व पुस्तक लोक कल्याण के लिये लिखी गयी है। यदि कोई दुष्ट बुद्धि इसमें वर्णित उपायों का प्रयोग किसी का

अनिष्ट करने के लिये करे और उसे सफलता न मिले तो इसमें हमारा क्या दोष ?

कर भला हो भला ।
अन्त भले का भला ।।

उन परोपकारी जीवों और मनुष्यों को जो सदा दूसरों के हित में मरते हैं, जिनके हृदय में दया है, त्याग की भावना है, श्रद्धा है और उस परमपिता परमात्मा को सच्चे दिल से पुकारने की क्षमता है, उन्हीं के लिये यह पुस्तक है। लोक कल्याण की भावना से ओत प्रोत हृदय ही इन्द्रजाल का सच्चा साधक बन सकता है।

सब का भला करो भगवान् ।
सब पर दया करो भगवान ।।
सब पर कृपा करो भगवान ।
सबका सब विधि हो कल्याण ।।

कर्म हीन नर पावत नाहीं—हमारे पूज्यनीय ग्रथों में यह तथ्य स्पष्ट रूप से वर्णित है कि इस असार संसार में पुरुषार्थ और भाग्य दोनों में भाग्य प्रबल है। एक मजदूर जो सारे दिन घोर परिश्रम

करता है, दो जून रोटी को भी तरसता है, मिट्टी के कच्चे घरों में रहता है और भाग्यवान गंवार भी बिना हाथ पैर चलाए कुबेर पति कहलाता है।

सकल पदारथ हैं जग मांहीं।
कर्म हीन नर पावत नाहीं॥

इस संसार में सभी कुछ है। किन्तु कर्म और फल के अनुसार जो वस्तु जिसके भाग्य में होती है उसे वही मिलती है। दुर्लभ पदार्थों और अप्राप्य वस्तुओं को पाने के लिये अनेकों साहसी मनुष्य प्रयत्न करते हैं किन्तु लक्ष्य तक पहुंच पाने वाला विरला ही भाग्यवान होता है। विज्ञन की अनेक खोजों का इतिहास पूर्णतयाः उसी भाग्य वाद पर आश्रित है। एक वैज्ञानिक खोजता कुछ है और उसे प्राप्त कुछ हो जाता है। अतः सच्चा साधक भाग्यवाद पर श्रद्धा रखता है। गीता के अनुसार वह कर्म करता है किन्तु इसे करने से यही फल मिलेगा वह ऐसा सोचकर नहीं चलता। कर्म करना साधक का कर्तव्य है, फल देना भगवान के हाथ में है और जो आरम्भ ही से कर्महीन हो, जिसके भाग्य

ही में अमुक फल की प्राप्ति न लिखी हो उसे कोई क्यों कर वह फल दे सकेगा। ऐसे में तो यही सोचकर चुप हो बैठना पड़ेगा कि फल भाग्य ही में न था। भाग्य के आगे किसी का वश नहीं।
आबेहयात :—हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि ने कहा :—

बात की बात में विश्वास बदल जाता है।
रात ही रात में इतिहास बदल जाता है॥
तू मुसीबतों से न घबरा अरे इन्सान।
धरा की क्या कहें, आकाश बदल जाता है॥

इन पंक्तियों में समय के बदलते चक्र का कितना यथार्थ वर्णन है। आबेहयांत तक भी पहुंचा कर समय अमर बनाने के इच्छुक साधक को भटका देता है। कुएं के समीप रहकर भी अनेक मनुष्य उसके शीतल जल से वंचित रहते हैं। गंगा के तट पर बसे अनेकों हत भागी अपने पापों का बोझा ढोते-ढोते मर जाते हैं। इसे समय बड़ा बलवान कहे या और कुछ।

इन्द्रजाल का यह ग्रन्थ आबेहयात हैं,

संकट मोचिनी गंगा है, शीतल जल का कुआं है। इसका सास्वादन तो वही कर सकता है जो सभी दृष्टि से पाने का अधिकारी है। कुत्ता बार-बार दूध से बहलाए जाने पर भी कुत्ता रहता है जिसका अन्तरतम इन्द्रजाल का आबे-हयात पी सकने का अधिकारी न बन सका उसका भला इस ग्रन्थ से क्या भला होगा। वह खुद इसके क्रिया तन्त्रों से स्वयं का विनाश करेगा। व्यर्थ जमा पूंजी खायेगा। जो इस ग्रन्थ के होते हुए भी स्वयं को उस सांचें में न ढ़ाल सका जो सच्चे साधक का होना चाहिये, वह उस मूर्ख के समान है जो आबेहयात के पास होते हुए भी नाली के दूषित जल से अपनी प्यास बुझाता रहा था।

ढेरों पुस्तकें :—इन्द्रजाल एक मृग तृष्णा है। प्रत्येक मनुष्य इसे और इसकी क्रियाओं का साध्य समझकर इसकी ओर भागता है। सुपात्र इससे लाभ उठा लेते हैं और कुपात्र अपना भविष्य अन्धकारमय बना लेते हैं।

जन साधारण को इसी रूची से लाभ उठाने की सोचकर अनेक छोटे मोटे प्रकाशकों ने अनाप शनाप मंत्रों और तंत्रों से युक्त अनेक प्रकार के इन्द्रजाल बाजार में फेंक दिये हैं उनसे जहां साधकों का अहित होता है, वहां इस अपूर्व ग्रन्थ पर से लोगों की श्रद्धा मिटती जा रही है।

इस इन्द्रजाल का प्रकाशन इस दिशा में एक दैवी कदम हो है। जिस प्रकार सूर्य के उग आने पर समस्त अंधेरा दूर होकर चारों ओर शुभ प्रकाश फैल जाता है, उसी प्रकार इस इन्द्रजाल के प्रकाशन से इस विद्या को बदनाम करने वाले उस सभी छोटे मोटे ग्रन्थों की निराधारिता का पता लग जायेगा जो साधकों को पथ भ्रष्ट कर रहे हैं।

ग्रन्थ का प्रकाशनः—अगर इस ग्रन्थ से आपको कोई लाभ न पहुंचा तो मैं अपनी मेहनत बेकार समझूंगा। ईमानदारी दुनियां में सबसे बड़ी चीज है अतः इसका प्रयोग ईमानदारी से करें यह ग्रंथ इसी भाव को लेकर प्रकाशित किया जा रहा है

ताकि भारत में "राम राज्य" पुनः स्थापित किया जा सके फिर भी अगर आपको यह ग्रन्थ पसन्द न आए तो ८ दिन के अन्दर वापिस करदें।

जब समय आता है तभी काम होता है—

यह जरूरी नहीं कि इस ग्रन्थ से आपकी मनोकामना पूर्ण हो ही जाय क्योंकि सभी काम अपने समय के अनुसार ही होते हैं। जब समय आपके अनुकूल होगा तभी आपका काम होगा। पुरानी कहावत जो प्रसिद्ध है, के अनुसार :—

समय करे नर क्या करे, समय बड़ी बलवान।
भीलन् लूटी गोपिका, वही अर्जुन वही बाण॥

भगवान-आसरे :—फारसी का एक शेर है :-

सर नवीश्तेः-गर-बदस्ते खुद नवीश्त।
खुश नवीस अस्तो ना स्वाहद बद नवीश्त॥
गर खद सर बरना गरदद सर नवीश्त।
इंसुखन बायद-या-आवे जर नवीश्त॥
मेरी भाग्य रेखा मस्तक में है भगवान।
तू अपने हाथ से लिख।
चूंकि तुम सुन्दर लिखने वाले हो और तुम्हारे

हाथ से खराब लिखा ही न जायेगा।
सर रहे या न रहे, किन्तु सरका लिखा मिटता नहीं है।

यह प्रवचन सोने के पानी से लिखने योग्य है। उपर्युक्त शेर शत प्रतिशत ठीक है। भाग्य बड़ा प्रबल है। उसकी रेखायें पूर्ण रूप से उस जग नियत्ता के अधिकार में है। अतः सभी कृपाणार्पण की भावना से किया गया है। साधन सभी उत्तमोत्तम फलों का देने वाला होता है - निर्णय करके साधना करनी चाहिये।

साधक की भलाई के लिये

(१) ईश्वर सभी प्राणियों के मन की बात जानता है अतः साधक को सर्व प्रथम उसी परम ब्रह्म परमेश्वर का ध्यान कर लेना चाहिये।

(२) बहुत से अज्ञानी पुरुष ईश्वर के प्रताप को नहीं जान पाते और अविश्वास के वश उसका अनादर करते हैं। यह अपनी ही हानि के लिये है। अतः साधक को चाहिये कि वह भगवान् की महिमा पर दृढ़ विश्वास करके उनसे प्रेम करे।

(३) भगवान् को सबका आदि अविनाशी जानकर सब प्रकार उस पर विश्वास करके अनन्य भाव से निरन्तर उसका भजन व कीर्तन करते हुए अपनी साधना को आरम्भ करना चाहिए।

(४) जो साधक भगवान की उपासना अपने किसी भी स्वार्थ सिद्धि को ध्यान में न देकर करता है ईश्वर भी उसी प्रकार से उसकी साधना को ध्यान में देकर पूरा कराने की कोशिश करता है।

(५) "भगवान जो कुछ करता है अच्छा ही करता है" जिस साधक के दिल में ऐसा विचार होता है अर्थात् जो साधक हर एक परिस्थिति में भगवान की इच्छा मानकर सदा प्रसन्न रहता उसको सिद्धि भी अत्यन्त शीघ्र मिल जाती है ऐसा शास्त्रों का मत है।

(६) साधक को चाहिये कि अपना मन भगवान के अर्पण करदे अर्थात् जो भी काम करे वह भगवान के ही मन को बात को समझ कर करे। इसका तात्पर्य यह है कि अपने मन की बात को पूरी करने के लिये इच्छा का सर्वथा त्याग करदे और

ईश्वर प्रेरना के अनुसार हर एक क्रिया उसी की मर्जी के अनुसार करे ।

(७) साधक को भगवान का ही एक मात्र भक्त हो जाना चाहिये । इस भाव को हृदय में रख कर जब साधक का भगवान से अनन्य प्रेम हो जाता है तो संसार से उसको कोई वास्ता नहीं रह जाता ।

(८) केवल भगवान की पूजा और उसकी इच्छा दोनों को ही साधक को हर समय ध्यान में रखना चाहिये । अर्थात् यह बात हर समय याद रहनी चाहिये कि जो काम मैं कर रहा हूं क्या वह काम भगवान को भी पसन्द है या नहीं ।

(९) ईश्वर को प्रसन्न करने के लिये साधक को जैसा उचित समय पर बन पड़े, खान पान यज्ञ, तप, दान कथा आदि प्रेम और श्रद्धा से युक्त होकर अवश्य करनी चाहिए । ऐसा विचार कर लेना चाहिये कि जो भी मैं कर रहा हूं सब भगवान ही के लिये कर रहा हूँ ।

(१०) भगवान सभी प्राणियों में समान रूप से व्याप्त है उनका न किसी से पक्ष है और न ही

उनका किसी से द्वेष है। जो भी उसके गुणों का गान करता हुआ अपने को उसका बना देता है भगवान उसी साधक को अपने हृदय में स्थान देते हैं।
(११) जो साधक भगवान का नाम जपता हुआ किसी विशेष परेशानी के वश अपने लक्ष्य की पूर्ति में कोशिश करता है तो वह निश्चय ही परेशानी से छुटकारा प्राप्त कर लेता है अतः हर समय भगवान का स्मरण करते हुए ही साधक को कर्तव्य का पालन करना चाहिये।
(१२) जो साधक हर समय भगवान से ही चित लगाये रहते हैं। जिन के हर शब्द के साथ भगवान के ही गुणों की चर्चा रहती है जो बात-चीत व व्यवहार में उसके सिवाय किसी को बड़ा कह नहीं पाते और जिन्होंने अपना जीवन उसी के अर्पण कर दिया है साथ ही हर समय उसी में रमे रहते हैं उनको भगवान वह बुद्धियोग प्रदान करता है जिससे शीघ्र अपने लक्ष्य को प्राप्त होते हैं।
(१३) साधक को चाहिये कि वह समस्त इच्छा शक्तियों । त्याग करके एकमात्र भगवान का ही

दास हो जाय ऐसा करने पर भगवान उसके समस्त पापों को धोकर उसके ही अनूकूल फल देते हैं।

(१४) केवल भगवान में ही विश्वास करने वाला साधक श्रेष्ठ कर्मों को करते हुये जो कि भगवान के द्वारा ही कराये जाते हैं। परम गति को प्राप्त होता है जिसका कभी नाश नहीं होता।

(१५) जो साधक भगवान का ही प्रत्येक काम समझकर उसी की इच्छा के अनुकूल करता है और एक मात्र उसी का भक्त है और सब प्रकार की आशक्तियों से रहित है। समस्त प्राणियों में जो वैर भाव से रहित हो चुका है वह व्यक्ति निसंदेह भगवान को ही प्राप्त होता है।

(१६) यद्यपि भगवान की माया बड़ी विचित्र है उसकी माया का पार किसी ने नहीं पाया बड़े बड़े ऋषि मुनी भी इस माया से नहीं बच पाये। स्वयं नारद मुनी भी इस माया के चक्कर में फंस गये थे किन्तु भगवान भी अपने सच्चे साधक को

इस माया से बचाने के लिये कोई न कोई युक्ति निकाल लेता है।

(१७) यदि कोई दुराचारी व्यक्ति भी अपनी साधना को भगवान के अर्पण करके उसी का अनन्य भक्त हो जाता है तब भी उसका निश्चय सचमुच श्रेष्ठ समझना चाहिये क्योंकि कल दुराचारी से धर्मात्मा बनने की कोशिश कर रहा है और यदि वह अपने निश्चय पर अटल रहा तो निश्चय ही एक दिन धर्मात्मा बन जायेगा। ऐसे साधक साधु पुरुषों की श्रेणी में आते हैं।

(१८) भगवान के भक्त का कभी पतन नहीं होता और नहीं उसको निराशा का सामना करना पड़ता है। ऐसा दृढ़ विश्वास करके साधक को अडिग रूप से भगवान के ही आश्रित हो जाना चाहिये।

(१९) चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष, चाहे वैश्य हो चाहे शूद्र कोई भी श्रेणी मनुष्य क्यों न हो यदि वह चांडाल प्रकृति का है और निश्चय के अनुसार अपने कर्मों में भी चांडालपन प्रयोग करता है यदि

वह भी अपने कर्मों को भगवान के अर्पण करदे तब वह भी निश्चय अपनी प्रकृति को बदल सकता है।
(२०) यह मनुष्य का शरीर अनित्य असुरक्षित और सुख रहित है। अतः इस की कामना के लिये कोई भी बुरी भावना साधक को प्रयोग में प्रयोगात्मक रूप में नहीं अपनानी चाहिये। क्योंकि पता नहीं कब यह शरीर आत्मा से अलग हो जाय। अतः इस शरीर पर कोई भरोसा नहीं करना चाहिये।
(२१) साधक को हर एक जीव में भगवान का ही रूप समझकर उसके प्रति श्रद्धा और प्रेम का प्रदर्शन करना चाहिये। कभी भी उससे द्वेष के साथ या अकड़ और बुरा व्यवहार नहीं करना चाहिये। इसका तात्पर्य है कि उसको अपना आचरण हर किसी के लिये सख्त विनम्र और निष्कपट बना लेना चाहिये।
(२२) कभी भी अपनी स्वार्थ पूर्ति के ही उद्देश्य से भगवान से प्रेम नहीं करना चाहिये। ऐसा नहीं हो

कि अपने कार्य की प्राप्ति के बाद उसकी याद ही भूल जाओ । साधक को सच्ची शान्ति और साधना के लिये हर समय भगवान से सच्चा सम्बन्ध रखना चाहिये ।

(२३) जो साधक अपने मन में यह दृढ़ संकल्प कर लेता है कि मुझे तो उसी भगवान से लगन रखनी है जो अनादि है अन्नत है, अखण्ड है और जिसका कोई भी भेद नहीं, वह साधक मनुष्यों में श्रेष्ठ और कर्मबन्धनों से मुक्त हो जाता है ।

(२४) भगवान का दिव्य तेज तथा ऐश्वर्य इतना विलक्षणी है कि उसके सामने सभी सहज नतमस्तक हो जाते हैं उसके सामने महान से महान ज्ञानी विज्ञानी, ज्ञान वृद्ध, बयोवृद्ध, धर्मशील, तपस्यारत, ऋषि, महर्षि, वीर पराक्रमी, शान्तिप्रद और विकट योद्धा सभी झुक जाते हैं अतः किसी भी साधक को उससे अहंकार करके अपनी बुद्धि का प्रयोग गलत रूप में नहीं करना चाहिये ।

(२५) भगवान में चित लगा देन वाला साधक भगवान की कृपा से सब कठिनाइयों एवं परेशा-

नियों से छुटकारा प्राप्त कर लेता है किन्तु अगर अहंकार के वशीभूत होकर वह भगवान की इच्छा के विपरीत कार्य करता है तो उसका पतन हो जाता है।

(२६) सब प्राणियों के हृदय में भगवान हर समय व्याप्त रहता है। शरीर रूपी यंत्र में सभी प्राणियों को वह इच्छानुकूल घुमाता रहता है। उसकी इच्छा शक्ति के अनुरूप ही यह शरीर काम करता है अतः साधक को सर्वभाव से उसकी शरणागत हो जाना चाहिये।

(२७) जिस परम ब्रह्म परमेश्वर से सब जीवात्माओं की उत्पत्ति हुई है; चर अचर में जिसका साम्राज्य है और जो समस्त संसार में समान रूप से समाया हुआ है उसी भगवान की कर्त्तव्य कर्मों से साधक को हर समय पूजा करते रहना चाहिये।

(२८) साधक को चाहिये कि सुख में सुखी न हो और दुख में दुखी न हो। अर्थात् अपने अनुकूल व्यक्ति-वस्तु कार्यसिद्धि या परिस्थिति हो जाने पर कोई खुशी का प्रदर्शन न करे और ना ही अपने

प्रतिकूल परिस्थिति या फल प्राप्त होने पर दुखी हो।
(२९) साधक को शास्त्राज्ञा के अनुसार यज्ञ, जप, तप, दान दक्षिणा साधना आदि प्रत्येक कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व भगवान का नाम याद अवश्य करले।
(३०) साधक को यह भी चाहिए कि वह अपनी समस्त इन्द्रियों पर काबू रखे। इन्द्रियों के द्वारा विषयों का सेवन न करने से ऊपर से तो इसका सम्बन्ध टूट जाता है किन्तु कुछ समय बाद फिर इच्छा शक्ति जागृत हो जाती है किन्तु भगवान में रमजाने पर साधक की उस आशक्ति का नाश सदा के लिये हो जाता है।
सावधान ३१ :–इन्द्रियां अपने बलों द्वारा साधक का ध्यान विषयों की ओर ले जाती हैं। अतः भगवान की ओर ध्यान लगाने वाले साधकों को पहले आपनी इन्द्रियों पर अधिपत्य जमाना चाहिये।
(३२) साधक को अपने किए और करने वाले सभी कार्य उस भगवान के ही अर्पण कर देने चाहिये। आशा और ममता का त्याग करके ही उन आवश्यक कार्यों का आचरण करे किन्तु

भगवान को उस समय भी न भूले।
(३३) साधक को चाहिये कि जो साधना वह आसानी से कर सकता है और जो उसके अनुकूल है एवं जिसमें साधक को सुगम है उसी को व्य-वहार में ले।
(३४) साधक को चाहिये कि वह अपनी बुद्धि को स्थिर रखे विचलित न होने दे। निन्दा को और स्तुति को समान रूप से देखे। और भगवान का स्मरण चिन्तन करने का अपना स्वभाव बना ले। अपने रहने का स्थान भी वह अपना न समझे क्योंकि सदा उसी जगह नहीं रहना।
(३५) जो साधक शरीर और आत्मा का भेद अपने विवेक रूपी नेत्रों से देख लेते हैं। वे पर-मात्मा को प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं और प्रकृति से छुड़ाने वाले परमात्मा को भी जान लेते हैं।
(३६) साधक के हृदय में भगवान को प्राप्त करनें की अभिलाषा हर समय मौजूद रहनी चाहिये। उसकी पूर्ति के लिए वह आचरण व कर्म करना

चाहिये जो एक सच्चे भक्त के लिये भगवान ने बताया है उन गुणों को अपने जीवन में क्रियान्वित करना चाहिये ।

(३७) साधक को यह भी भली भांति पता होना चाहिये कि इस शरीर में जीव के साथ-साथ साक्षी के रूप में देखने वाला उप द्रष्टा इसको सम्मति देने वाला एवं भरण पोषण करने वाला परमेश्वर भी है जो परमात्मा के नाम से पुकारा जाता है वह सर्वथा विलक्षण है ।

(३८) साधक को चाहिये कि वह ब्राह्मण से लेकर शूद्र तक और गौ, हाथी, घोड़े आदि सभी जानवर और पक्षी—आदि में समान भाव व्याप्त परमात्मा का रहस्य भली भांति जानकर ही वह इनसे व्यवहार करें । किसी का भी आचार विचार मान कर उसके प्रति प्रियता में कमी न करे ।

(३९) जो भगवान अनादि परब्रह्म इन्द्रियजीत होने पर भी सब जगह सब इन्द्रियों का काम करने में समर्थ है । जिसके लिये बड़ी से बड़ी बात का भी कोई मूल्य नहीं वह आशक्ति के रहित और सब

का धारण पोषण करने वाला है, गुणातीत होते हुए भी सभी गुणों का भोक्ता है उसी ईश्वर के आश्रित साधक को रहना चाहिये।

(४०) साधक को समझना चाहिये कि परमात्मा उससे दूर से भी दूर और निकट से भी निकट है। सब दीपों का उजाला, अज्ञान से सर्वथा अतीत और सबके हृदय में व्याप्त है। अचल रहकर भी सब जगह विचरण करता है ऐसे सर्वगुण सम्पन्न भगवान के गुणों को समझना चाहिये।

(४१) साधक को समझना चाहिये कि समस्त शरीरों में जीवात्मा के साथ उसका परमसुहृद् परमेश्वर भी रहता है जो शरीर और जीवात्मा दोनों को जानने वाला है। उसी के आधीन हो जाना चाहिये।

(४२) साधक को दृढ़ निश्चय वाला बनना चाहिये अर्थात् एक मात्र भगवान पर उसकी प्राप्ति के साधनों पर विकल रहित दृढ़ विश्वास होना चाहिये, अन्य किसी पर भी नहीं।

(४३) साधक मन और बुद्धि को अपने से हटा

कर भगवान के अर्पण करदे। इनको अपना न माने। सदा असंग होकर किसी प्रकार की कोई कामना और जिज्ञासा न रखे।

(४४) सर्वत्र समान भाव से परिपूर्ण परमात्मा का दर्शन करने वाला साधन सम्पन्न मनुष्य सब प्राणियों में परमात्मा की और सब प्राणियों को परमात्मा में समान देखता है। इस कारण उसके राग द्वेष नष्ट हो जाते हैं।

(४५)साधक को स्वाभाविक समता युक्त करुणा भाव से सम्पन्न होना चाहिये। किसी प्रकार का भेद भाव नहीं रखना चाहिये।

(४६) साधक को मिट्टी, कंकड़, पत्थर, सोना सब वस्तुओं को समान दृष्टि से देखना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि उसको किसी लोभ आदि में नहीं फंसना चाहिये, तभी वह हानि एवं लाभ में बराबर रह सकता है।

(४७) सुख, दुख, रोग, बीमारी और जन्म मरण आदि को साधक को केवल शरीर के विकार समझना चाहिये कि इससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है।

(४८) कर्म के फल की इच्छा करने वाला साधक शांति प्राप्त नहीं कर सकता । अतः शान्ति प्राप्त करने के लिये बिना किसी फल की आशा के ही कार्य करना चाहिये ।
(४९) जो साधक न तो किसी कामना के वशीभूत कार्य करता है और न ही किसी से द्वेष करता है । उसका कार्य सन्यासियों जैसा है, वह संसार से अलग होता है और फिर संसार में आकर मोक्ष को प्राप्त होता है ।
(५०) साधक को प्रत्येक कार्य इच्छा शक्ति का त्याग करके और कार्य के पूरा होने या अपूर्ण रहने, दोनों दशाओं को एक सा मानकर ही करना चाहिये ।
आज की अधिकाधिक, रोग-शोक, द्रोह-द्वेष, वैर-हिंसा आदि सभी कठिनायों से छुटकारा पाने के लिये भगवान का नाम ही महोषधि है । इसी का सेवन करने पर कल्याण होना निश्चित है ।
(५१) साधक को पारिवारिक झंझटों से अर्थात् पुत्र, धन, स्त्री, गृहद्वार आदि से अलग रहना

चाहिये । अलग होने का अर्थ यह नहीं कि बिल्कुल घर बार छोड़ दें, बल्कि यह है कि घर में ही रहते हुए साधना के लिये उन से कोई सम्पर्क रखना।

(५३)कर्म फल की इच्छा से किया हुआ कार्य पूर्ण रहता है और कर्म का फल न चाहते हुए जो काम किया जाता है वह उसी तरह पाप से लिप्त नहीं होता जैसे कमल पानी से।

(५४) समता में जिन साधकों का मन स्थिर हो गया है वही सच्चे साधक हैं। उनका जीवन भी उज्ज्वल है, और उन्होंने संसार पर विजय प्राप्त करनेका साधन तय्यार किया हुआ है वे ही लोग ब्रह्म में स्थित हैं।

(५५) साधक की दृष्टि में वे गुण जरूरी हैं, जिन से कि जल चर, थल चर, नभ चर अर्थात संसार के समस्त जीवों के अन्तर उसी परमपिता-परमेश्वर की दी हुई आत्मा (जीव) समान रूप से दिखाई दें।

(५६) चल और अचल सभी उत्पन्न प्राणी शरीर और आत्मा के संयोग से ही उत्पन्न होते हैं।

ऐसे सभी प्राणियों में समान भाव रखना साधक का परम कर्तव्य है।
(५७) निष्ठ कामी व्यक्ति कर्मों के अच्छे या बुरे फल का त्यागन करके सबको समान समझ कर इन बन्धनों से सदा के लिये छूट जाता है और परम पद को प्राप्त करता है।
(५८) साधक को शरीर से सर्वथा अलग रहते हुए अहंकार का त्यागन कर देना चाहिये। अर्थात् शरीर को अपना रूप कभी नहीं मानना चाहिये।
(५९) साधक को इन्द्रियों के शब्द, स्पर्श, रंग-रूप, अच्छा बुरा, गंध और रस आदि की तरफ से बिल्कुल बैराग्य ले लेना चाहिये।
(६०) अपनी भक्ति के द्वारा ही साधक भगवान से और उसमें तत्त्वों से इच्छा की पूर्ति कर सकता है। किन्तु कर्म करते समय इच्छा का ध्यान रखना चाहिये। इसके बाद वह स्वयं भगवान में लिप्त हो जाता है।

साधक को मालूम होना चाहिये

कामना वाला मनुष्य निरन्तर अभाव की आग में

जलता रहता है, उसकी कामना कभी पूरी नहीं होती। यह विचार उसकी अज्ञानता और अहंकार से उत्पन्न होता है इसकी पूर्ति के लिये वह प्रयत्न करता रहता है। सफलता न मिलने पर क्रोध उत्पन्न होता है, और इस क्रोध के वश में वह अपने को और दूसरों को ऐसी हानि पहुंचाने की कोशिश करता है जिसका कि क्रोध शांत होने पर उसे स्वयं दुख होता है। ध्यान रहे कि क्रोध मनुष्य को अंधा बना देता है। अपनी कामना की पूर्ति होने पर ऐसे व्यक्ति को लोभ पैदा हो जाता है। लोभ के वश में भी वह ऐसे ऐसे पाप करना चाहता है जो कि उसे वास्तव में नहीं करने चाहिये। अतः इस कामना से जितना बचा जाय अच्छा है, क्योंकि पूर्ति व अपूर्ति दोनों ही हानिकारक हैं । ऐसा करने वाला साधक राक्षस वृति से बच जाता है, और अपना जीवन भी सुख पूर्वक बना लेता है।—त्याग जीवन की सबसे उच्च पहेली है, अगर इसको बना लिया गया तो समझो जीवन पर विजय प्राप्त कर

ली, जो सुख व शांति त्याग में है वह भोग विलास में नहीं मिल सकता। भोग विलास तो मनुष्य को राक्षस बना कर पतन की ओर ले जाता है और उस को भांति-भांति के दुख व दरिद्रता प्राप्त होते हैं। यद्यपि शांति सुख से उनको मनमाना धन-दौलत, जायदाद, पद, अधिकार, यश और प्रतिष्ठा तो नहीं प्राप्त हो सकते किन्तु इस से अशांति, शारीरिक व मानसिक पीड़ा बिल्कुल ही समाप्त हो जाती है। यदि तुम्हारे पास धन दौलत कमाने का कोई साधन है या किसी ऐसे ऊंचे पद पर हो जहां इस चीज की कोई कमी नहीं। यह भी हो सकता है कि बड़ा आदमी होने के नाते नागरिक प्रतिष्ठा और मान में कोई कमी न रखते हो, किन्तु यदि तुम्हारे पास त्याग और विश्वास की कमी है और दिल में प्रेम नहीं है तो यह सब कुछ बेकार है। तुम सदा कामना, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के फन्द में ही फंसे रहोगे। इससे छुटकारा प्राप्त करने का अन्य कोई साधन नहीं है। भविष्य में भी तुम कभी सुखी नहीं रह सकते और दिन

रात कामना की आग में जलते रहोगे।
ईश्वर की कृपा के प्रकाश में उसकी छत्र छाया में वही व्यक्ति रह सकता है।जो इसमें विश्वास करता हो जो निडर हो, कर्तव्य परायण हो व अपने निश्चित कर्मों को उसी की आज्ञा के अनुसार करता चला आ रहा हो, पाप के बंधन से वह आदमी सदा बचा रहता है। सबको एक जैसा समझा। इस भावना के वशीभूत जिस व्यक्ति का हृद होता है वह अपनी शक्ति और धन का उपयोग कभी कमी नहीं करता।

प्राचीन तन्त्र शास्त्रों के प्रयोग—पाठकों की जानकारी के लिये प्राचीन तन्त्र ग्रन्थों में वर्णित प्रयोगों का यहां वर्णन किया जा रहा है। जिन लोगों को प्राचीन तन्त्र ग्रन्थों में वर्णित विभिन्न प्रकार के तांत्रिक साधनों के सम्बन्ध में प्रामाणिक जानकारी प्राप्त करनी हो उन्हें देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली–६ द्वारा प्रकाशित प्राचीन यन्त्र मन्त्र तन्त्र शास्त्र अर्थात् 'महा इन्द्र-जाल' नामक ग्रंथ का अध्ययन करना चाहिये।

यह ग्रन्थ १६ खण्डों में है और प्रत्येक खण्ड का मूल्य ७)५० रु० है। पूरा ग्रंथ मंगाने पर सिर्फ १०१)रु० की वी० पी० की जायगी। अर्थात् ११.१)रु० रियायत तथा डाक खर्च माफ।

प्राचीन तन्त्र ग्रंथ में वर्णित प्रयोग इस प्रकार हैं। षट कर्मों का वर्णन—तांत्रिक साधनों के लिये ६ प्रकार के कर्म माने गये हैं।

१. शान्तिकरण—शान्तिकरण के प्रयोगों द्वारा कृत्या तथा ग्रह आदि के दोषों को शान्त किया जाता है।

२. वशीकरण—वशीकरण के प्रयोगों द्वारा स्त्री-पुरुष तथा अन्य प्राणियों को अपने वश में किया जाता है।

३. स्तम्भन—स्तम्भन के प्रयोगों द्वारा विभिन्न जीवों की प्रवृत्ति को अवरुद्ध किया जाता है।

४. विद्वेषण—विद्वेषण के प्रयोगों द्वारा मित्र भावापन्न प्राणियों की पारस्परिक प्रीति को नष्ट करके उनमें द्वेष-भाव उत्पन्न करा दिया जाता है।

५. उच्चाटन—उच्चाटन के प्रयोगों द्वारा किसी

मनुष्य आदि को अपने गांव, नगर, देश आदि से दूर कर दिया जाता है।

६. मारण—मारण के प्रयोगों द्वारा जीवों का प्राण-नाश किया जाता है।

इन ६ कर्मों के ६ भेद तथा अनेक उपभेद होते हैं। परन्तु तन्त्र-शास्त्र की सभी क्रियाएं इन ६ कर्मों के ही अन्तर्भूत होती हैं अतः इन कर्मों के लिये इनके देवता, काल, आदि की जानकारी प्राप्त करके किसी भी साधन में प्रवृत्त होना चाहिये।

षट कर्मों के देवता—षट कर्मों के देवता नीचे लिखे अनुसार कहे गये हैं :—

१. शान्ति कर्म की अधिष्ठात्री देवी — रति
२. वशीकरण की अधिष्ठात्री देवी — वाणी
३. स्तम्भन की अधिष्ठात्री देवी — रमा
४. विद्वेषण की अधिष्ठात्री देवी — ज्येष्ठा
५. उच्चाटन की अधिष्ठात्री देवी — दुर्गा
६. मारण की अधिष्ठात्री देवी — भद्रकाली

षटकर्मों की दिशाएं

कौन से कर्म में कौनसी दिशा प्रशस्त है. इसे नीच

लिखे अनुसार समझना चाहिये :–

१. शान्ति कर्म में – ईशान कोण
२. वशीकरण में – उत्तर दिशा
३. स्तम्भन में – पूर्व दिशा
४. विद्वेषण में – नैऋत्य कोण
५. उच्चाटन में – वायव्यकोण
६. मारण में – अग्निकोण

—०—

षटकर्मों के लिये काल निर्णय

कौनसा कर्म किस काल (समय) में करना चाहिये। इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये।

१–वशीकरण–दिन के पूर्व भाग में।
२–विद्वेषण तथा उच्चाटन दिन के मध्य भाग में।
३–शांति और पुष्टि कर्म–दिन के अंतिम भाग में।
४–मारण कर्म–सन्ध्या काल में।

षट कर्मों के लिये आसन

कौनसा कर्म किस आसन पर बैठ कर करना उचित है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

१–वशीकरण के लिये–मेंढा या भेड़ के चमड़े का आसन

२–आकर्षण के लिये–व्याघ्र चर्म अर्थात बाघ के चमड़े का आसन

३–उच्चाटन के लिये–ऊंट के चमड़े का आसन।

४–विद्वेषण के लिये–घोड़े के चमड़े का आसन।

५–मारण के लिये–भैंसे के चमड़े का आसन।

६–मोक्ष साधन कर्म के लिये–हाथी के चमड़े का आसन।

लाल रंग के कम्बल के आसन पर बैठकर सब कर्मों का साधन किया जा सकता है।

माला, जप, मुद्रा, ध्यान आदि के सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिये हमारे यहां से प्रकाशित–'तांत्रिक साधन विधि' एवं 'मन्त्र सिद्धि' नामक पुस्तकों को मंगाकर पढ़ना चाहिये। तांत्रिक साधनों की पूर्व एवं पूर्ण जानकारी प्राप्त किये बिना कोई साधन सफल नहीं होता। यह स्मरण रखना चाहिये।

सर्वजन वशीकरण मंत्र–आगे लिखा मन्त्र सब

लोगों को वश में करने वाला माना जाता है। इस मंत्र को सिद्ध करने के लिये १००८ की संख्या में जप करना चाहिये।

मन्त्र इस प्रकार है:—

'ॐ सर्वलोक वशंकराय कुरुकुरु स्वाहा'—मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर, इस मन्त्र के द्वारा निम्नलिखित प्रयोगों की वस्तुओं को अभिमंत्रित करना चाहिये। प्रयोग में आने वाली सभी वस्तुओं को एकत्र करके उन पर उक्त सिद्ध मन्त्र को १०८ बार जप कर फूंक मारने से अभिमंत्रण का कार्य पूरा हो जाता है, अभिमन्त्रित वस्तुओं का यथाविधि प्रयोग करना चाहिये। इस मन्त्र के प्रयोग निम्नलिखित हैं।

ब्रह्म दण्डी का प्रयोग—ब्रह्म दण्डी, वच और कूठ-इन तीनों वस्तुओं को समभाग लेकर, कूट पीस कर चूर्ण करलें। फिर उस चूर्ण को उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमंत्रित करे। तत्पश्चात अभिमंत्रित चूर्ण को पान में रख कर, वह पान उस व्यक्ति को खिलादे जिसे वश में करना

हो। इस अभिमन्त्रित चूर्ण युक्त पान को खाने वाला व्यक्ति पान खिलाने वाले के वशीभूत हो जाता है।

वट मूल का प्रयोग—बरगद की जड़ को पानी में घिस कर उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित कर अपने मस्तक पर तिलक लगाएं। फिर जिस साध्य-व्यक्ति के पास जाकर पहुंचें वह देखते ही वशीभूत हो जायगा।

अपामार्ग का प्रयोग—अपामार्ग अर्थात् ओंगा, जिसे चिर-चिटा या आधा-झारा भी कहते हैं, का चूर्ण बनाकर उस चूर्ण को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके, उसे पान में रख कर साध्य व्यक्ति को खिलादें, तो पान खाने वाला व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाता है।

सहदेई का प्रयोग- सहदेई नामक बूटी को छाया में सुखाकर चूर्ण करलें। फिर उस चूर्ण को पूर्वोक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके साध्य-व्यक्ति को पान में रख कर खिलादें तो वह वशीभूत हो जायगा।

कुंकुम का प्रयोग—कुंकुम, नागर मोथा, कूठ, हरताल व मैनसिल, इन सब वस्तुओं को समभाग लेकर अनामिक उंगली के रक्त में पीस कर लेप बनालें, फिर उस लेप को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के पास पहुंचें तो वह साधक को देखते ही वशीभूत हो जाता है।

गोरोचन का प्रयोग—गोरोचन, पद्म-पत्र, त्रिपंगु और लाल चन्दन-इन सब वस्तुओं को समभाग लेकर इकट्ठा पीस लें। फिर उस लेप को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य-व्यक्ति के पास पहुंचें, वह साधक को देखते ही वशीभूत हो।

श्वेतगुंजा का प्रयोग—श्वेत गुंजा अर्थात् सफेद घुंघची को छाया में सुखा कर कपिला गाय के दूध में घिस लें फिर उस लेप को पूर्वोक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर, अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के पास पहुंचें तो वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।

श्वेत दुर्वा का प्रयोग–श्वेत दुर्वा अर्थात् सफेद रंग वाली दूब को गाय के दूध में घिस कर उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करें, फिर उसका मस्तक पर तिलक लगाकर-साध्य व्यक्ति के पास पहुंचें, तो वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।
श्वेत अर्क पुष्प का प्रयोग–सफेद आक के फूलों को छाया में सुखा कर कपिला गाय के दूध में पीसकर उसे पूर्वोक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने जा खड़े हों, तो वह देखते ही वशीभूत हो जायगा।
हरताल का प्रयोग–हरताल, असगन्ध तथा सिन्दूर को केले के रस में पीस कर, उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने मस्तक पर तिला कर साध्य व्यक्ति के पास पहुंचें तो वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।
अपामार्ग बीज का प्रयोग–अपामार्ग अर्थात् ओंगा के बीजों को कपिला गाय के दूध में पीस कर उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगा कर जिस साध्य

व्यक्ति के पास पहुंचा जायगा वह देखते ही वशी-
भूत हो जायगा।
पान एवं तुलसी का प्रयोग—पान तथा तुलसी
के पत्तों को कपिला गाय के दूध में पीस कर, उक्त
मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके उसका अपने
मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने
जा पहुंचें तो वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।
सर्वजन वशीकरण दूसरा मन्त्र—नीचे लिखा
मन्त्र भोजन किये बिना ५०० की संख्या में जप
करने से सिद्ध हो जाता है। मन्त्र यह है :–
"ॐ मों ड्रो"
जिस व्यक्ति को वश में करने की इच्छा से इस
मन्त्र का जप किया जाता है, वह चाहे राजा हो
अथवा सामान्य व्यक्ति, पुत्र हो अथवा मित्र, भाई
हो या और कोई, वशीभूत हो जाता है।
सर्वजन वशीकरण तीसरा मंत्र—नीचे लिखा
मन्त्र १००० की संख्या में जप करने से सिद्ध होता
है। मंत्र यह है–
"ॐ चामुराडे जय जय वश्यं करि जय जय सर्वं

सत्वान्नम स्वाहा ।"
मंत्र को सिद्ध कर लेने के बाद आवश्यकता के समय रविवार अथवा मंगल वार के दिन इस मंत्र द्वारा गुलाब के फूल को १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति को वह फूल दे दिया जायेगा वह साधक के वशीभूत हो जायगा।

सर्वजन वशीकरण चौथा मन्त्र–'ॐ नमो भगवति मातंगेश्वरि सर्व मुखरंजनि सर्वेषां महा-माये मातंगे कुमारिके नन्द नन्द जिव्हे सर्वलोके वश्य करि स्वाहाः ।'
यह मन्त्र दस हजार की संख्या में जपने से सिद्ध होता है । इस मंत्र के प्रयोग निम्नलिखित हैं।

पहला प्रयोगः–चन्द्र ग्रहण के समय विष्णु कांता की जड़ लाकर उसे उक्त मंत्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उसका अंजन आंखों में लगाकर जिस साध्य व्यक्ति के पास पहुंचा जायगा वह देखते ही वशीभूत हो जायगा।

दूसरा प्रयोगः–मैनसिल, गोरोचन तथा ताम्बूल को पीस कर उक्त मंत्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित

कर अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य व्यक्ति के पास पहुंचा जाय वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।

तीसरा प्रयोगः—शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी के दिन सफेद घुंघची को जड़ सहित उखाड़ कर घर ले आए। फिर उसे कूट पीस कर चूर्ण बनाले तत्पश्चात् उस चूर्ण को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे अभिमन्त्रित चूर्ण जिस साध्य व्यक्ति को पान में रख कर खिला दिया जायगा वह साधक के वशीभूत हो जायगा।

सर्वजन वशीकरण पांचवां मन्त्र—नीचे लिखा मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है। मन्त्र इस प्रकार है :-

'ॐ ह्रीं मोहिनी स्वाहा:'

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर जल, पुष्प, वस्त्र अथवा किसी उत्तम फल को इस मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके वह वस्तु जिस व्यक्ति के हाथ में दी जायेगी वह वशीभूत हो जायगा।

सर्वजन वशीकरण छठा मन्त्र—आगे लिखा

मन्त्र १००००० एक लाख की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है। इसे 'भूतनाथ मन्त्र' कहा जाता है। जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकता के समय इस मन्त्र को १०८ बार जप कर साध्य व्यक्ति के साथ साथ भूतनाथ का स्मरण करने से साध्य व्यक्ति वशीभूत हो जाता है।

'ॐ नमः स्वार्थ साधनी स्वाहा।'

सर्वजन वशीकरण सातवां मन्त्र—नीचे लिखा मन्त्र तिराहे पर बैठ कर एक लाख की संख्या में जप करने से सिद्ध होता है, मन्त्र इस प्रकार है—

"ॐ ह्रीं ह्रीं कालि कालि स्वाहा"

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब आवश्यकता के समय जिस स्त्री या पुरुष को वश में करना हो, उसके पास जाकर १०८ बार मन्त्र पढ़ कर उस पर फूंक मारने से वह व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण आठवाँ मन्त्र—'ॐ चिरि चिरिचाराडली महाचाराडाली अमुके मे वश मानय

स्वाहा।' यह मन्त्र सात दिन और सात सात रात्रि तक निरन्तर जपते रहने से सिद्ध होता है। मन्त्र में जिस जगह 'अमुक' शब्द आया है, वहां जिस व्यक्ति को वशीभूत करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखे अनुसार इसका प्रयोग करना चाहिये।

मन्त्र में 'अमुक' के स्थान पर साध्यव्यक्ति के नाम सहित एक ताल पत्र पर लिखे, फिर उस मन्त्र लिखे ताल पत्र को दूध मिले हुए पानी में पकावे। इस उपाय से जिस व्यक्ति का नाम ताल-पत्र पर लिखा होगा वह साधक के वशीभूत हो जायगा। प्रयोग के सम्बन्ध में दो अर्थ विधियां इस प्रकार बताई गयी हैं।

पहली विधि–इस मन्त्र को साध्यह व्यक्ति के नाम सहित बेल के कांटे द्वारा ताल-पत्र पर लिख कर उस तालपत्र को दूध में पकावे। फिर ३ दिन तक उस तालपत्र को कीचड़ में रखे, तीन दिन बाद तालपत्र को कीचड़ में से निकाल कर दुर्गोत्सव

मण्डप के द्वार में गाड़ दें। इस प्रयोग के करने से साध्य व्यक्ति वशीभूत हो जाता है।

दूसरी विधिः—बेल के कांटे द्वारा ताल-पत्र के ऊपर उक्त मन्त्र को लिखे। फिर भद्रकाली की पूजा करके जिस व्यक्ति को वश में करना हो उसके घर में उस ताल पत्र को गाड़ दें तो साध्य-व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाता है।

तीसरी विधिः—'रं सर्वलोक वश मानय स्वाहा' इस मन्त्र से जप तथा पूर्वोक्त मन्त्र द्वारा पूजन करने पर साध्य-व्यक्ति को वश में किया जा सकता है।

सर्वजन वशीकरण नवां मन्त्र—नीचे लिखा मन्त्र भी सब लोगों को वशीभूत करने वाला है। यह १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मंत्र इस प्रकार है 'ॐ नमः कामाय सर्वजन प्रियाय सर्वजन सम्मोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वालय प्रज्वालय सर्वजनस्य हृदयं मम वशं कुरु कुरु स्वाहा।' आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ बार जप करके जिस साध्य व्यक्ति के शरीर पर फूंक मारी

जायगी, वह साधक के वशीभूत हो जायगा।
सर्वजन वशीकरण दसवाँ मन्त्र—आगे लिखा मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। इस मन्त्र का जप करते समय कामदेव का निम्न लिखित रूप में ध्यान रखना चाहिये।
कामदेव का शरीर स्वर्ण निर्मित जैसा है। और वह अपने धनुष को कानों तक खींचे हुए युवती सुन्दरी के हृदय पर अपनी निश्चल दृष्टि को आरोपित किये हुए है। मन्त्र यह है:-
'ॐ मद मद मादय मादय ह्रीं वशय-अमुकं स्वाहा।'
इस मन्त्र में जहां अमुकं लिखा है वहां अमुकं के स्थान पर जिस व्यक्ति को वश में करना हो, उस के नाम का उच्चारण करना चाहिये।
दस हजार की संख्या में इस मन्त्र को जपने तथा पूर्वोक्त विधि से कामदेव का ध्यान करते हुए दस हजार की संख्या में लाल रंग के पुष्प चढ़ाने से यह मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र की साधन-सम्बन्धी सभी क्रियाएं बायें हाथ से करनी चाहिए। इस मन्त्र का नाम 'मदनमन्त्र' है। जब मन्त्र सिद्ध

हो जाय, तब आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ बार जप करके साध्य व्यक्ति के शरीर पर फूंक मारने से वह साधक के वशीभूत हो जाता है।
सर्वजन वशीकरण ग्यारहवाँ मन्त्र--नीचे लिखा मन्त्र १ लाख की संख्या में जप कर दस हजार की संख्या में सिरस वृक्ष की समाधि से हवन करने पर सिद्ध होता है। मन्त्र को जपते समय चामुण्डा देवी के निम्न लिखित स्वरूप का ध्यान करना चाहिये।
'चामुण्ड देवी करोड़ दांतों वाली, सुन्दर मुख वाली, अन्धकार में स्थित, अपने दायें हाथों में पाश तथा मुण्ड को धारण किये हुए हैं। उनके शरीर का वर्ण श्याम है। वह भयदायक बाघम्बर से आवृत्त तथा शव के ऊपर बैठी हुई हैं।
चामुण्डा देवी का विधि पूर्वक पूजन करने के बाद मन्त्र का जप करना चाहिये मन्त्र इस प्रकार है—
"ॐ चामुण्डे जय चामुण्डे मोहय वशमानय अमुकं स्वाहा।'
इस मन्त्र में जहां 'अमुकं' शब्द आया है, उस स्थान

पर साध्य व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिये। जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब जिस व्यक्ति को वश में करना हो, उसके शरीर पर १०८ बार मन्त्र पढ़कर फूंक मारदे तो वह व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण बारहवाँ मंत्र—नीचे लिखा मन्त्र भी सर्वजन वशीकरण के प्रयोग में आता है। मन्त्र यह है:—

'ॐ नमो भगवती सूचि चाराडालिनी नमः स्वाहा।'

इस मन्त्र की साधन विधि यह है।

जिस व्यक्ति को वश में करना हो, उसकी एक मोम की मूर्ति तैयार करे मूर्ति कृतांजील, युक्तपाद तथा अङ्ग प्रत्यङ्ग सहित होनी चाहिये। फिर उस मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा के बाद उस मूर्ति को सामने रख कर उक्त मन्त्र का दस हजार की संख्या में जप करे। मूर्ति को तैयार करते समय भी उक्त मन्त्र का निरंतर जप करते जाना चाहिये। जब निश्चित संख्या में जप पूरा हो जाय, तब उस पुतली को अंगारों की अग्नि में तपाना चाहिये। पुतली को अग्नि

में तपाते समय भी मन्त्र का जप तथा साध्य व्यक्ति का ध्यान करते जाना आवश्यक है।
इस क्रिया के करने से साध्य व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाता है।
सर्वजन वशीकरण तेरहवां मन्त्र—निम्न लिखित मन्त्र २०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र यह है।
ॐ यें परत्तो भयं भगवती गम्भीर रेछ स्वाहा।'
जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब अपामार्ग आंधाझारा की जड़ तथा गोरोचन को पानी में पीस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित करे फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगा कर जिस साध्य व्यक्ति के पास पहुंचा जाय, वह देखते ही वशीभूत हो जायगा।
सर्वजन वशीकरण चौदहवां मन्त्र—नीचे लिखा मन्त्र ३०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र इस प्रकार है।
'ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहय-मोहय मिलि ठः ठः स्वाहा।'

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखे अनुसार किसी भी प्रयोग को करने से कार्य-सिद्धि होती है।
पहला प्रयोग—बेल-पत्र तथा नीबू को बकरी के दूध में घोंट कर उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमंन्त्रित कर, अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने पहुंचने से वह व्यक्ति देखते ही वशीभूत हो जाता है।
दूसरा प्रयोग—भंग के बीज तथा ग्वारपाठे की जड़ को एक साथ घोंट-पीसकर उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने पहुंचने से वह व्यक्ति देखते ही वशीभूत हो जाता है।
तीसरा प्रयोग—गोरोचन, मछली का पित्ता, बंश-लोचन, केशर, चन्दन तथा काक जंघा, इन सब वस्तुओं को समभाग लेकर किसी क्वारी कन्या के हाथ से बावड़ी जल में पिसवाएं, फिर उस लेप को मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमंत्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के पास पहुंचा जाय तो वह देखते ही वशीभूत होता है।

सर्वजन वशीकरण पन्द्रहवां मन्त्र–नीचे लिखा मन्त्र १००८ बार जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र इस प्रकार है।

'ॐ नमो नमो कद्संवारिनि सर्वलोक वश्य करि स्वाहा।'

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब नीचे लिखी विधियों में से किसी भी एक के अनुसार इसका प्रयोग करना चाहिये।

पहली विधि–शनिवार के दिन व्रत करके उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठकर, उसी स्थिति में इन्द्रायण को जड़ मूल सहित उखाड़े। फिर उसके पंचांग में सोंठ, काली मिर्च तथा पीपल मिलाकर बकरी के मूत्र में पीसकर झरबेरी के समान गोलियां बनाएं और उन गोलियों को छाया में सुखालें जब प्रयोग करना हो, उस समय पत्थर की शिला पर पानी के संयोग से चन्दन को घिस कर उसी शिला पर साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे, फिर उक्त गोली को भी उसी शिला पर घिसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित

करे । तत्पश्चात उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने पहुंचें, तो वह देखते ही वशीभूत हो जायगा ।

दूसरी विधि—पूर्वोक्त गोली को गोरोचन तथा पानी में पीस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने जाकर खड़ा हो वह देखते ही वशीभूत हो जायगा ।

तीसरी विधि—पूर्वोक्त गोली को देवदास तथा सफेद चन्दन के साथ पानी में घिस कर पानी को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर वह पानी जिस साध्य व्यक्ति को पिला जायेगा, तो वह पीते ही वशीभूत हो जायगा ।

सर्वजन वशीकरण सोलहवां मन्त्रः—नीचे लिखा मन्त्र एक लाख की संख्या में जपने से सिद्ध होता है । प्रयोग के समय इस मन्त्र को १०८ बार और जप लेना चाहिये । मन्त्र इस प्रकार है-

'ॐनमो नारायणाय सर्वलोकान् मम वशं कुरु कुरु

स्वाहा।'

इस मन्त्र के प्रयोग निम्न लिखित हैं–

पहला प्रयोगः–रविवार के दिन ब्रह्मदण्डी, वच तथा कूट के समभाग चूर्ण को पान में रख कर उस पान को सिद्ध मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति को खिला दिया जायगा वह साधक के वशीभूत हो जायगा।

दूसरा प्रयोगः–पुष्य नक्षत्र में पुनर्नवा की जड़ को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके अपने दायें हाथ में बांध लें फिर जिस साध्य व्यक्ति के सामने जाकर खड़ा हो वह देखते ही वशीभूत हो जायगा।

तीसरा प्रयोगः–बरगद के वृक्ष की जड़ को पानी में घिसकर उसमें भस्म मिलाएं, फिर उसे उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगा कर जिस साध्य व्यक्ति के पास पहुंचा जायगा वह देखते ही वशीभूत हो जायगा।

चौथा प्रयोगः–आंवले के रस में मैनसिल तथा

असगंध को मिलाकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर मस्तक पर तिकक लगाकर साध्य व्यक्ति के पास पहुंचने से वह शीघ्र ही वशीभूत हो जाता है ।

पांचवां प्रयोगः—पान तथा तुलसीपत्र को कपिला गाय के दूध में पीस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उसका मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के पास पहुंचा जाय तो वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।

छठा प्रयोगः—अपामार्ग अर्थात ओंगा के बीजों को बकरी के दूध में घिस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे। फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के पास पहुंचा जाय वह देखते ही वशीभूत हो जायगा।

सातवाँ प्रयोगः—हरताल, असगन्ध तथा सिन्दूर को केले के रस में पीस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उसका मस्तक पर तिलक लगा कर जिस साध्य व्यक्ति के पास पहुंचे वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।

आठवाँ प्रयोगः—ग्वार पाठे की जड़ तथा भांग के बीजों को पीस कर उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमंत्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने पहुंचे तो वह देखते ही वशीभूत हो जायगा।

नवाँ प्रयोगः—बेल पत्र तथा बिजौरा नीबू को बकरी के दूध में पीस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति में सामने पहुंचे तो वह देखते ही वशीभूत हो जायगा।

दसवाँ प्रयोगः—सफेद दूब को कपिला गाय के दूध में पीस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उसका अपने समस्त शरीर पर लेप करके जिस साध्य व्यक्ति के सामने खड़ा हो वह देखते ही वशीभूत हो जायगा।

ग्यारहवां प्रयोगः—श्वेत आक को छाया में सुखा कर कपिला गाय के दूध में पीस कर उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने सम्पूर्ण शरीर पर लेप करके जिस साध्य व्यक्ति के सामने

पहुंचे वह देखते ही वशीभूत होगा
बारहवां प्रयोगः—सफेद घुंघची को छाया में सुखा कर कपिला गाय के दूध में घिसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगा कर जिस साध्य व्यक्ति के सामने पहुंचा जायगा, वह देखते ही वशीभूत हो जायगा।
तेरहवां प्रयोगः—गोरोचन, कमल पत्र, त्रिपंगु तथा लाल चन्दन। इन चारों को घिसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे फिर इसका मस्तक पर तिलक लगाकार साध्य व्यक्ति के सामने पहुंचा जाय तो वह देखते ही वशीभूत हो जायगा।
चौदहवां प्रयोगः—केशर, सोंठ, कूट हरताल तथा मैनसिल, इन सब का चूर्ण कर, उसमें अपनी अनामिका उंगली का रक्त मिलाएं, फिर उसे उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर मस्तक पर उसका तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने जा कर खड़ा हो तो वह देखते ही वश में हो जायगा।

पन्द्रहवाँ प्रयोगः—सरसों और देवदास को पीस कर गोली बनालें। फिर उस गोली को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने मुंह में रख कर जिस व्यक्ति से वार्तालाप किया जायगा वह देखते ही वशीभूत होगा।

सोलहवां प्रयोगः—औदुम्बर की जड़ को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर पान में रखे, फिर वह पान जिस साध्य व्यक्ति को खिला दिया जायगा वह साधक के वशीभूत होगा।

सत्रहवां प्रयोगः—औदुम्बर की जड़ को महीन पीसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य व्यक्ति के सामने पहुंचा जायगा वह देखते ही वशीभूत हो जायगा।

अठारहवां प्रयोगः—गोरोचन तथा सहदेई को छाया में सुखा कर चूर्ण बनालें, फिर उस चूर्ण को पान में रख कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर वह अभिमन्त्रित पान जिस व्यक्ति को खिला दिया जायगा वह खाते ही

वशीभूत होगा।
उन्नीसवां प्रयोग–अपामार्ग की जड़ को गाय के दूध में पास कर उक्त मन्त्र से १०८ वार अभिमन्त्रित करे फिर उस का अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य व्यक्ति के सामने जाकर खड़ा होगा वह देखते ही वशीभूत हो जायगा।
बीसवाँ प्रयोगः–पुष्य नक्षत्र में पुनर्नवा की जड़ लाकर उसे उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उसे अपने दाईं भुजा में बांध कर जिस साध्य व्यक्ति के सामने पहुंचा जायगा वह देखते ही वशीभूत हो जायगा।
राजा वशीकरण पहला मंत्रः–नीचे लिखा मंत्र एक हजार की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र के प्रभाव से राजा वशीभूत हो जाता है। मन्त्र इस प्रकार है–
'ॐ ह्रीं अमुकं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहाः'
उक्त मन्त्र में जहां अमुक शब्द आया है वहां जिस राजा को वश में करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिये।

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब निम्न लिखित क्रिया करनी चाहिये:-
मन्त्र जप के पश्चात् एकान्त में भोजन करके कुंकुम केशर, गोरोचन, चन्दन और कपूर-इन सब को गाय के दूध में मिलाकर पीस लें। फिर इस मिश्रण को निम्न लिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करे-
'अच्छिष्टेछ्ष्टा चाराडाली सतीवाक फुरो मंजय स्वाहा।'
इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करने पर औषधियां सिद्ध हो जाती हैं। फिर उक्त मिश्रण की गोली बनाएं तत्पश्चात जिस राजा को वश में करना हो उसका नाम लेकर उस गोली का अपने मस्तक पर तिलक लगाकर राजा के सामने पहुंचे, तो राजा उसे देखते ही वशीभूत हो जाता है। इस प्रयोग को 'अच्छिष्ट चाराडाली प्रयोग' कहा जाता है।
राजा वशीकरण दूसरा मन्त्र-निम्न लिखित मन्त्र १ लाख की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र यह है-
'ॐ क्लीं सह अमुकं में वशं कुरु कुरु स्वाहा।'

इस मन्त्र में जहां अमुक शब्द आया है उस स्थान पर जिस राजा को वश में करना हो उसके नाम का उच्चारण करना चाहिये।

केशर, चन्दन, कपूर तथा गोरोचन इन सब को गाय के दूध में घिस लें, फिर उस घिसे हुए मिश्रण को उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर अपने मस्तक पर उसका तिलक लगाकर साध्य राजा के सामने पहुंचे तो वह देखते ही वशीभूत होगा।

राजा वशीकरण तीसरा मन्त्र—नीचे लिखा मन्त्र १००८ बार जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र इस प्रकार है।

'ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महीपतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।'

मन्त्र में जिस स्थान पर 'अमुक' शब्द का प्रयोग हुआ है, वहां जिस राजा को वश में करना हो उसके नाम का उच्चारण करना चाहिये।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर इसे निम्नलिखित विधियों से प्रयोग में लाना चाहिये।

पहली विधि–कुंकुम, चन्दन, कपूर और तुलसी दल, इन चारों वस्तुओं को समभाग लेकर गाय के दूध में घिस लें, फिर उन्हें मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके तिलक लगाकर साध्य-राजा के सामने जाकर खड़े हों तो वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।

दूसरी विधि—हरताल, असगन्ध, कपूर और मैनसिल, इन सब को बकरी के दूध में पीस कर उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करें, फिर उसका मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य राजा के सामने जा उपस्थित हों तो वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।

विशेषः—वर्तमान युग में राजाओं के न रहने पर इन मन्त्रों का प्रयोग मन्त्रिय तथा उच्च अधिकारियों आदि राज्य कर्मचारियों को वश में करने के लिये किया जा सकता है।

पति वशीकरण पहला मंत्र–आगे लिखा मन्त्र १००८ की संख्या में जपने पर सिद्ध हो जाता है। मन्त्र यह है:—

'ॐ काम मालिनी ठः ठः स्वाहा।'
जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखी विधियों के अनुसार इसका प्रयोग करना चाहिये।
पहली विधिः—कौंडिन्य पक्षी की बीट, मांस, घृत और शरीर के मल को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके, इसका लेप अपने गुप्ताङ्ग में लगाकर जो स्त्री अपने पति या किसी पुरुष के साथ सहवास करेगी, वह उस स्त्री के वशीभूत हो जायगा।
दूसरी विधि—गोरोचन को मछली के पित्ते में मिला कर उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करे, फिर स्त्री उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य पुरुष के सामने जाकर खड़ी हो वह उसे देखते ही वशीभूत हो जाता है।
तीसरी विधिः—पूर्वोक्त विधि से अपने मस्तक पर तिलक लगाकर स्त्री यदि किसी साध्य व्यक्ति अथवा पति की ओर अपने बायें हाथ की उंगली को उठाकर संकेत करे तो वह उसके वशीभूत हो जाता है।
पति वशीकरण दूसरा मन्त्र—आगे लिखा

मन्त्र १ लाख की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र यह है:-

'ॐ नमो महायक्षिण्ये पतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।'

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखे अनुसार इसके प्रयोग करने चाहिये।

पहला प्रयोग—गोरोचन, अपने शरीर का मैल तथा केले का रस—इन तीनों वस्तुओं को एकत्र कर पीस लें। फिर उसे मंत्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाकर स्त्री जिस साध्य पुरुष या पति के सामने जाकर खड़ी हो तो वह देखते ही वशीभूत हो।

दूसरा प्रयोग—गोरोचन, अपनी योनि में से निकला हुआ मासिक धर्म का रक्त तथा केले का रस, इन तीनों वस्तुओं को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने मस्तक पर तिलक लगाने वाली स्त्री साध्य पुरुष या पति के सामने पहुंच कर उसे देखने मात्र से ही वश में कर लेती है।

तीसरा प्रयोग—अनार का पञ्चांग (फल, फूल, जड़, शाखा, पत्ते) तथा सफेद सरसों, इनको एक

साथ पीसकर पूर्वोक्त मन्त्र से १०८ बार अभि-
मन्त्रित करे फिर इस लेप को अपने गुप्ताङ्ग पर
लगाकर साध्य पुरुष या पति के साथ सहवास करने
वाली स्त्री उसे अपने वश में कर लेती है।

स्त्री वशीकरण पहला मंत्र–नीचे लिखा मन्त्र
स्त्रियों को वशीभूत करने वाला कहा गया है।
यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध
होता है। मन्त्र यह है:–

'ॐ ह्रीं सः अमुकीं मे वश मानय मानय स्वाहा।'

इस मन्त्र में जहां अमुकी शब्द आया है वहां साध्य
स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये। जब
मन्त्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखे अनुसार इसके
प्रयोग करने चाहिये–

पहला प्रयोग:—शहद के साथ खस व चन्दन
पीस कर उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके
अपने मस्तक पर तिलक लगा कर जिस स्त्री के
कंठ में हाथ डाले, वह तुरन्त ही वशीभूत हो।

दूसरा प्रयोग–नील कमल, भौंरे के दोनों पंख,
तगर की जड़ तथा सफेद काकजंघा को समभाग

लेकर चूर्ण करे, फिर उस चूर्ण को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके उसे जिस स्त्री के मस्तक पर डाल दिया जायगा वह वशीभूत हो जाती है।

तीसरा प्रयोग–चिता की राख, बच, कूट, कुंकुम और गोरोचन–इनको समभाग लेकर चूर्ण करले फिर उस चूर्ण को पूर्वोक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री के मस्तक पर डाल दिया जाय वह वशीभूत हो जायगी।

स्त्री वशीकरण दूसरा मंत्र–नीचे लिखा मन्त्र १००८ की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है। मन्त्र यह है:–

'ॐ नमः कामाख्या देवि अमुकीं मे वशंकरी स्वाहा।'

इस मन्त्र में जिस स्थान पर अमुकी शब्द का प्रयोग हुआ है वहां साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखे अनुसार इसके प्रयोग करने चाहिये

पहला प्रयोग–नीली गाय का दांत तथा मनुष्य का दांत–इन दोनों को लेकर तेल के साथ इकट्ठा

पीस ले फिर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने मस्तक पर तिलक लगावे और साध्य स्त्री के सामने जाकर खड़ा हो तो वह देखते ही वशीभूत हो जाती है।

दूसरा प्रयोग—ब्रह्म दराडी तथा चिता की भस्म को एकत्र करके उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करले, फिर उसे जिस साध्य स्त्री के शरीर पर डाल दिया जायगा वह वश में हो जायगी।

तीसरा प्रयोगः— रविवार के दिन काले धतूरे के पंचाङ्ग (फल, फूल, पत्ते, जड़ और शाखा) को लाकर पीस लें फिर उसके साथ कपूर, कुंकुम तथा गोरोचन मिलाकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे। तत्पश्चात उसका मस्तक पर तिलक लगाकर घर से निकले तो जिस स्त्री की दृष्टि सबसे पहले पड़ेगी वह देखते ही वशीभूत होगी।

स्त्री वशीकरण तीसरा मंत्र—नीचे लिखा मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र यह है :—

'ॐ रं घुर्घु राकृष्ट कर्म कर्त्ता अमुकं करो वश्यं'
इस मन्त्र में जिस स्थान पर अमुक शब्द आया है, वहां साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये। जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब जिस समय भ्रमर और भ्रमरी को एकत्र देखे, उस समय उन्हें पकड़ कर अलग-अलग करके चिता की लकड़ी में जला दे। फिर उस भस्म को लेकर उसे उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित भस्म को साध्य स्त्री के मस्तक पर डाल दे तो वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री वशीकरण चौथा मंत्र—नीचे लिखा मन्त्र १००८ की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र यह है:-

'ॐ नमः छिप्र कामिनी अमुकीं मे वशमानय स्वाहा।'

इस मन्त्र में जिस स्थान पर अमुकी शब्द आया है। वहां साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये। जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब नाग केशर, कमल पुष्प, तगर केशर, जटा मांसी और वच, इन सब को समभाग लेकर सिद्ध मन्त्र द्वारा १०८

बार अभिमन्त्रित करे, फिर उन अभिमन्त्रित वस्तुओं की धूप अपने शारीरिक अङ्गों में दे तथा साध्य-स्त्री का स्मरण करे तो वह वशीभूत हो जाती है।
स्त्री वशीकरण पांचवां मन्त्र—नीचे लिखे मन्त्र को जिस साध्य-स्त्री का नाम लेकर एक मास तक निरन्तर जपा जाय वह वशीभूत हो जाती है। मन्त्र यह है:—
'अमुली महामुली छ्ठ छ् सर्व संत्तेत्रजंनोपद्र-वेभ्यः स्वाहा :।'
स्त्री वशीकरण छठा मन्त्र—नीचे लिखा मन्त्र १००८ की संख्या में जपने पर सिद्ध हो जाता है। मन्त्र यह है:—
"ॐ नमो भगवती मङ्गलेश्वरी सर्वमुख राजिनी सर्व-धरं मातङ्गी कुमारी के लघु-लघु वशं कुरुकुरु स्वाहा।"
जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखे अनुसार इसके प्रयोग करने चाहियें:—
पहला प्रयोगः—गोरोचन तथा सहदेई को पानी के साथ पीस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभि-मन्त्रित करे, फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक

लगाकर साध्य स्त्री के पास जाय तो वह वश में हो जाती है।

दूसरा प्रयोगः—क्वारी कन्या के हाथ से काते गये सूत में सहदेई की जड़ को बांधकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उस सूत में बंधी हुई जड़ को जिस साध्य स्त्री की कमर में बांध दिया जावेगा वह वशीभूत होगी।

तीसरा प्रयोगः—कृष्ण पक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी के दिन व्रत रख कर सहदेई को उखाड़ लाए, फिर उसका चूर्ण बना कर उस चूर्ण को उक्त मंत्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करे तत्पश्चात् वह चूर्ण जिस साध्य स्त्री को खिला दिया जावे वह वशीभूत हो जायगी।

चौथा प्रयोगः- सहदेई की जड़ को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अपने मुंह में रखले फिर जिस साध्य-स्त्री से वार्तालाप करे वह वश में हो जाती है।

पांचवां प्रयोगः—पूर्वोक्त (तीसरे प्रयोग की) विधि से सहदेई को लाकर उसका चूर्ण बनाएं, फिर उ

उस चूर्ण को मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस साध्य स्त्री के मस्तक पर डाला जायगा। वह वशीभूत होगी।

इस मन्त्र के सभी प्रयोग सहदेई द्वारा ही होते हैं।

स्त्री वशीकरण का सातवाँ मन्त्रः—नीचे लिखा मंत्र एक लाख की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र इस प्रकार हैः—

'ॐ नमः कामाक्षी देवी अमुकीं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा।'

इस मन्त्र में जहां 'अमुकी' शब्द का प्रयोग हुआ है, वहां साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये। जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब निम्न लिखित में से किसी एक विधि से इसका प्रयोग करना चाहिये।

पहली विधिः—शनिवार के दिन गोरोचन तथा पद्मपत्र को पीस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य स्त्री के सामने जाकर खड़ा हुआ जाय वह देखते ही वशीभूत हो जाती है।

दूसरी विधिः—गुरुवार के दिन सिन्दूर व कदली कन्द को पीस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य स्त्री के सामने जाकर खड़ा हो तो वह वशीभूत हो जायगी।

स्त्री वशीकरण आठवां मंत्र—नीचे लिखा मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र इस प्रकार हैः—

'ॐमूलि मूलि महा मूलि रक्ष रक्ष सर्वासां क्षेत्र परेभ्यः परेभ्यः स्वाहा।'

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर नाग केशर, चिरौंजी तगर, कमल केशर, वच तथा जटामांसी—इन सब को समभाग लेकर चूर्ण करे फिर उस चूर्ण को उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने ही शारीरिक अङ्गों को धूप देकर जिस साध्य स्त्री के समीप पहुंचा जायगा वह देखते ही वशीभूत होगी।

स्त्री वशीकरण नवां मन्त्रः—यह मन्त्र १ लाख जपने पर सिद्ध होता हैः—

'ॐनमः भवाय नमः शर्वाण्यै च अमुकीं मे वशमानय

स्वाहा।'

इस मन्त्र में जहां 'अमुकी' आया है वहां पर साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखे अनुसार प्रयोग करना चाहिये :–

जीभ का मल, दांत का मल, नाक का मल तथा कान का मल, इन सब को मद्य में मिला कर उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित कर जिस स्त्री को पान करा दिया जाय वह वशीभूत हो जायगी। मल की मात्रा अत्यन्त न्यून होनी चाहिये।

स्त्री वशीकरण दसवाँ मन्त्र–नीचे लिखा मन्त्र २१ दिन तक निरन्तर जपते रहने से सिद्ध होता है। मंत्र यह है:–'ॐनमो नमः शिवानी रूप त्रिशूले खड्गहस्ते सिंहारूढ़े अमुकीं मे वशमा गच्छ कुरु कुरु स्वाहा।'

उक्त मन्त्र में जहां अमुकी शब्द प्रयोग हुआ है वहां साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये। सिद्ध हो जाने पर इस मन्त्र को केशर द्वारा भोज-पत्र के ऊपर लिख कर जिस स्त्री का नाम लेकर धूप

दी जावेगी वह शीघ्र ही साधक के वशीभूत हो जायगा।

स्त्री वशीकरण ग्यारहवाँ मन्त्रः—नीचे लिखा मन्त्र १ लाख की संख्या में जपने पर सिद्ध हो जाता है। मन्त्र यह है:—'ॐकुम्भनी स्वाहा'

सिद्ध हो जाने पर इस मन्त्र द्वारा किसी फूल को १०८ बार अभिमन्त्रित करे फिर वह अभिमंत्रित पुष्प जिस स्त्री को सुंघाया जायगा वह साधक के वशीभूत हो जायगी।

स्त्री वशीकरण बारहवाँ मंत्र :—नीचे लिखा मन्त्र १ लाख की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। मंत्र इस प्रकार है:—'ॐकामिनी रंजनी स्वाहा।'

सिद्ध हो जाने पर इस मन्त्र को लाख की स्याही द्वारा जिस स्त्री के हाथ पर लिख दिया जायगा वह लिखने वाले व्यक्ति (साधक) के वशीभूत हो जायगी।

स्त्री वशीकरण तेरहवां मंत्रः—आगे लिखा मन्त्र १० हजार की संख्या में जपने पर सिद्ध हो जाता है। मंत्र यह है:—'ॐह्रीं महामातंगीश्वरी

चाण्डालिनि अमुकीं पत्र पत्र दह दह मथ मथ स्वाहा।'
इस मन्त्र में जहां अमुकी शब्द आया है वहां साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करें।
मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर रविवार के दिन जिस स्त्री का नाम लेकर दूध तथा शर्करा से होम किया जाय वह वशीभूत हो जाती है।
स्त्री वशीकरण चौदहवां मन्त्र:—नीचे लिखा मन्त्र १० हजार की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र इस प्रकार है:—'ॐ भगवतीं भग-भाग दायिनी अमुकीं मम वश्यांकुरु कुरु स्वाहा।'
इस मन्त्र में जंहां 'अमुकी' शब्द आया है वहां साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये। मंत्र के सिद्ध हो जाने पर गुरुवार के दिन इस मंत्र द्वारा नमक को १०८ बार अभिमन्त्रित करके वह नमक किसी खाने पीने की वस्तु के माध्यम से जिस साध्य स्त्री को खिला दिया जायगा वह वशीभूत हो जायगी। वशीकरण के मन्त्रों का वर्णन करने के बाद अब हम मोहन मन्त्रों का

वर्णन करते हैं।
सर्वजन मोहन पहला मन्त्र—नीचे लिखा मंत्र १० हजार की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र इस प्रकार है:-
'ॐ नमो भगवते रुद्राय सर्व जगन्मोहनं कुरु कुरु स्वाहा।
इस मन्त्र की प्रयोग विधियां निम्न लिखित हैं:-
पहली विधि:-कड़वी तुंबी के बीजों के तेल में कपड़े की बत्ती डालकर जलायें तथा उस बत्ती से काजल पारे। उस काजल को पूर्वोक्त सिद्ध मन्त्र द्वारा१०८बार अभिमन्त्रित करके आंखों में लगाने से देखने वाले सभी व्यक्ति मोहित हो जाते हैं।
दूसरी विधि:—गूलर के फूल की बत्ती बना कर रात्रि के समय मक्खन में डाल कर जलाये और काजलपारे। उस काजल को पूर्वोक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके आंखों में लगाने से देखने वाले सब व्यक्ति मोहित हो जाते हैं।
तीसरी विधि:-सिन्दूर, केशर तथा गोरोचन को आंवले के रस में घोंट कर उक्त मन्त्र से १०८

बार अभिमन्त्रित कर मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले सब व्यक्ति मोहित हो जाते हैं।

सर्वजन मोहन दूसरा मन्त्र—नीचे लिखा मन्त्र १ लाख की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र यह है:—

'ॐ उड्डामरेश्वराय सर्वजगन्मोहनाय अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं फट स्वाहा।'

इस मन्त्र के प्रयोग निम्नलिखित हैं:—

पहला प्रयोगः—अपामार्ग (औंगा या-चिरचिटा) भंगरा, लाजवन्ती और सहदेई इन सब को घोंट कर अपने मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले सब लोग मोहित होते हैं।

दूसरा प्रयोगः—सिन्दूर तथा सफेद वच को पान के रस में घोंट कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले मोहित होते हैं।

तीसरा प्रयोग—पान की जड़ को पानी में पीस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर तिलक लगाने से देखने वाले मोहित होते हैं।

चौथा प्रयोगः-सिन्दूर, केशर तथा गोरोचन को आंवले के रस में पीसकर उक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले सब लोग मोहित हो जाते हैं।

सर्वजन मोहन तीसरा मन्त्र—नीचे लिखा मन्त्र १० हजार की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र इस प्रकार है-

'ॐ नमो भगवते कामदेवाय यम यस्य दृश्यो भवामि यश्च यश्च मम मुखं पश्यति तं तं मोहयतु स्वाहा।'

सिद्ध होने पर प्रयोग नीचे लिखे अनुसार करेंः-

पहला प्रयोगः-राई सिरस तथा शंखाहुली को सफेद रंग वाली गाय के दूध में पीस कर उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके उसे अपने शरीर पर मर्दन करके उष्ण जल से स्नान करे। तत्पश्चात् अपने मस्तक पर केशर का तिलक लगाकर राज दरबार में अथवा सभा में कहीं भी जाय वहां उसे देखने वाले सब लोग मोहित हो जाते हैं।

दूसरा प्रयोगः—अनार के पंचाङ्ग को सफेद घुंघची के साथ पीस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगा कर जहां भी जाय वहां देखने वाले सब लोग मोहित हों।
तीसरा प्रयोगः—भांग के पत्तों को सफेद घुंघची के साथ पीस कर उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने शरीर पर लेप करने से देखने वाले मोहित होते हैं।
चौथा प्रयोगः-सफेद आक की जड़ को सफेद चंदन के साथ घिस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिम[illegible]त करके अपने मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले मोहित हों।
पाचवाँ प्रयोग-बेल पत्र को छाया में सुखा कर कपिला गाय के दूध में पीस कर गोली बनालें फिर उस गोली को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले मोहित होते हैं।
छठा प्रयोगः-सफेद घुंघची के रस में ब्रह्मदण्डी

को जड़ सहित पीस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने मस्तक पर तिलक करे तो देखने वाले मोहित हों।

वेश्या वशीकरण मन्त्र—नीचे लिखा मन्त्र १० हजार की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र यह है:—

'ॐ द्राविणी स्वाहा। ॐ हामिले स्वाहा।'

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब अपामार्ग औंगा की लकड़ी लाकर उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करे फिर उस लकड़ी को वेश्या के घर में डाल दे तो वेश्या वशीभूत हो जाती है।

शत्रु मोहन मंत्र—नीचे लिखा मन्त्र १० हजार की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र यह है:—

'ॐ नमो महाबल महापराक्रम शस्त्र विद्या विशारद अमुकस्य भुजबलं बंधय बंधय दृष्टिं स्तम्भय स्तम्भय अंगानि धूनय धूनय पातय पातय महीतले हुं।'

इस मन्त्र में जहां अमुकस्य शब्द आया है वहां शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिये इस मन्त्र की प्रयोग विधि अग्रलिखित हैं:—अपामार्ग (औंगा

या आधाझारा) का रस निकाल कर उसे इस मन्त्र द्वारा १०८ वार अभिमन्त्रित करके उस रस का शस्त्र पर लेप करे। तत्पश्चात् उस शस्त्र को लेकर युद्ध भूमि में जाय तो शत्रु उसे देखते ही मोहित हो जायेंगे।

मोहन मन्त्रों के बाद अब आकर्षण मन्त्रों का वर्णन किया जाता है।

सर्वजन आकर्षण मन्त्र-निम्न लिखित मन्त्र १ लाख की संख्या में जपने पर सिद्ध हो जाना है। मन्त्र यह है:-

'ॐ नमो आदिरुपाय अमुकं आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा।'

इस मन्त्र में जहां अमुक शब्द आया है, उस स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लें।

इस मन्त्र की प्रयोग विधियां निम्नलिखित हैं:-

पहली विधि—रविवार के दिन जब पुण्य नक्षत्र हो तब ब्रह्मदण्डी लाकर उसका चूर्ण करे फिर उस चूर्ण को उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस काम पीड़िता स्त्री के मस्तक पर डाले

वह प्रयोग करने वाले के पीछे पीछे चली आती है।

दूसरी विधि—मनुष्य के कपाल (नरमुण्ड) पर उक्त मन्त्र को गोरोचन तथा कुंकुम के साथ लिख कर उसे तीनों संध्या काल में खैर की अग्नि में तपाए। तपाते समय साध्य स्त्री के नाम एवं रूप का स्मरण तथा ध्यान करते रहना चाहिये। कहा गया है कि इस प्रयोग के करने से उर्वशी जैसी स्त्री भी आकर्षित होकर साधक के पास आ जाती है।

तीसरी विधि—अपनी अनामिका-उंगली के रक्त से उक्त मन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लिखे तथा जिस व्यक्ति का आकर्षण करना हो, उस का नाम बीच में लिखे। फिर उस भोजपत्र को शहद में डालदे तो साध्य-व्यक्ति आकर्षित होकर साधक के समीप चला आता है।

चौथी विधि—काले धतूरे के पत्तों के रस में गोरोचन मिलाकर पीस ले, फिर उसके द्वारा कनेर की जड़ कलम से उक्त मन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लिखे। तत्पश्चात् उस मन्त्र लिखित भोजपत्र को

खैर के अंगारों पर तपाए तो इस क्रिया से काफी दूर रहने वाला व्यक्ति भी आकर्षित होकर साध्य व्यक्ति के समीप चला आता है।

स्त्री आकर्षण पहला मन्त्र—नीचे लिखे मन्त्र को २१ दिन तक तीनों संध्या काल में एक एक हजार की संख्या में जपना चाहिये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है मन्त्र में जहां 'अमुकाय' शब्द आया है वहां साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये। मन्त्र यह है:—"ॐ चामुण्डे तहतनु अमुकाय कर्षय आकर्षय स्वाहा।"

पहली विधि—काले सर्प के फन को काट कर चूर्ण करे, फिर उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए उसे आग में डाले तथा उसकी धूप को अपने अङ्ग पर मले। इस विधि से मंत्रोच्चारण के समय जिस स्त्री का नाम लिया जाता है वह आकर्षित होकर साधक के समीप चली आती है।

दूसरी विधि—आश्लेषा नक्षत्र में अर्जुन वृक्ष के बांदा को लाकर बकरी के दूध में पीस कर तिलक लगाये। जो स्त्री उसे पहले देखेगी वही वश में

हो जायगी।

तीसरी विधिः—उत्तर दिशा की ओर मुंह करके लाल चन्दन अथवा लाख के लाल वस्त्र के ऊपर उक्त मन्त्र को लिख कर पूजन करे तत्पश्चात् उसे पृथ्वी में गाड़ कर २१ दिन तक चावल के धोवन के पानी से सींचता रहे। इस प्रयोग के करने से मानवता वैरिणी स्त्री भी साधक के समीप आ जाती है।

स्त्री आकर्षण तीसरा मन्त्रः—नीचे लिखा मन्त्र अत्यन्त प्रभावकारी कहा गया है। मन्त्र यह है :—'ॐ ह्री ह्रूं अमुकी आकर्षय।'

इस मन्त्र की प्रयोग विधि इस प्रकार है। जिस स्त्री को आकर्षित करना हो उस के पांव की धूलि को संध्या के समय उठा कर उक्त मन्त्र का चार लाख की संख्या में जप करे। मन्त्र में जहां 'अमुकी' आया है वहां साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करें।

इस क्रिया से साध्य-स्त्री आकर्षित होकर साधक के समीप चली आती है।

विद्वेषण:-मित्रभावापन्न दो व्यक्तियों में परस्पर झगड़ा करा देने को विद्वेषण कहते हैं। मन्त्र व प्रयोग यह हैं।

विद्वेषण का पहला मन्त्र :-नीचे लिखा मन्त्र १ लाख की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र इस प्रकार है:-'ॐनमो नारदाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।'

इस मन्त्र में जहां 'अमुकस्य अमुकेन सह' शब्द आया है वहां जिन दो व्यक्तियों में परस्पर विद्वेषण कराना हो तो 'रामस्य श्यामेन सह' इस प्रकार से उच्चारण करना चाहिये। इस मन्त्र के प्रयोग निम्न लिखित हैं।

पहला प्रयोग:-मोर की बीट तथा सर्प के दांत, इन दोनों को घिस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने मस्तक पर तिलक लगाकर उन दोनों व्यक्तियों के पास जाकर खड़ा हो जाय, जिनमें विद्वेषण करना हो तो उस तिलकधारी को देखते ही वे दोनों व्यक्ति परस्पर की मित्रता को

त्याग कर एक दूसरे से द्वेष करने लगेंगे।

दूसरा प्रयोगः-सेही के दो कांटों को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिन दो व्यक्तियों के घरों के दरवाजों पर गाड़ दिया जायगा उनमें परस्पर शत्रुता हो जायगी।

तीसरा प्रयोगः-कुत्ते के बाल तथा बिल्ली के नख को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस सभा में धूप दी जायगी वहां पर उपस्थित सब लोग आपस में द्वेष करने लगेंगे।

चौथा प्रयोगः-घोड़े तथा भैंसे के बाल को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उनकी जिस सभा में धूप दे वहां बैठे लोगों में परस्पर विद्वेष हो जायगा। तथा थोड़ी ही देर में हुल्लड़ मच कर सभा भंग हो जायगी।

विद्वेषण का दूसरा मन्त्रः-नीचे लिखा मन्त्र १० हजार की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। मंत्र यह है-'ॐनमो नारायणाय अमुकस्यामुकेन विद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा।'

इस मंत्र में जहां अमुकस्यामुकेन सह शब्द आया

है वहां पूर्व मंत्र की ही भांति जिन दो व्यक्तियों में परस्पर विद्वेष कराना हो उन दोनों के नाम का उच्चारण करना चाहिये। जब मंत्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखी विधियों के अनुसार उसका प्रयोग करना चाहियेः—

प्रयोग करते समय मंत्र का १०८ बार जप करें।

पहला प्रयोगः—जिन दो व्यक्तियों में जीवन भर के लिये विद्वेष कराना हो उन दोनों के पांव के नीचे की मिट्टी लाकर उसकी २ अलग अलग पुतलियां बनाए, तत्पश्चात उन दोनों पुतलियों को १०८-१०८ बार मंत्र पढ़ कर अलग अलग अभिमन्त्रित करे। फिर उन्हें श्मशान में ले जाकर गाड़ दे फिर उन दोनों व्यक्तों के बीच जीवन भर विद्वेष बना रहेगा।

दूसरा प्रयोगः— भैंस और घोड़े के बाल लाकर दोनों को उक्त मंत्र द्वारा अभिमन्त्रित कर उन्हें जिस सभा में लेजाकर जलाया जायगा वहां के लोगों में परस्पर विद्वेष उत्पन्न हो जायगा।

तीसरा प्रयोगः—जड़ सहित ब्रह्मदण्डी व काक-

जंघा को सात दिन तक चमेली के फूलों के रस में भिगोए । फिर उन्हें उस में से निकाल कर सात दिन तक बिल्ली के मूत्र में भिगोए फिर उन्हें उसमें से निकाल कर पूर्वोक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर शत्रु के घर के समीप जाकर उस की धूप दे तब धूप की सुगंधि को जो भी व्यक्ति सूंघेगा उसमें परस्पर विद्वेष बना रहेगा ।

चौथा प्रयोगः–बिल्ली तथा चूहे की विष्ठा और शत्रु के पांव के नीचे की मिट्टी लाकर सबको एकत्र करे, फिर उस से एक पुतली बनाकर उसके ऊपर एक नीला कपड़ा उढ़ाए, तत्पश्चात् उस पुतली को उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर में गाड़ दे तो वह शीघ्र ही शत्रु सहित उसके परिवार के सभी लोगों में परपर विद्वेष हो जायगा ।

पांचवां प्रयोगः–हाथी के दांत तथा सिंह के [illegible] को मक्खन के साथ इकट्ठा पीसकर उक्त मंत्र [illegible] १०८ बार अभिमन्त्रित करके उस लेप का जिन दो मनुष्यों के मस्तक पर तिलक लगा दिया जायगा

उन दोनों में परस्पर विद्वेष हो जायगा।
उच्चाटनः—किसी व्यक्ति के मन को किसी स्थान से उचाट देने को 'उच्चाटन' कहा जाता है। जिस व्यक्ति के लिये उच्चाटन सम्बन्धी प्रयोग किये जाते हैं, वह व्यक्ति उस स्थान को छोड़ कर किसी अन्य स्थान पर चला जाता है।
उच्चाटन का मंत्र 'ॐ नमो भगवते रुद्राय दंष्ट्रा-करालाय अमुकं पुत्र बांधवै सह हन हन दह दह पच पच शीघ्र मुच्चाटयोच्चाटय हुं फट् स्वाहा ठः ठः।'
इस मंत्र में जहां अमुक शब्द आया है वहां जिस व्यक्ति का उच्चाटन करना हो उसके नाम का उच्चारण करना चाहिये।
यह मंत्र १० हजार की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। जब मंत्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखे [illegible]सार इसे प्रयोग में लाना चाहिये। किसी भी [illegible]ोग को करने से पहले मंत्र को १०८ बार जप[illegible]ना आवश्यक है।
पहला प्रयोगः—कौए तथा उल्लू के पंखों का १०८ बार हवन करने तथा उक्त मंत्र का पाठ

करने से साधक व्यक्ति का उच्चाटन होता है।

दूसरा प्रयोगः—मंगलवार के दिन उल्लू के पंख को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके उसे जिस व्यक्ति के घर में गाड़ दिया जायगा उसका उच्चाटन होगा।

तीसरा प्रयोगः—रविवार के दिन कौए के पंख को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके उसे जिस व्यक्ति के घर में गाढ़ दिया जायगा उसका उच्चाटन होगा।

चौथा प्रयोगः—मनुष्य की हड्डी के ४ अंगुल प्रमाण टुकड़े को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके उसे जिस व्यक्ति के घर के दरवाजे पर गाढ़ दिया जायगा उसका उच्चाटन होगा।

पांचवां प्रयोगः—गूलर की लकड़ी की चार अंगुल प्रमाण कील को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति के सोने के स्थान खोद कर गाढ़ दिया जायगा उच्चाटन होगा।

छटा प्रयोगः—कौआ तथा उल्लू के पंख को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर के जिस व्यक्ति

के घर में गाढ़ दिया जाये उसका उच्चाटन होगा।
सातवां प्रयोगः—भरणी नक्षत्र में श्मशान की तीन अंगुल प्रमाण की लकड़ी लाकर उसे उक्त मंत्र से ७६ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति के घर में गाढ़ दिया जाये उसका उच्चाटन होगा।
आठवां प्रयोगः—मनुष्य की हड्डी की ४ अंगुल प्रमाण से उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति का उच्चटन करना हो उसके घर में गाढ़ देने तथा उस स्थान पर स्वयं गाढ़ देने व उस स्थान पर पेशाब कर देनें से उच्चाटन हो।
नवां प्रयोगः—कलिहारी की जड़ को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिसके घर में गाढ़ दिया जायगा उसका उच्चाटन होगा।
दसवां प्रयोग—सफेद सरसों, शिव जी पर चढ़ाई हुई माला तथा जल—इन तीनों वस्तुओं को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर में गाढ़ने से उसका उच्चाटन होता है।
भूत नाशन मंत्रः—नीचे लिखा मन्त्र १० हजार की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है, मंत्र यह

है:—'ॐमम काली कपाली दहि स्वाहा।'
मंत्र के सिद्ध हो जाने पप आवश्यकता के समय सरसों के तेल को इस मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित कर भूतग्रस्थ रोगी के शरीर पर उस तेल की मालिश करने से भूत चिल्लाता हुआ निकल कर भाग जाता है।
विजय प्रदाता मंत्रः—नीचे लिखा मन्त्र दस हजार की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है:—
मंत्र इस प्रकार है—ॐ नमे कनक पिंगे रौद्रकपातरुद्रास्त्र धरनी तिस्ठ सरासर सत्वान मोहये भगवती सिद्धिधुजो इति मीठ सहामाये स्वाहा।'
सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय इस मंत्र का नीचे लिखे अनुसार प्रयोग करना चाहिये :-
इसकी विधि:—कार्तिक मास की कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को नील वृक्ष की जड़ को शमशान से लाए हुए सूत में कसकर उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके मुंह अथवा मस्तक पर धारण करके न्यायालय में पहुंचे तो मुकद्दमे में सफलता प्राप्त होगी।
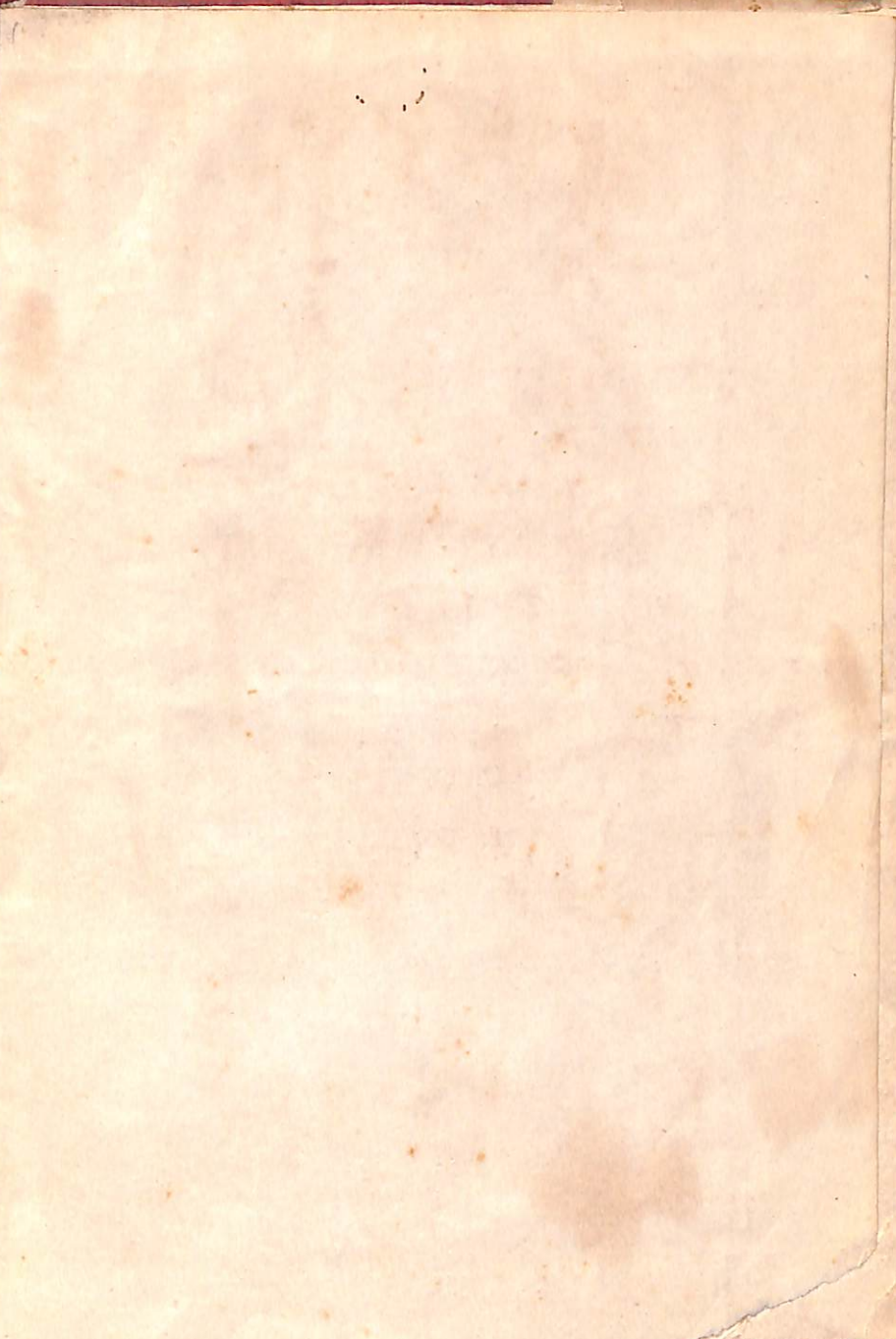
1936 में स्थापित
विश्व विख्यात
चिर-परिचित
पुराना प्रकाशक
और पुराना ही नाम

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६